मंज़िल से पहिले

मंज़िल से पहिले

मूल लेखक :

तुर्गनेव

अनुवादक :

राजनाथ एम. ए.



प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन
मथुरा

×

जुलाई १९५७

×

×

मुद्रक :
आगरा फाइन आर्ट प्रेस,
राजा मण्डी,
आगरा

×

मूल्य :
तीन रुपया

ग्रीष्म ऋतु, सन् १८५३

एक दिन गर्मी बहुत तेज थी—कुन्तसोवो से थोड़ी ही दूर, मास्को नदी के किनारे, एक विशाल नीबू के वृक्ष की छाया में दो नौजवान घास पर पास-पास लेटे हुए थे।

उनमें से एक की अवस्था लगभग २३ वर्ष की लगती थी। वह लम्बा और सांवले रंग का था। उसकी नाक कुछ-कुछ टेढ़ी और नुकीली तथा माथा चौड़ा था। उसके भरे हुए होठों पर एक संयत मुस्कराहट थिरक रही थी। विचार-मग्न होकर सुदूर क्षितिज की ओर देखते हुए वह अपनी छोटी भूरी आँखों को थोड़ा सा सिकोड़ लेता था।

दूसरा सीने के बल लेटा अपने घुँघराले बालों वाले सुन्दर सिर को दोनों हाथों पर टिकाये उसी की तरह गौर से दूर देख रहा था। वह अपने साथी से था तो तीन साल बड़ा मगर देखने में उससे काफी छोटा लगता था। उसकी मसें अभी भींगनी शुरू हुई थीं और ठोढ़ी पर हल्के-हल्के घुँघराले रुंए से उग आये थे। उसके गोल और खिले हुए मुख की नन्हीं रेखाओं में, उसके कोमल बादामी रंग के नैनों और

सुन्दर उठे हुए होंठों में तथा छोटे-छोटे सफेद हाथों में एक आकर्षक भव्यता और बच्चों का सा सौन्दर्य था। उसकी हर बात से प्रसन्नता और यौवन का मुक्त आनन्द छलका पड़ता था। वह यौवन का प्रतिरूप सा—एक निर्द्वन्द्व, आत्म-विश्वासी, आकर्षक, हृष्ट-पुष्ट नवयुवक था। वह एक ऐसे बच्चे की तरह अपनी आँखें नचाता, मुस्कराता और सिर ऊपर उठाता था जो यह जानता है कि लोग उसे देखकर आनन्दित हो उठते हैं। वह एक ब्लाऊज जैसा ढीला ढाला सफेद कोट पहने हुए था। अपनी सुन्दर गर्दन में उसने हल्के नीले रंग का एक स्कार्फ लपेट रखा था। पास ही घास पर मुड़ा हुआ घास की तीलियों से बना एक टोप पड़ा था।

• उसकी तुलना में उसका साथी बुड्ढा सा दिखलाई देता था। उसके चौड़े चेहरे की तरफ देख कर कोई भी यह नहीं सोच सकता था कि वह भी प्रसन्न है और निश्चिन्त होकर इस दृश्य का आनन्द उठा रहा है। वह एक अजीब सी मुद्रा में लेटा हुआ था। उसका विशाल मस्तक जो ऊपर की तरफ चौड़ा और गर्दन के पास संकरा था, उसकी लम्बी गर्दन पर जमा हुआ बड़ा अजीब सा लगता था। उसके हाथों के रखने के ढंग से, उसकी लम्बी टांगों से, बड़ी मक्खी की पिछली टांगों की तरह उठे हुए उसके घुटनों से, चुस्त छोटी काली जाकिट में कसे हुए उसके शरीर आदि सभी बातों से एक गँवारपन सा झलकता था। फिर भी, इन सारी बातों के बावजूद भी, उसे देख कर कोई भी यह कह सकता था कि वह एक सुरुचि-सम्पन्न सभ्य व्यक्ति है। उसके सारे बेढंगेपन में एक कुलीनता की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। और उसके चेहरे से यद्यपि वह सादा और ऐसा था कि जिसे देख कर हँसी आती थी, उसका चिन्तन शील स्वभाव और कोमलता व्यक्त होती थी। उसका नाम एन्द्री पेत्रोविच बरसियेनेव और उसके सुन्दर बालों वाले नौजवान साथी का पावेल याकोव्लेविच शुबिन था।

"तुम सीने के बल क्यों नहीं लेटते, जैसे कि मैं लेटा हूँ?" शुबिन ने कहना आरम्भ किया। "इस तरह ज्यादा अच्छा रहता है। विशेष रूप

से उस समय जब तुम अपनी टांगों को ऊपर उठा कर अपनी एड़ियों को आपस में टकराते हो—इस तरह। तुम्हारी नाक के नीचे घास है। अगर तुम दृश्य देखते-देखते ऊब उठते हो तो नीचे घास की पत्ती पर रेंगते हुए किसी मोटे पेट वाले कीड़े को या इधर उधर भागती हुई किसी चींटी को देख सकते हो। सचमुच यह ज्यादा अच्छा है। मगर तुमने तो एक थोथी, प्राचीन लोगों की सी मुद्रा बना रखी है जैसे कि कोई नर्तक गत्ते की बनी हुई चट्टान पर कुहनियाँ टेके हुए बैठा हो। तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि अब तुम्हें आराम करने का पूरा-पूरा हक हासिल है। सालाना इम्तहान में तीसरा नम्बर पाना कोई मजाक नहीं है साहब! आराम करो, निर्द्वन्द्व होकर हाथ पैरों को फैला कर लेटो।"

शुविन ने यह सब नाक के स्वर में कुछ आलस्य सा दिखाते हुए तथा कुछ मजाक सा करते हुए कहा—जैसे कि बिगड़े हुए लाड़िले बच्चे अपने परिवार के उन मित्रों से बातें करते हैं जो उनके लिए मिठाई लाया करते हैं। फिर जबाब का इन्तज़ार किये बिना उसने आगे कहना शुरू कर दिया :

"चीटियों, कीड़ों-मकोड़ों और कीट-जगत के अन्य सज्जनों की एक ही विशेषता से मैं अत्यधिक प्रभावित हूँ और वह है उनकी अद्भुत गम्भीरता। वे अपने चेहरों पर व्यस्तता का ऐसा महत्वपूर्ण भाव लिए इधर से उधर भाग-दौड़ करते रहते हैं, मानो कि उनके जीवन का सचमुच ही कोई महत्व हो। जरा सोचो तो सही : मानव, सृष्टि का स्वामी, प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ, उनकी तरफ देख रहा है—मगर उनके पास उसकी तरफ ध्यान देने के लिए समय ही नहीं है। यहीं तक नहीं बल्कि एक मच्छड़ सृष्टि के स्वामी की नाक पर बैठ जायेगा और उसे अपना भोजन समझने लगेगा। यह उसका अपमान है। फिर भी, जब दूसरे दृष्टिकोण से देखते हैं तो क्या हमारा जीवन इन लोगों से किसी भी रूप में ज्यादा अच्छा दिखाई पड़ता है? जबकि हम लोगों को गर्व करने का अधिकार है तो वे गर्व क्यों न करें। इसलिए हे मेरे दार्शनिक, मेरे लिए इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करो। तुम जबाव क्यों नहीं देते?"

"क्या ?" बरसियेनेव ने चौंक कर पूछा।

"क्या !" शुबिन ने दुहराया। "तुम्हारा मित्र तुम्हें अपने महान् विचारों को समझा रहा है और तुम हो कि सुनते तक नहीं।"

"मैं इस दृश्य का आनन्द ले रहा था। धूप में चमकते हुए उन खेतों की उष्ण प्रभा को देखो।" (बरसियेनेव जरा सा तुतला कर बोलता था)

"हाँ, चारों तरफ बहुत ही सुन्दर रंग का खूब छिड़काव कर दिया गया है," शुबिन ने कहा। "तुम्हारे लिए यही प्रकृति है !"

बरसिएनेव ने सिर हिलाया।

"तुम्हें तो इस तरह के दृश्यों को देखकर, मेरी अपेक्षा और भी अधिक आनन्द-विभोर होना चाहिए। यह तुम्हारी प्रवृत्ति के अधिक अनुकूल है : तुम एक कलाकार हो।"

"नहीं साहब, यह मेरा विषय नहीं है," शुबिन ने अपने टोप को सिर पर पीछे की तरफ रखते हुए उत्तर दिया, "मैं एक कसाई हूँ, साहब ! मेरा पेशा माँस का है, माँस की मूर्त्ति गढ़ना—कन्धे, हाथ और पैर। यहाँ न आकार है और न पूर्णता—हर चीज बेढंगे रूप में चारों तरफ फैली पड़ी है—तुम जरा इसे पकड़ने की कोशिश तो करके देखो।"

"फिर भी, यहाँ सौन्दर्य तो है ही, यह तुम जानते हो," बरसिएनेव बोला, "अच्छा यह बताओ, तुमने अपनी वह मूर्त्ति पूरी कर ली ?"

"कौन सी ?"

"वही बच्चे और बकरी वाली।"

"उसे जहन्नुम में जाने दो, जहन्नुम में जाने दो," शुबिन ने आलाप सा भरते हुए कहा। "मैंने वास्तविक कला को देखा, प्राचीन कलाकारों को, प्राचीन कलाकृतियों को देखा—और मैंने अपनी उस मूर्खता की सृष्टि को नष्ट कर डाला। तुम मुझे प्रकृति दिखाते हो और कहते हो, "यहाँ भी सौन्दर्य है।" हाँ, बेशक, हर चीज में सौन्दर्य होता है, यहाँ तक

कि तुम्हारी नाक में भी सौन्दर्य दिखाई पड़ता है लेकिन तुम हर तरह के सौन्दर्य को पकड़ने का प्रयत्न नहीं कर सकते। प्राचीन कलाकार सौन्दर्य के पीछे नहीं भागते थे; वह तो उनकी कृति में भगवान जाने कहाँ से अनायास ही आ जाता था, हो सकता है वह स्वर्गिक हो। सारा संसार उनका अपना था लेकिन हम लोग अपने को उस तरह विस्तृत नहीं कर सकते; हमारी सीमाएँ बहुत संकुचित हैं। हम लोग तो अपना एक लक्ष्य बना लेते हैं, फिर उसका निरीक्षण करते हैं और अवसर की प्रतीक्षा में बैठे रहते हैं। अगर वह पकड़ में आ गया तो बहुत सुन्दर! अगर न आया······"

शुबिन ने अपनी जीभ दिखाई।

"चुप रहो, चुप रहो," बरसियेनेव ने टोका, "यह झूठ है। अगर तुम सौन्दर्य के प्रति आकर्षित नहीं होते, अगर, जहाँ कहीं उसे पाते हो और उससे प्रेम नहीं करते तो सौन्दर्य तुम्हारी कला में भी तुमसे छल करेगा। अगर एक सुन्दर दृश्य या सुन्दर संगीत तुम्हारे हृदय को प्रभावित नहीं करता है—मेरा मतलब है कि अगर तुम उसके प्रति आकर्षित नहीं होते हो······"

"ओह, आकर्षित होने वाले," शुबिन अपने इस नये शब्द पर ठहाका लगाकर हँस पड़ा; मगर बरसिएनेव गम्भीर रहा।

"नहीं, मेरे दोस्त," शुबिन ने कहना जारी रखा, "तुम चतुर हो, दार्शनिक हो, मास्को युनिवर्सिटी के तीसरे स्नातक हो, और तुमसे बहस करने में बड़ा डर लगता है, विशेष रूप से मुझ जैसे अर्द्ध-शिक्षित विद्यार्थी को तो और भी ज्यादा डर लगता है। मगर मैं तुम्हें यह बता दूँ कि अपनी कला के अतिरिक्त मैं स्त्रियों के, नवयुवती स्त्रियों के सौन्दर्य से प्रेम करता हूँ—और वह भी अभी कुछ ही दिनों से करने लगा हूँ।"

उसने करवट बदली और पीठ के बल लेट कर दोनों हाथ सिर के नीचे रख लिए। कुछ देर तक कोई भी नहीं बोला। मध्याह्न की उदास

नीरवता उनींदी और धूप से चमकती धरती पर एक भार सा डालती प्रतीत हो रही थी।

"स्त्रियों के ही कथनानुसार," शुबिन ने फिर कहना शुरू किया, "स्ताहोव को कोई काबू में क्यों नहीं कर लेता? तुमने उसे मास्को में देखा था?"

"नहीं।"

"बुड्ढा बिल्कुल पागल सा हो गया है। सारे दिन वह अपनी एवगुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना के यहाँ चक्कर काटता रहता है। हालांकि बुरी तरह ऊब उठता है मगर फिर भी वहीं जाकर बैठता है। वे दोनों एक दूसरे की तरफ बेवकूफों की तरह देखते रहते हैं। सचमुच उन्हें देखकर जी मिचलाने लगता है। जरा सोचो तो सही—भगवान की दया से उस आदमी को कितना सुन्दर परिवार मिला है—मगर नहीं, उसे तो एवगुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना के बिना चैन ही नहीं पड़ता। मैंने उस औरत के बत्तख जैसे चेहरे से ज्यादा बदसूरत और कोई भी चीज नहीं देखी है। उस दिन मैंने डान्टन-पद्धति पर उसकी एक व्यंग्य-मूर्त्ति बनाई थी। वह बुरी नहीं बनी थी। तुम्हें दिखाऊँगा।"

"और एलेना निकोलाएव्ना की ऊपरी धड़ वाली मूर्त्ति," बरसिएनेव ने पूछा, "उसे पूरा कर रहे हो?"

"नहीं, मेरे दोस्त, उसे नहीं बना रहा हूँ। वह चेहरा तो साहस भंग कर देता है। उसे देखो तो सही: स्पष्ट रेखायें, कठोर और सीधी—तुम सोचोगे कि उसकी ठीक प्रतिमूर्त्ति बना लोगे। मगर ऐसा नहीं हो पाता—जादू के सोने की तरह वह तुम्हारी उंगलियों में से फिसल जाती है। तुमने गौर किया है कि वह तुम्हारी बातों को किस तरह सुनती है? उसके चेहरे के किसी भी हिस्से में कोई भी हरकत नहीं दिखाई पड़ती। सिर्फ उसकी आँखों के भाव बदलते रहते हैं और उन्हीं से उसका पूरा चेहरा बदल जाता है। आखिर एक मूर्त्ति बनाने वाला क्या करे और वह भी जब अनाड़ी हो? वह तो एक बड़ी विचित्र सी लड़की है······अजीब सी," उसने थोड़ा रुक कर आगे कहा।

"हाँ, वह एक विचित्र लड़की है," बरसिएनेव ने उसी की बात को दुहराया।

"और निकोलाय आर्तियोमेविच स्ताहोव की लड़की! उसे देखो और फिर रक्त और वंश की बातें करो। और मजेदार बात तो यह है कि वह फिर भी उसी की लड़की है, उसी की तरह दिखाई पड़ती है और अपनी माँ अन्ना वासिलिएव्ना से भी काफी मिलती-जुलती है। मैं अन्ना वासिलिएव्ना का सच्चे हृदय से सम्मान करता हूँ। दरअसल वह मेरी संरक्षिका रह चुकी है—मगर सचमुच है मुर्गी। फिर एलेना को ऐसी आत्मा कहाँ से मिली? उसमें यह तीव्रता किसने उत्पन्न की? दार्शनिक महोदय! यह तुम्हारे लिए एक और समस्या है।

मगर पहले की ही तरह 'दार्शनिक' ने कोई उत्तर नहीं दिया। बरसिएनेव साधारणतः अधिक बातें नहीं करता था और जब बोलता था तो बड़े भद्दे ढंग से रुक-रुक कर और बेकार हाथ फटकारते हुए अपनी बात कह पाता था। और इस समय उसकी आत्मा में एक विचित्र सी शान्ति भर उठी थी, एक ऐसी शान्ति जो क्लान्ति और उदासीनता जैसी होती है। वह अभी कुछ दिन पहले ही शहर छोड़ कर यहाँ आया था। शहर में उसे बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता था। वह अपने काम में प्रतिदिन घण्टों लगा रहता था। अब, आलस्य, स्वच्छ निर्मल वायु, कार्यसिद्धि से उत्पन्न सन्तोष, अपने मित्र के साथ कभी-कभी सिड़ियों की सी बातें करना, अकस्मात एक आकर्षक मूर्त्ति का जीवन में उदय हो उठना, इन सब विभिन्न परन्तु फिर भी कुछ सीमा तक समान से प्रभावों ने उसमें एक उत्तेजना सी उत्पन्न कर दी थी जो उसे शान्ति देती थी, व्याकुल बनाती थी और उसमें निर्बलता के भाव उत्पन्न कर देती थी······वह बहुत भावुक प्रकृति का व्यक्ति था।

नीबू के पेड़ के नीचे ठंडक और एकान्त था। उसकी छाया में शहद की मक्खियों और घेरा बाँध कर उड़ती हुई दूसरे प्रकार की मक्खियों की भनभनाहट बहुत हल्की मालूम पड़ती थी। सूर्य की सुनहली धूप से दूर गहरे

हरे रंग की घास के निर्मल और कोमल पत्ते शान्त खड़े थे। सारे डंठल इस तरह निस्तब्ध खड़े थे मानों उन पर जादू कर दिया गया हो। पेड़ की नीची टहनियों में पीले, निर्जीव फूलों के छोटे-छोटे गुच्छे लटक रहे थे। हर सांस के साथ ऐसा लगता था कि एक मीठी गन्ध बरबस फेफड़ों में घुसी जा रही है और फेफड़े उसे पी रहे हैं। दूर, नदी पार, क्षितिज के पास प्रत्येक वस्तु चमक रही थी। कभी-कभी हवा का एक झोंका वहाँ हलचल मचा उस चमक को भंग कर और भी गहरा बना देता था। वह उज्ज्वल आभा धरती के ऊपर और भी तीव्र हो उठती थी। पक्षियों का कलरव शान्त था; वे दिन की गर्मी में नहीं गाया करते। मगर झींगुर चारों तरफ झनकार रहे थे और उस ठंडी छाया में शान्ति के साथ बैठ कर उस जीवन के उत्तेजित संगीत को सुनना बड़ा भला मालूम पड़ता था। यह संगीत मन में आलस्य उत्पन्न कर व्यक्ति को स्वप्नों के संसार में ले जाता था।

"तुमने गौर किया है," एकाएक हाव भावों की सहायता से शब्दों का उच्चारण करते हुए बरसिएनेव ने कहना शुरू किया, "कि प्रकृति हमारे मन में कैसी विचित्र भावनायें उत्पन्न कर देती है? प्रकृति में हर चीज कितनी पूर्ण है, कितनी स्पष्ट है—अभिप्राय यह कि कितनी आत्म-तुष्ट है—और हम उन सब चीजों को पसन्द करते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं; परन्तु फिर भी—कम से कम मेरे हृदय में—प्रकृति सदैव एक बेचैनी की, चिन्ता की और यहाँ तक कि एक दुख की गहरी भावना उत्पन्न कर देती है। इस सब का क्या अर्थ है? या तो यह बात है कि जब हम प्रकृति को अपने सामने देखते हैं तो अपनी अपूर्णताओं और अपनी अस्पष्टताओं के प्रति अधिक सजग हो उठते हैं, या हम में उस एकरूपता का अभाव है जिससे प्रकृति सन्तुष्ट होती है—या यह बात हो सकती है कि वह चीज—मेरा मतलब है कि वह चीज जो हम चाहते हैं, प्रकृति में हमें नहीं मिलती।"

"हुँ," शुबिन ने उत्तर दिया, "एन्द्री पेत्रोविच, मैं तुम्हें इस सब का कारण बताऊँगा। जो सब तुम बता रहे थे वह एक एकाकी व्यक्ति की

प्रत्यक्ष चेतना का ज्ञान है जो सचमुच जीना नहीं जानता परन्तु केवल चारों तरफ देखता है और अपनी भावनाओं से आन्दोलित हो उठता है। देखने से क्या लाभ ? जीयो और मनुष्य बनो। चाहे तुम कितनी ही बार प्रकृति का दरवाज खटखटाओ, वह तुम्हें ऐसे शब्दों में उत्तर नहीं देगी जिन्हें कि तुम समझ सको, क्योंकि प्रकृति गूँगी है। उसमें कम्पन उत्पन्न होगा और वह वीणा के तार की तरह कराह उठेगी, परन्तु तुम्हें उससे किसी संगीत की आशा नहीं करनी चाहिए। तुम्हारी भावनाओं का उत्तर तो केवल कोई जीवित प्राणी ही दे सकेगा और वह भी केवल एक नारी। इसलिए, प्रिय महोदय, मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप अपने लिए कोई ऐसा साथी ढूँढ़ लें जो जिन्दादिल हो, ऐसा करने पर आपका सम्पूर्ण विषाद नष्ट हो जायेगा। हमें, तुम्हारे ही शब्दों में इसी की 'आवश्यकता' है। तुम जानते हो कि यह व्याकुलता, यह विषाद, दरअसल एक तरह की भूख है। भूख की तृप्ति के लिए उचित पदार्थ प्राप्त करने चाहिए और फिर सब अपने आप ठीक हो जायेगा। दोस्त, संसार में शरीरधारी प्राणी की तरह रहो। और यह 'प्रकृति' ? यह क्या है, किसलिए है ? स्वयं ही देख लो : प्रेम······कितना सशक्त और प्रेरक शब्द है ! प्रकृति······ कितना शिथिल और आडम्बरपूर्ण है। इसलिए मैं कहता हूँ (शुबिन ने लय के साथ कहा) "यहाँ मार्या पेत्रोव्ना है······और हो सकता है कि वह न हो"—उसने कहा, "मार्या पेत्रोव्ना न हो, तो भी कोई बात नहीं। तुम मेरा मतलब समझते हो।"

बरसिएनेव उठा और अपनी हथेलियों पर ठोढ़ी रख कर बैठ गया।

"तुम व्यंग्य क्यों करते हो ?" उसने अपने मित्र की तरफ न देखते हुए कहा। "मजाक करने से क्या लाभ ? हाँ, तुम ठीक कहते हो। प्रेम एक महान शब्द है, एक महान भावना है······लेकिन तुम किस प्रकार के प्रेम के विषय में कह रहे हो ?"

शुबिन भी उठकर बैठ गया।

"किस तरह का प्रेम ? अगर वह प्रेम ही है तो जैसा भी तुम चाहो।

जहाँ तक कि मेरा सम्बन्ध है मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मेरे लिए प्रेम अनेक तरह के नहीं होते। अगर तुम प्रेम करने लगते हो......"

"अपनी सम्पूर्ण आत्मा के साथ," बरसिगनेव ने टोक कर कहा।

"हाँ, दरअसल, यह तो बिना कहे ही स्पष्ट है। तुम्हारी आत्मा सेब की तरह तो है नहीं, कि जिसे तुम टुकड़ों में बांट सको। अगर तुम प्रेम में पड़ जाते हो तो पथभ्रष्ट नही हो सकते। मैं मजाक नही उड़ा रहा था। इस समय मेरी आत्मा इतनी कोमल हो उठी है कि मैं अपने को बड़ा कोमल अनुभव कर रहा हूं। मैं सिर्फ यह बताना चाह रहा था कि तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि प्रकृति हमारे ऊपर इस तरह का प्रभाव डालती है। ऐसा इसलिये होता है कि यह हृदय में प्रेम की भावना उत्पन्न कर देती है परन्तु इसमें उस भाव को सन्तुष्ट करने की शक्ति नहीं होती। यह हमें स्नेह पूर्वक धीरे से स्वागत के लिए फैले हुए आलिंगन की तरह बढ़ावा देती है परन्तु हम इस बात को पहचान नहीं पाते और स्वयं प्रकृति से ही उसकी तृप्ति की आकांक्षा करने लगते हैं। ओह, एन्द्री, एन्द्री, यह झून कितनी सुन्दर है, और वह आसमान भी ऐसा ही है। हमारे चारों तरफ फैली हुई प्रत्येक वस्तु कितनी सुन्दर है और फिर भी तुम दुखी हो रहे हो। परन्तु यदि इस समय तुम एक ऐसी स्त्री का हाथ पकड़े होते जिससे तुम्हें प्रेम होता, अगर वह हाथ और उसका सब कुछ तुम्हारा होता, अगर तुम सिर्फ उसी की आँखों से देखते और अनुभव करते, न कि अपनी इस एकाकी भावना से देखते बल्कि उसकी भावना से देखते—तो, एन्द्री तुम्हें वह दुख और बेचैनी न होती जो प्रकृति तुम्हारे हृदय में उत्पन्न कर देती है, तुम उसके सौंदर्य के विषय में सोचने के लिए नही रुकते; नहीं, तुम देखते कि प्रकृति स्वयं मस्त होकर गा रही है, वह तुम्हारी भावनाओं को ही दुहरा रही है—क्यों कि उस समय तुमने प्रकृति को, मूक प्रकृति को बोलने की शक्ति दे दी होती।"

शुबिन उछल कर खड़ा हो गया और एक या दो बार इधर से

उधर घूमा । बरसिएनेव ने सिर नीचे झुका लिया। उसके चहरे पर हल्का सा रंग आ गया ।

"मैं तुमसे पूरी तरह सहमत नहीं हूँ", वह कहने लगा, "प्रकृति सदैव प्रेम की ही ओर संकेत नहीं करती (वह 'प्रेम' शब्द पर रुका) । "यह हमें धमकी भी देती है ; यह हमें भयानक—हाँ, अगम्य रहस्यों की याद दिलाती है। क्या यह प्रकृति ही नहीं है जो हमें खाये जा रही है क्या वह हमेशा हमें खाती ही नहीं रहती ? प्रकृति में जीवन और मृत्यु दोनों ही हैं, और मृत्यु का स्वर भी उतना ही सशक्त है जितना कि जीवन का।"

"प्रेम में जीवन और मृत्यु दोनों ही हैं," शुबिन ने टोकते हुए कहा।

"और फिर", बरसिएनेव कहता रहा, "उदाहरण के लिए, बसन्त ऋतु में जब मैं किसी जंगल में हूं, किसी घने जंगल में, और मुझे ऐसा लगता है कि मैं वनदेवी की वंशी की ध्वनि सुन रहा हूँ,"—बरसिएनेव यह कहते समय कुछ शर्मा सा गया—"क्या यह भी—"

"यह प्रेम की, आनन्द की प्यास है ; और कुछ भी नहीं है," शुबिन ने बीच में टोकते हुए कहा। "मैं भी उस ध्वनि को जानता हूं और मैं उस भावना को, कुछ अप्रत्याशित घटित होने की आशंका करने वाली उस भावना को जानता हूँ जो शाम को, जंगल के बीच घने पेड़ों की छाया में या बाहर खुले मैदान में हृदय पर छा जाती है जब सूरज डूब रहा है और घनी झाड़ियों के पार नदी में से कुहरा उठता चला आ रहा है। लेकिन मैं प्रसन्नता की अपेक्षा करता हूँ,—उस वन से, उस नदी से, उस धरती और आसमान से और प्रत्येक छोटे मेघखण्ड से और घास के पत्ते से, सबसे मैं प्रसन्नता मांगता हूँ। मुझे ऐसा लगता है मानो हर वस्तु के रूप में प्रसन्नता मेरे पास चली आ रही है। मैं उसकी पुकार को सुनता हूँ। "मेरा भगवान एक भव्य और आनन्दमय भगवान है।" एक बार मैंने इस तरह की एक कविता लिखनी प्रारम्भ की थी। तुम्हें यह मानना ही पड़ेगा कि यह पहली पंक्ति बड़ी सुन्दर है मगर आगे की पंक्ति मेरे दिमाग में ही नहीं आ

सकी । आनन्द ! आनन्द ! जब तक कि हम जीवित हैं, जब तक कि हमारे हाथ पैर चलते हैं, जब तक कि हम पहाड़ी पर चढ़ते चले जा रहे हैं और नीचे नही उतर रहे, आनन्द ही आनन्द है। इसका तिरस्कार क्यों किया जाये !" शुबिन एकाएक उत्तेजित होकर आगे कह उठा, "हम नौजवान हैं, हम राक्षस नहीं हैं, मूर्ख नही हैं : हम अपने लिये आनन्द को ढूंढ लेंगे।"

उसने अपने घुंघराले बालों वाला सिर हिलाया और आसमान की ओर आत्म-विश्वास के साथ, चुनौती सी देते हुए देखा।

बरसिएनेव ने उसकी तरफ निगाह उठा कर देखा ।

"क्या आनन्द से भी ऊँची और कोई चीज नहीं हो सकती ?" उसने शान्त भाव से कहा।

"जैसे ?" शुबिन ने पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा ।

"मिसाल के लिए, जैसा कि तुम कहते हो, हम और तुम जवान और तन्दुरुस्त हैं, कल्पना कर लो कि : हरेक अपने लिए आनन्द चाहता है......लेकिन यह शब्द 'आनन्द', क्या यह ऐसा शब्द है जो हमें एकता में आबद्ध कर देता है, हमें उत्तेजना देता है, हमें मित्र बनने के लिए बाध्य करता है ? क्या यह एक स्वार्थ से भरा शब्द नही है—मेरा अभिप्राय यह है कि एक ऐसा शब्द जो व्यक्तियो को एक दूसरे से अलग कर देता है ?"

"और क्या तुम कोई ऐसा शब्द जानते हो जो एकता उत्पन्न करता है ?

"हां, और उनकी कमी भी नहीं है; तुम भी उन्हें जानते हो।"

"अच्छा, तो वे कौन से हैं ?"

"कला—कुछ भी हो क्यों कि तुम एक कलाकार हो—फिर मातृ-भूमि, विज्ञान, स्वतन्त्रता, न्याय।"

"और प्रेम ?" शुबिन ने पूछा ।

"प्रेम भी एकता उत्पन्न करता है—लेकिन वह प्रेम नहीं जिसके लिये तुम इस समय व्याकुल हो रहे हो : आनन्द का प्रेम नहीं, त्याग का प्रेम।"

शुबिन की भौंहों में गाठें पड़ गईं।

"यह जर्मनों के लिए ही ठीक है : मगर मैं सबसे पहले अपने लिए चाहता हूँ।"

"सबसे पहले अपने लिए," बरसिएनेव ने दुहराया। जब कि मैं यह अनुभव करता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना संपूर्ण जीवन दूसरों के लिए लगाना चाहिए।"

"अगर प्रत्येक तुम्हारे कहे अनुसार ही चले," शुबिन ने प्रतिवाद में अपना चेहरा सिकोड़ते हुए कहा, "तो अनन्नास खाने के लिए कोई भी नहीं रहेगा—हरेक उन्हें किसी दूसरे के लिए छोड़ देगा।"

"इसका सिर्फ यही अर्थ निकलता है कि अनन्नास जीवन के लिए 'आवश्यक' वस्तुओं में से नहीं है। कुछ भी हो, तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं—हमेशा ऐसे व्यक्ति रहेंगे जिन्हें दूसरों के मुँह की रोटी छीनने में आनन्द आता है।"

दोनों मित्र कुछ देर खामोश रहे।

"उस दिन मेरी मुलाकात इन्सारोव से फिर हुई थी," बरसिएनेव ने कहना प्रारम्भ किया। "मैंने उससे यहाँ आने के लिए कहा था। मैं तुमसे उसकी मुलाकात करवाने का पक्का इरादा कर चुका हूँ...... और स्ताहोव परिवार से भी।"

"यह इन्सारोव कौन है ? ओह हाँ—वह सर्ब या बलगेरिया वाला जिसके विषय में तुम मुझे बता रहे थे ? वह देशभक्त ? क्या यह वही है जो तुम्हारे दिमाग में इन सारे दार्शनिक विचारों को भरता रहता है ?"

"हो सकता है ?"

"तब तो वह बड़ा मजेदार आदमी है ?"

"हाँ।"

"चतुर ? प्रतिभावान ?"

"चतुर ?......हां । प्रतिभावान ? मैं नही कह सकता, मेरा ऐसा ख्याल नहीं है ।"

"नही ? तो उसमें विशेषता ही क्या रही ?"

"तुम खुद ही देख लोगे । और अब मेरा ख्याल है कि चलने का समय हो गया । शायद अन्ना वासिलिएव्ना हम लोगों का इन्तजार कर रही होंगी । क्या बजा है ?"

"दो बज गये । चलो, चलें । कितनी गर्मी है । इस बातचीत ने मेरे खून में गर्मी पैदा करदी है । और एक वह क्षण था जब तुम......मैं वैसे ही कलाकार नही हूँ; हर चीज पर ध्यान देता हूँ। इस बात को स्वीकार करो : कि तुम किसी स्त्री के विषय में सोच रहे हो ?"

शुबिन अपने मित्र से आंखें मिलाकर देखना चाह रहा था मगर बरसिएनेव मुड़ गया और नीबू के पेड़ के नीचे होकर बाहर की तरफ चल दिया । शुबिन आराम के साथ कदम रखता हुआ उसके पीछे पीछे चलने लगा । वह अपने नन्हे पैरों को शान के साथ उठा रहा था। बरसिएनेव अपने कन्धे को ऊपर उचकाए और गर्दन आगे किए शिथिलता पूर्वक चल रहा था। यह सब होते हुए भी वह शुबिन की अपेक्षा अधिक सभ्य दिखाई पड़ रहा था—कहना चाहिए कि एक अधिक सम्भ्रान्त व्यक्ति के समान, अगर हम इस शब्द का गन्दा अर्थ न लगायें तो।

२

दोनों नौजवान मास्को नदी के पास आये और किनारे-किनारे चलने लगे। जल का स्पर्श करके ठंडी हवा बह रही थी और छोटी-छोटी लहरों की हल्की हलचल से एक मधुर संगीत की सी ध्वनि उठ रही थी।

"मैं नहाना चाहता हूं," शुबिन ने कहा, "मगर मुझे देर हो जाने का डर है। नदी को देखो; वह हमें बुलाती सी प्रतीत होती है। पुराने ग्रीक लोग इसे एक जलपरी के रूप में देखते थे, मगर हम लोग तो ग्रीक नहीं हैं, ओ जलपरी! हम लोग तो मूर्ख सीथियन हैं।"

"हमारे यहां जल–पिशाच होते हैं," बरसिएनेव ने कहा।

"तुम अपने जज–पिशाचों को अपने पास रहने दो! उनका मेरे लिए—एक मूर्तिकार के लिए क्या उपयोग हो सकता है। वे एक भयप्रद और शीत से ठिठुरी हुई कल्पना की उपज हैं, ऐसे प्राणी जिनकी उत्पत्ति जाड़े की रात में किसान की संकरी झोंपड़ी में छाये अन्धकार से हुई है। मुझे प्रकाश और खुले विस्तृत स्थान की आवश्यकता है...... मेरे भगवान मैं इटली कब जा सकूंगा? कब......?"

"तुम्हारा मतलब यूक्रेन से है न?"

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए एन्द्री पेत्रोविच कि तुम मुझे एक अन-जान में की गई मूर्खता के लिए दोष देते हो—तुम्हारे बिना कहे ही मैं इस बात पर गहरा पश्चाताप कर चुका हूं। ठीक है, मैंने मूर्खों का सा काम किया था: अन्ना वासिलियेव्ना, सबसे कोमलनारी इटली जाने के लिये मुझे खर्चा देती है, और मैं यूक्रेन पहुँच जाता हूँ और वहां के निवासियों के बनाए पकौड़े उड़ाता हूँ और......"

"बात खत्म मत करो," बारसिएनेव ने टोका।

"कुछ भी हो, मैं यही कहूंगा कि वह पैसा बेकार ही नहीं उड़ाया गया था। मैंने वहाँ ऐसे ऐसे व्यक्ति देखे, विशेष रूप से औरतें...... मगर मैं पक्की तरह से जानता हूँ: इटली से बाहर और कहीं भी मुक्ति नहीं है।"

"तुम इटली जाओगे," बरसिएनेव ने उसकी तरफ बिना मुड़े कहा "और कुछ भी नहीं करोगे। तुम अपने पंख फड़फड़ाओगे मगर उड़ोगे नहीं, क्या हम लोग तुम्हें नहीं जानते?"

"स्तावेस्सर* ने उड़ान भरी थी और ऐसा करने वाला वही अकेला नहीं था। लेकिन यदि मैं उड़ान नहीं भरता तो इससे यह सिद्ध होता है कि मैं एक पेन्गुइन** हूं और मेरे पंख नहीं है। यहाँ मेरा दम घुटा जाता है। मैं इटली जाना चाहता हूँ," शुबिन कहता रहा, "वहां प्रकाश है और सौंदर्य है!"

इसी समय चौड़े किनारों वाला घास का टोप पहने और कन्धों पर धूप से बचने के लिए एक गुलाबी छायादार वस्त्र डाले एक लड़की उस पगडंडी पर प्रकट हुई जिस पर कि वे दोनों मित्र चल रहे थे।

"मगर मैं यह क्या देख रहा हूँ। सौन्दर्य हमसे मिलने यहाँ भी चला आ रहा है। एक विनम्र कलाकार सुन्दरी जोया का अभिवादन करता है!" अभिनय करने की सी मुद्रा में अपने टोप को छूता हुआ शुबिन एकाएक चिल्ला उठा।

वह लड़की जिसके लिए ये शब्द कहे गए थे रुक गई और उसकी तरफ धमकाती हुई उंगली दिखाने लगी। फिर उन दोनों मित्रों को अपने पास आने की आज्ञा देकर वह एक मधुर और हल्की सी भारी आवाज में बोली:

---

* पी० ए० स्तावेस्सर, तुर्गनेव का समकालीन मूर्त्तिकार।

** उत्तरीध्रुव की एक चिड़िया जिसके पंख होते हैं पर वह उड़ नहीं सकती।

"यह क्या बात है महाशयो, क्या भोजन के लिए नहीं चल रहे ? मेज तैयार है।"

"मैं यह क्या सुन रहा हूँ ?" शुबिन दोनों हाथ फटकारते हुए बोला, "क्या यह सम्भव हो सकता है कि सुन्दरी जोया ने ऐसी धूप में हमारी खोज में बाहर आने का संकल्प किया है ? क्या मैं तुम्हारी बात का यही अर्थ समझूँ ? बताओ, बता दो न—या नहीं, अच्छा हो कि तुम यह बात न कहो ; पश्चाताप से यहीं मेरा प्राणान्त हो जायेगा।"

"ओह, बकवास बन्द करो पावेल याकोव्लेविच," लड़की ने नाराजी के स्वर में कहा। "तुम मुझसे कभी भी गम्भीर होकर बातें क्यों नहीं करते ? मैं नाराज हो जाऊँगी," उसने बच्चों की तरह नखरे करते हुए कहा।

"तुम मुझसे नाराज नहीं होओगी, जोया निकितिश्ना, मेरी आदर्श—तुम नहीं चाहोगी कि मुझे पूरी तरह से निराशा के अँधेरे गढ़े में फेंक दिया जाय। लेकिन जहाँ तक कि गम्भीर होकर बातें करने का सवाल है, यह मेरे बस का नहीं, क्योंकि मैं गम्भीर स्वभाव वाला नहीं हूँ।"

लड़की ने कन्धे उचकाये और बरसिएनेव की तरफ मुड़ गई।

"यह हमेशा इसी तरह बातें करते हैं : मुझे बच्चा समझते हैं और जब कि मैं पूरी अठारह साल की हो चुकी हूँ। अब मैं बड़ी हो गई हूँ।"

"ओह भगवान !" ऊपर की तरफ आँखें नचाता हुआ शुबिन कराहा।

बरसिएनेव चुपचाप मुस्करा दिया।

लड़की ने पैर पटके।

"पावेल याकोव्लेविच ! मैं नाराज हो जाऊँगी······एलेना भी आ रही थी," वह कहती रही, "मगर बाग में रुक गई। वह गर्मी से भयभीत हो उठी थी मगर मुझे गर्मी से कोई डर नहीं लगता। चलो, चलें।"

वह पगडण्डी पर चलने लगी। चलते समय हर कदम पर उसका छरहरा शरीर तनिक सा बल खा उठता था और वह काले दस्ताने वाले अपने

२

नन्हें से हाथ से सुडौल चेहरे पर पड़े हुए लम्बे कोमल वालों के सुन्दर गुच्छों को हटाती जा रही थी।

दोनों मित्र उसके पीछे-पीछे चलने लगे। शुबिन कभी चुपचाप अपने हाथों से अपने सीने को दबा लेता था और कभी मूक प्रशंसा की भावना में दोनों हाथों को अपने सिर के ऊपर उठा लेता था। कुछ देर बाद वे लोग काएक कुन्तसोवो के चारों तरफ फैले हुए बंगलों में से एक के सामने आ निकले। यह एक काठ का बना छोटा सा घर था जो छोटी गढ़ी की तरह बना हुआ था तथा जिस पर गुलाबी रंग हो रहा था। यह बाग के बीच में बना था और पेड़ों की हरियाली के पीछे से बड़ी कोमल सी मुद्रा में झांकता हुआ सा लग रहा था। ज़ोया ने आगे बढ़ कर फाटक खोला और बाग में भाग गई: "मैं घुमक्कड़ों को घर ले आई हूँ," उसने चीखते हुए कहा। एक पीले भावपूर्ण चेहरे वाली लड़की पगडन्डी के पास पड़ी एक बेंच पर से उठ खड़ी हुई। फिर दरवाजे पर एक अधेड़ स्त्री दिखाई पड़ी। वह एक चटकीली गुलाबी रंग की रेशमी पोशाक पहने हुए थी और उसने धूप से बचने के लिए एक कढ़ा हुआ केम्ब्रिक का बड़ा रूमाल सिर पर डाल रखा था। उसने उनकी तरफ एक आलस्य से भरी क्लान्त मुस्कराहट के साथ देखा।

३

अन्ना वासिलिएव्ना स्ताहोव, जिसका कुंवारेपन का नाम शुबिन था, सात साल की अवस्था में अनाथ हो गई थी परन्तु एक अच्छी खासी जायदाद की उत्तराधिकारिणी बनी। उसके पिता के घरवाले बहुत गरीब थे मगर ननसाल काफी अमीर थी। उसकी ननसाल वालों में सिनेटर वोल्गिन और प्रिंसेज चिकुरासोव जैसे व्यक्ति थे। प्रिंस एड्रालिथोन चिकुरासोव ने, जो उसका संरक्षक बना था, उसे पढ़ाने के लिए मास्को के एक

सबसे अच्छे स्कूल के छात्रावास में रखा और जब वह शिक्षा समाप्त कर चुकी तो उसे अपने ही घर में शरण दी। वह खूब आमोद प्रमोद मनाता था और जाड़ों में नृत्य-समारोहों का आयोजन किया करता था। अन्ना के भावी पति निकोलाय आर्तियोमेविच स्ताहोव ने ऐसे ही एक अवसर पर उसका प्रेमी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया था। इस अवसर पर अन्ना 'एक आकर्षक गुलाबी गाऊन और नन्हे गुलाब के फूलों की बनी टोपी' पहने हुई थी। अन्ना ने उस टोपी को सुरक्षित रख लिया था।

निकोलाय आर्तियोमेविच स्ताहोव एक अवकाश प्राप्त कप्तान का पुत्र था जो सन् १८१२ में घायल हो गया था और फिर उसे सन्तपीतर्स वर्ग में एक अच्छा पद मिल गया था। निकोलाय सोलह वर्ष की अवस्था में एक फौजी–स्कूल में दाखिल हुआ था और बाद में 'गार्ड्स' रेजीमेंट में चला गया था। वह एक सुन्दर और सुगठित शरीरवाला युवक था और मध्यम वर्गीय नृत्य-समारोहों में, जिनमें कि वह प्रायः भाग लिया करता था, उसकी ख्याति प्रायः सबसे सुन्दर नृत्य-सहयोगी के रूप में थी। उच्च वर्गीय समाज में उसकी पैठ नहीं थी। अपनी जवानी में वह सदैव दो स्वप्न देखा करता था: उन्नति करते-करते ए० डी० सी० बन जाना और सुन्दर शादी करना। उसकी पहली महत्वाकांक्षा शीघ्र ही समाप्त हो गई परन्तु वह दूसरी से और भी दृढ़ता के साथ चिपका रहा क्योंकि वह हर बार जाड़ों में मास्को जाया करता था। वह फ्रांसीसी भाषा थोड़ी बहुत बोल लेता था और क्योंकि वह गंदी सोहबत में नहीं रहता था इसलिए उसकी प्रसिद्धि एक दार्शनिक के रूप में थी। उस समय भी, जब कि वह एक साधारण अफसर था, वह अधिकार के साथ ऐसे विषयों पर विवाद किया करता था जैसे कि क्या अपने पूरे जीवन काल में संसार के प्रत्येक भाग को देखना सम्भव है या यह जानना कि समुद्र की तलहटी में क्या हो रहा है? और वह हमेशा इस बात पर जोर देता था कि यह सम्भव नहीं।

स्ताहोव पच्चीस वर्ष का था जब उसने अन्ना वासिलिएव्ना पर अपना अधिकार जमाया था। फिर उसने नौकरी से अवकाश ग्रहण कर लिया था और देहात में अपनी जमींदारी की देखभाल करने के लिए वहीं रहने चला गया। उसके सारे खेत लगान पर उठे हुए थे न कि बदले में सेवा कराने के अधिकार पर इसलिये वह जल्दी ही देहात की जिंदगी से ऊब उठा और मास्को में अपनी पत्नी के मकान में आकर रहने लगा। अपनी जवानी में उसने कभी भी जुआ नहीं खेला था मगर अब उसके मन में 'लोट्टो' नामक एक प्रकार के जुए के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो उठा और जब 'लोट्टो' पर प्रतिबन्ध लगा तो वह 'ह्विस्ट' नामक खेल खेलने लगा। घर पर वह ऊब उठता था। इसलिए उसने जर्मन जाति की एक विधवा से अपनी सांठ गांठ भिड़ा ली और लगभग पूरा समय उसी के साथ बिताने लगा। १८५३ की गर्मियों में वह कुन्तसोवो न जाकर मास्को में ही रह गया। ऊपर से उसने यह दिखाया कि वह पानी की वजह से नहीं जा रहा परन्तु असलियत यह थी कि वह अपनी उस विधवा से नहीं बिछुड़ना चाहता था। तो भी, उस विधवा के साथ भी वह बहुत कम बात करता था मगर हमेशा की तरह उससे प्रायः यह बहस किया करता था कि तुम मौसम के विषय में भविष्यवाणी कर सकती हो, आदि आदि।

एक बार किसी ने उसे शक्की और नुक्ताचीनी करने वाला कह दिया था और इस बात से वह बड़ा प्रसन्न हुआ था। "हाँ," उसने आत्म-सन्तुष्ट होकर, मुँह को कोनों पर लटकाते और इधर उधर झूमते हुए सोचा, "मै आसानी से ही सन्तुष्ट नहीं होता; मुझे बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता।" निकोलाय की 'नुक्ताचीनी' मिसाल के लिए सिर्फ 'नस' शब्द और यह प्रश्न करने तक ही सीमित थी, कि "कितनी नसें हो सकती है"—या अगर कोई ज्योतिषशास्त्र की सफलताओं के विषय में बताता तो वह पूछ उठता—"तो तुम ज्योतिष में विश्वास करते हो।"—मगर जब उसके मन में अपने प्रतिद्वन्द्वी को पूरी तरह चकित कर

देने की इच्छा उठती थी तो कहता था, "यह सब कहने भर की बातें हैं।" यह सत्य है कि बहुत से व्यक्तियों के लिए, इस तरह का प्रत्युत्तर पहिले भी और अब भी ऐसा होता है कि जिसका उत्तर ही नहीं दिया जा सकता। परन्तु निकोलाय आर्तियोमेविच को इस बात का कभी सन्देह तक नहीं हुआ कि एवगुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना अपनी चचेरी बहन फेदोलिन्दा पीतरजेलियस को पत्र लिखते समय निकोलाय के विषय में 'मेरा भोला' शब्द का प्रयोग करती थी।

उसकी पत्नी अन्ना वासिलिएव्ना एक छोटे कद की ,दुबली पतली स्त्री थी। उसकी शारीरिक बनावट कोमल थी। वह अत्यधिक भावुक थी और प्रायः उदास हो जाया करती थी। स्कूल में उसने संगीत सीखा था और उपन्यास पढ़े थे—फिर सब कुछ छोड़ दिया था और पोशाकों में रुचि लेनी प्रारम्भ करदी थी और बाद में उसे भी छोड़ दिया था। उसने अपनी लड़की की शिक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया था परन्तु यह काम उसे बहुत कठिन लगा और उसने लड़की को एक गवर्नेस के सिपुर्द कर दिया। और अन्त में उसने सारे काम छोड़ दिए और दुखी रहने लगी तथा अपनी भावनाओं के सम्मुख पूरी तरह आत्म-समर्पण कर दिया। एलेना निकोलाएव्ना के जन्म ने उसके स्वास्थ्य को चौपट कर दिया था और उसके फिर कोई दूसरी सन्तान न हो सकी। निकोलाय आर्तियोमेविच इसी बात की तरफ संकेत कर एवगुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना के साथ अपनी मित्रता को न्याय-संगत सिद्ध किया करता था। अपने पति के इस विश्वासघात से वह बड़ी दुखी रहती थी। जब उसके पति ने उस जर्मन स्त्री को अन्ना के अपने अस्तबल में से भूरे घोड़ों का एक जोड़ा उससे चुरा कर चुपचाप दे दिया था तो अन्ना को इस बात से विशेष रूप से प्राणान्तक वेदना हुई थी। वह उसके मुँह पर कभी भी उसकी शिकायत नहीं करती थी परन्तु चुपचाप घर के प्रत्येक प्राणी से, यहां तक कि अपनी बेटी से भी, एक एक कर उसकी शिकायत किया करती थी। अन्ना वासिलिएव्ना घर के बाहर

जाना पसन्द नहीं करती थी, मगर कोई मेहमान आ जाता था तो उसके साथ बैठकर बातें करना उसे बहुत अच्छा लगता था। अकेली रह जाने पर वह तुरन्त कराहने लगती थी। वह एक स्नेहमयी कोमल हृदय वाली स्त्री थी और जिन्दगी ने उसे बहुत जल्दी ही कुचल डाला था।

पावेल याकोव्लेविच उसके एक दूर के रिश्तेदार का पुत्र था। उसका बाप मास्को में सरकारी नौकर रहा था। पावेल के भाई सेना में भर्ती हो गए थे, मगर वह सबसे छोटा और अपनी माँ का ज्यादा लाड़ला था। उसका शरीर बड़ा कोमल था इसलिए वह घर पर ही रहा। वह विश्वविद्यालय में शिक्षा पाने योग्य था परन्तु मुश्किल से हाई-स्कूल तक ही शिक्षा प्राप्त कर सका। बचपन से ही उसका झुकाव मूर्तिकला की तरफ था। मोटे सिनेटर वोल्गिन ने एक बार उसकी बुआ के यहाँ उसकी बनाई एक मूर्त्ति देखकर (उस समय शुबिन सोलह वर्ष का था) घोषणा की थी कि वह इस प्रतिभाशाली युवक का संरक्षक बनने का इरादा रखता है। शुबिन के पिता की अकस्मात हो जाने वाली मृत्यु ने इस युवक का सम्पूर्ण भविष्य ही बदल दिया। उस सिनेटर ने, प्रतिभा के उस संरक्षक ने, प्लास्टर की बनी होमर की एक मूर्त्ति भेंट की—और बस उसका संरक्षण यही तक सीमित रह गया। परन्तु अन्ना वासिलिएव्ना ने धन से उसकी सहायता की और उन्नीस वर्ष की अवस्था में वह डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय में दाखिल होने में सफल हो गया। पावेल की डाक्टरी की तरफ जरा भी रुचि नहीं थी, मगर उस समय इसी विभाग में स्थान रिक्त थे इसलिए और किसी भी विषय में दाखिला लेना असम्भव था। साथ ही वह शरीर रचना शास्त्र का भी थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त करने की आशा कर रहा था। परन्तु वह भी नहीं सीख सका। दूसरी साल के लिए बिना ठहरे या परीक्षा की बिना प्रतीक्षा किए उसने विश्वविद्यालय छोड़ दिया जिससे कि वह अपना पूरा समय अपने काम में लगा सके। उसने बहुत अधिक काम किया मगर सिर्फ सनक उठने या मूड आ जाने पर ही। वह मास्को

के आस-पास किसान लड़कियों के चित्र और मूर्त्तियाँ बनाता घूमता रहा। वह हर तरह के व्यक्तियों से घुलमिल कर मिला—नौजवानों से और नीची श्रेणी वालों से, इतालवी मूर्त्तिकारों से और रूसी चित्रकारों से। वह आर्ट स्कूल की बात को कोई महत्व नहीं देता था और न किसी को मास्टर मानता था। इसमें सन्देह नहीं कि उसमें प्रतिभा थी इसलिए मास्को में उसकी प्रसिद्धि फैलने लगी। उसकी माँ जो एक कोमल स्वभाव वाली, पेरिस में उत्पन्न और एक सम्भ्रान्त परिवार की चतुर स्त्री थी, उस पर गर्व करने लगी। उसने उसे फ्रांसीसी भाषा बोलना सिखाया और रात दिन उसी की देखभाल और उसी की बातें करने में व्यस्त रहने लगी। लेकिन वह क्षयरोग के कारण अपेक्षाकृत कम अवस्था में ही मर गई। उस समय पावेल इक्कीस वर्ष का था। मरते समय उसने अन्ना वासिलिएव्ना को इस बात के लिए राजी कर लिया था वह उसके बाद पावेल की देखभाल करेगी। अन्ना वासिलिएव्ना ने उसकी अन्तिम इच्छा को पूरा किया था। इस समय शुबिन उसी बंगले में एक कमरे में रहता था।

४

"चलो, खाना खाने चलो," गृह-स्वामिनी ने दीन स्वर में कहा और सब भोजन-कक्ष की तरफ चल दिए। "मेरी बगल में बैठो, जोया," अन्ना वासिलिएव्ना ने कहा, "और एलेना तुम मेहमानों का ख्याल रखो...... और पावेल, तुम तमीज के साथ रहो और जोया को परेशान मत करो। आज मेरे सिर में दर्द है।"

शुबिन ने फिर ऊपर की तरफ आँखें नचाईं; जोया ने अर्द्ध-मुस्कान के साथ उसका उत्तर दिया।

यह जोया, या अधिक ठीक तरह से कहा जाय तो जोया निकितिश्ना म्यूलर, एक गोरी और भरे शरीर वाली सुन्दर रूसी-जर्मन लड़की थी।

उसकी आँख हल्की सी फिरती थी ; नाक की नोक पर एक छोटा सा गड्ढा था और होठ नन्हे-नन्हे, पतले और लाल थे। वह रूसी गाना बहुत अच्छी तरह गा लेती थी और पियानो पर कई तरह के सुन्दर और मधुर राग पूर्ण चतुराई के साथ बजा लेती थी। सुरुचि के साथ पोशाक पहनती थी मगर उसमें थोड़ा सा बचकानापन और अत्यधिक स्वच्छता रहती थी। अन्ना वासिलिएव्ना ने उसे अपनी लड़की की सखी के रूप में नौकर रखा था, और फिर उसे लगभग पूरे समय अपनी ही सेवा में रखने लगी थी। एलेना ने इस बात की कभी शिकायत नही की थी और जब वे दोनों अकेली रह जाती थी तो उसकी यही समझ में नही आता था कि जोया से क्या बातें करे।

भोजन कुछ समय तक चलता रहा। बरसिएनेव ने एलेना से विश्व-विद्यालय के जीवन और अपनी आशाओ और इच्छाओं के विषय में बाते की। शुबिन चुपचाप सुनता रहा, पूरे उत्साह के साथ खाता रहा और कभी-कभी जोया की तरफ मजाक से भरी निराशापूर्ण दृष्टि से देखता रहा और जोया बिना चूके उसी मन्द मुस्कान के साथ उसे उत्तर देती रही। भोजन के उपरान्त एलेना बरसिएनेव और शुबिन के साथ बाग में चली गई। जोया ने उन्हे जाते हुए गौर से देखा और फिर तनिक से कन्धे उचका कर पियानो पर जा बैठी।

"तुम भी घूमने के लिए क्यो नही जाती ?" वासिलिएव्ना ने उससे पूछा—और उत्तर की बिना प्रतीक्षा किए आगे कहा, "मुझे कुछ बजा कर सुनाओ, कोई दुखद सा गाना······"

" 'वेबर के अन्तिम विचार' बजाऊँ" जोया ने पूछा।

"हाँ, वेबर ही सुनाओ," एक आराम कुर्सी पर बैठते हुए अन्ना वासिलिएव्ना ने कहा और उसकी पलको पर आँसू चमकने लगे।

इस बीच एलेना दोनों मित्रों को बबूल के वृक्षों के एक कुञ्ज में ले गई। वहाँ बीच में एक मेज पड़ी थी जिसके चारों तरफ बेंचें रखी

हुई थीं। एकाएक शुबिन ने पीछे की तरफ देखा, कई बार ऊपर की ओर उछला और धीरे से यह कहते हुए कि 'इन्तजार करो' अपने कमरे की तरफ भाग गया। फिर चिकनी मिट्टी का एक लौंदा लिए लौटा और सिर हिलाता, बुदबुदाता और चटकारी भरता हुआ जोया की मूर्त्ति बनाने लगा।

"वही पुराना खेल," उसके कार्य की तरफ देखते हुए एलेना ने कहा। फिर वह भोजन के समय प्रारम्भ किए गए वार्तालाप को पुनः जारी करने के लिए बरसिएनेव की तरफ मुड़ गई।

"पुराना खेल!" शुबिन ने दुहराया, "यह विषय तो अनन्त है। उसने आज मुझे और दिनों से भी कई बार ज्यादा परेशान किया था।"

"ऐसा क्यों ?" एलेना ने पूछा, "कोई भी यह सोचेगा कि तुम किसी गन्दी, द्वेषी बुढ़िया के विषय में बातें कर रहे हो। वह तो एक सुन्दर नवयुवती है......"

"बेशक," शुबिन ने टोका, "मैं जानता हूँ कि वह सुन्दर है—बहुत सुन्दर है। मुझे यकीन है कि कोई भी रास्ता चलने वाला उसे देखकर यही सोचेगा कि : "इसके साथ पोल्का नृत्य नाचने में बड़ा मजा आयेगा।" और मुझे इस बात का भी विश्वास है कि वह इस बात को जानती है और पसन्द करती है—नहीं तो ये सब शरमीले हावभाव और यह विनम्रता क्यों दिखाई जाती है ? तुम मेरा मतलब समझीं," उसने तिरस्कार से आगे कहा—"खैर, इस समय तो तुम अन्य बातों में व्यस्त हो।"

और जोया की उस मूर्त्ति को तोड़कर उसने इस तरह, मानो गुस्से में हो, उसे तेजी से गूंधना और संवारना शुरू कर दिया।

"तो आप प्रोफेसर होना पसन्द करेंगे ?" एलेना ने बरसिएनेव से पूछा।

"हाँ," बरसिएनेव ने अपने लाल हाथों को घुटनों के बीच दबाते हुए उत्तर दिया, "यह मेरा सबसे प्यारा स्वप्न है। परन्तु मैं अपनी उन

कमजोरियों को भी भली प्रकार जानता हूँ जो मुझे इस महान् पद के अयोग्य बनाती हैं......मेरा मतलब है कि मै ठीक तरह से तैयार नहीं हूँ। मगर आशा है कि मुझे विदेश जाने की आज्ञा मिल जायेगी। अगर जरूरत हुई तो मैं वहाँ तीन या चार साल रहूँगा और तब......"

वह चुप हो गया, नीचे की तरफ देखा, फिर तेजी से अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए भद्दे ढंग से मुस्कराया और बालों पर हाथ फेरा। बरसिएनेव जब किसी स्त्री से बातें करता था तो और भी अधिक धीमे बोलता था तथा उसका तुतलाना बढ़ जाता था।

"आप इतिहास के प्रोफेसर बनना चाहते हैं?" एलेना ने पूछा।

"हाँ, या फिर दर्शन का," अपनी आवाज को धीमा करते हुए वह बोला, "यदि ऐसा सम्भव हो सका तो।"

"दर्शन शास्त्र में तो यह पहले से ही शैतान की तरह माहिर है," शुबिन ने मिट्टी में अपने नाखून से गहरी रेखायें बनाते हुए कहा। "यह विदेश किस लिए जाना चाहता है?"

"और क्या आप उस स्थिति में पूर्ण सन्तुष्ट रहेंगे?" एलेना ने अपनी कुहनियों पर झुकते और सीधे उसके चेहरे की तरफ देखते हुए पूछा।

"पूर्ण रूप से, एलेना निकोलाएव्ना, पूर्ण रूप से। इससे भी ज्यादा अच्छा और कौन सा काम हो सकता है? जरा सोचिए तो सही—तिमोफी निकोलाएविच* के पदचिन्हों का अनुसरण करना! इस प्रकार के कार्य के विचार मात्र से मैं प्रसन्न हो उठता हूँ और......हाँ, क्योंकि मै अपनी कमजोरियों को जानता हूँ इसलिए मेरे मन में बेचैनी भी होने लगती है। इस काम में मेरे पिता ने मुझे अपना आशीर्वाद दिया था। मैं उनके अन्तिम शब्दों को कभी भी नहीं भूलूंगा।"

---

* तिमोफी निकोलाएविच ग्रानोव्स्की (१८१३–५५) मास्को यूनिवर्सिटी का विश्व-इतिहास का अध्यापक।

"आपके पिता पिछले जाड़ों में ही स्वर्गवासी हुए थे ?"

"हाँ, एलेना निकोलाएव्ना, फरवरी में।"

"लोगों का कहना है," एलेना ने कहा, "कि वे अपने पीछे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तक की पांडुलिपि छोड़ गए हैं। क्या यह सच है ?"

"हाँ, यह सच है। आह, वे बड़े विलक्षण व्यक्ति थे। आप उन्हें जरूर पसन्द करतीं, एलेना निकोलाएव्ना।"

"मुझे इसका विश्वास है। उनकी यह पुस्तक किस विषय पर है ?"

"थोड़े में इस बात को समझाना जरा मुश्किल होगा, एलेना निकोलाएव्ना। मेरे पिता बहुत बड़े विद्वान थे, शीलिंगियन थे और कभी-कभी वे अपनी बात बड़े गूढ़ शब्दों में व्यक्त किया करते थे।"

"एन्द्री पेत्रोविच" एलेना ने टोकते हुए कहा, "मेरे अज्ञान को क्षमा करना मगर यह बता दीजिए कि इस "शीलिंगियन" का क्या अर्थ है ?"

बरसिएनेव जरा सा मुस्कराया।

"शीलिंगियन का अर्थ है शीलिंग का अनुयायी जो एक जर्मन दार्शनिक था। और यह कि शीलिंग के सिद्धान्त क्या थे......"

"एन्द्री पेत्रोविच," शुबिन कह उठा, "भगवान के लिए—आशा करूँ कि तुम शीलिंग के ऊपर एलेना निकोलाएव्ना को एक व्याख्यान देने का विचार तो नहीं कर रहे। दया करो !"

"नहीं, व्याख्यान नहीं," बरसिएनेव ने बड़बड़ाते हुए कहा और उसका मुँह लाल हो उठा, "मेरा मतलब यह था......"

"मगर व्याख्यान क्यों नहीं होना चाहिए ?" एलेना ने बीच में ही कहा। "मुझे और तुम्हें तो व्याख्यानों की बहुत ही ज्यादा जरूर है पावेल याकोव्लेविच।"

शुबिन ने घूर कर उसकी ओर देखा और एकाएक हँस पड़ा।

"तुम हँस किस बात पर रहे हो ?" एलेना ने शान्त परन्तु तीखे स्वर में पूछा।

शुबिन खामोश रहा।

"अच्छी बात है, अच्छी बात है," कुछ देर बाद उसने कहा, "नाराज मत हो। मुझसे गल्ती हुई। मगर मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि इस समय ऐसे मौसम में, इन पेड़ों के नीचे दर्शन पर बातें करना कैसी अजीब रुचि को व्यक्त करता है। अच्छा तो यह हो कि गुलाब के फूलों, बुलबुलों और जवानी से भरी आँखों और मुस्कानों की बातें की जायँ।"

"हाँ, और फ्रांसीसी उपन्यासों और स्त्रियों के फैशनों की," एलेना ने जोड़ा।

"अगर स्त्रियाँ सुन्दर हैं तो उनके फैशनों की बातें क्यों न की जाय," शुबिन ने तेज होते हुए कहा।

"क्यों नहीं! मगर मान लो कि हम लोग फैशनों की बातें नहीं करना चाहते? तुम कलाकर होने के नाते अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करते हो तो फिर दूसरे लोगों की आजादी में दखल क्यों देते हो? और क्या मैं यह पूछ सकती हूँ कि अगर ये तुम्हारे विचार हैं तो तुम जोया के पीछे क्यों पड़े रहते हो? फैशनों और गुलाब के फूलों के विषय में बातें करने के लिए वह विशेष रूप से उपयुक्त पात्र है।"

शुबिन एकाएक उत्तेजित हो उठा और अपनी सीट पर उछल पड़ा।

"तो यह बात है," उसने अस्थिर होकर कहा, "मैं तुम्हारा इशारा समझता हूँ। तुम मुझे यहाँ से उसके पास भेजना चाहती हो, एलेना निकोलाएव्ना! दूसरे शब्दों में मैं यहाँ बाधक साबित हो रहा हूँ।"

"मेरा मतलब तुम्हें यहाँ से भगा देनेका नहीं था।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि मैं किसी दूसरी सुसायटी में बैठने लायक नहीं हूँ;" वह गर्म होकर कहने लगा, "कि मैं जोया जैसा ही हूँ, कि मैं उस आकर्षक जर्मन लड़की की ही तरह मूर्ख, सिड़ी और तुच्छ हूँ। यही बात है न?"

एलेना की भौंहों में गाँठें पड़ गईं।

"तुम उसके विषय में हमेशा तो इस तरह की बातें नहीं कहते थे, पावेल याकोव्लेविच," एलेना ने कहा।

"अहा ! ताड़ना ! तुम अब मुझे डाट रही हो !" शुबिन बोल उठा। 'हाँ, मैं मंजूर करता हूँ, छिपाता नहीं। एक क्षण या केवल एक क्षण जब वे स्वस्थ, साधारण कपोल······लेकिन यदि मैं तुम्हारे ही शब्दों में जबाब देना चाहता तो तुम्हें याद दिला सकता······गुडबाई," उसने एका-एक आगे कहा, "मैं वाहियात बातें कहने जा रहा था,"

उसने गीली मिट्टी के उस लौंदे में, जिसे उसने एक सिर की शक्ल में ढाल लिया था, एक थप्पड़ जमाया, कुंज से बाहर की तरफ दौड़ा और अपने कमरे में वापस चला गया।

"कैसा बच्चों जैसा है," एलेना ने शुबिन की तरफ देखते हुए कहा।

"एक कलाकार है," बरसिएनेव एक हल्की सी मुस्कराहट के साथ बोला। "सारे कलाकार ऐसे ही होते हैं। उसकी उजड्डता को क्षमा करना ही पड़ता है। यह उसका अधिकार है।"

"हाँ," एलेना ने उत्तर दिया—"मगर अभी तक तो पावेल इस तरह का अधिकार प्राप्त नहीं कर सका है। अभी तक उसने किया ही क्या है। मुझे अपने हाथ का सहारा दीजिए और चलिए सड़क पर घूमने चलें। उसने हमारी बात में बाधा डाल दी। हब लोग आपके पिता के काम के विषय में बातें कर रहे थे।"

बरसिएनेव ने एलेना की बांह थाम ली और दोनों साथ-साथ बाग में घूमने लगे; परन्तु वह वार्तालाप जो पूरा होने से पहिले ही भंग कर दिया गया था, फिर आगे नहीं बढ़ा। बरसिएनेव ने एक बार फिर प्रोफेसरी और अपने भावी कार्यक्रम के विषय में अपने विचार प्रकट किए। वह एलेना की बगल में भद्दे ढंग से उसकी बांह पकड़े अजीब तरह से धीरे-धीरे टहलता रहा। कभी कभी उसका कन्धा एलेना के कन्धे से छू जाता था मगर उसने एक बार भी उसकी तरफ निगाह उठाकर नहीं देखा। वह बराबर बात करता रहा यद्यपि उसके शब्द

पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ नहीं निकल पा रहे थे। वह सहज और आत्मीय ढंग से बोल रहा था और उसकी आंखें पेड़ के तनों, कंकरीले रास्ते और घास पर धीरे धीरे घूमती हुई उस शान्तिपूर्ण चमक से चमक रहीं थी जो सुन्दर भावनाओं से उत्पन्न होती है। उसकी ध्वनि में, जो इस समय पहले से शान्त थी, उस व्यक्ति की सी प्रसन्नता व्यक्त हो रही थी जो यह जानता हो कि वह अपने किसी प्रिय के सम्मुख अपने विचारों को सफलता के साथ व्यक्त कर रहा है। एलेना ने ध्यान पूर्वक उसकी बातें सुनी। यद्यपि वह नहीं चाहता था कि एलेना से उसकी आँखें मिलें। किन्तु ऐसा करते समय उसकी तरफ आधा मुड़ कर उसके पीले से पड़े हुए चहरे पर, कोमलता और मित्रता के भाव से परिपूर्ण उसकी आँखों पर उसने अपनी आँखें जमा रखी थीं। एलेना का हृदय मुक्त हो उठा और ऐसा लगता था मानो कोई कोमल, न्यायसंगत और सुन्दरभावना उसके हृदय में प्रवाहित या अंकुरित हो रही हो।

५

रात हो जाने पर भी शुबिन अपने कमरे से बाहर नहीं निकला। पूरी तरह अंधकार छा गया था। पीला चाँद आसमान में ऊपर चढ़ आया था। आकाश-गंगा स्फटिक के समान चमक रही थी और तारे टिमटिमा रहे थे। इस समय बरसिएनेव अन्ना वासिलिएव्ना, एलेना और जोया से विदा लेकर अपने मित्र के कमरे के पास आया। उसने कमरे को भीतर से बन्द पाया और खटखटाया।

"कौन है ?" शुबिन की आवाज गूंज उठी।

"मै हूँ," बरसिएनेव ने उत्तर दिया।

"क्या चाहते हो ?"

"मुझे भीतर आने दो पावेल, उद्विग्न होना बन्द करो; तुम्हें अपने ऊपर शर्म नहीं आती?"

"मैं उद्विग्न नहीं हो रहा हूँ। सो रहा हूँ और जोया का स्वप्न देख रहा हूँ।"

"मेहरबानी करके इन बातों को बन्द करो। तुम बच्चे नहीं हो मुझे अन्दर आने दो। मुझे तुमसे बातें करनी हैं।"

"एलेना से बातें करते हुए पेट नहीं भरा?"

"बहुत हो चुका, पावेल; मुझे अन्दर आने दो!"

जवाब में शुबिन की बनावटी खर्राहट सुनाई पड़ी। बरसिएनेव ने कन्धे उचकाये और घर की तरफ चल पड़ा।

रात्रि सुखद और कुछ सीमा तक अप्रत्याशित रूप से शान्त थी। ऐसा लग रहा था मानो चतुर्दिक छाई प्रत्येक वस्तु सुन रही थी और देख रही थी। बरसिएनेव उस निस्तब्ध अन्धकार से आतंकित सा होकर एकाएक अपने आप रुक गया और उसी तरह देखने और सुनने लगा। किसी स्त्री के वस्त्रों की खसखसाहट जैसा हल्का सा शब्द पास खड़े पेड़ों की चोटियों पर रह रह कर सुनाई पड़ जाता था। इस शब्द ने बरसिएनेव के मन में एक मधुर, रहस्यपूर्ण और भय की सी भावना उत्पन्न कर दी। उसे रोमांच हो आया, भावावेश से उत्पन्न आँसुओं से उसकी आँखें भर उठीं; उसने अनुभव किया जैसे वह बिल्कुल चुपचाप, पंजों के बल चलना चाह रहा था—अपने को छिपा लेना चाह रहा था। बगल से एक तेज झोंका आया जिससे वह हल्का सा कांप उठा और मूर्ति की तरह निस्तब्ध खड़ा होगया। पेड़ की डालपर सोता हुआ एक कीड़ा नीचे गिरा और धमाके के साथ सड़क से टकराया। बरसिएनेव धीरे से चीखा, "ओह" और फिर रुक गया। परन्तु वह एलेना के विषय में सोचने लगा और वे सब क्षणिक विचार तुरन्त गायब हो गए: केवल रात्रि की मादकता का उत्साहवर्धक भाव और रात्रि-भ्रमण की भावना ही शेष रह गई। उस नवयुवती की मूर्ति उसके सम्पूर्ण

व्यक्तित्व में भर उठी। बरसिएनेव सिर झुकाये एलेना के शब्दों और उसके प्रश्नों को याद करता हुआ चला जा रहा था।······उसे लगा जैसे उसके पीछे तेज कदमों की आवाज सुनाई दी। उसने सुना······कोई दौड़ रहा था······बराबर उसके नजदीक आता जा रहा था—उसने हांफने की आवाज सुनी, और एकाएक एक बड़े वृक्ष के नीचे फैले हुए अन्धकार के घेरे में से निकल कर नंगे सिर, बिखरे बाल और चाँदनी में पूरी तरह से पीला दिखाई पड़ता हुआ शुबिन उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"मुझे खुशी है कि तुम इसी रास्ते से आए," उसने हाँफते हुए कहा। "अगर मैं तुम्हें पकड़ न पाता तो आज रात भर मुझे नींद न आती। मुझे अपना हाथ पकड़ने दो। तुम घर जा रहे हो न?"

"हाँ!"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।

"मगर तुम टोप बिना कैसे जा सकते हो?······"

"कोई बात नहीं। मैंने अपनी टाई भी उतार दी है। आज गर्मी है।"

दोनों मित्र कुछ कदम आगे बढ़े।

"आज मैंने बड़ी बेवकूफी का काम किया था; किया था न?" शुबिन ने एकाएक पूछा।

"सच बात तो यही है। मैं तुम्हें समझ ही न सका। मैंने तुम्हारा ऐसा रूप कभी नहीं देखा था। और आखिर तुम नाराज किस बात पर हो उठे थे? जरासी बात पर!"

"हूँ," शुबिन घुर्राया, "यह तो तुम्हारा ख्याल है मगर मेरे लिये यह जरा सी बात नहीं है। देखो, मुझे तुमको यह जरूर बता देना चाहिये कि मैं······कि······तुम मेरे विषय में जो चाहो सो सोचो, मगर—तुम जानते हो कि मैं एलेना से प्रेम करता हूँ।"

"तुम एलेना से प्रेम करते हो !" बरसिएनेव ने दुहराया और स्तब्ध सा खड़ा रह गया।

"हाँ," शुबिन ने दिखावटी उपेक्षा की ध्वनि में कहना प्रारम्भ किया, "क्या इससे तुम्हें ताज्जुब होता है ? मैं तुमको कुछ और ही बात बतलाऊँगा। इस शाम तक मैं यह आशा करता था कि समय के साथ साथ वह भी मुझसे प्रेम करने लगेगी। लेकिन आज के दिन ने मुझे यह विश्वास दिला दिया कि मुझे कुछ भी आशा नहीं रखनी चाहिये। वह किसी और से प्रेम करने लगी है।"

"किसी और से ? मगर किससे ?"

"किससे ? तुमसे," शुबिन चीखा और बरसिएनेव के कन्धे पर हाथ मारा।

"मुझसे ?"

"तुमसे," शुबिन ने दुहराया।

बरसिएनेव एक कदम पीछे हट गया और खड़ा का खड़ा रह गया। शुबिन ने उसकी तरफ गौर से देखा।

"क्या इस बात से तुम्हें भी ताज्जुब होता है ? तुम एक संकोची नवयुवक हो। वह तुमसे प्रेम करती है। तुम इस बात का पूरा विश्वास कर सकते हो।"

"क्या वाहियात बातें बक रहे हो," अन्त में बरसिएनेव ने नाराज सा होकर कहा।

"नहीं, यह वाहियात बात नहीं है। मगर हम लोग यहाँ रुके किस लिए हैं ? चलो, चलें, चलने में आसानी रहती है। मैं एलेना को बहुत दिनों से जानता हूँ और अच्छी तरह जानता हूँ। मुझसे भूल नहीं हो सकती। वह तुममें रुचि लेने लगी है। कोई समय था जब वह मुझे पसन्द करती थी; मगर पहली बात तो यह है कि मैं उसके लिए एक बहुत ही तुच्छ व्यक्ति हूँ जब कि तुम एक गम्भीर प्राणी हो, चारित्रिक और शारीरिक दृष्टि से तुम्हारा व्यक्तित्व आकर्षक है, तुम—नहीं,

३

अभी मैंने बात खत्म नहीं की हैं—तुम एक स्वप्न दृष्टा हो, मगर एक संदेहों से भरे मध्यमश्रेणी के स्वप्नद्रष्टा, उस वैज्ञानिक पुरोहितवर्ग के एक सच्चे प्रतिनिधि जिसका—नहीं, जिसका नहीं—जिसके कारण रूसी उच्चवर्ग के मध्यमश्रेणी के व्यक्ति इतना उचित गर्व करते हैं !······और दूसरी बात यह कि. उस दिन एलेना ने मुझे जोया की बांह का चुम्बन करते हुए देख लिया था !"

" जोया की ?"

" हाँ, जोया की। तुम क्या आशा करते हो ?······उसके कन्धे इतने सुन्दर हैं।"

" कन्धे ?"

" हाँ, कन्धे, बाहें, क्या यह सब एक ही नहीं हैं ? एलेना ने भोजन के बाद ही मुझे बड़ी निश्चिन्त और स्वच्छन्द मुद्रा में यह हरकत करते हुए देखा था और भोजन के पहले मैं उसी के सामने जोया का अपमान करता रहा था। दुर्भाग्य से एलेना इन अन्तर्विरोधों की पूर्ण स्वाभाविकता को नहीं समझती। इसी मौके पर तुम आ पहुंचे। तुम एक ऐसे व्यक्ति हो जिसका विश्वास है कि······तुम किस बात में विश्वास करते हो ?—तुम शरमाते हो, परेशान हो उठते हो, शिलर शीलिंग के विषय में उद्विग्न होते हो (वह हमेशा विशिष्ट व्यक्तियों की तलाश में रहती है) और इसलिए तुम विजयी हुए—जबकि मैं, एक अभागा प्राणी हूँ, मजाक करने की कोशिश करता हूँ और······इस बीच······"

शुबिन एकाएक रोने लगा और एक तरफ हट अपने बाल पकड़ कर जमीन पर बैठ गया।

बरसिएनेव उसके पास गया।

" पावेल," उसने कहना शुरू किया, " यह कैसा बचपन है। आज तुम्हें हो क्या गया है ? भगवान जाने तुम्हारे दिमाग में आज कौनसा कीड़ा घुस गया है। तुम तो सचमुच रो रहे हो। सच, मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम मजाक कर रहे हो।"

शुबिन ने सिर ऊपर उठाया : चाँदनी में उसके गालों पर बहते हुए आँसू चमक रहे थे मगर चेहरा मुस्करा रहा था।

"एन्द्री पेत्रोविच," उसने कहा, "तुम मेरे विषय में जो चाहो सो सोच सकते हो। मैं यह भी स्वीकार करने को प्रस्तुत हूँ कि इस समय थोड़ा सा बहक उठा हूँ—मगर यह ईश्वरीय सत्य है कि मैं एलेना से प्रेम करता हूँ और यह कि एलेना तुमसे प्रेम करती है। फिर भी, मैंने तुम्हारे साथ तुम्हारे घर तक चलने की प्रतिज्ञा की थी और मैं अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा।"

वह खड़ा हो गया।

"कैसी सुन्दर रात है। कितनी रुपहली और मादक। इस समय कितना सुन्दर लगे यदि तुम यह जान सको कि कोई तुमसे प्रेम करता है—जागने में कितना आनन्द है। तुम सोओगे, एन्द्री पेत्रोविच ?"

बरसिएनेव ने उत्तर नहीं दिया और तेजी से चलने लगा।

"तुम्हें कहाँ जाने की जल्दी हो रही है ?" शुबिन कहता रहा, "मेरा यकीन करो कि तुम्हें जिन्दगी भर फिर कभी ऐसी रात देखने को नही मिलेगी—मगर घर पर शीलिंग तुम्हारा इन्तजार करता रहता है। यह ठीक है कि आज उसने तुम्हारी काफी मदद की है मगर फिर भी इतनी जल्दी करने की क्या जरूरत है। तुम्हें गाना चाहिए—अगर तुम्हें गाना आता हैं तो जोर-जोर से गाना चाहिए ; और अगर नहीं गा सकते हो तो अपना टोप उतार लो और मुँह ऊपर उठाकर तारों की तरफ देखकर मुस्कराओ। वे सब के सब तुम्हें देख रहे हैं, सिर्फ तुम्हीं को देख रहे हैं ; सब तारे यही किया करते हैं—प्रेमियों को देखा करते हैं ; इसीलिए तो वे इतने खुबसूरत हैं। तुम प्रेम में पड़ गए हो एन्द्री, है न यही बात ? तुम जबाव नहीं देते—क्यों नहीं देते ?" शुबिन ने फिर कहना शुरू किया, "ओह, तो खामोश रहो, अगर तुम्हें अच्छा लगता है तो खामोश रहो ! मैं इस तरह सिर्फ इसलिए बड़बड़ा रहा हूँ कि मुझ गरीब से कोई भी मुहब्बत नहीं करता। मैं एक एक्टर हूँ, एक

मदारी और मजाकिया—मगर काश कि इस बात को जानता कि कोई मुझसे मुहब्बत करता है तो मैं इन तारों की की छाँह में, इन हीरे-मोती जैसे तारों की छाँह में बैठकर रात्रि के इस सुखद वातावरण में न जाने कैसे आनन्द के घूँट भरता ! बरसिएनेव, क्या तुम सुखी हो ?"

बरसिएनेव पहले की ही तरह खामोश रहा और सीधी सड़क पर तेजी से चलने लगा। सामने पेड़ों के झुरमुट में उस छोटे से गाँव की बत्तियाँ झिलमिला रहीं थीं जहाँ वह रहता था। उस गाँव में सिर्फ दस छोटे-छोटे से मकान थे। उस जगह जहाँ से गाँव प्रारम्भ होता था, सड़क की दाहिनी तरफ, भोजपत्र के फैले हुए पेड़ों के नीचे एक छोटी सी दूकान थी। खिड़कियाँ बन्द हो चुकी थीं लेकिन खुले हुए दरवाजे में से रोशनी की पंखे नुमा एक धारा निकल कर कुचली हुई घास और पेड़ के ऊपर पड़ रही थी जिससे घनी पत्तियों का भीतरी हिस्सा हल्की सफेदी लिए हुए हरे रंग से चमक रहा था। नौकरानी सी दिखाई पड़ने वाली एक लड़की दूकान में दरवाजे की तरफ पीठ किए खड़ी दूकानदार से भाव-ताव कर रही थी। उसने सिर पर एक लाल शाल डाल कर उसे अपने नंगे हाथों से ठोढ़ी पर कस कर पकड़ रखा था जिससे उसके फूले हुए गाल और पतली गर्दन मुश्किल से दिखाई पड़ रही थी। दोनों नौजवान उस रोशनी में आ गए। शुबिन ने दुकान में निगाह डाली, ठिठका और पुकार उठा: "अन्नूश्का !" लड़की तेजी से मुड़ी जिससे उसका कुछ-कुछ चौड़ा सा सुन्दर चेहरा, गोरा रंग, प्रसन्नता से चमकती भूरी आँखें और काली भौंहें स्पष्ट हो उठीं। "अन्नूश्का," शुबिन ने फिर पुकारा। लड़की ने उसकी तरफ गौर से देखा, चौंकी और परेशान हो उठी और फिर अपनी खरीदारी बीच में ही छोड़कर सीढ़ियों पर नीचे की तरफ भागी, उनकी बगल में से तेजी से बचकर निकली और मुड़ कर पीछे की तरफ देखती हुई सड़क को पार कर बाँई तरफ भाग गई। दूकानदार, जो देहाती दूकानदारों की ही तरह मोटा और बिल्कुल शान्त रहने वाला व्यक्ति था, घुर्राया और उसकी तरफ देखकर जम्हाई लेने लगा मगर

शुबिन बरसिएनेव की तरफ घूमा और कहने लगा : "वो—तुम जानते हो, वो—यहाँ एक परिवार रहता है जिसे मैं जानता हूँ—और वो उनकी—तुम यह मत सोचने लगना—" और बिना बात पूरी किए वह उस भागती हुई लड़की के पीछे भाग गया।

"कम से कम अपने आँसू तो पोंछ लो," बरसिएनेव ने पुकार कर उससे कहा और जोर से हंस पड़ा। लेकिन जब वह घर पहुँचा तो उसके चेहरे पर से वह प्रसन्नता गायब हो चुकी थी, अब वह हंस नहीं रहा था। शुबिन ने उससे जो कुछ कहा था उसने उस पर तनिक भी विश्वास नहीं किया मगर उसके शब्दों ने उस पर एक गहरा प्रभाव डाला था। "पावेल मुझे बेवकूफ बना रहा था," उसने सोचा, "मगर कभी-न-कभी तो वह किसी को प्यार करेगी······वह कौन होगा?"

बरसिएनेव के कमरे में एक छोटा और पुराना पियानो था। उसके स्वर कोमल और सुन्दर थे यद्यपि एकसी लय के साथ नहीं निकलते थे। बरसिएनेव उसपर जा बैठा और स्वरों को छेड़ने लगा। संभ्रान्त कुल के प्रत्येक रूसी के समान उसे भी किशोरावस्था में संगीत की शिक्षा दी गई थी और अधिकांश ऐसे व्यक्तियों के ही समान वह बहुत भद्दा बजाता था मगर संगीत से उसे गहरा प्रेम था। उचित शब्दों में कहा जाय तो उसका प्रिय विषय संगीत को व्यक्त करने वाला भाव नहीं था, उसकी शैली (स्वरों की समता और पद, यहाँ तक कि संगीत और नृत्य से वह ऊब उठता था) से उसे प्रेम न होकर उसके मूल सिद्धान्तों से प्रेम था। वह उस अस्पष्ट, मधुर, लक्ष्यहीन, सबको अपनाने वाली भावना से प्रेम करता था जो स्वरों के मिश्रण और लयों के चढ़ाव-उतार से उसके हृदय में उत्पन्न हो उठती थी। एक घण्टे से भी अधिक समय तक वह बार बार उन्ही स्वरों को दुहराता, भद्दे ढङ्ग से नये स्वरों को निकालने का प्रयत्न करता और हल्के सातवें स्वरों पर विश्राम लेता हुआ पियानो बजाता रहा। उसके हृदय में टीस उठने लगी और कई बार उसकी

आँखों में आँसू भर आए। उसे उनके कारण लज्जा नही आई क्योंकि वे अन्धेरे में बहाए गए थे। "पावेल का कहना ठीक है," उसने सोचा, "मैं अब इसका अनुभव कर सकता हूं : यह शाम फिर कभी भी नही दुहराई जायेगी।" अन्त में वह उठ खड़ा हुआ, मोमबत्ती जलाई, ड्रेसिंग-गाऊन पहना और आल्मारी में से र्यूमर की लिखी हुई 'होहेन स्ताफेन का इतिहास' नामक पुस्तक का दूसरा भाग निकाला; फिर एक दो बार गहरी सांस लेकर उसे पढ़ने बैठ गया।

६

इसके बाद एलेना अपने कमरे में लौट आई, खुली हुई खिड़की के सामने बैठी और हाथों पर सिर टिका लिया। यह उसकी आदत हो गई थी कि वह हर शाम को अपने कमरे की खिड़की के पास लगभग पन्द्रह मिनट तक बैठा करती थी। ऐसे मौकों पर वह मन ही मन विचार करती और गुजरे दिन की बातों पर गौर किया करती थी। वह अभी बीस वर्ष की हुई थी। उसका कद लम्बा और रंग हल्का सांवला था। उसकी धनुषाकार भौंहों के नीचे बड़ी-बड़ी भूरी आँखों के चारों तरफ़ हल्के हल्के से धब्बे पड़े हुए थे; उसका माथा चौड़ा और नाक सीधी थी, मुँह दृढ़तापूर्वक बन्द रहता था, ठोढ़ी थोड़ी-सी नुकीली थी। सुडौल गर्दन पर हल्के भूरे बाल लहराते रहते थे। उसकी हर बात में, उसके चेहरे के सतर्क और कुछ-कुछ खोये से भाव में, उसकी स्पष्ट पर बदलने वाली आँखों में, उसकी कठोर सी दिखाई पड़ने वाली मुस्कराहट और एकसे शान्त स्वर में कुछ सघनता और बिजली की सी चमक, कुछ प्रेरणा और उतावले पन का सा भाव भरा रहता था जिसे यदि एक ही शब्द में कहा जाय तो यह कि जिसे हरेक पसन्द नहीं कर सकता था और जो कुछ व्यक्तियों के लिए तो

विरक्ति उत्पन्न करने वाला था। उसकी लम्बी उंगलियों वाली गुलाबी हथेलियाँ पतली और लम्बी थीं। पैर भी ऐसे ही थे। वह तेजी से चलती थी, सामने की तरफ जरासी झुकी हुई और ऐसे जैसे गुस्से में हो। उसकी भावुकता का विकास बड़ा विचित्र रहा था। पहले उसने अपने पिता को प्यार किया था, फिर अपनी माँ को बुरी तरह प्यार करने लगी थी और फिर उन दोनों के ही लिये उसका प्यार ठन्डा पड़ गया था, विशेष रूप से अपने पिता की तरफ से तो वह पूर्ण रूप से उदासीन हो उठी थी। अभी कुछ दिनों से वह अपनी माँ से ऐसा व्यवहार करने लगी थी मानो वह एक बीमार दादी के समान हो। और उसका पिता, जो, जब तक कि एलेना एक अद्भुत बच्ची के रूप में प्रसिद्ध रही उस पर गर्व करता रहा था, परन्तु उसके बड़े होने पर उसके विषय में भयभीत रहने लगा। वह उसके विषय में कहा करता था कि वह एक अत्यन्त प्रसन्न लोकतन्त्रवादी लड़की है—"भगवान ही जानता है कि वह किसे पड़ी है।" चरित्र की निर्बलता को देखकर वह चिड़चिड़ी थी, उठती मूर्खता पर उसे क्रोध आता था, झूठ को वह जीवन भर कभी क्षमा करने को प्रस्तुत नहीं होती थी। अपनी आवश्यकताओं के विषय में उसे कोई भी नहीं झुका सकता था। यहाँ तक कि उसकी प्रार्थनायें भी आत्म-प्रताड़नाओं से भरी रहती थीं। कोई व्यक्ति उसकी दृष्टि में यदि अपना सम्मान खो बैठता—वह अपना निर्णय शीघ्र और कभी-कभी बहुत ही उतावली होकर दे किया करती थी—तो उसके लिए उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता था। उसके हृदय पर हर बात का बड़ा गहरा असर पड़ता था। उसके लिए जीवन एक साधारण समस्या नहीं थी।

वह शिक्षिका, जिस पर अन्ना वासिलिएव्ना ने अपनी बेटी की शिक्षा को पूर्ण करने का भार छोड़ा था—एक ऐसी शिक्षा जिसे उस हताश माँ ने प्रारम्भ भी नहीं किया था—रूसी थी। वह नवयुवतियों की शिक्षा-संस्था से आई हुई एक लड़की और एक ऐसे पिता की पुत्री थी जो रिश्वत लेने के कारण बर्बाद हो गया था। वह एक अत्यन्त भावुक, रहमदिल और शक्की मिजाज वाली लड़की थी। बार-बार प्रेम में पड़ने

के उपरान्त उसने इसका अन्त एक ऐसे अफसर से विवाह करके किया था जिसने उसे तुरन्त ही छोड़ दिया था। यह घटना १८५० में घटी थी जब एलेना सत्रह वर्ष की थी। यह शिक्षिका साहित्य से बहुत प्रेम करती थी और स्वयं भी छोटी-छोटी कविताएं लिख लेती थी। उसने अपनी शिष्या में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न की परन्तु केवल अध्ययन ही एलेना को सन्तोष न दे सका। अपने बचपन से ही एलेना काय करने के लिए, क्रियात्मक भलाई के लिए उत्सुक रहती थी। गरीब, भूखे और बीमारो को देखकर वह उद्विग्न हो उठती थी, उसे दुख होता था। वह उनके विषय में सपने देखती थी और अपने सब परिचितों से उनके विषय में सवाल-जबाव किया करती थी। वह जब भीख देती थी तो खूब सोच समझ कर, स्वाभाविक गम्भीरता से और अत्यन्त भावुक होकर। प्रत्येक सताया हुआ जानवर, हरेक भूखा कुत्ता, मृत्यु के मुख में छोड़ दिए गए बिल्ली के बच्चे, घोंसलों से गिरी हुई चिड़ियाँ, यहाँ तक कि कीड़े और साँप आदि को भी एलेना द्वारा सहायता और संरक्षण मिलता था। वह उन्हें स्वयं खाना खिलाती और उनकी दीन दशा से कभी भी नहीं घबराती थी। उसकी माँ इन कामों में हस्तक्षेप नहीं करती थी परन्तु उसका पिता उसकी इन हरकतो से, जिसे कि वह उसकी वाहियात रहमदिली कहा करता, बहुत चिढ़ता और कहता कि इन कुत्ते और बिल्लियो के मारे तो घर में चलना-फिरना भी असम्भव हो उठा है। "लेनोच्का" वह एलेना को पुकार कर कहता, "जल्दी आओ, एक मकड़ी एक मक्खी को खाये जा रही है, तुम्हें उस बिचारी को छुड़ा देना चाहिए।"—और लेनोच्का बुरी तरह आतंकित होकर भागी हुई आती, मक्खी को छुड़ाती और उसकी टाँगों को स्वतन्त्र कर देती। "और अब, अगर तुम इतनी रहमदिल हो तो इसे अपने को काट लेने दो," उसका पिता व्यंग्य के साथ कहता; मगर वह उसकी बात नहीं सुनती।

जब वह दस वर्ष की थी तो कात्या नामक एक भिखारिन लड़की से उसकी जान-पहचान हो गई। वह चुपचाप घर से निकल कर बाग

में जाकर उससे मिला करती और उसके लिए मिठाई और रोटियाँ ले जाती और पैसों आदि की भेंट दिया करती—कात्या खिलौने लेना मन्जूर नहीं करती थी। वे दोनों किसी पेड़ के पीछे झाड़ियों के बीच जमीन पर पास-पास बैठ जातीं और एलेना विनम्रता की सुखद भावना से भर कर कात्या की बासी रोटी खाती और उसकी कहानियां सुनती। कात्या की एक बद मिजाज बुढ़िया चाची थी जो अक्सर उसे मारा करती थी। कात्या उससे नफरत करती और हमेशा कहा करती कि वह अपनी चाची के पास से भाग जायेगी और "भगवान के स्वतंत्र संसार" में जाकर रहेगी। एलेना एक गुप्त श्रद्धा और भय के साथ उसकी तरफ टकटकी बाँधे इन विचित्र महान विचारों को सुना करती और उस समय उसे कात्या की हर बात, तीखी, काली और लगभग जानवरों जैसी आँखें, धूप से साँवले पड़े हाथ और भारी आवाज, यहाँ तक कि उसकी फटी हुई पोशाक आदि ऐसी लगती थी मानो वे विशिष्ट एवं पवित्र हों। एलेना घर लौट आती और बाद में काफी देर तक गरीबों और 'भगवान के स्वतन्त्र संसार' के विषय में सोचा करती। वह सोचती कि किस तरह वह जैतून की एक छड़ी काट कर बनायेगी। और भिखारियों वाला एक झोला लेकर कात्या के साथ भाग जायेगी और सिर पर जंगली फूलों का हार लपेटे सड़कों पर घूमती फिरेगी। एक बार उसने कात्या को इस तरह का एक हार पहने देखा था। अगर ऐसे समय उसके परिवार का कोई व्यक्ति उसके कमरे में आ जाता तो वह शरमा उठती और गम्भीर दिखाई देने लगती। एक बार वह बारिश में ही कात्या से मिलने के लिए भाग खड़ी हुई थी और उसकी पोशाक गन्दी हो गई थी। उसके पिता ने उसे देख लिया था और उसे एक गन्दी किसान लड़की कह कर पुकारा था। वह शरम से लाल हो उठी थी और उस पर एक आनन्द मिश्रित भय की भावना छा गई थी। कात्या अक्सर सिपाहियों का एक जंगली गाना गाया करती थी और एलेना ने उससे यह गाना सीख लिया था।......अन्ना वासिलिएव्ना ने एक बार यह गाना सुन लिया था और बहुत नाराज हुई थी।

" यह गन्दी चीज तुमने कहाँ से सीखी ?" उसने अपनी बेटी से पूछा ।

एलेना ने अपनी माँ की तरफ देखा परन्तु बोली कुछ भी नहीं। उसने यह अनुभव किया कि अपना रहस्य बताने के स्थान पर तो यह अच्छा रहेगा कि वे लोग उसके टुकडे उड़ा दें : और पुनः उस पर वही मधुर, भयानक सनसनी सी छा गई। फिर भी, कात्या के साथ उसकी दोस्ती अधिक दिनों तक नही चली। बेचारी कात्या को बुखार आया और कुछ दिनों बाद वह मर गई।

एलेना ने जब कात्या की मौत का समाचार सुना तो बहुत दुख मनाया और काफी दिनों तक रात को सो नही सकी। उस भिखारी-लड़की के अन्तिम शब्द उसके कानों में बराबर गूँजते रहे जो उसे बुलाते से प्रतीत होते थे।······

और इस तरह कई साल गुजर गई—तेजी से और चुपचाप जैसे कि बर्फ के नीचे पानी बह जाता है। एलेना का बचपन बीत गया—बाह्य रूप से आलस्य में और आन्तरिक रूप से संघर्ष और कोलाहल में। उसका कोई भी मित्र नही था। स्ताहोव परिवार में आने-जाने वाली लड़कियों में से वह एक को भी अच्छी तरह से नहीं जान सकी। माता-पिता का शासन उस पर कभी भी कड़ा नही रहा और सोलह वर्ष की होने के उपरान्त वह एक तरह से पूर्ण स्वतन्त्र हो गई। वह अपना जीवन अपने ही ढंग से व्यतीत करने लगी परन्तु यह जीवन केवल एकाकी ही था। एकान्त में उसकी आत्मा प्रज्वलित हो उठती और शान्त हो जाती। वह पिंजरे में बन्द पक्षी की तरह तड़फड़ाती रहती यद्यपि उसके लिए कोई भी बन्धन नही थे। कोई भी उस पर न तो बन्धन लगाता था और न उसे रोकता था—फिर भी वह तड़फड़ाती रही और दुखी होती रही।

कभी-कभी वह स्वयं को समझने में असमर्थ रहती—यहाँ तक कि अपने-आप से उसे भय लगने लगता। अपना चतुर्दिक वातावरण उसे निस्सार और रहस्यमय लगता। " प्रेम के बिना जीवन क्या है ?" वह

सोचती, "मगर कोई प्रेम करने के लिए भी तो नहीं है!" और ऐसे विचार तथा ऐसी भावनाओं ने उसे आंनकित करना प्रारम्भ कर दिया। जब वह अठारह वर्ष की थी तब एक बार बुखार से उसका लगभग प्राणान्त ही हो गया होता। उसका शरीर, जो स्वाभाविक रूप से ही स्वस्थ और शक्तिशाली था, बुरी तरह लड़खड़ा उठा। और काफी समय तक वह पूर्णतः स्वस्थ न हो सकी। अन्ततः बीमारी के अन्तिम चिन्ह भी समाप्त हो गए मगर ऐलेना का पिता उसकी भावुकता के विषय में चुभने वाली बातें कहता रहता। कभी-कभी एलेना को ऐसा लगता कि वह कुछ ऐसी चीज चाहती है जिसे और कोई भी नहीं चाहता, जिसका पूरे रूस में किसी ने स्वप्न भी नहीं देखा। इसके बाद वह शान्त हो जाती और निश्चिन्त उपेक्षा में उसके दिन व्यतीत होने लगते। यहाँ तक कि वह अपने आप पर हँसने लगती। परन्तु एकाएक कोई शक्तिशाली, अज्ञात-सी वस्तु, जिस पर कि उसका कोई काबू नहीं रहता, उसके हृदय में उबलने लगती और बाहर निकल पड़ने के लिए प्रयत्न करती। तूफान गुजर जाता, थके हुए पंख बिना उड़े ही शिथिल हो जाते। मगर ऐसी मानसिक स्थितियों का उस पर बड़ा प्रभाव पड़ता। वह अपने आन्तरिक द्वन्द्व को छिपाने का भरसक प्रयत्न करती परन्तु उसकी वही दृढ़ता उसकी आत्मा के संघर्ष को स्पष्ट कर जाती और उसके माता-पिता कभी-कभी और सकारण आश्चर्य से अपने कन्धे उचकाते क्योंकि वे उसकी उस 'विचित्रता' को समझने में असमर्थ रहते।

उस दिन, जहाँ से हमारी कहानी प्रारम्भ होती है, एलेना अपनी खिड़की पर और दिनों से ज्यादा देर तक बैठी रही। उसने बरसिएनेव और उसके साथ हुई अपनी बातचीत के विषय में बहुत कुछ सोचा, उसे पसन्द किया और उसकी भावनाओं की गहराई तथा उसके विचारों की सत्यता के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। बरसिएनेव ने उससे जिस तरह उस शाम को बातें की थीं उस तरह पहले कभी नहीं की थीं। एलेना ने उसकी शर्मीली निगाहों तथा मुस्कराहट को याद किया और वह स्वयं भी

मुस्कराने और सोचने लगी, यद्यपि इस समय वह उसके विषय में नहीं सोच रही थी। उसने खुली हुई खिड़की में से बाहर फैले रात्रि के अन्धकार की तरफ देखा। काफी देर तक वह नीचे झुके काले आस्मान की तरफ देखती रही। फिर उठ खड़ी हुई, सिर को झटका देकर मुख पर आ पड़े बालों को पीछे फेंका और स्वयं भी यह न जानते हुए कि क्यों—अपनी नंगी ठंडी बाहें आस्मान की तरफ उठा दीं, उसी काले आस्मान की तरफ। फिर उसने उन्हें नीचे गिर जाने दिया, अपने बिस्तर की बगल में घुटनों के बल बैठ गई, मुँह तकिए में गढ़ा लिया और फिर अपने पर छाई हुई भावनाओं को रोकने का भरसक प्रयत्न करने पर भी वह रोने लगी और ऐसे आँसू टपकाती रही जो विचित्र, अद्भुत और ज्वलनशील थे।

७

बरसिएनेव दूसरे दिन, ग्यारह बजते ही, एक मास्को को लौटती हुई गाड़ी में मास्को के लिये रवाना हो गया। उसे डाकखाने से कुछ पैसा निकालना था और कुछ किताबें खरीदनी थीं और साथ ही वह इन्सारोव को बुलाना और उससे मिलना चाहता था। जब उसने पिछली बार शुबिन से बातें की थीं तो उसके दिमाग में यह विचार आया था कि वह इन्सारोव को अपने साथ देहात में यहाँ रहने के लिये निमंत्रित कर सकता है। कुछ ही समय पहले उसकी इन्सारोव से मुलाकात हुई थी। इन्सारोव ने अपना पहला घर छोड़ दिया था और नए स्थान का पता लगाना आसान नहीं था। यह नया निवास-स्थान अरबात और पोवरकाया सड़कों के बीच, पीतर्सबर्ग फैशन पर बने हुए ईंटों के एक भद्दे मकान के पीछे एक आहते में था। बरसिएनेव व्यर्थ ही गन्दे जीनों पर इधर-उधर चढ़ता-

उतरता रहा ; उसने व्यर्थ ही किसी कुली को या किसी और को जो उसकी बात सुनता, बुलाने की कोशिश की । पीतर्सवर्ग में भी कुली लोग नये आने वालों से बचने की कोशिश करते थे, और मास्को में तो यह आदत और भी अधिक प्रचार पा चुकी थी। किसी ने भी बरसिएनेव से बातें नहीं की । आस्तीनों वाली कमीज पहने, कन्धे पर सूत की लच्छी लटकाये और एक काली आँख वाले जिज्ञासु दर्जी ने ही केवल एक ऊँची खिड़की में से चुपचाप अपनी बढ़ी हजामत वाला गन्दा चेहरा बाहर निकाल कर झांका और एक काली बिना सींगों वाली बकरी, जो गोबर के एक ऊँचे ढेर पर चढ़ी हुई थी, मुड़ी और बुरी तरह मिमियायी और मुंह में भरी घास को पहले से भी ज्यादा तेजी से चबाने लगी । अन्त में पुराना कोट और घिसी एड़ी के जूते पहने एक बुढ़िया ने उस पर तरस खाया और इन्सारोव का निवास-थान बता दिया । बरसिएनेव को वह घर पर ही मिला । उसने दर्जी से एक कमरा किराये पर ले लिया था— उसी दर्जी से जिसने बरसिएनेव के उस परेशानी भरे भटकने को इतनी उपेक्षा के साथ देखा था । यह एक बड़ा और लगभग पूरा खाली कमरा था जिसकी दीवालें गहरे हरे रंग की थीं । उसमें तीन चौकोर खिड़कियां, एक कौने में एक छोटा सा बिस्तर और दूसरे कौने में एक चमड़े का सोफा था । छत के नीचे एक बड़ा सा पिंजरा लटक रहा था जिसमें कभी एक बुलबुल रहा करती थी। जैसे ही बरसिएनेव ने चौखट पार की, इन्सारोव उससे मिलने के लिये आगे आया । उसने इस तरह से उसका स्वागत नही किया कि : "ओह, तुम हो !" या "हे भगवान, तुम यहाँ कैसे ?" और न यह कि : "कैसे मिजाज हैं ?" बल्कि उसने सिर्फ उसके हाथों को दबाया और कमरे में पड़ी हुई एकमात्र कुर्सी की तरफ ले गया।

"बैठ जाओ," खुद मेज के किनारे पर बैठते हुए उसने कहा : "तुम देख ही रहे हो कि मैं अभी तक परेशानी में हूँ," उसने फर्श पर पड़े

हुए किताबों और कागजों के ढेर की तरफ इशारा करते हुए कहा : 'मैं अभी तक ठीक से जम भी नहीं पाया हूं। मुझे समय ही नहीं मिला।"

इन्सारोव रूसी भाषा बिल्कुल शुद्ध बोलता था—प्रत्येक शब्द का स्पष्ट और उस पर जोर देते हुए उच्चारण करता था परन्तु उसका भारी लेकिन मधुर उच्चारण रूसी सा नहीं लगता था। इन्सारोव का विदेशीपन—वह जन्म से बल्गेरियन था—उसकी रूपरेखा से और भी अधिक स्पष्ट झलकता था : वह लगभग पच्चीस वर्ष का इकहरे शरीर का बलवान नवयुवक था जिसके हल्की नीलिमा लिए बाल सीधे और काले, सीना गहरा और हाथ ऐसे थे जिनकी हड्डियाँ दिखाई देतीं थीं। उसके नक्श तीखे थे—सीधी नुकीली नाक, संकरा माथा, छोटी, तेज घुसी हुई आँखें और घनी भौंहें। जब वह मुस्कराता था तो उसके मोटे, सख्त और मजबूत होठों के पीछे सुन्दर सफेद दाँत क्षण भर को चमक उठते थे। वह एक पुरानी परन्तु साफ, गले तक बटन लगी हुई जाकेट पहने हुए था।

"तुमने अपनी पहली जगह क्यों छोड़ दी?" बरसिएनेव ने उससे पूछा।

"यह जगह ज्यादा सस्ती है : विश्वविद्यालय के अधिक निकट है।"

"मगर आजकल तो छुट्टियाँ हैं······और अजीब सी बात है कि तुम गर्मियों में भी शहर में रहना चाहते हो! अगर तुमने जगह बदलने का निश्चय ही कर लिया था तो एक बंगला किराये पर ले सकते थे।"

इन्सारोव ने उत्तर नहीं दिया—और बरसिएनेव को एक पाइप देते हुए कहा : "क्षमा करना, मेरे पास सिगरेट या सिगार नहीं हैं।"

बरसिएनेव ने पाइप सुलगाया।

"मैंने," उसने कहना जारी रखा, "मैंने कुन्तसोवो के पास एक बंगला ले लिया है—बहुत सस्ता और बहुत आरामदेह। उसमें ऊपर एक खाली कमरा भी है।"

इन्सारोव ने फिर भी उत्तर नहीं दिया। बरसिएनेव ने पाइप का कस खींचा।

"मैंने यह भी सोचा था," धुंए के गुब्बार छोड़ते हुए उसने फिर कहना शुरू किया, "कि अगर कोई होता—मान लो कि तुम ही होते—जो पसन्द करता, जो मेरे साथ वहाँ रहना पसन्द करता, ऊपर वाले कमरे में—तो कितना अच्छा रहता। तुम्हारा क्या ख्याल है, दमित्री निकानेरोविच ?"

इन्सरोव ने अपनी छोटी आँखें ऊपर उठाईं।

"तुम यह सलाह दे रहे हो कि मैं तुम्हारे साथ देहात में रहूं ?"

"हाँ, मेरे पास ऊपर की मंजिल पर एक कमरा खाली है।"

"मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ एन्द्री पेत्रोविच, मगर मैं देख रहा हूं कि मेरे साधन इसकी आज्ञा नहीं देते।"

"क्या मतलब है, आज्ञा नहीं देते ?"

"ये मुझे देहात में रहने की आज्ञा नहीं देते। मैं दो जगह घर नहीं रख सकता।"

"मगर तुम जानते हो कि मैं······" बरसिएनेव कह ही रहा था कि रुक गया, "इससे कोई अतिरिक्त व्यय तो होगा नहीं," वह कहने लगा। "यह मान लो कि तुम यहाँ अपना कमरा रखते हो : इसके बदले में वहाँ हरेक चीज बहुत सस्ती है। शायद हम लोग इस बात का भी प्रबन्ध कर लें कि दोनों साथ ही खाना खायें।"

इन्सारोव खामोश रहा। बरसिएनेव परेशान सा हो उठा।

"कम से कम कभी-कभी तो मेरे पास आया करना," उसने कुछ देर चुप रह कर कहा, "जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ से कुछ ही दूर एक परिवार रहता है। मैं इस बात को बहुत पसन्द करूँगा कि तुम्हारा उनसे परिचय हो जाय। इन्सारोव, काश तुम इस बात को जानते कि वहाँ एक बहुत अच्छी लड़की है। मेरा एक बहुत ही गहरा दोस्त

भी वहीं रहता है। वह बहुत प्रतिभाशाली है। मुझे विश्वास है कि तुम्हारी उससे पट जायेगी (रूसी लोग अगर और किसी के साथ नहीं तो कम से कम अपने मित्रों के प्रति तो उदार रहना पसन्द करते हैं) सचमुच, तुम्हें जरूर आना चाहिए। और इससे भी अच्छा तो यह होगा कि आकर हमारे साथ रहो। जरूर आना। हम साथ-साथ काम कर सकेंगे और पढ़ भी सकेंगे : तुम जानते हो मैं इतिहास और दर्शन का अध्ययन कर रहा हूँ। इन सब में तुम्हारी भी रुचि है और मेरे पास काफी पुस्तकें भी हैं।"

इन्सारोव खड़ा हो गया और कमरे में टहलने लगा।

"पूछने के लिये क्षमा करना," अन्त में उसने कहा : "तुम अपने बंगले का कितना किराया देते हो ?"

"सौ रूबल।"

"उसमें कितने कमरे हैं ?"

"पाँच।"

"तो उस हिसाब से एक कमरे का किराया बीस रूबल हुआ ?"

"उसे हिसाब से······देखो दरअसल मुझे उस कमरे की कताई जरूरत नहीं है। वह वैसे ही खाली पड़ा है।"

"हो सकता है; मगर सुनो," इन्सारोव अपने सिर को दृढ़ता पूर्वक और साथ ही स्पष्ट और निर्लिप्त भाव से हिलाता हुआ कहने लगा, "मैं तुम्हारे प्रस्ताव से उसी दशा में लाभ उठाने को प्रस्तुत हूँ जब तुम किराये का एक उचित भाग लेने के लिये सहमत हो सके। मैं बीस रूबल देने की स्थिति में हूँ—इसलिये और भी कि जैसा कि तुम्हारा कहना है मैं और भी दूसरी चीजों में किफायत कर सकूंगा।"

"बेशक : मगर इस बात से मेरी आत्मा को सचमुच बड़ा कष्ट होगा।"

"मैं और किसी भी दशा में ऐसा नहीं कर सकता, एन्द्री पेत्रोविच ।"

"अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्जी—मगर तुम हो कितने हठी !"

इन्सारोव फिर भी चुप रहा ।

दोनों इस बात पर सहमत हो गये कि इन्सारोव को किस दिन आना चाहिये । उन्होंने मकान मालिक को बुलवाया, मगर उसने पहले अपनी लड़की को भेजा । यह लड़की सात वर्ष की थी और सिर पर बड़े-बड़े फूलों वाला शाल डाले हुये थी । उसने गौर से और लगभग भयभीत सी होते हुये इन्सारोव द्वारा कही गई हर बात को सुना और फिर चुपचाप गायब हो गई । उसके बाद उसकी माँ हाजिर हुई । यह अपनी लड़की से बहुत ज्यादा मिलती-जुलती थी । इसने भी सिर पर एक शाल डाल रखा था मगर छोटा सा ही । इन्सारोव ने समझाया कि वह कुन्तसोवो के नजदीक एक बंगले में रहने जा रहा है मगर वह अपने कमरे को अपने पास ही रखेगा और अपने सामान को उसकी निगरानी में छोड़ जायेगा । दर्जी की स्त्री भी भयभीत सी हो उठी और चली गई। अन्त में मकान-मालिक खुद आया । पहले तो यह लगा कि जो कुछ कहा गया उसे वह पूरी तरह समझ गया और उसने गम्भीरता पूर्वक सिर्फ यही पूछा, "कुन्तोसोवो के पास ?"—लेकिन एकाएक दरवाजा खोला और चीखा : "तो तुम कमरा रख रहे हो ?" इन्सारोव ने उसे शान्त कर दिया । "क्योंकि यह जानना जरूरी है," दर्जी ने कठोरता के साथ दुहराया और गायब हो गया।

अपनी योजना से पूर्ण रूप से सन्तुष्ट होता हुआ बरसिएनेव घर को चल पड़ा। इन्सारोव, मित्र के प्रति प्रदर्शित की जाने वाली सज्जनता वश, जो रूस में बहुत कम मिलती है, उसके साथ दरवाजे तक आया। अकेला रह जाने पर उसने सावधानी से अपनी जाकिट उतारी और कागजों को सम्हालने लगा।

४

उसी दिन शाम को अन्ना वासिलिएव्ना अपने ड्राइंग-रूम में लगभग रुँआसी सी बैठी थी। कमरे में उसके साथ उसका पति और दूर के रिश्ते का उसका एक चाचा, उवार इवानोविच स्ताहोव भी था। चाचा लगभग साठ साल की उमर का घुड़सवार सेना का एक अवकाश-प्राप्त लेफ्टीनेन्ट था। वह इतना मोटा था कि चलने में भी उसे कष्ट होता था। उसका चेहरा पीला और फूला हुआ था जिसमें उनींदी पीली आँखें और रक्तहीन मोटे होंठ जड़े हुए थे। अवकाश प्राप्त करने के बाद से ही वह बराबर मास्को में अपनी पत्नी द्वारा छोड़ी गई एक छोटी सी आमदनी वाली जायदाद के सहारे रह रहा था। उसकी पत्नी एक व्यापारी की पुत्री थी। वह कुछ भी नहीं करता था और सोचता तो शायद कभी ही हो। परन्तु यदि सोचता भी था तो अपने विचारों को अपने तक ही सीमित रखता था। अपने जीवन में सिर्फ एक बार ही वह उत्तेजित हुआ था और उसने थोड़ी सी हलचल भी दिखाई थी। यह उस समय की बात है जब उसने एक अखबार में 'बमवारी से बचाव' नामक एक नवीन आविष्कार के विषय में पढ़ा जिसका प्रदर्शन लन्दन में हो रही अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शिनी में किया जा रहा था। वह अपने लिए एक अदद मंगाने का आर्डर देना चाहता था और सचमुच उसने इस बात की खोजबीन भी की थी कि उसे रुपया किसके पास और किसके जरिए भेजना चाहिए। उवार इवानोविच तम्बाखू के रंगवाला पूरी तरह से फिट फ्रॉक कोट पहनता था और गले में एक सफेद कपड़ा बाँधा करता था। वह बारबार और खूब खाया करता था। परेशानी के मौकों पर, जो उस समय उठ खड़े होते थे जब कभी उसे अपनी राय जाहिर करनी पड़ती थी, वह सिर्फ अपने दाहिने हाथ की उंगलियों को मरोड़ा करता था—पहले अंगूठे से लेकर कनिष्ठका तक और फिर कनिष्ठका से लेकर अंगूठे तक मरोड़ता और जोर लगाता हुआ कहता : "सचमुच······मैं कहना चाहता हूं······एक तरह से······"

उवार इवानोविच कठिनाई के साथ सांस लेता हुआ खिड़की के पास एक आराम कुर्सी पर बैठा हुआ था और निकोलाय आर्तियोमेविच जेबों में हाथ डाले कमरे में घूम रहा था। उसके चेहरे से असन्तोष झलक रहा था।

अन्त में वह खड़ा हो गया और सिर हिलाया।

"हाँ," उसने कहना प्रारम्भ किया, "हमारे जमाने में नौजवानों को दूसरी ही तरह से शिक्षा दी जाती थी: उन्हें अपने बड़ों के प्रति कर्तव्यहीन बनने की आज्ञा नहीं दी जाती थी। लेकिन आजकल—मैं देखता हूं और आश्चर्य करता हूँ। हो सकता है कि मेरी बात गलत हो और वे लोग ठीक हों; ऐसा हो सकता है। मगर ऐसा होते हुए भी मैं अपने दृष्टिकोण से देखता हूं—और मैं मूर्ख तो पैदा नहीं हुआ था। इस विषय में तुम्हारा क्या ख्याल है, उवार इवानोविच ?

उवार इवानोविच ने उसकी तरफ सिर्फ देखा और अपनी उंगलियाँ चलाईं।

"मिसाल के लिए एलेना निकोलाएव्ना को ले लो," निकोलाय आर्तियोमेविच कहने लगा—"मैं उसे समझ ही नहीं पाता। मैं उसके स्तर तक पहुँच ही नहीं पाता। उसका हृदय इतना विशाल है कि ऐसा लगता है कि वह सारी प्रकृति को अपने में समेट लेना चाहती है—मामूली मेढ़क या केंकड़े तक को—दरअसल, अपने पिता के अलावा और सारी चीजों को। ठीक है, मैं इस बात को जानता हूँ और उससे कुछ भी नहीं कहता। वह अत्यधिक भावुक है, विदुषी है, कल्पना की उड़ानें भरा करती है—और यह सब मुझसे नितान्त भिन्न है। लेकिन यह मिस्टर शुबिन—हमें यह मान लेना चाहिए कि वह एक अद्भुत, अद्वितीय कलाकार है, मैं इस बात का विरोध नहीं करूँगा—मगर अपने से बड़े के प्रति, उस आदमी के प्रति बदतमीजी दिखाना जिसके कि उस पर काफी अहसान हैं, और जब कि सब कुछ कहा और किया जा चुका है—मैं अपनी विशाल बुद्धि के अनुसार, स्वीकार करता हूँ कि मैं

इसका समर्थन नहीं कर सकता। मैं अधिक की कामना नहीं करता, यह मेरी आदत है, परन्तु हर बात की एक सीमा होती है।"

अन्ना वासिलिएव्ना ने अत्यधिक उत्तेजित होकर घंटी बजाई और एक लड़का हाजिर हुआ।

"क्या बात है कि पावेल याकोव्लेविच नहीं आता?" उसने कहा, "जब मैं बुला रही हूँ तो वह क्यों नहीं आता?"

निकोलाय आर्तियोमेविच ने कन्धे उचकाये, "अब, तुम उसे बुलवा किस लिए रही हो? उसकी जरा भी जरूरत नहीं, दरअसल मैं यह नहीं चाहता।"

"किसलिए निकोलाय आर्तियोमेविच? उसने तुम्हें परेशान किया है। वह तुम्हारे इलाज में भी गड़बड़ी पैदा कर सकता है। मैं उससे साफ-साफ बातें कर लेना चाहती हूँ। मैं यह जानना चाहती हूँ कि उसने तुम्हें नाराज क्यों किया?"

"मै फिर कहता हूँ, यह जरूरी नहीं है। और क्या यह जरूरी है कि तुम ऐसा करो ही—और वह भी नौकरों के सामने?"

अन्ना वासिलिएव्ना के चेहरे पर हल्की सी लाली छा गई।

"तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए, निकोलाय आर्तियोमेविच। मैं नौकरों के सामने ऐसा नहीं करती। फेदुस्का जाओ और ध्यान रहे कि तुम्हें पावेल याकोव्लेविच को फौरन साथ लेकर आना है।"

लड़का बाहर चला गया।

"इसकी जरा भी जरूरत नही है," निकोलाय आर्तियोमेविच ने मुँह ही मुँह में बड़बड़ाते हुए कहा और फिर कमरे में टहलने लगा। "मेरा यह मतलब कभी भी नहीं था।"

"मगर पावेल को तुमसे माफी माँगनी ही चाहिए।"

"मगर उसके माफी माँगने से मुझे क्या लाभ? वैसे भी माफी माँगने से क्या होता है? यह तो सब कहने की बातें होती हैं।"

" उनसे क्या लाभ है ? उसे सम्मान करना सिखाना ही पड़ेगा ।"

" तुम उसे अपने आप सिखाओ । वह तुम्हारी बात फौरन सुनेगा । और मुझे उससे कोई शिकायत भी नहीं है ।"

" नहीं, निकोलाय आर्तियोमेविच, आज जब से तुम आये हो तभी से तुम्हारा मिजाज बिगड़ा हुआ है । मैं खुद देख रही हूँ कि इधर तुम्हारा वजन कम हो गया है । मुझे भय है कि इलाज से तुम्हें कुछ भी फायदा नहीं हो रहा ।"

" इलाज जरूरी है," निकोलाय आर्तियोमेविच बोला : "मेरा गुर्दा काम नहीं करता ।"

इसी समय शुबिन कमरे में घुसा । उसके होंठों पर एक हल्की सी व्यंग से भरी मुस्कराहट थी ।

" तुमने मुझे बुलवाया था अन्ना वासिलियेव्ना ?" उसने पूछा ।

" हाँ, बेशक, मैंने तुम्हें बुलवाया था । सचमुच पावेल यह बहुत भयानक बात है । मैं तुमसे बहुत असन्तुष्ट हूँ । तुमने निकोलाय आर्तियोमेविच का अपमान कैसे किया ?"

" क्या निकोलाय आर्तियोमेविच मेरी शिकायत कर रहे थे ?" शुबिन ने अब भी होंठों पर वही व्यंगभरी मुस्कान भरे स्ताहोव की तरफ देखते हुए पूछा ।

स्ताहोव ने मुँह फेर लिया और नीचे की तरफ देखने लगा ।

" हाँ, वह शिकायत कर रहे थे । मुझे नहीं मालूम कि उन्हें चोट पहुंचाने के लिए तुमने क्या हरकत की है मगर तुम्हें फौरन माफी माँगनी चाहिए क्योंकि अभी उनकी तबियत ठीक नहीं है, और कुछ भी हो नौजवानों को हमेशा उन लोगों की इज्जत करनी चाहिए जिन्होंने उनकी मदद की है ।"

" ओह, जरा तर्क तो देखिए ।" शुबिन ने सोचा और स्ताहोव की तरफ मुड़ा ।

"मैं तुमसे माफी माँगने को तैयार हूँ निकोलाय आर्तियोमेविच," उसने नम्रता के साथ जरा सा झुकते हुए कहा, "अगर मैंने तुम्हें किसी भी रूप में चोट पहुँचाई हो।"

"जरा भी नहीं, बात यह नहीं है," अब भी शुबिन की निगाहों को बचाते हुए निकोलाय आर्तियोमेविच बोला, "फिर भी मुझे तुम्हें माफ करने में खुशी है—तुम तो जानते ही कि मैं आराम तलब आदमी हूं।"

"ओह, मुझे इसका यकीन है, कोई भी इस बारे में शक नहीं कर सकता!" शुबिन ने कहा, "मगर मेरी जिज्ञासा के लिए क्षमा करना: क्या अन्ना वासिलिएव्ना सचमुच यह जानती हैं कि मैंने क्या गलती की थी?"

"नहीं, मुझे कुछ भी नहीं मालूम," अन्ना वासिलिएव्ना ने इस तरह सिर को आगे की तरफ बढ़ाते हुए कहा मानो वह जानना चाहती थी कि बात क्या थी।

"ओह मेरे भगवान!" निकोलाय आर्तियोमेविच के मुँह से निकला और वह जल्दी से बोल उठा, "मैंने कितनी बार प्रार्थना की है और मिन्नतें की हैं······कितनी बार मैंने कहा है कि यह सब सफाई-बफाई देना मुझे अच्छा नहीं लगता। महीने में एक बार घर आओ और आराम करना चाहो—लोग बाग परिवार की बातें करते है, घरेलू बातें होती हैं और एक परिवार वाला होने के नाते—मगर यहाँ मिलता है सिर्फ लड़ाई झगड़ा और कलह। क्षण भर को भी चैन नहीं मिल पाता। फिर या तो क्लब चला जाना पड़ता है या और कहीं भाग जाना पड़ता है। आदमी आखिर इन्सान है, उसकी अपनी जरूरतें होती हैं मगर यहाँ······"

और अपने भाषण को बिना पूरा किए ही वह बाहर निकला और भड़ाक से दरवाजा बन्द कर दिया। अन्ना वासिलिएव्ना उसे जाता हुआ देखती रही।

"क्लब को?" वह झुंझलाकर बड़बड़ाई। "तुम क्लब नहीं जा रहे हो मूर्ख! क्लब में ऐसा कोई भी नहीं है जिसे मेरे अस्तबल में

से पोंछे दे दिए जांग और वे भी भूरे रङ्ग वाले जो रङ्ग कि मुझे सबसे ज्यादा पसन्द है। नहीं, बेवकूफ आदमी," उसने स्वर चढ़ाते हुए आगे कहा, "तुम क्लब नहीं जा रहे हो। मगर तुम, पावेल," वह उठती हुई कहने लगी, "तुम्हें अपनी हरकतों पर शरम नहीं आती? अब तुम बच्चे तो हो नहीं। और अब मेरे सिर में दर्द शुरू हो गया। तुम्हें मालूम है जोया कहाँ है?"

"मेरा ख्याल है ऊपर अपने कमरे होगी। वह चालाक लोमड़ी ऐसे मौसम में हमेशा अपनी मांद में जाकर घुस रहती है!"

"अच्छा, अच्छा, रहने दो बाबा!" अन्ना वासिलिएव्ना ने किसी चीज की तलाश में चारों तरफ देखा। "तुमने मूली के चूरे वाला ग्लास देखा है कहीं? पावेल, मेरे ऊपर एक मेहरबानी करो और आगे फिर कभी मुझे परेशान मत करना।"

"प्यारी बुआ, मैं तुम्हें कैसे परेशान कर सकता हूं? मुझे अपना हाथ चूमने दो। और तुम्हारा वह मूली का चूरा—उसे मैंने स्टडी-रूम में छोटी मेज पर रखा हुआ देखा था।"

"दार्या उसे हमेशा कहीं-न-कहीं छोड़ देती है," अन्ना वासिलिएव्ना ने कहा और अपनी रेशमी पोशाक को फड़फड़ाती हुई बाहर चली गई।

शुबिन उसके पीछे जाने ही वाला था कि उसने अपने पीछे उवार इवानेविच की धीमी आवाज सुनी इसलिए रुक गया।

"ओह पिल्ले—उसे तुमको—कुछ सबक—देना चाहिए था," उस अवकाश-प्राप्त लेफ्टीनेन्ट ने अटक-अटक कर कहा।

शुबिन उसके पास आया।

"और उसे मुझको सबक क्यों देना चाहिए था श्रीमान उवार इवानोविच?"

"क्यों? तुम छोटे हो—तुम्हें इज्जत करनी चाहिए।"

" किसकी ?"

" किसकी ? तुम जानते हो किसकी। भले ही दाँत पीसो।"

शुबिन ने अपने दोनों हाथों को छाती पर बांध लिया।

" ओह तुम, प्राचीनता के हिमायती," वह चीखा, "नरक की आत्मा, सामाजिक-भवन की नींव !"

उवार इवानोविच ने अपनी उँगलियां मरोड़ीं।

" बहुत हो चुका मिंया, मुझसे मत अटको।"

" अब सुनो," शुबिन कहता रहा। "तुम बिल्कुल बच्चे तो हो नहीं, क्यों हो, और फिर भी कैसा बच्चों का सा सुखद विश्वास और बच्चों की सी दुनियाँ तुम्हारे हृदय में छिपी हुई है ! सम्मान करो ! और तुम जानते हो आदि कालीन प्राणी, निकोलाय आर्तियोमेविच मुझसे क्यों नाराज हुए थे ? अच्छा तो सुनो, मैं आज सुबह पूरे समय तक उनके साथ उनकी उस जर्मन औरत के घर रहा था : हम साथ-साथ एक गाना गा रहे थे—वही गाना "मुझे मत छोड़ो।" तुम्हारे सुनने लायक था। मेरा ख्याल है तुम उससे अवश्य प्रभावित हो उठते। अच्छा तो मेरे प्यारे हुजूर हमने गाया और गाते रहे—फिर मै ऊब उठा। मैंने देखा कि वातावरण में कुछ विचित्रता सी थी, चारों तरफ एक कोमलता सी छा रही थी। इसलिए मैंने उन दोनों को छेड़ना शुरू कर दिया। इसका खूब असर हुआ। पहले वह मुझसे नाराज हुई फिर उससे ; फिर वह भी उससे नाराज हुआ और बोला कि वह सिर्फ घर पर ही खुश रहता है और वही उसका स्वर्ग है। वह बोली कि वह बदमाश है, और मैंने उससे जर्मन भाषा में कहा : "आह !"! वह चला आया और मैं वहीं बैठा रहा। वह यहाँ चला आया, मतलब यह कि वह स्वर्ग में चला आया, मगर स्वर्ग उसे बीमार बना देता है। इसलिए फिर वह शिकायतें करने लगता है। अब, हुजूर, आपकी राय में किसको दोष मिलना चाहिए।"

" बेशक, तुमको," उवार इवानोविच ने उत्तर दिया।

शुबिन ने उसकी तरफ घूरा।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ, माननीय योद्धा," उसने मजाक भरी विनम्रता के साथ कहना शुरू किया, "क्या आपको उन गुप्त शब्दों का उच्चारण करने की प्रेरणा इस कारण प्राप्त हुई थी कि आप अपने गम्भीर विचारों की विशेषता प्रकट करना चाहते थे या वे आपकी उस क्षणिक रुचि के कारण उत्पन्न हुए थे जिनके द्वारा आप 'शब्द' के वातावरण में व्याघात उत्पन्न करना चाहते थे।

"देखो, मैं कहे देता हूँ, मुझसे मत उलझो," उवार इवानोविच ने कराहते हुए कहा। शुबिन ठहाका मार कर हंस पड़ा और कमरे से बाहर भाग गया।

"ए!" लगभग पन्द्रह मिनट बीत जाने के बाद उवार इवानोविच ने पुकारा। "मैं कहता हूँ......एक ग्लास वोदका!"

लड़का एक ट्रे पर वोदका और कुछ खाने पीने का सामान रख कर लाया। उवार इवानोविच ने धीरे से ट्रे पर से ग्लास उठा लिया और काफी देर तक बड़े गौर के साथ उसकी तरफ देखता रहा मानो वह स्पष्ट रूप से यह न समझ पा रहा हो कि उसके हाथ में क्या है। उसने लड़के की तरफ देखा और पूछा : "क्या तुम्हारा नाम वास्का है?" फिर एक दुखपूर्ण मुद्रा में उसने ग्लास चढ़ाया, एक टुकड़ा खाया और रूमाल के लिए अपनी जेब में हाथ डाला।......इस बात को काफी देर हो चुकी थी जब लड़के ने ट्रे और शराब का बर्तन हटा लिया था, नमकीन मछली के बचे हुए टुकड़े खा लिये थे और अपने मालिक के ओवर-कोट का सहारा लेकर सो गया था और उवार इवानोविच अभी तक अपनी फैली हुई उंगलियों से रूमाल पकड़े उसी दुखपूर्ण मुद्रा में खिड़की, फर्श और दीवालों की तरफ देख रहा था।

९

शुबिन अपने कमरे में लौट आया और अभी अपनी किताब खोल ही रहा था कि निकोलाय आर्तियोमेविच का अर्दली सावधानी के साथ भीतर घुसा और उसके हाथ में एक चिट्ठी पकड़ा दी। चिट्ठी को तिकौना करके मोड़ा गया था और उस पर 'वंश' की सूचक मोहर लगी हुई थी। "मैं आशा करता हूँ," उस चिट्ठी में लिखा था, "कि तुम, एक सम्माननीय व्यक्ति होने के नाते, उस दस्तावेज के विषय में, जो आज प्रातः काल विवाद का विषय था, किसी से किंचित मात्र भी संकेत करने के लिए एक भी शब्द नहीं कहोगे। तुम मेरे सिद्धान्तों को और उस विषय में मेरी स्थिति को जानते हो, तुम उस वास्तविक नगण्य धनराशि और अन्य परिस्थितियों के विषय में जानते हो। इसके अतिरिक्त पारिवारिक रहस्यों का भी सम्बन्ध है जिनका सम्मान करना चाहिये जबकि पारिवारिक शान्ति इतनी पवित्र होती है कि इसे केवल हृदयहीन व्यक्ति ही—जिनमें मैं किसी भी कारण तुम्हारी गणना नहीं कर सकता—अप्रिय समझेंगे। (इस पत्र को वापस भेज देना)—न० स०।"

शुबिन ने उसी के नीचे पेन्सिल से लिखा: "चिन्ता न कीजिये—मैंने अभी लोगों की जेब काटना प्रारम्भ नहीं किया है।" और उसे अर्दली को लौटा दिया और फिर अपनी किताब उठा ली। मगर वह जल्दी ही उसके हाथ में से फिसल गई। उसने लाल पड़ते हुए आसमान को और दो मजबूत नए देवदार के पेड़ों को, जो दूसरों से अलग खड़े हुए थे, देखा। "दिन में," उसने सोचा, "देवदार के पेड़ों का रंग नीला-नीला सा रहता है मगर शाम होने पर वे कितने सुन्दर और हरे लगने लगते हैं!" और वह मन ही मन एलेना से मिलने की आशा में बाहर बाग में चला गया। उसे निराश नहीं होना पड़ा। अपने आगे, झाड़ियों के बीच वाली पग-

डंडी पर उसे एलेना की पोशाक की एक झलक दिखाई पड़ी । वह उसके पीछे चल दिया और बराबर में पहुँच कर बोला :

"मेरी तरफ मत देखना, मैं इस लायक नहीं हूँ।"

एलना ने जल्दी से उसकी तरफ देखा, जरा सी मुस्कराई और बाग में आगे की तरफ बढ़ गई । शुबिन उसके पीछे-पीछे चलने लगा ।

"मैं तुमसे अपनी तरफ न देखने के लिये कहता हूँ," वह बोला, "और फिर भी तुमसे बातें करने लगता हूँ ; यह साफ है कि ये दोनों परस्पर-विरोधी बातें हैं ! फिर भी, इनका कोई महत्व नहीं ; मेरे साथ ऐसा यह पहली बार तो हो नहीं रहा । मुझे अभी याद आया कि मैंने कल की अपनी बदतमीजी के लिये तुमसे माफी ही नहीं मांगी जो कि मांगनी चाहिये थी । तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो एलना निकोलाएव्ना ?"

वह रुक गई और तुरन्त कोई उत्तर नहीं दिया—इसलिये नहीं कि वह नाराज थी बल्कि इसलिए कि उसका मन कहीं दूर भटक रहा था ।

शुबिन ने अपने होंठ काटे ।

"तुम्हारा चेहरा कितना विचारमग्न है और साथ ही कितना उपेक्षापूर्ण !" वह बड़बड़ाया । "एलना निकोलाएव्ना," वह अपने स्वर को चढ़ाता हुआ कहता रहा, "मैं तुम्हें अपने एक मित्र की कहानी सुनाता हूँ । उसका भी एक मित्र था—एक ऐसा व्यक्ति, जो, जब तक कि उसने शराब पीनी प्रारम्भ नहीं की थी, तबतक तमीजदार था । फिर एक दिन सुबह मेरे मित्र की उससे सड़क पर मुलाकात हुई । (उनकी मित्रता इस समय तक समाप्त हो चुकी थी) और उसने देखा कि वह नशे में धुत था । मेरे मित्र ने जानबूझ कर उसकी तरफ से मुंह मोड़ लिया । मगर वह शराबी उसके पास आया और बोला : "अगर तुम मुझसे दुआ-सलाम न करते तो

मैं बुरा नहीं मानता मगर तुम मुँह क्यों मोड़ते हो ? हो सकता है कि दुख ने मुझे इस दशा में पहुँचा दिया हो। मेरी मिट्टी को शान्ति मिले !"

शुबिन खामोश था।

"इतना ही किस्सा है ?" एलेना ने पूछा।

"हाँ, इतना ही है !"

"मैं तुम्हें समझ नहीं पाई। मेरी समझ में नहीं आया कि तुम किस बात की तरफ संकेत कर रहे हो ? अभी तुमने यह कहा था कि मुझे तुम्हारी तरफ नहीं देखना चाहिए......"

"हाँ, और अब मैंने तुम्हें यह बताया है कि मुँह मोड़ लेना कितनी बड़ी गल्ती है।"

"मगर क्या मैंने......" एलेना कह रही थी।

"तुमने नहीं मोड़ा था ?"

एलेना का चेहरा हलका सा लाल हो उठा और उसने शुबिन की तरफ अपना हाथ बढा दिया। शुबिन ने उसे स्नेह पूर्वक दबा दिया।

"ऐसा लगता है कि मानो तुमने मुझे अपनी तरफ से उदासीन पाया हो," एलेना ने कहा, "मगर तुम्हारा यह सन्देह करना ठीक नहीं है। मैंने तो तुम्हारी उपेक्षा करने की बात सोची तक नहीं थी।"

"मंजूर, मंजूर। मगर तुम यह तो मानोगी ही कि इस समय तुम्हारे दिमाग में हजारों विचार घूम रहे है और तुम उनमें से मुझे एक भी नहीं बता रही। क्यों ? जो मैंने कहा वह ठीक है न ?"

"हो सकता है।"

"मगर ऐसा क्यों है ?"

"मैं अपने विचारों को स्वयं ही नहीं समझ पाती।"

"तो यह समय है कि तुम उन्हें किसी दूसरे को बता दो," शुबिन ने उसकी बात पकड़ ली, "मगर मैं बताऊँगा कि मुसीबत क्या है; मेरे विषय में तुम हीन विचार रखती हो।"

"मैं?"

"हाँ, तुम। तुम सोचती हो कि मेरी हर बात आधी बनावट से भरी रहती है क्योंकि मैं एक कलाकार हूँ। तुम्हारा ख्याल है कि यही नहीं कि मैं कुछ भी करने योग्य नहीं हूँ—यहाँ सम्भव है तुम ठीक हो—बल्कि यह भी कि मेरी भावनाओं में सच्चाई और गहराई भी नहीं है, कि मैं सच्चाई के साथ रो भी नहीं सकता, कि मैं बहुत ज्यादा और अत्यधिक द्वेष के साथ बोलता हूँ—और यह सब इसलिये क्योंकि मैं एक कलाकार हूं। तो तुम्हारा ख्याल है कि हम लोग कितने दीन और ईश्वर द्वारा ठुकराये हुए प्राणी हैं? मिसाल के लिए मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि तुम इस बात पर भी विश्वास नहीं कर रहीं कि मुझे सचमुच अफसोस हो रहा है।"

"नहीं, पावेल याकोव्लेविच, मैं तुम्हारे पश्चाताप करने पर विश्वास करती हूँ; और मुझे तुम्हारे आँसुओं पर भी यकीन है; मगर मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हें अपना यह पश्चाताप करना भी मनोरंजक लगता है और आँसू बहाने में भी तुम्हें मजा आता है।"

शुबिन चौंक पड़ा।

"ओह, अच्छी बात है, मैं देख रहा हूँ कि यह एक कभी न सुलझने वाली समस्या है, डाक्टरों के शब्दों में—'असाध्य रोग' है। तो मेरे लिए अब सिर्फ इतना ही रह जाता है कि अपना सिर झुका दूँ और आत्म-समर्पण करना स्वीकार कर लूँ। जो कुछ भी हो। मेरे भगवान, मैं अपने पास ही एक ऐसे व्यक्ति के रहते हुए कैसे आत्म-प्रतारणा सहता रहूं। और यह सोचता रहूँ कि मैं ऐसे व्यक्ति के हृदय को प्रभावित नहीं कर सकता, और कभी यह भी न जान सकूँ कि वह दुखी क्यों है, वह प्रसन्न क्यों है, उसके हृदय में कौन सी उथल-पुथल मची

हुई है, वह कहाँ जा रही है······मुझे यह बताओ," कुछ देर खामोश रहने के बाद उसने फिर कहा, "तुम कभी भी, किसी भी दशा में, किसी भी परिस्थिति में एक कलाकार से प्रेम नहीं कर सकतीं ?"

एलेना ने उसकी आँखों से आँखें मिलाते हुए देखा ।

" मैं ऐसा नहीं सोचती, पावेल याकोव्लेविच ; नहीं ।"

" समस्या हल हो गई," शुबिन ने दुख भरे हास्य के साथ कहा, " मैं सोचता हूँ कि इसके बाद मेरे लिये यह अधिक अच्छा होगा कि तुम्हारे एकान्त-भ्रमण में बाधा न डालूँ । प्रोफेसर तुमसे पूछ सकता था : "तुम्हारा यह उत्तर किन सिद्धान्तों पर आधारित है ?" मगर मैं तो प्रोफेसर हूँ नहीं ; तुम्हारे विचारानुसार तो मैं एक बच्चा हूँ ; मगर यह याद रखना : लोग बच्चों से मुँह नहीं मोड़ते । विदा मेरी मिट्टी को शान्ति मिले ।"

एलेना उसे रोकना चाह रही थी मगर कुछ देर सोचने के उपरान्त उसने भी कहा : " विदा ।"

शुबिन चहारदीवारी से बाहर निकल आया । स्ताहोव-परिवार के बंगले से थोड़ी ही दूर पर उसकी मुलाकात बरसिएनेव से हुई । वह सिर नीचे झुकाए, टोप पीछे गर्दन की तरफ उठाए तेजी से चला आ रहा था ।

" एन्द्री पेत्रोविच !" शुबिन चीखा ।

बरसिएनेव रुक गया ।

" जाओ, जाओ," शुबिन ने कहा, " मैं तो सिर्फ तुम्हें बुला रहा था, रोक नहीं रहा था—बाग में घुस जाओ, वहाँ तुम्हें एलेना मिल जायेगी । मेरा ख्याल है कि वह तुम्हारा इन्तजार कर रही है······कुछ भी सही, वह किसी का इन्तजार कर रही है । 'वह इन्तजार कर रही है,' क्या तुम इन शब्दों की शक्ति को समझते हो ?······मगर, मेरे दोस्त, तुम जानते हो, यहाँ एक बड़ी अजीब सी चीज है ? जरा कल्पना करो,

मैं यहाँ एलेना के साथ, एक ही घर में, दो साल से रह रहा हूं और उससे प्रेम भी करता हूँ और अभी-अभी, इसी क्षण—नहीं, मैं उसे समझ नहीं सका—मगर मैंने उसे देखा था। मैंने उसे देखा और आश्चर्य चकित हो उठा। मेहरबानी करके मेरी तरफ इस छल एवं व्यंग्य भरी दृष्टि के साथ मत देखो, यह तुम्हारे गम्भीर चेहरे पर शोभा नहीं देती। ओह, हाँ, मैं जानता हूँ, तुम मुझे अन्नुश्का की याद दिलाने जा रहे हो। उसकी क्या बात है ? मैं इससे इन्कार तो नहीं करता। अन्नुश्का वैसी ही है जैसी कि हम लोग पसन्द करते हैं। अन्नुश्का और जोया की जय हो ! और एवगुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना की भी। अच्छा अब तुम जाओ और एलेना से मिलो और मैं भी चल दिया—तुम सोच रहे हो कि अन्नुश्का के पास, नहीं, मेरे दोस्त, उससे भी बुरी जगह। मैं प्रिंस चिकुरास्सोव के यहाँ जा रहा हूं। वह वोलिगन की ही तरह काजान का रहने वाला एक तातार और कला का संरक्षक है। जरा इस निमंत्रण-पत्र को तो देखो, तुम इन शब्दों को देख रहे हो: 'कृपया उत्तर से सूचित कीजिए' ? यहाँ देहात में भी मुझे चैन नहीं लेने देते ! अच्छा, विदा !"

बरसिएनेव ने शुबिन के इस अनर्गल प्रलाप को खामोशी के साथ सुना और उसके कारण थोड़ा सा परेशान सा हो उठा। फिर बंगले के अहाते में चला गया। इस बीच शुबिन सचमुच प्रिन्स चिकुरास्सोव से मिलने गया जिससे उसने बहुत ही ज्यादा बदतमीजी की बातें अत्यन्त ही सुन्दर ढंग से कहीं। कला का वह संरक्षक अट्टहास के साथ हँसता रहा, उसके मेहमान खिल-खिल करते रहे। मगर उनमें से दरअसल किसी का भी मनोरंजन नहीं हुआ और वे लोग चिड़चिड़ाते हुए एक दूसरे से बिदा हुए। जैसे कि दो सज्जन, जिनमें परस्पर हल्का सा परिचय हो, नेवस्की प्रोस्पेक्ट पर आपस में मिलते समय एक दूसरे की तरफ दाँत फाड़ देंगे, बड़े बन कर अपने अपने चेहरे सिकोड़ेंगे और आगे बढ़ जाने पर अपना वही पुराना निर्लिप्त, उदास और मन्दाग्नि के रोगी का सा भाव धारण कर लेंगे।

१०

एलेना इस समय तक बाग में से जा चुकी थी इसलिए बरसिएनेव से ड्राइंग-रुम में मिली। उसके स्वागत करने में विनम्रता थी। उसने तुरन्त ही, लगभग अधीर सी होकर, पिछले दिन वाले विषय को प्रारम्भ कर दिया। वह अकेली थी। निकोलाय आर्तियोमेविच चुपचाप कहीं खिसक गया था और अन्ना वासिलिएव्ना अपने सिर पर एक गीली पट्टी बाँधे ऊपर लेटी हुई थी। उसकी बगल में, अपनी स्कर्ट को सावधानी से चिकना किए और गोद में दोनों हाथ रखे जोया बैठी थी। उवार इवानोविच छत के नीचे वाले कमरे में एक चौड़े, आरामदेह कोच पर, जिसे घर वाले, "सुलाने वाला" कहा करते थे, आराम कर रहा था। बरसिएनेव ने एक बार फिर अपने पिता के विषय में बातें कीं जो उसके लिए एक पवित्र स्मृति के समान थीं। हमारे लिए भी यह उपयुक्त अवसर है कि उस विद्वान व्यक्ति के विषय में कुछ कहें।

बरसिएनेव के पिता के पास बयासी किसानों वाली एक जागीर थी। इन किसानों को उसने मरने से पहले आजाद कर दिया था। वह उन 'नवीन विचारकों' में से एक, गोटिन्गेन का भूतपूर्व विद्यार्थी, और 'पृथ्वी पर आत्मा का स्पष्टीकरण और परिवर्तन' नामक एक अप्रकाशित ग्रन्थ का लेखक था। इस पुस्तक में शीलिंगवाद, स्वीडेनबोर्गियावाद और जनतंत्रवाद का एक अत्यन्त उच्च मौलिक स्वर पर समन्वय किया गया था। जब उसका पुत्र बच्चा ही था तभी वह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद ही, बच्चे की शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिए मास्को चला आया था। वह हर पाठ को बड़ी सावधानी के साथ तैयार करता और अत्यधिक जागरूक होकर कार्य करता परन्तु उसे तनिक भी सफलता नहीं मिलती थी। वह एक स्वप्नद्रष्टा, अध्ययन द्वारा प्राप्त-ज्ञान का प्रेमी और रहस्यवादी था। वह बात करता था तो अटक-अटक कर और भनभनाते से स्वर में बोलता था। अपनी बात को अस्पष्ट ढंग से और

खूब व्याख्या करता हुआ कहता था, विशेष रूप से तुलना करते समय ऐसा और भी अधिक होता था। उसे अपने पुत्र के सामने तो बहुत ही लज्जा आती थी जिससे वह अत्यधिक प्रेम करता था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि एन्द्री पाठ समाप्त होने के उपरान्त चुपचाप बैठा आँखें झपकाया करता और तनिक भी प्रगति न कर सका। बुड्ढा (वह पचास के लगभग था, उसने शादी बहुत देर में की थी) आखिर में इस बात को भाँप गया कि मामला उस तरह नहीं बढ़ रहा है जैसा कि बढ़ना चाहिए था। इसलिए उसने उसे एक स्कूल के छात्रावास में भर्ती करा दिया। एन्द्री ने पढ़ना प्रारम्भ कर दिया यद्यपि अब भी उस पर पिता की नजर बराबर लगी रहती थी। उसका पिता बराबर उससे मिलने आता रहता था और अपनी बातों और आदेशों से हैडमास्टर को थका डालता था। अन्य मास्टर भी इस बिना बुलाये मेहमान की बातों से परेशान रहते थे जो हमेशा, जैसा कि वे कहा करते थे, उनके लिए शिक्षा-विषयक उच्चकोटि के ग्रन्थ लाया करता था। यहाँ तक कि स्कूल के अन्य लड़के भी उस बुड्ढे का सांवला चेचक के दागों से भरा चेहरा और एक विचित्र प्रकार के भूरे पूंछदार कोट से ढकी उसकी दुबली पतली काया को देखते ही परेशान हो उठते थे। उस समय वे इस बात का सन्देह भी न कर सके कि लम्बी नाक और सारस जैसी चाल-ढाल वाला यह बुड्ढा जो सदैव गम्भीर रहता है और जिसके चेहरे पर कभी मुस्कराहट भी नहीं आती, उनमें से हरेक के विषय में इस तरह चिन्तित और दुखी रहता है मानो वे सभी उसके अपने पुत्र हों। एक बार उसे सूझा कि वह उन्हें वाशिंगटन के विषय में कुछ बताये। "नवयुवक शिक्षार्थियो," उसने कहना प्रारम्भ किया—लेकिन उसकी विचित्र आवाज की पहली ध्वनि सुनते ही सभी नवयुवक शिक्षार्थी भाग खड़े हुए। गोटिन्गेन के इस पुराने शिष्य की दृष्टि में जिन्दगी फूलों की सेज नहीं थी। वह संसार में होने वाली घटनाओं तथा हर प्रकार के प्रश्नों और समस्याओं के कारण सदैव परेशान रहा करता था।

जब युवक बरसिएनेव विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ तो उसका

५

पिता उसके साथ लेक्चर सुनने जाया करता था परन्तु अब उसका स्वास्थ्य उसका साथ नहीं देता था। सन् १८४८ की घटनाओं ने उसे बुरी तरह झकझोर डाला (उसे अपनी किताब पूरी–की–पूरी फिर से लिखने पड़ी) और १८५३ के जाड़ों में वह मर गया। वह अपने पुत्र को विश्वविद्यालय की शिक्षा सफलता के साथ समाप्त करता हुआ देखने के लिए जीवित नहीं रहा मगर वह पहले ही उसे डिग्री प्राप्त करने के लिए बधाई दे चुका था और विज्ञान की सेवा के प्रति अपने समर्पण में उसे आशीर्वाद दे चुका था। "मैं अपनी मशाल तुम्हें सौंपता हूँ," अपनी मृत्यु से दो घन्टे पहले उसने कहा था, "मै अपनी शक्ति भर इसे आगे बढ़ाता रहा ; तुम इसे जीवन-पर्यन्त नीचे मत गिरने देना।"

बरसिएनेव काफी देर तक एलेना से अपने पिता के विषय में बातें करता रहा। एलेना की उपस्थिति में उसे जो परेशानी हुआ करती थी वह गायब हो गई, उसका तुतलाना कम मालूम पड़ने लगा। वार्तालाप का विषय विश्वविद्यालय की तरफ मुड़ गया।

"यह बताइये," एलेना ने उससे पूछा, "आपके मित्रों में कोई अत्यधिक प्रतिभाशाली व्यक्ति भी था?"

बरसिएनेव ने शुबिन के शब्दों को याद किया।

"नहीं, एलेना निकोलाएव्ना, सच बात तो यह है कि हम लोगों में एक भी विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति नही था। यह तो बहुत दूर की बात थी। लोगों का कहना है कि मास्को-विश्वविद्यालय के कभी दिन थे मगर वे दिन तो अब निश्चय रूप से नहीं रहे। यह तो आजकल विश्वविद्यालय न होकर एक स्कूल जैसा रह गया है। मुझे अपने साथी विद्यार्थियों को देख कर बड़ा दुख होता था," उसने स्वर को धीमा करते हुए आगे कहा।

"दुख?" एलेना धीरे से बोली।

"फिर भी," बरसिएनेव ने कहना प्रारम्भ किया, "मुझे अपनी

बात सुधार कर कहनी चाहिये। मैं एक विद्यार्थी को जानता हूँ—उसका और मेरा विषय एक नहीं है—वह सचमुच एक विशिष्ठ प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति है।"

"उसका नाम क्या है?" एलेना ने उत्सुक होकर पूछा।

"इन्सारोव—दूमित्री निकानोरोविच इन्सारोव। वह बल्गेरिया का रहने वाला है।"

"रूसी नहीं है?"

"नहीं, रूसी नहीं है।"

"तो वह मास्को में क्यों रहता है?"

"वह यहाँ पढ़ने के लिए आया था; और आप सोच सकती हैं कि उसकी शिक्षा का असली उद्देश्य क्या है? इन्सारोव का सिर्फ एक ही लक्ष्य है: अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र करना। उसका जीवन भी बड़ा अद्भुत रहा है। उसका पिता तिरनोवो का रहने वाला एक सम्पन्न व्यापारी था। आजकल तो यह एक छोटा सा कस्बा है मगर पुराने जमाने में, जब बल्गेरिया एक स्वतंत्र देश था, तिरनोवो राजधानी थी। वह सोफिया में व्यापार करता था और रूस में भी उसके सम्बन्ध थे: उसकी बहन, इन्सारोव की बुआ, अब भी कीव में रह रही है। वह वहाँ के हाई स्कूल के इतिहास के अध्यापक की पत्नी है। फिर १८३५ में, अब से अठारह वर्ष पहले, एक भयंकर दुर्घटना घटी। इन्सारोव की माँ एकाएक गायब हो गई—और एक सप्ताह बाद उन्हें पता लगा कि उसकी हत्या कर दी गई थी।

एलेना कांप उठी और बरसिएनेव खामोश हो गया।

"कहते रहिए, कहते रहिए," एलेना बोली।

"अफवाह यह थी कि एक तुर्की अधिकारी ने उसका अपहरण किया और हत्या कर दी: उसके पति, इन्सारोव के पिता ने असलियत का पता लगा लिया था और स्वयं बदला लेने का प्रयत्न किया

था—लेकिन वह उस अधिकारी को खंजर से केवल घायल करने में ही सफलता प्राप्त कर सका······उन्होंने उसे गोली मार दी।"

"उसे गोली मार दी? बिना मुकदमा चलाये?"

"हाँ। उस समय इन्सारोव सात वर्ष का था। पड़ोसियों ने उसे अपने संरक्षण में ले लिया। उसकी बुआ ने अपने भाई के परिवार पर पड़े संकट के विषय में सुना और बच्चे को अपने यहाँ बुलाया। बच्चे को ओडेसा ले जाया गया और वहाँ से कीव पहुंचा दिया गया। उसने पूरे बारह वर्ष कीव में बिताये—यही कारण है कि वह रूसी भाषा इतनी अच्छी बोलता है।"

"तो वह रूसी भाषा बोलता है?"

"जैसे कि हम और आप बोलते हैं। जब वह बीस वर्ष का था—यह १८४८ के प्रारम्भ की बात हो सकती है—उसने अनुभव किया कि वह अपने देश को वापस जाना चाहता है। वह सोफिया और तिरनोवो गया और सारे बल्गेरिया में एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूमता रहा। उसने वहाँ दो वर्ष बिताये और फिर अपनी मातृभाषा सीख ली। तुर्की सरकार उसके पीछे पड़ी हुई थी इसलिए उसके ये दो वर्ष बड़े भयंकर संकटों में बीते होंगे। मैंने एक बार देखा था कि उसकी गर्दन पर घाव का एक लम्बा निशान था जो किसी चोट के कारण लगा होगा। मगर वह इन विषयों पर बातें करना पसन्द नहीं करता। साथ ही वह एक तरह से गुम-सुम सा रहने वाला प्राणी है। मैंने कोशिश की मगर बेकार रही। सिर्फ मामूली सा जबाब दे देता है। भयंकर रूप से जिद्दी है। मास्को में रहकर अपनी शिक्षा पूरी करने और रूसियों का निकट से अध्ययन करने के लिए वह १८५० में रूस वापस आया। और फिर जब विश्वविद्यालय छोड़ेगा······"

"तब?" एलेना ने टोका।

"भगवान जाने—भविष्यवाणी करना कठिन है।"

काफी देर तक एलेना की निगाहें बरसिएनेव के चेहरे पर जमी रहीं।

"बड़ी रोचक कहानी है," अन्त में वह बोली, "वह देखने में कैसा है, वह—क्या नाम है उसका……इन्सारोव ?"

"मैं आपको कैसे वताऊँ—मेरे विचार से तो बुरा नहीं है। मगर आप उसे स्वयं ही देख लेगीं।"

"क्या मतलब ?"

"मैं उसे यहाँ आपसे मिलाने लाऊँगा। परसों वह यहाँ गाँव में आ रहा है। वह मेरे साथ उसी बंगले में रहेगा।"

"सच ? मगर क्या वह यहाँ आकर हम लोगों से मिलना पसन्द करेगा ?"

"जरूर ! उसे बड़ी खुशी होगी।"

"तो वह घमण्डी नहीं है ?"

"वह ? जरा भी नहीं। या कह लीजिए, वह घमण्डी है, मगर आपके अर्थों में नहीं। मिसाल के लिए, वह किसी से, कभी भी, पैसा उधार नहीं लेगा।"

"मगर क्या वह गरीब है ?"

"हाँ, अमीर तो नहीं है। जब वह बल्गेरिया गया था तो उसने अपने पिता की जायदाद के बचे हुए सामान को, जो बर्वाद होने से बच गया था, इकट्ठा कर लिया था ; और उसकी बुआ भी उसकी मदद करती रहती है : मगर यह सब मिला कर भी बहुत थोड़ा हो पाता है।"

"वह एक दृढ़ चरित्र वाला व्यक्ति होना चाहिए," एलेना ने राय जाहिर की।

"हाँ, वह फौलादी व्यक्ति है। और साथ ही, जैसा कि आप देखेंगी, गम्भीर लक्ष्य और रहस्यात्मकता के रहते हुए भी उसमें बच्चों

का सा भोलापन और स्पष्टता है। यह ठीक है कि उसकी यह स्पष्टता हमारी जैसी व्यर्थ की स्पष्टता के समान नहीं है, ऐसे व्यक्तियों की स्पष्टता जिसके पास कुछ छिपाने को ही नहीं है—मगर छोड़िए, मैं उसे आपसे मिलाने लाऊँगा, इन्तजार करिए।"

"क्या वह शर्मीला है?" एलेना ने फिर पूछा।

"नहीं, शर्मीला नहीं है। केवल भावुक व्यक्ति शर्मीले होते हैं।"

"तो क्या आप भी भावुक हैं?"

बरसिएनेव परेशान हो उठा और अपने हाथ फटकारे।

"आपने मेरी जिज्ञासा को उभाड़ दिया है," एलेना कहती रही, "मगर यह बतलाइये, क्या उसने उस तुर्क से बदला ले लिया था?"

बरसिएनेव मुस्कराया।

"केवल उपन्यासों में ही लोग बदला लिया करते हैं एलेना निकोलाएव्ना, दूसरी बात यह कि बारह वर्ष में वह तुर्क मर गया होगा।"

"मगर मिस्टर इन्सारोव ने इस विषय पर आपसे कभी कुछ भी नहीं कहा?"

"कुछ भी नहीं।"

"वह सोफिया क्यों गया था?"

"उसका पिता वहाँ रहता था।"

एलेना ने सोचा।

"अपने देश को आजाद करने के लिए," एलेना ने कहा, "केवल इन शब्दों का उच्चारण मात्र ही हृदय में भय उत्पन्न कर देता है—ये इतने महान् शब्द हैं।"

इसी समय अन्ना वासिलिएव्ना कमरे में आई और वार्तालाप बन्द हो गया।

उस शाम को घर लौटते हुए बरसिएनेव विचित्र रूप से उत्तेजित था। उसने इन्सारोव का एलेना के साथ परिचय कराने के अपने निर्णय पर पश्चाताप नहीं किया। यह नितान्त स्वाभाविक प्रतीत हुआ कि उसके द्वारा कही गई इस नवयुवक बल्गेरियन की कहानी ने एलेना पर गहरा प्रभाव डाला था—क्या उसने स्वयं ही इस प्रभाव को और भी अधिक गहरा बनाने का प्रयत्न नहीं किया था? मगर उसके हृदय में एक बोझिल और रहस्यमय सी भावना भर उठी। वह एक दुखद उदासीनता से दुखी हो उठा।......फिर भी यह व्याकुल मनस्थिति उसे 'होहेन्स्तोफेन का इतिहास' को उसी पृष्ठ पर खोलने से न रोक सकी, जहाँ उसने कल शाम को उसे छोड़ा था।

११

दो दिन बाद, अपने वायदे के अनुसार इन्सारोव अपने सामान के साथ बरसिएनेव के बंगले पर आ पहुँचा। उसके पास नौकर नहीं था मगर बिना किसी की मदद के ही वह कमरे और फर्श को झाड़ने और ठीक करने तथा फर्नीचर को करीने से सजाने में जुट गया। मेज को ठीक करने में काफी समय लगा क्योंकि वह उसे जिस कोने में लगाना चाहता था उसमें वह नहीं आ रही थी। मगर इन्सारोव ने, अपनी उस शान्त दृढ़ता के साथ जो उसका विशेष गुण था, अन्त में उसे ठीक कर ही लिया। जब उसने सब कुछ ठीक कर लिया तो बरसिएनेव को दस रूबल पेशगी दिए और फिर एक मोटी छड़ी हाथ में लेकर अपने नए घर के चतुर्दिक वातावरण का निरीक्षण करने निकल पड़ा। वह लगभग तीन घन्टे बाद लौटा। बरसिएनेव ने उससे अपने साथ खाना खाने के लिए कहा। उसने उत्तर दिया कि वह उस दिन के निमंत्रण को तो अस्वीकार नहीं करेगा मगर उसने मकान मालकिन से बात कर ली है और भविष्य में अपना खाना उसी से बनवाया करेगा।

"मगर तुम्हे बडा गन्दा खाना मिलेगा," बरसिएनेव ने विरोध किया, "वह किसान औरत जरा भी अच्छा खाना पकाना नही जानती। तुम मेरे साथ खाना क्यों नहीं खाना चाहते ? खर्च दोनों सम्हाल लेंगे।"

"मेरी आर्थिक स्थिति मुझे तुम्हारा जैसा खाना खाने की इजाजत नही देती," इन्सारोव ने शान्ति के साथ मुस्कराते हुए कहा।

उस मुस्कराहट में कुछ ऐसी बात थी जिसने बरसिएनेव को आगे जोर देने की इजाजत नही दी। उसने दुबारा नही कहा। खाना खाने के बाद उसने प्रस्ताव रखा कि स्ताहोव-परिवार से मिलने चला जाय। मगर इन्सारोव ने उत्तर दिया कि वह आज पूरी शाम अपने बल्गेरिया वासी मित्रों को पत्र लिखने में बिताना चाहता है इसलिए फिर किसी दिन चला जाय। बरसिएनेव इन्सारोव के दृढ निश्चय की आदत से पहले से भी परिचित था लेकिन केवल इसी समय, जब वे दोनों एक साथ रह रहे थे, पहली और अन्तिम बार उसने अनुभव किया कि इन्सारोव अपने निश्चय को कभी भी नही बदलता जैसे कि वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने में कभी भी नही चूकता। बरसिएनेव को, जो एक पक्का रूसी थी, ट्यूटोनिक जाति की सी यह दृढता पहले तो बडी भद्दी और यहाँ तक कि हास्यास्पद सी प्रतीत हुई मगर उसने जल्दी ही अपने को इसका आदी बना लिया और अन्त में इस निश्चय पर पहुँचा कि यह भले ही अच्छी न हो, परन्तु कम से कम सुविधाजनक तो थी।

आने के दूसरे दिन बाद इन्सारोव सुबह चार बजे उठा, कुन्तसोवो के चारों तरफ चुपचाप घूमा, नदी में नहाया, ठंडे दूध का एक ग्लास पिया और फिर काम पर बैठ गया। उसके पास बहुत काम था : वह रूसी इतिहास, कानून और राजनीतिक अर्थशास्त्र का अध्ययन कर रहा था; बल्गेरियन गानों और इतिहास का अनुवाद कर रहा था, बाल्कन समस्या पर मसाला इकट्ठा कर रहा था, बल्गेरिया वासियों के लिए रूसी व्याकरण और रूसियों के लिए बल्गेरियन भाषा की व्याकरण लिख रहा था। बरसिएनेव उससे मिलने भीतर आया और फायरबाख पर

बात करने लगा। इन्सारोव गौर से सुनता रहा। उसकी टिप्पणियाँ बहुत संक्षिप्त और बिल्कुल सही होतीं थीं और उनसे यह स्पष्ट हो रहा था कि वह अपने दिमाग में यह निश्चय करने का प्रयत्न कर रहा था कि उसे फायरबाख का अध्ययन करना चाहिए या उसके बिना ही उसका काम चल सकता है। बरसिएनेव विषय को बदल कर इन्सारोव के कार्य के बारे में बातें करने लगा। और उसने इन्सारोव से पूछा कि क्या वह उसे कोई चीज नहीं दिखायेगा? इन्सारोव ने उसे अपने द्वारा अनुवादित दो तीन बल्गेरियन गीतों के अनुवाद पढ़ कर सुनाए और उनके विषय में उसकी राय पूछी। बरसिएनेव ने सोचा कि अनुवाद ठीक तो थे मगर उनमें प्रवाह की पूर्णता नहीं थी। इन्सारोव ने उसके मतों को नोट कर लिया। गानों से हटकर बरसिएनेव बल्गेरिया की समकालीन परिस्थिति पर बातें करने लगा और इसी अवसर पर उसने पहली बार देखा कि अपने देश के उल्लेख मात्र से इन्सारोव में कितना परिवर्तन हो उठा था। यह बात नहीं थी कि उसका चेहरा लाल हो उठा हो या स्वर तीव्र हो उठा हो—ऐसी कोई भी बात नहीं हुई। परन्तु ऐसा लगा जैसे उसका सम्पूर्ण शरीर शक्ति और स्फूर्ति से भर उठा हो, उसके होठों की रेखायें अधिक तीखी और कठोर हो उठीं और उसके नेत्रों की गहराई में निरन्तर प्रज्वलित रहने वाली एक धुँधली सी अग्निशिखा जल उठी। इन्सारोव स्वदेश की अपनी यात्रा के विषय में किसी से भी बातें करने की परवाह नहीं करता था मगर बल्गेरिया की साधारण बातों के विषय में वह किसी से भी खुशी के साथ बातें करने को प्रस्तुत हो जाता था। वह बिना उत्तेजित हुए तुर्कों, उनके अत्याचारों, अपने देशवासियों की दीनता और कष्टों और उनकी आशाओं के विषय में बताने लगा। उसका प्रत्येक शब्द उसके द्वारा मुद्दत से अनुभव की जाती हुई एक ही भावना और उसके विषय में उसके सतत चिन्तन को व्यक्त कर रहा था।

"मुझे बहुत अधिक भय है," जब वह बल्गेरियन बोल रहा था तो बरसिएनेव ने सोचा, "मुझे सचमुच इस बात का भय है कि उस तुर्क

को इन्सारोव के माता-पिता की मृत्यु की बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

इन्सारोव अभी तक बोले जा रहा था कि दरवाजा खुला और दहलीज पर शुबिन दिखाई पड़ा।

शुबिन जब कमरे में आया तब सम्भवत अत्यधिक प्रसन्न और घूमने की मुद्रा में था। बरसिएनेव, जो उसकी नस-नस से परिचित था, फौरन समझ गया कि वह आज रंग में है।

"मैं बिना किसी तकल्लुफ के अपना परिचय खुद दे लूंगा," उसने चेहरे पर एक प्रसन्न और मुक्त भाव धारण किए हुए कहा: "नाम शुबिन है, मैं यहाँ बैठे इस नौजवान का दोस्त हूं।" (उसने बरसिएनेव की तरफ इशारा किया) "आप मिस्टर इन्सारोव होने चाहिए, हैं न?"

"मैं इन्सारोव हूँ।"

"तो हाथ मिलाइये······और एक दूसरे से अच्छी तरह परिचित होने दीजिए। मुझे नहीं मालूम कि बरसिएनेव ने आपको मेरे विषय में कुछ बताया है या नहीं मगर वह मुझे आपके विषय में बहुत कुछ बता चुका है। तो आप यहाँ रहने के लिए आए है? बहुत सुन्दर! मेरे इस तरह घूरने का बुरा मत मानिए। मैं पेशे से मूर्त्तिकार हूं और देख रहा हूँ कि मुझे जल्दी ही आपके सिर का मॉडल बनाने की इजाजत मांगनी पड़ेगी।"

"मेरा सिर आपकी सेवा में प्रस्तुत है," इन्सारोव बोला।

"आज हम लोगों का क्या प्रोग्राम है,?" शुबिन एकाएक एक नीची कुर्सी पर बैठता हुआ बोला और उसने अपने दोनों घुटने चौड़ा कर उन पर कुहनियां टेक लीं। "एन्द्री पेत्रोविच, हजूर का आज कोई कार्यक्रम है? हमें कोई मजेदार प्रोग्राम बनाना चाहिए। मौसम बहुत सुन्दर है; सूखी घास और सूखी हुई झरबेरी के फलों की सुगन्ध ऐसी लग रही है······ऐसा लगता है जैसे तुम झरबेरी

की चाय पी रहे हो। हमें कुन्तसोवो के नए निवासी को यहाँ का सब प्रकार का सौन्दर्य दिखा देना चाहिए।" ('किसी बात ने इसे परेशान कर रखा है,' बरसिएनेव अब भी यही सोच रहा था।) "अच्छा, होरातियो, मेरे दोस्त, यह खामोशी क्यों? अपने इन पैगम्बरी होठों को खोलो न: हमें कुछ करना चाहिए या नहीं?"

"मुझे नहीं मालूम कि इन्सारोव को यह कैसा लगेगा," बरसिएनेव ने कहा। "मेरा ख्याल है वह कुछ काम करने की तैयारी कर रहा था।"

शुबिन अपनी कुर्सी पर घूमा।

"आप काम करना चाहते हैं?" उसने बनावटी नाक के से स्वर में पूछा।

"नहीं," उसने उत्तर दिया, "मैं आज का दिन घूमने में लगा सकता हूं।"

"तो बहुत अच्छी बात है," शुबिन बोला, "अच्छा अब चलो एन्द्री पेत्रोविच, मेरे दोस्त, अपनी इस पवित्र खोपड़ी को टोप से ढक लो और हम लोग, जहाँ तक हमारी निगाह जायेगी, वहाँ तक घूमेगें—हमारी आंखें ताकतवर हैं और काफी दूर तक देख सकती हैं। मैं एक गन्दी छोटी सी सराय को जानता हूं जहाँ हमें जानवरों का सा खाना मिल सकेगा और हम सब मन भर कर आनन्द मनायेंगे चलो!"

आधा घन्टे बाद वे तीनों मास्को नदी के किनारे घूम रहे थे। इन्सारोव ने कनटोप जैसी एक अजीब सी टोपी निकाली जिसे देख कर शुबिन हंसते-हंसते दुहरा हो गया। इन्सारोव धीरे धीरे, देखता, सांस लेता प्रसन्नता के साथ बातें करता और मुस्कराता हुआ चल रहा था। आज का दिन उसने पूर्णरूप से आनन्द मनाने के लिए छोड़ रखा था और वह उसका अधिक से अधिक उपभोग

कर रहा था। "छुट्टी के दिन घूमने के लिए जाते हुए अच्छे नन्हें बच्चों की तरह," शुबिन बरसिएनेव के कान में फुसफुसाया । शुबिन खुद बच्चों की सी हरकतें कर रहा था । वह आगे दौड़ जाता, प्रसिद्ध मूर्त्तियों की मुद्रायें बनाता, घास में कलामुन्डियां खाता । इन्सारोव की शान्त मुद्रा ने उसे विदूषकों की सी हरकतें करने को बाध्य किया यद्यपि उससे वह चिढ़ नहीं रहा था।

"ए फ्रांसीसी, तुम इतने बेचैन क्यों हो?" बरसिएनेव ने उससे कई बार पूछा।

"तुम ठीक कहते हो, मैं फ्रांसीसी हूँ, आधा-फ्रांसीसी," शुबिन उत्तर देता, "इसलिये मुझे, जैसा कि एक वेटर मुझसे कहा करता था, मजाक और गम्भीरता में हमेशा सन्तुलन रखना पड़ता है।"

वे लोग नदी की तरफ से मुड़ गये और सुनहली राई की दो ऊँची दीवालों के बीच बनी एक संकरी नीची पगडन्डी पर चलने लगे। इन चलते हुओं पर राई की छाया हल्की सी नीलिमा लिये हुये पड़ रही थी । अनाज की बालों के सिरों पर चमकती हुई धूप झूमती हुई सी लग रही थी । लावा पक्षी गा रहे थे, बटेरों की आवाजें आ रही थीं । चारों तरफ गर्म हवा के झोंकों से लहराती हुई घास हरी-हरी चमक रही थी और वृक्षों पर फूल लहरा रहे थे। काफी देर तक वे लोग घूमते, बातें करते और सुस्ताते रहे। एक स्थान पर तो शुबिन ने बगल में से गुजरते हुये एक बिना दाँत वाले किसान के साथ मेंढ़क की तरह उछल-उछल कर छेड़खानी की मगर उसकी हर हरकत पर वह बुड्ढा सिर्फ घिघिया उठता था। और अन्त में वे लोग उस 'गन्दी छोटी सी सराय' पर आ पहुँचे। एक गन्दे से नौकर ने उन्हें लगभग गिरा ही दिया होता। वह उनके लिए दक्षिणी बाल्कन की बनी किसी शराब के साथ गन्दा सा खाना परोस कर भी ले आया । फिर भी, ये सब बातें भी उन्हें जी भर कर आनन्द उठाने से न रोक सकीं,

जैसा कि शुबिन ने कहा था कि वे जी भर कर आनन्द उठायेंगे। इन सब में शुबिन ही सबसे अधिक आनन्द उठा रहा था और उसकी हरकतों में सबसे कम स्वाभाविकता थी। उसने वेनेलिन की सेहत का जाम पिया जो एक महान परन्तु अप्रसिद्ध व्यक्ति था और बल्गेरिया के राजा क्रम, हुम या होम की सेहत का भी जाम पिया जो उसके कथनानुसार आदम का समकालीन था।

"नवीं शताब्दी में," इन्सारोव ने उसकी भूल सुधारी।

"ओह, नवीं शताब्दी में," शुबिन चहक उठा, "यह आश्चर्य की बात नहीं है क्या ?"

बरसिएनेव ने गौर किया कि अपने इन मजाकों और बेवकूफियों के बावजूद शुबिन इन्सारोव का अध्ययन तथा उसकी जांच करता सा लग रहा था, मानो उसका दिमाग किसी बात से परेशान हो रहा हो, परन्तु बरसिएनेव पहले की ही शान्त और गम्भीर बना रहा।

अन्त में वे लोग घर लौट आये, कपड़े बदले और इसलिए कि सुबह से ही कायम की गई उनकी अपनी मनस्थिति कहीं बिगड़ न जाये, उन्होंने उसी शाम को स्ताहोव-परिवार से मिलने का निश्चय कर लिया। शुबिन उनके आगमन का समाचार देने के लिये पहले से ही भाग लिया।

१२

"हीरो इन्सारोव हमें अपनी उपस्थिति से कृतार्थ करने आने वाला है," शुबिन स्ताहोव-परिवार के ड्राइंग-रूम में जाकर गम्भीरता के साथ चीख उठा। उस समय वहाँ केवल एलेना और जोया मौजूद थीं।

"कौन ?" जोया ने जर्मन भाषा में पूछा। जब उससे अचानक कोई बात कही जाती थी तो वह अपनी मातृभाषा में बोल उठती थी। एलेना सीधी होकर बैठ गई। शुबिन ने उसकी तरफ व्यंगभरी मुस्कराहट के साथ देखा। वह क्रुद्ध हो उठी परन्तु कहा कुछ भी नहीं।

"तुमने मेरी बात सुनी," उसने दुहराया, "मिस्टर इन्सारोव आ रहे हैं।"

"मैंने तुम्हारी बात सुन ली," एलेना ने उत्तर दिया, "और मैंने यह भी सुना कि तुमने उसे क्या कर पुकारा था। तुम्हें देखकर मुझे आश्चर्य होता है। मिस्टर इन्सारोव ने अभी घर में कदम भी नहीं रखा लेकिन तुम पहले से ही उसके विषय में ढोंग दिखाने लगे।"

शुबिन एकाएक शान्त हो गया।

"तुम ठीक कहती हो, हमेशा ही ठीक कहती हो, एलेना निकोलाएव्ना," वह बड़बड़ाया, "मगर, सच, मेरा कोई बुरा मतलब नहीं था। हम लोग उसके साथ दिन भर घूमते रहे हैं और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि वह बहुत अच्छा आदमी है।"

"मैंने तुमसे इस विषय में तो नहीं पूछा था," एलेना ने उठते हुए कहा।

"क्या मिस्टर इन्सारोव नवयुवक है ?" जोया ने पूछा।

"वह एक सौ चवालीस का है," शुबिन ने कुढ़कर उत्तर दिया।

चपरासी ने दोनों मित्रों के आगमन की सूचना दी और वे कमरे में आ गए। बरसिएनेव ने इन्सारोव का परिचय कराया। एलेना ने उनसे बैठने के लिए कहा और खुद भी बैठ गई। जोया अन्ना वासिलिएव्ना को आगाह करने के लिए ऊपर चली गई। वार्तालाप साधारण विषयों पर प्रारम्भ हुआ जैसे कि पहले पहल हुआ करता है। शुबिन एक कोने में से चुपचाप देखता रहा मगर दरअसल देखने लायक कोई भी

विशेष बात नहीं थी। एलेना में उसने अपने प्रति दबाये हुए क्रोध के चिन्ह देखे—और बस और कुछ भी नहीं। उसने इन्सारोव और बरसिएनेव की तरफ देखा और एक मूर्त्तिकार की सी मुद्रा में उनके चेहरों की तुलना करने लगा। उनमें से एक भी बजात खुद देखने में सुन्दर नहीं था—बल्गेरियन के चेहरे में चारित्रिक विशेषता थी, वह गढ़ी हुई मूर्ति के समान था और इस समय खूब प्रसन्न था। उस रूसी का चेहरा चित्रकला के अधिक अनुरूप था। उसकी रेखायें सबल नहीं थी परन्तु उसमें व्यक्तित्व की झलक थी। मगर इस सब के बावजूद भी कोई भी लड़की उन दोनों में से किसी से भी प्रेम कर सकती थी। एलेना ने अभी तक किसी से प्रेम नहीं किया था, मगर वह बरसिएनेव से प्रेम कर सकती थी। शुबिन इसी निर्णय पर पहुँचा था।

अन्ना वासिलिएव्ना कमरे में आई और वार्तालाप का स्वरूप पूर्णतः 'देहाती बंगले' के रूप में बदल गया—जिसमें 'बंगले' पर बल दिया जाता है न कि 'देहात' पर। यह एक ऐसा वार्तालाप था जिसमें विवेचित विषयों की संख्या के अनुसार काफी विविधता थी। मगर यह हर तीन मिनट बाद छोटे और थका देने वाले अवकाशों द्वारा भंग हो उठता था। ऐसे ही एक अवकाश के समय अन्ना वासिलिएव्ना ने जोया से प्रार्थना सी की और शुबिन ने उसके इस मूक संकेत को समझ कर मुंह लटका लिया। जोया पियानो पर जा बैठी और अपने सारे गानों और पियानो की गतों को बजाती रही। उवार इवानोविच किवाड़ों के पीछे से कमरे में घुसने ही वाला था—मगर उसने अपनी उंगलियां मरोड़ीं और पीछे हट गया। इसके बाद चाय आई और फिर सब लोग बाग में घूमे।......अंधेरा छाने लगा और मेहमान चले गए।

दरअसल एलेना ने जितनी आशा की थी इन्सारोव का प्रभाव उस पर उससे कम ही पड़ा: या अधिक उचित शब्दों में कहा जाय तो यह कि जैसी एलेना ने आशा कर रखी थी उस पर उस प्रकार

का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने उसके रूखेपन और संकोच की कमी को पसन्द किया। उसे उसका चेहरा-मोहरा भी पसन्द आया। परन्तु इन्सारोव, व्यक्ति के रूप में, अपनी शान्त दृढ़ता और अकृत्रिम सरलता के कारण एलेना के सम्मुख उस रूप में न आ सका जिसकी कल्पना उसने बरसिएनेव द्वारा उसके विषय में कही गई कहानियों के आधार पर कर रखी थी। एलेना, स्वयं इस बात का सन्देह न करते हुए, कुछ 'घातक' प्रभाव की आशा कर रही थी। "लेकिन आज," उसने सोचा, "वह बहुत कम बोला। यह मेरी गल्ती थी—मैंने उससे कोई सवाल ही नहीं पूछे : हमें दूसरे अवसर की प्रतीक्षा करनी चाहिए। परन्तु उसकी आँखों में स्पष्टता और ईमानदारी है।" उसने यह अनुभव नहीं किया कि वह उसकी पूजा करना चाहती थी बल्कि सिर्फ इतना ही कि उसकी मित्रता की आकांक्षिणी थी—और इस बात से व्यग्र हो उठी : उसने इन्सारोव जैसे व्यक्तियों की इस तरह की कल्पना नहीं की थी, एक हीरो के विषय में उसके स्वप्न ऐसे नहीं थे……'हीरो' शब्द ने उसे शुबिन की याद दिला दी, और वह वहाँ लेटी हुई—वह उस समय तक बिस्तर में पहुँच चुकी थी—इस बात पर क्रोध से भर उठी।

"तुम्हें अपने नये मित्र कैसे लगे ?" वापस लौटते हुए बरसिएनेव ने इन्सारोव से रास्ते में पूछा।

"वे मुझे बहुत पसन्द आए," इन्सारोव ने उत्तर दिया, "विशेष रूप से उनकी लड़की। मेरा ख्याल है कि वह एक अच्छी लड़की है। भावुक है—परन्तु उसकी भावुकता अच्छी है।"

"तुम्हें उनसे कभी-कभी जाकर मिलना चाहिए," बरसिएनेव बोला।

"हाँ," इन्सारोव ने कहा और घर पहुँचने तक वह फिर एक भी शब्द न बोला। वहाँ जाते ही उसने अपना कमरा बन्द कर लिया, और आधी रात बीत जाने तक उसमें मोमबत्ती जलती रही।

बरसिएनेव अभी रोमर का एक पृष्ठ भी नहीं पढ़ पाया था कि

उसकी खिड़की के शीशों पर कुछ कंकड़ियां आकर टकराईं। वह एकाएक चौंका, खिड़की खोली और वहाँ शुबिन को गत्ते की तरह पीला खड़ा हुआ देखा।

"तुम भी अजीव घुमक्कड़ आदमी हो, रात में घूमने वाले पतंगे की तरह!" बरसिनेव ने कहना शुरू ही किया था।

"शू!" शुबिन ने उसे टोका। "मैं यहाँ चुपचाप छिपकर आया हूँ जैसे मैक्स अगाथा के पास गया था। मेरे लिए तुमसे अकेले में कुछ बातें करना जरूरी हो उठा है।"

"तो कमरे में आ जाओ।"

"नहीं, यह जरूरी नही है," शुबिन ने उत्तर दिया और कुहनियों को खिड़की की चौखट पर जमा दिया। "इस तरह ज्यादा मजा आता है, स्पेनिश स्टाइल जैसा लगता है। पहली बात तो यह कि मैं तुम्हें बधाई देता हूँ। तुम्हारी कीमत बढ़ गई है। तुम्हारे द्वारा अत्यधिक प्रशंसित, विशिष्ट मानव असफल हो गया है! मैं इसकी गारन्टी दे सकता हूँ। इस विषय में मेरे निर्णय का प्रमाण सुनना चाहते हो तो सुनो: मिस्टर इन्सारोव के चरित्र के विषय में मेरा प्रमाण-पत्र यह है: प्रतिभा: तनिक भी नहीं; कविता, शून्य; कार्य-शक्ति, किसी भी सीमा तक; स्मरण शक्ति, भयानक; बुद्धि, गाम्भीर्य और विभिन्न विषयों पर विचार करने की शक्ति की न्यूनता परन्तु फिर भी स्वस्थ और चेतन; कठोर और गम्भीर तथा चुस्त, अपने प्रिय विषय पर सुन्दर ढंग से बोलने की शक्ति—मगर बात अपने तक ही रखना—पूरा मनहूस बल्गेरियन है......क्या? तुम्हारा ख्याल है कि मैं अन्याय कर रहा हूँ......? दूसरी बात: तुम कभी भी उसके साथ आत्मीय सम्बन्ध नही रख सकोगे, और न अभी तक कोई उसके साथ इस तरह के सम्बन्ध रख सका है। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, कलाकार होने के कारण मैं उससे नितान्त भिन्न हूँ और मुझे इसका गर्व है। सुस्त, आलसी मगर हम सब को धूल में मिला देने की शक्ति रखता है। वह अपने

६

देश की मिट्टी से बंधा हुआ है : हम लोगों की तरह नहीं जो गरीब, कमजोर, बाहरी रूप से सुहावने, साधारण जनता के प्रति अकृतज्ञ बनने का प्रयत्न करने वाले है जिससे कि हमें जीने की शक्ति मिलती रहे। दूसरी तरफ उसकी समस्याये अधिक आसान, अधिक स्पष्ट है : उसे सिर्फ इतना ही करना है कि तुर्कों को निकाल बाहर करे, सिर्फ इतना ही करना है। मगर भगवान को धन्यवाद दो कि इनमें से एक भी गुण ऐसा नही जिसे औरतें पसन्द करती हो ! उसमें ऐसा भी तो कोई आकर्षण या जादू नही हे जैसा कि हमारे और तुम्हारे पास है !"

"मुझे इसमें क्यो घसीटते हो ?" बरसिएनेव बड़बड़ाया, "और तुम्हारी बाकी सब बातें गलत है : तुम उससे जरा भी भिन्न नही हो और उसके अपने आदमियों के साथ उसके बड़े गहरे सम्बन्ध हैं……मुझे यह मालूम है।"

"यह दूसरी बात है : उनके लिए वह एक हीरो है—यद्यपि मै यह स्वीकार करता हूँ कि मैने 'हीरो' की कल्पना सदैव उससे भिन्न रूप में की है। हीरो के लिये यह जरूरी नही कि वह बात करना जानता हो, वह तो सिर्फ बैल की तरह डकराता है ; और फिर उसके लिए सिर्फ अपने सीगों की टक्कर मारना ही रह जाता है और दीवालें भहरा कर गिर पड़ती है। और उसे यह भी जानने की जरूरत नही रहती कि वह ऐसा क्यो करता है ; वह सिर्फ ऐसा कर बैठता है। फिर भी, यह हो सकता है कि आजकल 'हीरो' कुछ दूसरी ही धातु के बनने लगे हों।"

"तुम इन्सारोव के लिए इतने परेशान क्यों हो ?" बरसिएनेव ने पूछा, "क्या तुम सचमुच मुझे केवल उसके चरित्र का विवरण सुनाने के लिये ही यहाँ तक दौड़े आये थे ?"

"मै यहाँ इसलिए आया था," शुबिन ने कहा, "क्योकि घर पर मेरी तबियत घबड़ा उठी थी।"

"तो यह बात है ! तुम्हारा दुबारा रोने का तो इरादा नहीं है ?"

"मजाक उड़ा लो ! मैं यहाँ इसलिए आया क्योंकि मैंने ऐसा अनुभव किया कि स्वयं को मार बैठूंगा क्योंकि निराशा, क्रोध और द्वेष मेरे हृदय को खाये जा रहे हैं······"

"द्वेष ? तुम किससे द्वेष करते हो ?"

"तुमसे, उससे और हरेक से। मैं इस विचार से तड़फड़ा रहा हूँ कि अगर मैं एलेना को कुछ और जल्दी समझ लेता, कि समझ कर आगे कदम बढ़ाता······मगर बकने से क्या फायदा। मेरा अन्त तो यही होगा कि मैं बराबर हंसता, मूर्खता की बातें करता और ढोंग दिखाता हुआ घूमता रहूँगा, जैसे कि वह कहती है, और फिर गले में फांसी लगाकर लटक जाऊंगा······"

"अरे नहीं, तुम अपने को फांसी नहीं लगा सकते," बरसिएनेव ने छेड़ा।

"बेशक, इतनी सुन्दर रात को तो नहीं; मगर जरा पतझड़ के मौसम तक ठहरे रहो। कुछ भी हो, इस तरह की रात में तो लोग सिर्फ प्रसन्नता से मरते हैं!······ओह प्रसन्नता! आज रात को पेड़ों की सड़क पर पड़ी हुई छायायें यह फुसफुसाती सी लग रही हैं कि: "मैं जानती हूँ कि प्रसन्नता कहाँ है—बताऊँ ?" तुमसे घूमने चलने के लिए कहता मगर देख रहा हूँ कि तुम इस समय उखड़े हुये से हो। जाकर सो जाओ और भगवान तुम्हें गणित के प्रतीकों का स्वप्न दिखाये। मगर मेरी हालत तो यह है कि दिल के टुकड़े-टुकड़े हुये जा रहे हैं। ओह, चालाक सज्जनों, तुम किसी को हंसता हुआ देखते हो और सोचते हो कि इसका अर्थ यह है कि वह खुश है; तुम साबित करते हो कि वह अपनी ही बात को काट रहा है और इसका मतलब यह कि वह दुखी नहीं है······भगवान तुम्हारी मदद करे!"

शुबिन एकाएक खिड़की पर से हट गया। "अन्नुश्का !" बरसिएनेव उसे पुकार कर कहने ही वाला था मगर रुक गया : शुबिन सचमुच बड़ा परेशान सा नजर आ रहा था। एक या दो मिनट बाद बरसिएनेव को सचमुच ऐसा लगा मानो उसने सिसकने की आवाज सुनी हो। वह उठ खड़ा हुआ और खिड़की खोली, मगर चारों तरफ खामोशी थी ; सिर्फ काफी दूर पर कोई, सम्भवतः कोई गुजरता हुआ किसान, घास के मैदानों का गाना गा रहा था।

१३

कुन्तसोवो के पड़ोस में आने के पहले दो हफ्तों में इन्सारोव स्ताहोव-परिवार से मिलने चार या पाँच बार से अधिक नहीं गया ; बरसिएनेव हर तीसरे दिन उनसे मिलने जाता रहा। एलेना उसे देखकर हमेशा प्रसन्न होती और उन दोनों में रोचक बातें छिड़ जातीं ; फिर भी वह कभी-कभी चेहरे पर एक विषाद का भाव लिए घर लौटता। शुबिन मुश्किल से ही कभी दिखाई पड़ता। भयंकर उत्साह के साथ अपनी कला की साधना में लगा रहता था। अपने कमरे में बन्द हो जाता और कभी-कभी कमीज पहने ऊपर से नीचे तक मिट्टी में सना हुआ, बाहर झाँक लेता ; या कई-कई दिनों तक मास्को में बना रहता जहाँ उसका एक स्टोडियो था। वहाँ उससे मिलने के लिए "मॉडल" और इतालवी साँचे बनाने वाले आया करते थे जो उसके मित्र और अध्यापक थे। जैसा कि एलेना चाहती थी उस तरह एक बार भी इन्सारोव से बातें न कर सकीं। उसकी अनुपस्थिति में वह बहुत सी बातों के विषय में उससे पूछने के लिए प्रश्न तैयार करती मगर जब वह आता तो उसे अपनी उस तैयारी पर संकोच होने लगता। इन्सारोव के उस निर्लिप्त व्यवहार से वह परेशान हो उठती थी। वह

महसूस करती कि उसे इन्सारोव को बोलने के लिए मजबूर करने का कोई अधिकार नहीं इसलिए उसने प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। इन सब बातों के बावजूद भी, आपस में कहे गए शब्दों की साधारणता के रहते हुए भी एलेना ने अनुभव किया कि इन्सारोव की हर मुलाकात के बाद उसके प्रति उसका आकर्षण उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है; मगर ऐसा कभी नहीं हुआ कि वह उसके साथ अकेली रह पाई हो और किसी भी व्यक्ति को अच्छी तरह जानने और समझने के लिए यह आवश्यक है कि तुम उससे कम से कम एक बार तो दिल खोलकर बातें कर सको। बरसिएनेव के साथ वह उसके विषय में बहुत बातें करती थी। बरसिएनेव ने देखा कि उसकी कल्पना को इन्सारोव ने प्रभावित किया है और उसे इस बात की खुशी थी कि उसका मित्र 'असफल' नहीं हुआ जैसी कि शुबिन की धारणा थी। उसने एलेना को, इन्सारोव के विषय में जो कुछ भी वह जानता था, पूरी तरह से जोर देते हुए विस्तार के साथ बता दिया। (हम जब किसी को बातें करते समय प्रभावित करना चाहते हैं तो प्रायः अपने मित्रों की प्रशंसा करने लगते हैं और उस समय हमें इस बात का सन्देह भी नहीं होता कि ऐसा करके हम स्वयं अपनी भी प्रशंसा कर रहे हैं।) सिर्फ कभी-कभी, जब एलेना के गाल थोड़े से लाल हो उठते, आँखें फैल जातीं और चमकने लगतीं तब बरसिएनेव को दुख और विषाद की वही भावना व्यग्र कर देती जिसका कि वह पहले अनुभव कर चुका था।

एक दिन बरसिएनेव अपने रोज के मिलने के समय न आकर सुबह दस बजे के बाद ही स्ताहोव-परिवार से मिलने चला आया। एलेना उसे लाउन्ज में मिली।

"तुम्हारा क्या ख्याल है?" उसने जबरदस्ती मुस्कराते हुए कहा, "हमारा दोस्त इन्सारोव गायब हो गया है?"

"गायब हो गया है? इस बात से आपका क्या अभिप्राय है?" एलेना ने कहा।

"गायब हो गया है—परसों वह कहीं चला गया था और तब से अब तक नहीं लौटा।"

"क्या उन्होंने आपको यह नहीं बताया था कि कहाँ जा रहे हैं?"

"नहीं।"

एलेना बैठ गई।

"वे शायद मास्को गये होंगे," उसने उपेक्षा सी दिखाने का प्रयत्न करते हुए कहा और साथ ही अपनी इस हरकत पर आश्चर्य चकित हो उठी कि उसने उपेक्षा दिखाने की कोशिश की।

"मेरा ऐसा ख्याल नहीं है," बरसिएनेव ने उत्तर दिया—"वह अकेला नहीं गया था।"

"तो फिर किसके साथ?"

"परसों, भोजन के समय के बाद, दो आदमी उससे मिलने आये—शायद उसके देश के थे।"

"बल्गेरियन थे? आप ऐसा क्यों सोचते हैं?"

"क्योंकि, जहाँ तक मैं समझ सका वे उससे एक ऐसी भाषा में बातें कर रहे थे जिसे मैं नहीं जानता, मगर यह निश्चय है कि वह स्लाव भाषा थी......एलेना निकोलाएव्ना, आप हमेशा यह कहती हैं कि इन्सारोव के विषय में कोई विशेष रहस्य नहीं है; मगर, आखिर इस मुलाकात से अधिक रहस्यात्मक बात और क्या हो सकती है? जरा सोचिए: वे उसके कमरे में गए—और फिर एकाएक चीखने और बहस करने लगे और वह भी बड़ी उग्रता और कटुता के साथ—इन्सारोव ने भी ऐसा ही किया।"

"उन्होंने भी?"

"हाँ, वह उन पर चिल्ला रहा था। ऐसा लगता था कि वे एक दूसरे को दोष दे रहे थे। और काश कि आपने उन मुलाकातियों को देखा होता! वे दोनों चालीस से ऊपर थे। उनके चेहरे साँवले और

मूर्खों के से थे; गालों की हड्डियाँ उठी हुई थीं, नाकें आँकड़े जैसी थीं। कपड़े गन्दे, बदरंग और पसीने से तर-बतर थे। वे मजदूर जैसे दिखाई पड़ते थे—मगर फिर भी वे न तो मजदूर थे और न सम्भ्रान्त लोग—भगवान ही जाने वे क्या थे।"

"और इन्सारोव उनके साथ चले गए?"

"हाँ, उसने उन्हें थोड़ा सा खाना दिया और उनके साथ चला गया। मकान मालकिन ने मुझे बताया था कि वे लोग एक पूरा बड़ा बर्तन भर कर हलुआ खा गए थे; वे उसे भेड़ियों की तरह गटकते जा रहे थे।"

एलेना जरा सी मुस्कराई।

"आप देखेंगे," उसने कहा, "कि यह सब बहुत मामूली सी बात निकलेगी।"

"मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आपकी बात ठीक निकले; मगर आपने उस शब्द का प्रयोग कर गल्ती की थी: इन्सारोव में कोई असाधारणता नहीं है, फिर भी शुबिन का ख्याल है कि है।"

"शुबिन," एलेना कह उठी और कन्धे उचकाए, "मगर आपको यह तो मानना ही पड़ेगा कि वे दोनों सज्जन, हलुवे को निगलते हुए......"

"'थेमिस्तोकल्स' ने भी 'सालामिस' के अवसर पर खाना खाया था," बरसिएनेव ने मुस्कराते हुए कहा।

"हाँ; मगर फिर दूसरे दिन युद्ध हुआ था—मगर जब इन्सारोव लौट आयें तो आप मुझे जरूर बता दीजिए," एलेना ने कहा और विषय को बदलने की चेष्टा की परन्तु वार्तालाप धीमा पड़ गया।

जोया कमरे में आई और पंजों के बल चलने लगी, इस तरह यह बताते हुए कि अन्ना वासिलिएव्ना अभी तक सो रही थी। बरसिएनेव ने बिदा ली।

उसी शाम को एलेना को उसकी एक चिट्ठी मिली।

"वह लौट आया है," बरसिगनेव ने लिखा था, "धूप से सांवला और सिर से पैर तक धूल से भरा हुआ। मगर वह कहां गया था और क्यों, मुझे नही मालूम। मुझे आश्चर्य है कि आप मालूम भी कर सकेंगी या नही।"

"क्या मैं मालूम कर सकूँगी!" एलेना बड़बड़ाई, "जैसे कि इन्सारोव मुझे बताता ही हो!"

१४

दूसरे दिन, एक बजे के बाद, एलेना बाग में एक बक्स के सामने, जिसमें उसने दोगली जाति के कुत्ते के दो पिल्ले रख रखे थे, खड़ी हुई थी। (माली ने उन दोनो को बाग की चहारदीवारी के नीचे भटकते देखा था और वह उन्हें एलेना के पास ले आया था क्योकि धोबिन ने उसे बताया था कि एलेना हर तरह के जानवरो को, पालतू हों या जंगली, पालने की शौकीन थी। उसका अन्दाज सही था। एलेना ने उसे चौथाई रूबल इनाम में दिया था।) एलेना ने यह निश्चय करने के लिए बक्से में झांका कि पिल्ले जिन्दा और अच्छी तरह थे और उनके लिए नया पुआल डाला गया था या नही। फिर वह मुड़ी और लगभग चीख सी पड़ी। इन्सारोव उसकी ओर रास्ते पर अकेला चला आ रहा था।

"गुड़ मार्निङ्ग," उसने एलेना के पास आते और अपनी टोपी उतारते हुए कहा। एलेना ने गौर किया कि सचमुच इधर कुछ दिनों में वह धूप से साँवला पड़ गया था। "मैं एन्द्री पेत्रोविच के साथ आना चाहता था मगर किसी कारणवश उसे देर हो गई इसलिए

में अकेला ही चल पड़ा—घर में कोई भी नहीं है, सब सो रहे हैं या बाहर घूम रहे हैं, इसलिए मैं बाग में चला आया।"

"आप तो माफी सी माँग रहे है," एलेना ने उत्तर दिया, "इसकी कोई भी जरूरत नहीं। हम सब आप से मिलकर बड़े प्रसन्न होते हैं। चलिए, वहाँ छाया में चल कर बैठा जाय।"

वह बैठ गई और इन्सारोव भी उसकी बगल में बैठ गया।

"ऐसा लगता है कि आप इधर अभी घर पर नहीं थे," उसने पूछा।

"नहीं," इन्सारोव ने उत्तर दिया, "मैं बाहर चला गया था। एन्द्री पेत्रोविच ने आपको बताया था?"

इन्सारोव उसकी तरफ देख कर मुस्कराया और अपनी टोपी से खेलने लगा। मुस्कराते समय वह तेजी से पलकें झपकता रहा और होंठ बाहर निकाल लिए और इससे वह अत्यन्त प्रसन्न सा दिखाई पड़ने लगा।

"शायद एन्द्री पेत्रोविच ने आपको यह भी बताया था कि मैं कुछ लफंगे से आदमियों के साथ चला गया था," उसने अब भी मुस्कराते हुए कहा।

एलेना थोड़ी सी चौंक गई मगर उसने अनुभव किया कि इन्सारोव के सामने हमेशा ही सच बोलना पड़ता है।

"हाँ," उसने दृढ़ता के साथ कहा।

"तो, फिर आपने मेरे विषय में क्या सोचा था?" उसने एकाएक एलेना से पूछा।

एलेना ने उसकी तरफ देखा।

"मैंने सोचा," वह बोली, "मैंने सोचा था कि आप हमेशा उस बात को जानते हैं जो आप करने जा रहे होते हैं और आप कोई भी बुरा काम नहीं कर सकते।"

"अच्छा इसके लिए धन्यवाद। देखिए एलेना निकोलाएव्ना," उसने एलेना की तरफ खिसकते हुए विश्वस्त से स्वर में कहा, "यहाँ हम लोगों का एक छोटा सा दल है और हम में से कुछ ऐसे है जिन्हें अधिक शिक्षा नहीं मिल सकी। मगर हम सब लोग अपने समान उद्देश्य के प्रति दृढ़ है। दुर्भाग्य वश लड़ाई झगड़ों से नहीं बचा जा सकता—मगर वे सब मुझे जानते हैं और मेरा विश्वास करते है, इसलिए उन्होंने मुझे एक झगड़ा तय करने के लिए बुलाया था। इसलिए मैं चला गया।"

"क्या आप यहाँ से ज्यादा दूर गए थे ?"

"साठ वर्स्ट*, त्रोइत्स्की को। हमारे कुछ लोग वहाँ भी हैं जो मठ से सम्बन्धित हैं। कुछ भी हो, यह बेकार की ही मुसीबत नहीं थी। मैंने मामला तय करा दिया।"

"क्या बहुत मुश्किल था ?"

"हाँ ! उनमें से एक बराबर अकड़ता रहा। वह कर्ज नहीं चुका रहा था।"

"क्या कहा ? झगड़ा पैसों के मामले में था ?"

"हाँ, और कुछ ज्यादा भी नहीं था। मगर आपने झगड़े का क्या कारण सोचा था ?"

"और आप ऐसी जरा सी बात के लिए साठ वर्स्ट तक भागे गए थे ? आपने तीन दिन लगा दिए ?"

"जब अपने आदमियों का मामला होता है तो बात मामूली नहीं रह जाती एलेना निकोलाएव्ना। उस समय इन्कार कर देना अपराध होता है। मैं देखता हूँ कि आप खुद पिल्लों तक की मदद करने से मुँह नहीं मोड़तीं और इसके लिए मैं आपकी तारीफ करता हूँ। और जहाँ तक मेरे समय के बर्बाद होने का सवाल है, यह कोई बात

* वर्स्ट—लगभग एक मील।

नहीं। मैं इसे बाद में पूरा कर लूँगा। हमारा समय हमारा अपना नहीं है।"

"तो यह किसका है ?"

"उन सबका जिन्हें हमारी जरूरत है। मैंने आपसे एकाएक जो यह सब कह दिया इसका कारण यह है कि मैं अपने विषय में आपकी राय का सम्मान करता हूँ। मै कल्पना कर सकता हूं कि एन्द्री पेत्रोविच की बात को सुनकर आप कितनी चौंक उठी होंगी।"

"आप मेरी राय का सम्मान करते हैं," एलेना ने धीमे स्वर में कहा "क्यों करते हैं ?"

इन्सारोव फिर मुस्कराया।

"क्योंकि आप एक अच्छी महिला हैं और उन बड़े लोगों में से नहीं हैं······सिर्फ यही बात है।"

कुछ देर खामोशी रही।

"दमित्री निकानोरोविच," एलेना ने कहा, "आप जानते हैं कि यह पहला मौका है जब आपने मुझसे खुलकर बातें की हैं ?"

"क्या मतलब ? मेरा ख्याल है कि मैंने आपको हमेशा अपने मन की बात बता दी है।"

"नहीं, यह पहला मौका है, और मुझे बहुत प्रसन्नता है कि ऐसा हुआ—मैं भी आपसे खुलकर बातें करना चाहती हूं। इजाजत है ?"

इन्सारोव हंसा और बोला : "शौक से।"

"मैं आपको आगाह किए देती हूं कि मैं बड़ी जिज्ञासु प्रकृति की हूं।"

"कोई बात नहीं, कह डालिए।"

"एन्द्री पेत्रोविच ने मुझे आपके जीवन और बचपन के विषय में बहुत कुछ बताया है। मैं एक घटना को जानती हूँ जो घटी थी—एक

भयानक घटना······और मुझे मालूम है कि बाद में आप अपने देश वापस गए थे······अगर मेरा प्रश्न वाहियात है तो भगवान के लिए उत्तर मत दीजिए—मगर एक विचार मुझे परेशान किए रहता है ······यह बता दीजिए कि उस आदमी से आपकी मुलाकात हुई थी ?······"

एलेना दम साध कर बैठ गई। अपनी इस ढिठाई पर उसे लज्जा और ग्लानि हो उठी। इन्सारोव ने अपनी आँखों को जरा सा सिकोड़ते और टोढ़ी को उंगलियों से खुजाते हुए उसकी तरफ गौर से देखा।

"एलेना निकोलाएव्ना," अन्त में वह कहने लगा—उसका स्वर पहले से अधिक शान्त था और इससे एलेना लगभग भयभीय सी हो उठी—"मैं जानता हूँ कि आप किसके बारे में सोच रहीं हैं। नहीं, मेरी उससे मुलाकात नही हुई—भगवान को धन्यवाद है ! मैंने उसकी तलाश नहीं की थी; इसलिए नहीं कि मैं उसकी हत्या करने में पाप का अनुभव कर रहा था—मैं उसे नितान्त शान्त होकर मार सकता था—मगर जब पूरे देश का प्रतिकार लेने का प्रश्न सामने होता है, अधिक उचित शब्दों में इसे यों भी कहा जा सकता है जब एक राष्ट्र की स्वतन्त्रता का प्रश्न सामने होता है तो व्यक्तिगत प्रतिशोध लेने का कोई महत्व नही रह जाता। इनमें एक दूसरे के मार्ग में रोड़ा बन जायेगा। समय आने पर वह भी होगा······वह भी होगा," उसने सिर हिलाते हुए दुहराया।

एलेना ने उसे तिरछी निगाह से देखा।

"आप अपने देश से बहुत अधिक प्रेम करते हैं ?" उसने सहमते हुए पूछा।

"मैं अभी नहीं जानता," उसने उत्तर दिया। "जब कोई व्यक्ति अपने देश के लिए बलिदान हो जाता है तब आप कह सकती हैं कि वह प्रेम करता है।"

" तो अगर आपको बल्गेरिया वापस जाने का अवसर नहीं मिला तो यहाँ रूस में आपका जीवन भार हो उठेगा ?"

इन्सारोव ने नीचे की तरफ देखा।

" मेरा ख्याल है कि मैं इसे सहन नहीं कर सकूँगा।" उसने कहा।

" यह बतलाइये," एलेना फिर कहने लगी, "क्या बल्गेरियन भाषा सीखना कठिन है ?"

" जरा भी नहीं। एक रूसी को तो बल्गेरियन भाषा न जानने पर शर्म आनी चाहिए। एक रूसी को सारी स्लाव-बोलियाँ जाननी चाहिए। क्या आप चाहेंगीं कि मैं आपके लिए बल्गेरियन भाषा की कुछ किताबें लाकर दूँ। आप देखेंगी कि यह कितनी आसान है। हमारे यहाँ ऐसे सुन्दर गीत हैं! सर्विया के गीतों जैसे सुन्दर! लेकिन जरा ठहरिए, मैं आपके लिए उनमें से एक का अनुवाद कर दूंगा। इसका विषय है······आप कम से कम हमारा थोड़ा बहुत इतिहास तो जानती होंगी ?"

" नहीं, मुझे कुछ भी नहीं मालूम," एलेना ने उत्तर दिया।

" ठहरिये, मैं आपके लिए एक किताब लाऊँगा। उससे कम से कम आपको खास-खास बातें तो मालूम हो ही जायेंगीं। अब जरा इस गाने को सुनिए······मगर शायद यह अच्छा रहेगा कि आपको लिखा हुआ अनुवाद ही लाकर दूँ। मुझे विश्वास है कि आप हम लोगों से प्रेम करने लगेंगीं—आप हर सताये हुए से प्रेम करती हैं—काश कि आप जानतीं कि हमारा देहात कितना सुन्दर है! और फिर भी वे लोग उसे कुचल रहे हैं और परेशान कर रहे हैं," वह अनजाने ही अपने हाथ को फटकारते हुए कह उठा और उसका चेहरा काला पड़ गया। "उन्होंने हमारी हर चीज छीन ली है, हर चीज : हमारे गिरजे, हमारे अधिकार, हमारी धरती। उन्होंने जानवरों की तरह हमें खदेड़ा है और हमारी हत्या की है—इन तुर्की सुअरों ने।"

"दूमित्री निकानोरोविच !" एलेना चीख उठी।

वह रुक गया।

"क्षमा कीजिए। मैं इस विषय में शान्त होकर बात नहीं कर सकता। मगर आप अभी पूछ रहीं थीं कि मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ या नहीं। संसार में प्रेम करने के लिए और है ही क्या? ऐसी कौनसी चीज है जो कभी नहीं बदलती, एक ऐसी चीज जो हर सन्देह से परे है, एक ऐसी चीज जिसे कि आपको ईश्वर के बाद प्यार करना ही पड़ता है? और जब इस देश को आपकी जरूरत है··· इस बात पर गौर कीजिए: बल्गेरिया का आखिरी किसान, आखिरी भिखारी और मैं—हम सब उसी चीज को चाहते हैं। हमारा सब का वही एक लक्ष्य है। आपको जानना चाहिए कि इससे हममें कितना विश्वास और कितनी शक्ति उत्पन्न होती है।"

इन्सारोव क्षण भर खामोश रहा और फिर बल्गेरिया के विषय में बातें करने लगा। एलेना विचारमग्न और दुखी होकर उसकी बातों को पूरे ध्यान से सुनती रही। जब वह कह चुका तो उसने फिर पूछा।

"तो आप रूस में नहीं रहेंगे, किसी भी कीमत पर नहीं?"

जब वह चला गया तो वह बहुत देर तक उसकी तरफ देखती रही। उस दिन वह उसके लिए एक दूसरा ही व्यक्ति बन गया था। वह वह नहीं रहा था जिसका उसने दो घन्टे पहले स्वागत किया था। अब जो विदा हुआ कोई दूसरा ही व्यक्ति था।

उस दिन के बाद से उन लोगों से उसकी मुलाकात दिन पर दिन ज्यादा बढ़ती चली गई जबकि बरसिएनेव का आना कम होता गया। उन दोनों मित्रों के बीच कोई अजीब सी बात उठ खड़ी हुई थी, एक ऐसी बात जिसका दोनों ही अनुभव करते थे परन्तु उसका नाम नही बता सकते थे और उसकी व्याख्या करने में भयभीत थे। और इस तरह एक महीना गुजर गया।

१५

जैसा कि पाठक पहले से ही जानते है अन्ना वासिलिएव्ना अपने ही घर में रहना पसन्द करती थी; मगर कभी-कभी, एकाएक ही उसके मन में कोई अनोखी सी भावना एक अप्रतिरोध्य इच्छाशक्ति के साथ उठ खड़ी होती थी, किसी मनोरंजक और प्रभावशाली पिकनिक-पार्टी पर जाने के लिए मचल सी उठती थी। और इस यात्रा पर जाने में जितनी ही अधिक कठिनाइयां आतीं, जितना ही अधिक प्रबन्ध और तैयारियां करनी पड़तीं और इससे अन्ना वासिलिएव्ना जितना ही अधिक व्यग्र हो उठती तो उसके लिए उसमें उतना ही अधिक आकर्षण उत्पन्न हो जाता था। अगर जाड़े के मौसम में उसके मन में यह इच्छा जाग्रत हो उठती तो एक ही साथ वह दो या तीन बक्स एक ही कतार में रिजर्व करा लेती, अपने सारे मित्रों को एकसाथ इकट्ठा करती और किसी थियेटर में या किसी नकाब लगाकर होने वाले नृत्य समारोह में जा पहुँचती। गर्मियों में वह शहर से बाहर अधिक से अधिक दूर यात्रा करने निकल पड़ती। दूसरे दिन वह सिर दर्द की शिकायत करती, कराहती और अपने बिस्तर पर पड़ी रहती। मगर दो महीने बीतते न बीतते 'कुछ असाधारण' की भावना उसमें पुन: प्रज्वलित हो उठती। और यही इसी समय हुआ: किसी ने उसकी उपस्थिति में जारित्सिनो के सौन्दर्य की प्रशंसा कर दी और अन्ना वासिलिएव्ना ने तुरन्त घोषणा की कि उसने परसों जारित्सिनो जाने का निश्चय किया है। यह सुन कर सारे घर में हलचल मच गई: मास्को से निकोलाय आर्तियोमेविच को लाने के लिए घुड़सवार हरकारा दौड़ा गया; खानसामा उसी के साथ शराब, गोश्त और खाने की दूसरी चीजें खरीदने भागा गया; शुबिन को हुक्म दिया गया कि वह एक गाड़ी (एक गाड़ी काफी नहीं पड़ती थी) किराये पर कर ले और डाक के घोड़ों को तैयार रहने का हुक्म दे दे। लड़का दो बार बरसिएनेव और इन्सारोव के यहाँ

भागा गया और हर बार जोया द्वारा लिखे गए निमंत्रण-पत्र लेकर गया जिनमें पहला रूसी भाषा में और दूसरा फ्रांसीसी भाषा में लिखा गया था; और अन्ना वासिलिएव्ना इस बात में व्यस्त हो उठी कि इस यात्रा के लिए उन लड़कियों को कौन सी पोशाकें पहननी चाहिए।

इसी बीच वह सारा कार्यक्रम लगभग लड़खड़ा सा उठा; निकोलाय आर्तियोमेविच मास्को से बड़ी चिड़चिड़ी, नफरत भरी और क्रुद्ध मानसिक स्थिति में आया (वह अभी तक एवग्रुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना से नाराज था) और जैसे ही उसे मालूम हुआ कि इस सब का कारण क्या था, उसने दृढ़ता के साथ घोषणा की कि वह नहीं जायेगा। उसने कहा कि कुन्तसोवो से मास्को और मास्को से जारित्सिनो और फिर जारित्सिनो से वापस मास्को और फिर मास्को से वापस कुन्तसोवो की यात्रा करने का विचार वाहियात है। और कहा कि अगर वे लोग उसके सामने यह साबित कर दें कि दुनियाँ का एक कोना दूसरे कोने से अधिक मनोरंजक है तो वह उनके साथ चला चलेगा। निस्सन्देह कोई भी इस बात को साबित नहीं कर सकता था और अन्ना वासिलिएव्ना किसी योग्य साथी के अभाव में इस पार्टी का विचार त्याग देने ही वाली थी कि उसे उवार इवानोविच का ख्याल हो आया। "डूबता हुआ आदमी तिनके का भी सहारा लेता है", उसने कहा और हताश होकर उसे अपने कमरे में बुलवा भेजा। उसे जगाया गया और वह उतर कर नीचे आया। उसने अन्ना वासिलिएव्ना के प्रस्ताव को चुपचाप सुना, अपनी उंगलियाँ चटकाई और सबको आश्चर्यचकित करते हुए सहमत हो गया। अन्ना वासिलिएव्ना ने उसके गालों का चुम्बन लिया और 'प्रिय' कहकर उसे सम्बोधित किया। निकोलाय आर्तियोमेविच घृणा के साथ मुस्कराया और कह उठा "क्या गप्प मारी है" (वह ऐसे मौकों पर इसी भाव को व्यक्त करने वाले फ्रांसीसी शब्दों का उच्चारण किया करता था) और दूसरे दिन सुबह सात बजे एक गाड़ी और एक बग्घी ठसाठस भरी हुई, स्ताहोव परिवार के बंगले के अहाते से बाहर निकल पड़ीं। बग्घी में बरसिएनेव

और नौकरानी के साथ औरतें बैठी हुई थीं और इन्सारोव सामने के बक्स पर था; शुबिन और उवार इवानोविच दूसरी गाड़ी में बैठे थे। उवार इवानोविच ने उंगली का इशारा कर शुबिन को अपने साथ बैठने के लिए कहा था; वह जानता था कि शुबिन उसे रास्ते भर परेशान करेगा; मगर उस 'काली धरती के भूत' और उस नवयुवक कलाकार में एक विचित्र सी आत्मीयता और एक अपमान जनक स्पष्टता थी। फिर भी, इस बार शुबिन ने अपने मोटे दोस्त को परेशान नहीं किया। वह खामोश, विनीत और विचारों में खोया सा बैठा रहा।

जब गाड़ियां जारित्सिनो के टूटे-फूटे किले के पास पहुँची, बिना बादलों वाले आसमान में सूरज काफी ऊँचा चढ़ चुका था। यह किला दोपहर के समय भी अन्धकारपूर्ण और भयावना सा लगता था।

वे सब घास पर उतर पड़े और तुरन्त मैदान की तरफ चल दिए। एलेना और जोया इन्सारोव के साथ आगे-आगे चल रहीं थीं; पीछे उवार इवानोविच की बांह का सहारा लिए अन्ना वासिलिएव्ना चेहरे पर पूर्ण प्रसन्नता का भाव धारण किए आ रही थी। उछल-उछल कर चलते हुए उवार इवानोविच हांफने लगा। उसका घास का नया टोप उसके माथे में गढ़ रहा था, बूटों में कसे उसके पैर जले जा रहे थे, मगर फिर भी उसे सन्तोष प्राप्त हो रहा था। शुबिन और बरसिएनेव पीछे का मोर्चा सम्हाले हुए थे। "हम लोग सुरक्षित सेना में रहेंगे, अनुभवी व्यक्तियों के समान, दोस्त," शुबिन ने फुसफुसाते हुए बरसिएनेव से कहा। "इस समय बल्गेरिया मोर्चे पर है," उसने एलेना की तरफ इशारा करते हुए आगे कहा।

मौसम बहुत ही सुहावना था। चारों तरफ फूल, संगीत और झींगुरों की झंकार व्याप्त हो रही थी। दूर पर झीलें चमक रहीं थीं; वे सब के सब त्यौहार की सी उमंग में भर उठे। "ओह, कितना सुन्दर, कितना सुन्दर," अन्ना वासिलिएव्ना बार-बार कहती रही। उवार इवानोविच उसके इन प्रसन्नता से भरे वाक्यों का समर्थन करते हुए खोपड़ी हिलाता

७

रहा और एक बार तो सचमुच किसी प्रकार कह भी उठा : " शब्द मेरा साथ नहीं देते ।" एलेना और इन्सारोव में कभी-कभी एक आध शब्दों का आदान-प्रदान हो जाता था। जोया अपने चौड़े टोप के किनारे को दो उंगलियों से पकड़े बड़ी अदा के साथ अपनी रेशमी पोशाक के नीचे से, हल्के भूरे बूटों में बँधे पैरों को उठा-उठा कर रख रही थी और कभी बगल में और कभी पीछे की तरफ देख उठती थी । "आहा !" शुबिन एकाएक धीमे स्वर में कह उठा : "वह देखो, जोया चारों तरफ देख रही है। मैं उसके साथ चलूंगा। एलेना निकोलाएव्ना आजकल मुझसे नफरत करने लगी है और तुम्हारी इज्जत करती है एन्द्री पेत्रोविच जिसका अर्थ एक सा ही है। मैं चला जाऊँगा। बहुत कुछ सह लिया। और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है दोस्त मैं सलाह देता हूँ कि तुम जंगली फूलों का अध्ययन करना शुरू कर दो। अपनी इस स्थिति में तुम यही काम सबसे अच्छा कर सकते हो। साथ ही, विज्ञान की दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण है। विदा !" वह जोया की ओर दौड़ा और उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया, "हाथ हाजिर है, मैडम," उसने कहा और उसके सिर पर हाथ फेर दिया । एलेना रुकी, बरसिएनेव को बुलाया और उसी तरह उसका हाथ पकड़ लिया, मगर इन्सारोव के साथ उसका वार्तालाप पूर्ववत् चलता रहा। उसने इन्सारोव से पूछा कि उसकी भाषा में घाटी में खिलने वाली लिली, शाहबलूत, और नीबू को क्या कहते हैं······" आह बल्गेरिया !" दुखी एन्द्री ने सोचा।

सामने अचानक एक चीख सुनाई पड़ी और सब उधर देख उठे। जोया ने शुबिन का सिगार-केस छीन लिया था और एक झाड़ी में फेंक दिया था। " जरा ठहरो तो रह, मैं अभी इसका बदला चुकाता हूँ," शुबिन उसे ढूंढ़ते हुए चीखा। उसे सिगार-केस मिल गया और वह जोया की बगल में आ गया। मगर वह अभी उसके पास पहुँचा ही था कि सिगार-केस दुबारा उड़ता हुआ सड़क के उस पार चला गया। लगभग पाँच बार हाथ की यह सफाई दिखाई गई। शुबिन पूरे समय हँसता और

उसे धमकाता रहा और जोया कुटिलता के साथ सिर्फ मुस्कराती और बिल्ली के बच्चे की तरह कन्धे उचकाती रही। अन्त में शुबिन ने उसकी उंगलियाँ पकड़ ली और इतनी जोर से दबाईं कि वह जोर से चीख उठी। बाद में काफी देर तक वह अपनी उंगलियों को फूंकती रही और ऐसा दिखाती रही मानो उससे नाराज हो और शुबिन उसके कान में कुछ कहता रहा।

"शैतान बच्चे," अन्ना वासिलिएव्ना ने प्रसन्न होकर उवार इवानोविच से कहा। उसने अपनी उंगलियाँ मरोड़ीं।

"जोया निकितिश्ना के विषय में आपका क्या ख्याल है," बरसिएनेव ने एलेना से पूछा।

"आपका शुबिन के विषय में क्या ख्याल है ?" एलेना ने उत्तर दिया।

इस समय तक यह दल मिलोविदोवा ग्रीष्म-भवन तक आ पहुँचा था और वहाँ से जारित्सिनो की झीलों का दृश्य देखने के लिए रुक गया। वे झीलें एक दूसरी के पीछे मीलों तक फैली हुई थीं और उनसे आगे काला घना जंगल चला गया था। वह घास जो सबसे बड़ी झील के बिल्कुल किनारे पर खड़ी हुई पहाड़ी की ढलान पर छा रही थी, झील के पानी को एक अद्भुत, चमकीले हरे रंग से भर रही थी। पानी में एक भी लहर नहीं दिखाई पड़ती थी, झाग का कहीं नामोनिशान भी न था ; यहाँ तक कि किनारों पर भी झाग का एक टुकड़ा तक नहीं दिखाई पड़ता था। पानी की उस निश्चल चिकनी सतह को तोड़ने वाली एक छोटी सी लहर भी नहीं उठ रही थी। ऐसा लगता था मानो एक विशाल कटोरे में चमकते हुए काँच का एक ढेर जम गया हो और आसमान उसके पेंदे में चला गया हो तथा हरे पेड़ उसकी पारदर्शक गहराई में अपना रूप देख रहे हों। वे लोग काफी देर तक चुपचाप उस दृश्य को मुग्ध होकर देखते रहे। शुबिन खामोश था और जोया विचारमग्न। अन्त में, जैसे कि सबका एक ही मत हो, उन्होंने अनुभव किया कि वे झील पर सैर करना चाहते हैं। शुबिन, इन्सारोव और बरसिएनेव घास से भरे उस ढलान पर एक दूसरे के पीछे दौड़ पड़े। उन्होंने एक बड़ी रंग

बिरंगी नाव ढूंढ़ निकाली, दो मल्लाह तलाश कर लिए और दल के बाकी लोगों को बुलाया। महिलायें उनके पास नीचे उतर आई और उवार इवानोविच सम्हल-सम्हल कर कदम रखता हुआ उनके पीछे आया। जब वह नाव में घुसा और अपनी जगह पर बैठा तो काफी देर तक कहकहे लगते रहे। "देखिए, सावधान रहिए कहीं हम डूब न जाय, साहब," ऊँचे कालर वाली कमीज पहने और ऊपर को उठी हुई नाक वाले एक नौजवान मल्लाह ने कहा।

"अच्छा नौजवानो बस!" उवार इवानोविच ने कहा। नाव किनारे से हटी और नवयुवकों ने पतवारें सम्हाल ली मगर ज्ञात यह हुआ कि सिर्फ इन्सारोव ही नाव चलाना जानता था। फिर शुबिन ने प्रस्ताव रखा कि सब को एक साथ कोई रूसी गाना गाना चाहिए और खुद ही "माता वोल्गा में" शुरू कर दिया। बरसिएनेव, जोया और अन्ना वासिलिएव्ना आदि भी गाने लगे (इन्सारोव गाना नही जानता था) मगर कुछ ही देर बाद उनके स्वर उखड़ गए और तीसरी पंक्ति पर पहुँचते-पहुँचते गड़बड़ा उठे। सिर्फ बरसिएनेव ने ही अपनी बेसुरी आवाज में गाना गाते रहने की कोशिश की :

"लहरों में कुछ भी देखने को नही था,"—मगर वह जल्दी ही परेशान हो उठा। मल्लाहों ने एक दूसरे की तरफ आँख मारी और चुपचाप हँसने लगे। "ऐसा नहीं लगता कि हम गाना जानते है, क्यों लगता है न?" शुबिन ने उनकी तरफ मुड़ते हुए कहा। ऊँचे कालर वाले लड़के ने सिर्फ सिर हिला दिया। "जरा ठहरो!" शुबिन ने चिढ़कर उत्तर दिया, "हम तुम्हें दिखा देगे। जोया निकितिश्ना, नीदरमेयर का 'झील' गाना सुनाओ—पतवार चलाना बन्द करो!" पतवारें डैनों की तरह हवा में ऊपर उठी और स्थिर खड़ी रह गई, एक मधुर स्वर के साथ उनमें से पानी टपकता रहा। नाव कुछ दूर तक आगे बही, फिर रुकी और पानी पर हँस की तरह जरा सी मुड़ गई। जोया ने अनिच्छा सी दिखाने का ढोंग किया·········"चलो, गाओ" अन्ना वासिलिएव्ना ने उत्साहित करते हुए कहा। जोया ने अपना टोप फेंक दिया और गाने लगी—

"ओह झील, वर्ष ने अभी अपना काम समाप्त नहीं किया।" उसकी स्पष्ट सुरीली आवाज पानी की सतह पर लहराने लगी और उसके शब्द सुदूर जंगल में प्रतिध्वनित हो उठे—ऐसा लगता था मानो वहाँ एक दूसरी आवाज गा रही हो—स्पष्ट, रहस्यमय परन्तु अमानवीय, और किसी दूसरी दुनियाँ की। जैसे ही जोया ने गाना समाप्त किया, झील के किनारे पर बने हुए ग्रीष्म-गृहों में से एक में से प्रशंसा की ऊँची ध्वनि उठी और लाल चेहरों वाले कई जर्मन, जो जारित्सिनो में रंग रेलियाँ मना रहे थे, दौड़ते हुए बाहर आए। उनमें से कई बिना जाकेट, टाई या वास्कट पहने ही निकल आए थे। वे इतनी जोर से 'पुनः पुनः' चिल्लाये कि अन्ना वासिलिएव्ना ने मल्लाहों से जल्दी से जल्दी झील के दूसरे किनारे की तरफ नाव खेने के लिए कहा। मगर नाव के किनारे पर पहुँचने से पहले उवार इवानोविच ने एक बार फिर अपने मित्रों को आश्चर्य चकित कर दिया। यह देखकर कि जंगल के एक हिस्से से बहुत ही साफ प्रतिध्वनिती उठ थी, वह चीखकर बटेर की बोली की नकल करने लगा। पहले तो वे चौंक उठे और फिर सचमुच उन्हें बड़ा मजा आया। इसलिए और भी कि उवार इवानोविच बिल्कुल हूबहू नकल कर रहा था। इससे उत्साहित होकर उसने बिल्ली की तरह 'म्याऊँ' 'म्याऊँ' करने की कोशिश की मगर इसमें उसे उतनी सफलता नहीं मिली; इसलिए उसने एक बार और बटेर की नकल की, उन सब की तरफ देखा और खामोशी में डूब गया। शुबिन ने उछल कर उसका चुम्बन ले लिया मगर उवार इवानोविच ने उसे दूर धकेल दिया। उसी समय नाव किनारे पर आ लगी और वे सब नीचे उतर पड़े।

इस बीच कोचवान, नौकर और नौकरानी गाड़ी में से डलियाँ निकाल लाए थे और एक पुराने नीबू के पेड़ के नीचे घास पर उन्होंने खाना सजा कर लगा दिया था। सब लोग जमीन पर बिछे हुए मेजपोश के चारों तरफ बैठ गए और पेस्ट्री एवं खाने की अन्य चीजों पर टूट पड़े। उन सब की खुराक बहुत अच्छी थी मगर अन्ना वासिलिएव्ना अपने मेहमानों से थोड़ा सा और खाने की प्रार्थना करती रही और उन

लोगों को इस बात का विश्वास दिलाती रही कि साफ हवा में खूब अच्छी तरह खाना बहुत अच्छी बात है और वह उत्रार इवानोविच तक से भी उसी तरह प्रार्थना करती रही। "फिकर मत करो," टसाठस भरे मुँह से वह गुग्गुराया "भगवान ने हमें कितना सुन्दर दिन दिया है,"। वह इस समय बिल्कुल वदली हुई और बीस साल छोटी लग रही थी। बरसिएनेव ने उससे ऐसा कहा था। "हाँ, हाँ," वह बोली, "तुम जानते हो मेरे भी दिन थे। उस समय भरी भीड़ में भी तुम मुझे ढूंढ़ लेते।" शुबिन जोया की बगल में बैठा उसके लिए बराबर शराब ढाल रहा था; वह इंकार करती, शुबिन उस पर पीने के लिए जोर देता फिर उसे स्वयं पी जाता और उसके लिए और भर देता। उसने इस बात पर भी जोर दिया कि वह उसे अपनी गोद में सिर रख कर लेट जाने दे मगर जोया किसी भी दशा में उसे ऐसी 'स्वतंत्रता' देने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। एलेना इस दल में सबसे गम्भीर लग रही थी परन्तु उसके हृदय में एक गहरी शान्ति छा रही थी, ऐसी शान्ति जैसी उसने बहुत दिनों से अनुभव नहीं की थी; उसके हृदय में प्रत्येक के लिए कल्याण की भावना भर उठी थी और वह सिर्फ अकेले इन्सारोव को ही नहीं बल्कि बरसिएनेव को भी अपने पास बैठाना चाह रही थी।......एन्द्री पेत्रोविच ने अस्पष्ट रूप से अनुभव किया कि इसका क्या अभिप्राय था और चुपचाप एक गहरी सांस ली।

इसी तरह घन्टे गुजरते गए; शाम हो आई। अन्ना वासिलिएव्ना एकाएक चिन्तित हो उठी, "ओह, कितनी देर हो गई," उसने कहा, "अच्छा, मित्रो, हम लोगों का खाना-पीना हो चुका और अब जूठन फेंकने का वक्त है" वह व्यस्त हो उठी और फिर हरेक कुनमुनाने लगा। फिर सब उठ खड़े हुए और किले की तरफ चल दिए जहाँ गाड़ियां इन्तजार कर रहीं थीं। जब वे झीलों के पास होकर गुजरे तो जारित्सिनो के सुन्दर दृश्य को एक बार और देखने के लिए रुक गए। उतरती संध्या की सुन्दर लालिमा चारों ओर बिखर

रही थी, आसमान लाल होता जा रहा था, तेज होती हुई हवा से हिलती हुई पत्तियाँ क्षण-क्षण पर बदलते हुए रंगों में चमक रहीं थीं। झीलों के पानी में लहरें इस तरह उठ रहीं थीं मानो पिघला हुआ सोना हो। ग्रीष्म-भवनों और बुर्जियों का लाली लिए भूरा रंग मैदान में छा रहा था; यह पेड़ों की गहरी हरियाली से स्पष्टतः अलग दिखाई पड़ता था। "विदा, जारित्सिनो, हमें आज का दिन कभी नहीं भूलेगा!" अन्ना वासिलिएव्ना ने कहा......परन्तु उसी समय, मानो उसके अन्तिम शब्दों को शक्ति प्रदान करने के लिए एक विचित्र घटना घटी, एक ऐसी घटना जो सचमुच भुलाई नहीं जा सकती थी।

घटना इस प्रकार घटी: अभी मुश्किल से अन्ना वासिलिएव्ना ने जारित्सनो से बिदाई ली थी कि उससे कुछ ही कदम दूर बकायन की एक बड़ी झाड़ी के पीछे चीखने और हंसने का शोर सुनाई दिया और बिखरे बालों वाले व्यक्तियों का एक पूरा झुण्ड, संगीत के शौकीनों का वही झुण्ड जिसने जोया की इतने जोश के साथ तारीफ की थी, सड़क पर छा गया। यह स्पष्ट था कि वे सब नशे में धुत्त थे। जब उन्होंने औरतों को देखा तो रुक गए, मगर उनमें से एक बैल की सी गर्दन और जानवरों की सी चमकती खूंखार आँखों वाला लम्बा चौड़ा आदमी औरों से आगे बढ़ा और चलते हुए झूमते और लड़खड़ाते भयभीत अन्ना वासिलिएव्ना के पास आ पहुँचा।

"नमस्कार मैडम," उसने गरगलाती आवाज में कहा, "कैसे मिजाज हैं?" अन्ना वासिलिएव्ना कुछ कदम पीछे हट गई।

"तुमने हमें दुबारा गाना क्यों नहीं सुनना चाहा," वह दैत्य भद्दी रूसी भाषा में कहता रहा, "जब कि हमारे साथी 'पुनः पुनः' और 'शाबाश', 'शाबाश' चीखते चिल्लाते रहे?"

"हाँ, तुमने क्यों नहीं सुनाया?" उसके साथियों ने स्वर में स्वर मिलाया।

इन्सारोव आगे बढ़ ही रहा था कि शुबिन ने उसे रोक लिया

और अन्ना वासिलिएव्ना की रक्षा करते हुए उसके सामने आ खड़ा हुआ।

"माननीय अपरिचित मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं अपने लोगों के उस आश्चर्य को व्यक्त करूँ जो हमें आपके व्यवहार से हो रहा है," शुबिन ने कहा। "जहाँ तक कि मैं जान सका हूँ आप काकेशियन जाति के सेक्शन शाखा के हैं और इसलिए हमें यह मान लेना चाहिए कि आप जीवन के साधारण सभ्य व्यवहारों से परिचित होंगे; परन्तु इसके विपरीत आप एक ऐसी महिला से वार्तालाप प्रारम्भ कर रहे हैं जिससे आपका परिचय नहीं कराया गया है। विश्वास रखिए कि किसी दूसरे अवसर पर मैं, एक मूर्तिकार होने के नाते, एक विशेष कारण वश आपका घनिष्ठ परिचय प्राप्त करना चाहता क्योंकि मुझे आपमें स्पष्टतः दिखाई पड़ने वाला मांशपेशियों का विकास दिखाई दे रहा है—दो सिरों वाले पुट्ठे, तीन सिरों वाले पुट्ठे। यह देखकर मुझे आपको 'मॉडल' बनाने में सच्चा आनन्द प्राप्त होता परन्तु अभी, कृपया हमें शान्ति का उपभोग करने दीजिए।"

नफरत से अपना सिर एक तरफ झुकाए और कूल्हों पर हाथ रखे उस 'माननीय अपरिचित' ने शुबिन का व्याख्यान सुना।

"तुमने जो कुछ भी कहा मैं नही समझता," अन्त में उसने कहा, "क्या तुम समझते हो कि मैं मोची या घड़ीसाज हूँ? मै एक अफसर हूँ, मै एक सरकारी अफसर हूँ, हाँ।"

"मुझे इसमें कोई सन्देह नही......" शुबिन कहना शुरू कर रहा था।

"और मैं तुम्हें बता सकता हूँ," उस अजनवी ने उसे अपनी शक्तिशाली भुजा से इस तरह एक तरफ हटाते हुए मानो वह एक छोटी सी टहनी हो जो उसके रास्ते में फैली पड़ी हो, कहा, "तुमने दुबारा गाना क्यों नही सुनाया जब कि हम लोगों ने आवाज लगाई थी 'एक बार और'। और अब मै फौरन इसी क्षण चला जाऊँगा मगर पहले यह औरत—नहीं, यह महिला नही, वह नहीं—मगर यह औरत या यह

वाली," उसने एलेना और जोया की तरफ इशारा किया—"मुझे एक चुम्बन दे, जैसा कि हम लोग जर्मन भाषा में कहते हैं, एक छोटा सा चुम्बन, हाँ; क्या ख्याल है? मामूली सी बात है।"

"एक चुम्बन दो, मामूली सी बात है," उसके साथियों ने फिर स्वर में स्वर मिलाया।

"आह, सेक्रामेन्ट" पूरी तरह से नशे में गाफिल एक जर्मन ने बुरी तरह हंसते हुए कहा।

जोया ने इन्सारोव की बांह पकड़ ली मगर उसने अपने को छुड़ा लिया और उस विशालकाय बेहूदे आदमी के ठीक सामने जाकर खड़ा हो गया।

"मेहरवानी करके चले जाओ," उसने दृढ़ परन्तु तेज स्वर में कहा। वह जर्मन जोर से हंसने लगा।

"चले जाओ? अच्छा, मुझे यह पसन्द है! क्या मैं चल भी नहीं सकता? चले जाओ से तुम्हारा क्या मतलब है? किसलिए?"

"क्योंकि तुमने एक महिला का अपमान करने की हिमाकत की है," इन्सारोव ने कहा और एकाएक पीला पड़ गया। "क्योंकि तुम नशे में हो।"

"कैसे? मैं नशे में! मैं क्या सुन रहा हूँ? तुम सुन रहे हो हर प्रोवीजर? मैं एक अफसर हूँ और इसकी इतनी हिम्मत......अच्छा तो मैं तुमसे सफाई माँगता हूँ।......मुझे एक चुम्बन चाहिए।

"अगर तुमने एक कदम भी आगे बढ़ाया—" इन्सारोव ने कहना शुरू किया।

"अच्छा, तो फिर क्या होगा?"

"मैं तुम्हें पानी में फेंक दूंगा।"

"पानी में? वाह महाशय! बस इतना ही? अच्छा तो जरा देखूँ तो सही, मुझे यह जानकर खुशी होगी कि तुम कैसे......"

उस अफसर ने अपनी बाँहें उठाईं और आगे की ओर झुका

मगर उसी क्षण एक बड़ी अजीब सी घटना घटी; वह घुरघुराया, उसका विशाल शरीर एकाएक लड़खड़ाया, फिर पैर फेंकता हुआ हवा में ऊपर उठा, और इससे पहले कि स्त्रियां चीखतीं या कोई भी यह समझ सकता कि यह कैसे हुआ, वह अफसर अपने भारी विशाल शरीर को लिए एक भारी छपाके के साथ झील में जा गिरा और चक्कर खाता हुआ पानी के नीचे गायब हो गया।

"ओह !" स्त्रियां एक साथ चीख उठीं।

"हे भगवान !" दूसरों के मुँह से निकला।

एक मिनट बीती······फिर पानी के ऊपर एक गोल सिर दिखाई पड़ा जिसमें चारों तरफ भीगे बाल चिपक रहे थे; उसमें से बुलबुले निकल रहे थे और दो हाथ बराबर मुँह को पकड़ते हुए दिखाई पड़ रहे थे।

"वह डूब रहा है, उसे बचाओ, उसे बचाओ !" अन्ना वासिलिएव्ना ने चीख कर इन्सारोव से कहा जो किनारे पर गहरी साँसें लेता हुआ पैर फैलाए खड़ा था।

"वह तैर कर आ जायेगा," उसने एक घृणापूर्ण, दयाहीन उपेक्षा के साथ कहा, "चलिए, हम लोग चलें," वह अन्ना वासिलिएव्ना की बांह पकड़ कर चलने लगा। "चलिए उवार इवानोविच और आप भी एलेना निकोलाएव्ना।"

"आह—ओह !" वह अभागा जर्मन चीखा जो अभी-अभी किनारे पर खड़े सरकण्डों को पकड़ने में सफल हुआ था।

जब वे सब इन्सारोव के पीछे-पीछे आगे बढ़े तो उन्हें जर्मनों के उस झुन्ड के बगल में होकर गुजरना पड़ा, मगर एक बार अपने नेता से हाथ धो लेने के उपरान्त वे विद्रोही शान्त हो गए थे इसलिए एक भी शब्द नहीं बोले। उनमें से एक जो उन सबमें सबसे अधिक ढीठ था, बड़बड़ाया: "ओह, भगवान·········यह तो हद हो गई।"······और दूसरे ने सिर्फ इतना ही किया कि अपना टोप उतार लिया। इन्सारोव

उनको एक बहुत ही भयानक आदमी लगा और बिना कारण ही नहीं। उसकी आँखों से एक अत्यन्त क्रूर, एक अत्यन्त भयंकर भाव प्रकट हो रहा था। जर्मन लोग अपने साथी को पानी में से बाहर खींचने के लिए दौड़ पड़े और जैसे ही उसे अपने पैर ठोस जमीन पर रखे हुए लगे वह 'अफसर' बड़े दीन शब्दों में गालियाँ देने लगा और उन 'रूसी बदमाशों' को चीख चीख कर सुनाने लगा कि वह उनकी शिकायत करेगा, कि वह हिज एक्सेलैन्सी काउन्ट वॉन कीसेरित्ज से जाकर खुद मिलेगा।

मगर उन 'रूसी बदमाशों' ने उसकी चीख-पुकार की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। और जल्दी से जल्दी किले की तरफ बढ़े। मैदान से गुजरते समय सब के सब खामोश रहे; केवल अन्ना वासिलिएव्ना ने चुपचाप आह भरी। मगर जैसे ही वे गाड़ियों के पास पहुँचे रुक गए और बड़ी जोर से बेतहाशा हँसने लगे। शुबिन के गले से उठी एक तीखी उन्मत्त हँसी ने इसे प्रारम्भ किया फिर बरसिएनेव की कर्कश कूक और जोया की लहराती हँसी उठी; अन्ना वासिलिएव्ना हँसी से हिल-हिल उठती थी, यहाँ तक कि एलेना भी अपने को मुस्कराने से न रोक सकी और अन्त में एन्सारोव खुद भी हँसने लगा। मगर सबसे अधिक पागलों की सी और सबसे ज्यादा तेज हँसी उवार इवानोविच की उठी; वह तब तक हँसता रहा जबतक कि उसकी पसलियों में दर्द न होने लगा, फिर उसे खाँसी उठी और वह नाक साफ करने लगा। "मैंने मन में सोचा," उसने कुछ शान्त पड़ते हुए आँसू भरे मुख से कहा, "मैंने सोचा—यह शोर कैसा हुआ ?—और—यह वह था—चारों खाने चित्त।" और जैसे ही उसने रुक-रुक कर ये अन्तिम शब्द कह पाए कि हँसी के एक नए दौरे ने उसके सारे शरीर को झकझोर डाला। जोया ने आग में और घी डाला। "मुझे उसकी टाँगें ऊपर हवा में दिखाई दीं," वह बोली······"हाँ, उसकी टाँगें, उसकी टाँगें," उवार इवानोविच बीच में ही कह उठा, "और फिर छपाक······चारों खाने चित्त !"—"मगर आप ऐसा कर कैसे सके," जोया ने पूछा, "वह जर्मन इनसे तिगुना लम्बा-चौड़ा था ?"—"मैं बताता हूँ, मैंने देखा था," उवार

इवानोविच ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा : "इन्होंने उसे एक हाथ से पीठ के नीचे पकड़ा और ऊपर उछाल दिया और फिर.........कैसा छपाका हुआ! मैंने सुना था : मैंने सोचा, यह क्या है—और—यह वह था—चारों खाने चित्त !"

गाड़ियों को रवाना हुए काफी समय बीत गया था, किला निगाह से ओझल हो चुका था मगर उवार इवानोविच अभी तक शान्त नहीं हो पा रहा था। अन्त में शुबिन ने, जो फिर उसी के साथ गाड़ी में यात्रा कर रहा था, उसकी लानत-मलामत कर उसे शर्मिन्दा कर दिया।

मगर इन्सारोव की आत्मा उसे धिक्कार रही थी। वह गाड़ी में एलेना के सामने बैठा हुआ था। (बरसिएनेव ऊपर बक्स पर था) इन्सारोव खामोश रहा; एलेना भी खामोश थी। उसने सोचा कि जो कुछ हुआ था उसके लिए एलेना उसे अपराधी समझ रही थी मगर एलेना के मन में ऐसा कोई विचार नहीं था। यह सच है कि वह पहली एक या दो मिनट तक तो भयभीत हो उठी थी; फिर वह इन्सारोव के चेहरे पर छाये भावों को देखकर चौंकी थी; और फिर सोचने लगी थी—यद्यपि स्पष्ट नहीं समझ पाई थी कि उसने क्या सोचा था। वह उमंग जिसका उसने दिन भर अनुभव किया था गायब हो चुकी थी—इस बात को तो उसने महसूस किया; मगर इसके स्थान पर एक दूसरी ही भावना भर उठी थी, एक ऐसी भावना जिसे वह अभी तक समझ नहीं पा रही थी।

यह यात्रा अनजाने में ही काफी लम्बी हो चुकी थी, संध्या का धुंधलका रात्रि के अन्धकार में बदल गया। गाड़ियाँ आगे बढ़ती रहीं, कभी पकी खड़ी फसल वाले खेतों की बगल में होकर जहाँ हवा भारी और अनाज की गन्ध से भर रही थी, कभी खुले चरागाहों की बगल में से जिनकी अनोखी ताजगी हल्की हवा की लहरों से चेहरों पर भर-भर उठती थी। क्षितिज पर आसमान की नीलिमा घुलती जा रही थी; अन्त में एक धुँधला लाल चाँद ऊपर निकल आया। अन्ना वासिलिएव्ना ऊँघने लगी; जोया खिड़की से बाहर झुकी और सड़क की तरफ देखा। आखिरकार एलेना

को अहसास हुआ कि वह लगभग एक घण्टे से इन्सारोव से नहीं बोली थी। उसने उससे कुछ सवाल पूछे; उसने उत्सुकतापूर्वक तुरन्त उत्तर दिये। रात की हवा में अस्पष्ट सी ध्वनियाँ इस तरह तैरने लगी मानो कहीं दूर कई आवाजें एक साथ बोल रहीं हों। मास्को उनसे मिलने के लिए तेजी से पास आता जा रहा था। उनके सामने, दूर, रोशनियाँ चमकने लगी और बराबर संख्या में बढ़ती गईं। आखिरकार गाड़ी के पहिए सड़क के पत्थरों पर खड़खड़ाने लगे। अन्ना वासिलिएव्ना जग गई और सब लोग बातें करने लगे यद्यपि दोनों गाड़ियों की खड़खड़ाहट और सड़क पर पड़ने वाले बत्तीस सुमों के शोर की वजह से कान दिया नहीं सुनाई पड़ता था। मास्को से कुन्तसोवो तक का सफर बड़ा लम्बा और कठिन लगा। वे सब सो गए या अलग-अलग कोनों में सिर टिकाये खामोशी में डूब गए। सिर्फ एलेना ने ही अपनी आँखें बन्द नहीं कीं; वह अंधेरे में इन्सारोव की तरफ टकटकी लगाए देखती रही। शुबिन विषाद में डूब गया; हल्की हवा के झोंके उसकी आँखों से टकराये और वह चिड़चिड़ा उठा। उसने कोट का कालर उठाकर गर्दन ढक ली और क्षण भर के लिए लगभग रोने सा लगा। उवार इवानोविच प्रसन्न मुद्रा में इधर से उधर हिलता हुआ खर्राटे भर रहा था। अन्त में गाड़ियाँ रुक गईं और दो नौकरों ने अन्ना वासिलिएव्ना को उठाकर बाहर निकाला। वह बुरी तरह उनींदी हो रही थी और जब उसने अपने साथियों से विदा माँगी तो इस बात पर जोर दिया कि उसमें जरा भी दम नहीं रहा है। वे उसे धन्यवाद देने लगे मगर वह सिर्फ यही दुहराती रही 'दम ही नहीं रहा।' एलेना ने इन्सारोव से हाथ मिलाया—यह पहला अवसर था जब उसने ऐसा किया था। वह अपने कमरे में चली गई और बिना कपड़े बदले काफी देर तक खिड़की पर बैठी रही। जब बरसिएनेव चलने लगा तो शुबिन को उससे फुसफुसाने का मौका मिला:

"देखा तुमने, मैंने क्या कहा था? वह हीरो है: वह शराबी जर्मनों को पानी में फेंक देता है।"

"तुमसे तो इतना भी नहीं हुआ," बरसिएनेव ने कुढ़ कर उत्तर दिया और इन्सारोव के साथ घर की तरफ चल पड़ा।

जब वे दोनों मित्र बंगले पर पहुँचे उस समय तक आसमान में उषा खिल चुकी थी। अभी सूरज नहीं निकला था मगर सुबह की ठंडक हवा में भर रही थी। घास पर भूरी ओस की बूँदें छा रहीं थीं; उनके ऊपर धुंधले गुम्बज में लबा पक्षी गा रहे थे और एक एकाकी नेत्र के समान अन्तिम चमकीला तारा नीचे की ओर देख रहा था।

१६

इन्सारोव से मुलाकात होने के बाद से ही एलेना डायरी लिखने लगी। (यह उसका पाँचवाँ या छठवाँ प्रयास था)। यहाँ उससे उस उद्धरण दिए जाते हैं:

जून······एन्द्री पेत्रोविच मेरे लिए कुछ किताबें लाता रहता है मगर मैं उन्हें पढ़ नहीं पाती। मुझे उसके सामने इसे स्वीकार करने में लज्जा आती है; फिर भी मैं उन्हें वापस करना, झूठ बोलना और यह कहना नहीं चाहती कि मैंने उन्हें पढ़ लिया है। मेरा ख्याल है वह परेशान हो उठेगा; वह मुझमें हमेशा इतनी रुचि लेता है कि मैं विश्वास करने लगी हूं कि वह मेरी तरफ आकर्षित है। वह, एन्द्री पेत्रोविच बहुत अच्छा आदमी है।

······वह क्या है जिसे मैं सचमुच चाहती हूँ? मैं इतनी दुखी, हृदय से इतनी उदास क्यों रहती हूँ? मैं उड़ती हुई चिड़ियों को देखकर क्यों हसद करने लगती हूँ? मैं उनके साथ उड़ना चाहती हूँ—कहाँ के लिए, मैं नहीं जानती मगर कहीं दूर, यहाँ से बहुत दूर। मगर क्या यह पाप भरी भावना नहीं है? यहाँ मेरे माता,

पिता, परिवार वाले हैं—क्या ऐसा हो सकता है कि मैं उनसे प्रेम नहीं करती ? नहीं, मैं उनसे उतना प्रेम नहीं करती जितना कि करना चाहती हूँ ; इसे स्वीकार करना भयानक है मगर सत्य यही है। शायद यही कारण है कि मैं इतनी निराशा का अनुभव करती हूं, इसीलिए शायद मुझे शान्ति नहीं मिलती। कोई छिपी हुई शक्ति मुझ पर हावी रहती है और परेशान करती है। ऐसी स्थिति है मानो मैं जेल में बन्द होऊँ और जेल की दीवालें मुझ पर गिरी सी पड़ रही हैं। मगर और लोग ऐसा ही महसूस क्यों नहीं करते ? अगर मैं अपने ही परिवार के प्रति इतनी उदासीन हूँ तो किस को हमेशा प्यार कर सकती हूँ ? यह स्पष्ट है कि पिताजी जब मुझे डाँटते हैं तो ठीक करते हैं। वे कहते हैं कि मैं कुत्तों और बिल्लियों से प्रेम करती हूं। मुझे इस बारे में सोचना चाहिए। मुझे प्रार्थना करनी चाहिए ; मैं बहुत कम प्रार्थना करती हूँ··· फिर भी मैं विश्वास करती हूँ कि मैं प्रेम करने के योग्य हूँ।

······मैं अब भी मिस्टर इन्सारोव के सम्मुख लज्जा का अनुभव करती हूँ। मैं नहीं जानती कि क्यों ; मैं बच्ची नहीं हूं और वह इतने सीधे और रहमदिल है। कभी-कभी वे बहुत गम्भीर दिखाई पड़ते हैं ; शायद उनके सोचने के लिए मुझ जैसे व्यक्तियों से भी अधिक महत्वपूर्ण विषय है। मैं इसका अनुभव करती हूँ और उनका समय लेने के लिए मुझे थोड़ी सी लज्जा भी आती है। एन्द्री पेत्रोविच के साथ दूसरी स्थिति रहती है। अगर जरूरत पड़े तो मैं उसके साथ दिन भर बातें करने को प्रस्तुत हूँ। मगर वह मुझसे इन्सारोव की ही बातें करता है। और कितने भयानक विस्तार के साथ ! पिछली रात मैंने स्वप्न देखा कि वह हाथ में एक खंजर लिए हुए है : वह कह रहा था : "मैं तुम्हें मार डालूँगा और फिर खुद मर जाऊँगा।" क्या वाहियात बात है।

ओह, काश कि कोई मुझसे यह कह देता : "तुम्हें यही करना चाहिए।" भला होना ही काफी नहीं है ; भला करना······हाँ, जीवन का यही असली उद्देश्य है। मगर कोई भला कैसे बने ? ओह, काश

कि मैं अपने ऊपर संयम रख सकती ! मैं समझ नही पाती कि मिस्टर इन्सारोव के विषय में इतना क्यों सोचा करती हूँ। जब वह आते है और हम लोगों के साथ बैठकर हमारी बातें इतनी शान्ति के साथ और बिना किसी प्रकार का विवाद किए गौर से सुनते रहते है तो मै उनकी तरफ देखती हूँ और ऐसा करना अच्छा लगता है—सिर्फ इतनी ही सी बात है ; मगर जब वे चले जाते है तो मै बराबर उनकी कही हुई बातों को सोचा करती हूँ और अपने ऊपर क्रुद्ध हो उठती हूँ और कभी-कभी तो बहुत व्यग्र हो जाती हूँ। मैं खुद नही जानती कि ऐसा क्यों होता है। (वह फ्रांसीसी भाषा बहुत खराब बोलते है और इसके लिए शर्मिन्दा भी नही होते : मुझे उनकी यह बात अच्छी लगती है।) मगर फिर भी मैं नए परिचितों के विषय में हमेशा बहुत कुछ सोचा करती हूँ.........जब वे उनसे बातें कर रहीं थी तो मैं अचानक अपने खानसामा के विषय में सोचने लगी जो एक अपाहिज बूढ़े को जलती हुई झोंपड़ी में से बाहर खीच लाया था और ऐसा करने में उसकी जान ही चली गई होती। पिताजी ने उसे 'बहादुर' कह कर पुकारा था और माँ ने पाँच रूबल दिए थे। मगर मै उसके सामने घुटनों के बल बैठकर उसका सम्मान करना चाहती थी। और उसका चेहरा इतना भोला, यहाँ तक कि मूर्खो जैसा लग रहा था और बाद में वह शराब पीने लगा था।

......आज मैने एक भिखारिन-बुढ़िया को थोड़ी सी भीख दी। और उसने मुझसे पूछा था कि मै इतनी उदास क्यों हूँ। और मैंने कभी सन्देह भी नही किया था कि मेरा चेहरा उदास था। मेरी समझ में इसका कारण यही है कि मै हमेशा अकेली रहती हूँ और हमेशा अपनी ही अच्छाइयों और बुराइयों में डूबी रहती हूं। ऐसा कोई भी नही है जिसकी ओर मित्रता का हाथ बढ़ा सकूँ। जो लोग मेरे पास आते हैं उनकी मुझे जरूरत नही और जिन्हे मै चाहती हूँ, वे चले जाते हैं।

……मैं नहीं जानती कि आज मुझे क्या हो गया है……मैं परेशान हूं। ऐसा मन करता है कि घुटनों के बल बैठ कर रहम की भीख मांगू और प्रार्थना करूँ। ऐसा लगता है कि मेरी हत्या की जा रही है, कैसे और किसके द्वारा मुझे नहीं मालूम, और भीतर-ही भीतर चीख रही हूँ और विद्रोह कर रही हूं; मैं रोती हूं, मुझसे चुप नहीं हुआ जाता। हे भगवान, मेरी इस उत्तेजना को शान्त कर दो……केवल तुम्हीं ऐसा कर सकते हो, और सब शक्तिहीन हैं। मेरे व्यर्थ दान, मेरे कार्य……कोई भी मेरी सहायता नहीं कर सकते। सच बात तो यह है कि मुझे यहाँ से चला जाना चाहिए और कहीं नौकरानी का काम कर लेना चाहिए; यह मेरे लिए ज्यादा आसान रहेगा।

……यौवन किस लिए है, मैं किस लिए जीवित हूँ, मेरे आत्मा क्यों है, मैं यह सब क्यों सहती हूँ ?

……मैं इन्सारोव के विषय में सोचती रहती हूं ……मिस्टर इन्सारोव के विषय में—मुझे सचमुच उचित शब्द नहीं मिलते कि मैं इसे कैसे लिखूँ। मैं चाहती हूँ कि काश उनके हृदय की बात जान सकती। वे इतने सरल और ग्राह्य से प्रतीत होते हैं मगर मुझे फिर भी वहाँ कुछ नहीं दिखाई पड़ता। कभी-कभी वे मुझे जांचती हुई सी निगाहों से देखते हैं—या यह केवल मेरी कल्पना है ? पावेल मुझसे प्रेम करता है—और मैं उसका प्रेम नहीं चाहती। वह जोया से भी प्रेम करता है। मैं पावेल के साथ अन्याय करती हूं—कल उसने मुझसे कहा था कि मैं इसका आधा भी अन्याय नहीं कर सकती थी……यह सच है। वह मेरी बहुत बड़ी गल्ती है।

……ओह, मुझे ऐसा लगता है कि एक व्यक्ति के लिए दुखी, गरीब या बीमार होना जरूरी है वर्ना वह अहंकारी बन जायेगा।

……एन्द्री पेत्रोविच ने आज मुझसे उन दो बल्गेरियनों के विषय में क्यों बताया था ? ऐसा लगता है कि इसमें उसका कुछ उद्देश्य

८

था। मिस्टर इन्सारोव का मुझसे क्या सम्बन्ध ? मुझे एन्द्री पेत्रोविच पर गुस्सा आता है।

......मैं अपनी कलम उठाती हूं......मगर यह नहीं समझ पाती कि कैसे प्रारम्भ करूँ। आज बड़ा आश्चर्य हुआ था जब वे बाग में मुझसे बातें करने लगे थे। और वह कितनी कोमलता और विश्वास के साथ बोल रहे थे ! और यह सब कितना जल्दी हो गया। जैसे कि हम लोग पुराने, बहुत पुराने मित्र हों और अभी एक दूसरे को पहचान पाए हों। यह कैसे हुआ कि उन्हें पहले नहीं पहचाना जा सका ? और अब वे मेरे कितने नजदीक आ गए हैं ! यही तो आश्चर्य की बात है अब मैं अपने को अधिक शान्त अनुभवी करती हूं। इस बात पर हंसी आती है : कल मैं एन्द्री पेत्रोविच से नाराज थी और इन्सारोव से भी......जबकि आज......अन्त में एक विश्वासी व्यक्ति मिला है जिस पर कि विश्वास किया जा सकता है। वह सत्य बात कहता है : यही पहला व्यक्ति है, जिससे कि कभी मेरी मुलाकात हुई है, जो झूठ नहीं बोलता ; और सब झूठ बोलते हैं, सफेद झूठ। एन्द्री पेत्रोविच, ऐसा कहकर मैं तुम्हारा अपमान कैसे कर सकती हूं, प्यारे, कृपालु एन्द्री ?—मगर नहीं ! हो सकता है कि तुम उनसे ज्यादा पढ़े लिखे हो और ज्यादा चतुर भी—मगर फिर भी उनके सामने तुच्छ से लगते हो। जब वे अपने देश की बातें करने लगते हैं तो ऐसा लगता है कि उनका सीना बढ़ गया हो और उनका चेहरा अधिक सुन्दर लगने लगता है; उनकी आवाज में फौलाद की सी झंकार भर उठती है और उस समय मुझे विश्वास नहीं होता कि संसार में कोई ऐसा भी व्यक्ति हो सकता है जिससे वे आँखें मिलाकर बातें न कर सकें। और वे सिर्फ बातें ही नहीं करते—उन्होंने काम किए हैं तथा और भी करने जा रहे हैं। मैं उनसे जरूर पूछूंगी......वे एकाएक कैसे मेरी तरफ घूमे और मुस्करा उठे थे ! सिर्फ भाई ही इस तरह मुस्कराया करते हैं। ओह, मैं कितना सन्तोष अनुभव कर रही हूँ। जब वे पहली बार हमारे यहाँ आए थे तो मैंने यह सोचा भी नहीं था कि हम लोग

इतनी जल्दी एक दूसरे के नजदीक आ जायेंगे। और इस समय मुझे इस बात को सोच कर भी आनन्द आता है कि जब वे पहली बार आए थे तो मैं उनके प्रति उदासीन थी······उदासीन ! सचमुच क्या ऐसा हो सकता है कि अब मैं उनके प्रति उदासीन नहीं हूं ?

······बहुत दिनों से मैंने ऐसी आत्मिक शान्ति अनुभव नहीं की थी। मेरा हृदय पूर्णतः शान्त है, पूर्णतः शान्त ! लिखने के लिए कुछ भी नहीं रहा है। और अधिक कहने के लिए रह ही क्या गया है ?

······पावेल ने अपने को अपने कमरे में बन्द कर लिया है। एन्द्री पेत्रोविच और भी कम आने लगा है। बेचारा ! मैं सोचती हूं वह······ फिर भी ऐसा नहीं हो सका। मुझे एन्द्री पेत्रोविच से बातें करना अच्छा लगता है। वह अपने विषय में कभी एक शब्द भी नहीं कहता ; हमेशा कुछ-न-कुछ ज्ञान और बुद्धिमानी की बातें करता रहता है। शुबिन के साथ ऐसी बात नहीं है : वह एक तितली की तरह दिखावटी बातें करता है और इस बात का उसे घमण्ड है यद्यपि तितली कभी भी दिखावा नहीं करती। मगर फिर भी शुबिन और एन्द्री पेत्रोविच दोनों······ओह, मैं जानती हूँ कि क्या कहना चाहती हूं।

······मैं यह दावे के साथ कह सकती हूँ कि 'वह' हम लोगों से मिलना पसन्द करते हैं। मगर क्यों ? वह मुझमें क्या विशेषता पाते हैं ? यह सच है कि हम दोनों की रुचियाँ एकसी है ; और हम दोनों में से कोई भी न कविता की चिन्ता करता है और न कला को समझता है। मगर वह मुझसे कितने अच्छे हैं ! वह शान्त हैं, जब कि मैं सदैव व्यग्र रहती हूँ। वह अपना मार्ग स्पष्ट देखते हैं और उनका अपना एक लक्ष्य है—मगर मैं किधर बढ़ी जा रही हूं, मुझे शान्ति कहाँ मिलेगी ? हाँ, वह शान्त हैं—मगर उनके विचार यहाँ से कहीं बहुत दूर रहते हैं। एक ऐसा समय आयेगा जब वह हम सब लोगों को छोड़कर, समुद्र पार, वहां, अपने आदमियों के पास चले जायेंगे। भगवान उन्हें सफलता प्रदान करे। फिर भी, इन सब बातों

के होते हुए भी मुझे इसका सन्तोष रहेगा कि जब वह यहाँ रहते थे तो मै उनका परिचय प्राप्त कर सकी थी।

······वह रूसी क्यों नही है? नही—वह रूसी नही हो सकते।

······माँ तक भी उन्हे पसन्द करती है—वे कहती हैं कि वह विनम्र है। मेरी प्यारी माँ—वे उन्हें समझ नही सकी है। पावेल खामोश रहता है। वह इस बात को समझ गया होगा कि मै इन्सारोव के विषय में उसकी खोजबीन को पसन्द नहीं करती मगर इस बात से वह कुढ़ता है। द्वेषी बालक! उसे द्वेष करने का क्या अधिकार है? क्या मैंने कभी······यह सब कितनी वाहियात बात है। मेरे दिमाग में ऐसी खुराफातें क्यों उठती हैं?

······मगर क्या यह ताज्जुब की बात नहीं कि मै बीस साल की हो गई और अभी तक मैंने किसी से भी प्रेम नहीं किया? मैं इस बात में विश्वास करती हूँ कि द—(मै उन्हें द—कह कर पुकारूँगी, मुझे दमित्री नाम अच्छा लगता है) सदैव इसलिए शान्त रहते हैं क्यों कि वे पूरी तरह अपने काम और अपने आदर्श की प्राप्ति में लगे रहते है। उन्हें किस बात की चिन्ता करनी है? जो अपने को पूर्ण रूप से किसी उद्देश्य की सिद्धि में लगा देता है उसे परेशान होने की जरूरत नहीं रह जाती क्योंकि उस पर किसी तरह की जबावदेही नही रहती। तो यहाँ उसकी इच्छा का मूल्य न रह कर उस उद्देश्य की पूर्णता ही प्रमुख स्थान रखती है।······संयोग ऐसा है कि हम दोनों एक से ही फूलों को पसन्द करते हैं। आज मैंने एक गुलाब का फूल तोड़ा और उसकी एक पंखुड़ी नीचे गिर पड़ी। उन्होने उसे उठा लिया और मैंने वह फूल उन्हें दे दिया।

······द—प्रायः हमसे मिलने आते है। कल वह पूरी शाम तक ठहरो रहे। वह मुझे बल्गेरियन भाषा सिखाना चाहते हैं। उनके साथ मै अपने को घरेलू से वातावरण में पाती हूँ······नहीं, इससे भी अधिक निकटता अनुभव करती हूं।

……दिन कैसे गुजर जाते हैं ?……मैं प्रसन्न हूँ और कुछ-कुछ भयभीत भी। पहले तो मुझे ऐसा लगता है कि भगवान को धन्यवाद दूँ—फिर रोने को मन कर उठता है। ओह, ये दिन कितने सुखद और सुन्दर हैं ?

……मैं अब भी अपने हृदय को हल्का अनुभव करती हूं, सिर्फ कभी-कभी ही, कभी-कभी जरा सी उदास भी हो उठती हूँ। मैं सुखी हूँ—या क्या मैं सुखी हूँ ?

……कल की यात्रा को मैं बहुत दिनों तक नहीं भूल सकूंगी। कैसे विचित्र, नए, भयभीत कर देने वाले अनुभव हुए ! जब उन्होंने उस दैत्य को ऊपर उठा लिया और पत्थर की तरह पानी में फेंक दिया—नहीं, 'इस बात' ने मुझे नहीं डराया था बल्कि 'उनसे' मैं भयभीत हो हो उठी थी। और इसके बाद—उनके चेहरे से कितनी भयानकता और कठोरता टपकने लगी थी। और उनके कहने का वह ढंग: "वह तैर कर निकल आयेगा"—उसने तो मुझे कंपा दिया था। सच है कि मैं उन्हें नहीं समझ पाई हूं। और फिर जब कि सब हंस रहे थे, और मैं भी हंस रही थी तो मुझे उनके लिए कितना दुख हुआ था। मैंने देखा कि वह शरमा रहे थे। मेरे सामने शरमा रहे थे। उन्होंने बाद में, गाड़ी में मुझे बताया था जब अंधेरा हो गया था और मैं उन्हें समझने की कोशिश कर रही थी। उन्हें मूर्ख नहीं बताया जा सकता और वह तुम्हारी सहायता कैसे की जाय, यह भी जानते हैं। मगर इतना क्रोध क्यों ? होठों का इस तरह फड़कना, आँखों से आग सी निकलना, यह सब क्यों ? मगर हो सकता है कि और कोई चारा न हो। शायद ऐसा नहीं हो सकता कि तुम आदमी और योद्धा होते हुए भी विनम्र और सज्जन बने रहो। जीवन बड़ा कठोर है—उन्होंने उस दिन मुझसे कहा था। मैंने यही बात एन्द्री पेत्रोविच के सामने दुहरा दी थी मगर वह द—से सहमत नहीं हुआ। उन दोनों में से कौन ठीक है ? और फिर वह दिन

कितने मनोरम ढंग से प्रारम्भ हुआ था! उसकी बगल में चलना कितना अच्छा लग रहा था हालाकि हम लोगों ने बातें नहीं की थीं......मगर मुझे प्रसन्नता है कि वह सब हुआ। ऐसा लगता है कि ऐसा होना ही था।

......मैं फिर बेचैनी महसूस कर रही हूं......शान्ति नहीं है।

......इन सारे दिनों मैंने इस किताब में कुछ भी नहीं लिखा है क्योंकि लिखने का मन ही नही हुआ। मैंने अनुभव किया कि जो कुछ मैं लिखूंगी वह मेरे हृदय की भावनाओं को स्पष्ट नहीं कर सकेगा।......और मेरे हृदय में क्या है? मैंने उनसे बहुत देर तक बातें की थीं जिससे मुझे बहुत कुछ लाभ हुआ। उन्होंने मुझे अपनी योजनायें बताई (और अचानक ही अब मुझे मालूम हुआ कि उनकी गर्दन पर वह घाव का निशान क्यों है—हे भगवान! जब मैं सोचती हूँ कि उन्हें पहले ही मौत की सजा दी जा चुकी है और उससे वे बाल बाल ही बच गये थे।) वह महसूस करते है कि युद्ध होगा और इस बात से प्रसन्न हैं। और साथ ही मैंने उन्हें इतना उदास पहले कभी भी नही देखा था। वह—वह उदास किस बात से हो सकते है? पिताजी शहर से लौट आए थे और हम दोनों को उन्होंने अकेला एक साथ देख लिया था तथा अजीब सी निगाह से देखा था। एन्द्री पेत्रोविच आया था। मैंने गौर किया था कि वह बहुत दुबला और पीला दिखाई पड़ रहा था। उसने यह कहते हुए मेरी भर्त्सना की थी कि मै न मालूम क्यों गुबिन के साथ अत्यधिक उपेक्षा का व्यवहार करती हूँ। और मै पावेल को पूरी तरह भूल चुकी हूं। जब उससे मिलूँगी तो अपनी गल्ती को सुधारने की कोशिश करूँगी। इस समय मेरे पास उसके लिए समय नहीं है—या किसी के भी लिए नही है। एन्द्री ने मुझसे बड़े दयनीय ढंग से बातें की थीं। इस सब का क्या मतलब है? मेरे चारों तरफ और मेरे भीतर भी सब कुछ क्यों अन्धकार पूर्ण और अस्पष्ट सा हो

उठा है ? मैं महसूस करती हूँ कि मेरे चारों तरफ और मेरे भीतर कुछ रहस्यमय सा भर उठा है—कुछ ऐसा जिसे मुझे ठीक तरह से व्यक्त करना चाहिए……कल रात मैं सो नहीं सकी—और अब मेरे सिर में दर्द हो रहा है। लिखने से क्या लाभ ? वह आज इतनी जल्दी चले गये और मैं उनसे बातें करना चाहती थी। ऐसा लगता है कि वह मुझसे कतराते हैं। हाँ, वह मुझसे कतरा रहे हैं।

……'मुझे शब्द मिल गया है। यह बिजली की तरह मेरे दिमाग में कौंध उठा है। भगवान मेरे ऊपर रहम कर ! मैं उन्हें प्यार करती हूँ !

१७

जिस दिन एलेना ने उपरोक्त निर्णयात्मक अन्तिम शब्द अपनी डायरी में लिखे उस दिन इन्सारोव बरसिएनेव के कमरे में बैठा हुआ था। बरसिएनेव बड़ा परेशान सा उसके सामने खड़ा था क्योंकि इन्सारोव ने अभी उसे बताया था कि उसका कल ही मास्को लौट जाने का विचार है।

"मगर, सचमुच," बरसिएनेव ने कहा, "साल का सबसे सुन्दर मौसम तो अब आ रहा है। मास्को में तुम क्या करोगे ? तुम्हारा यह निर्णय तो बड़ा अप्रत्याशित सा हुआ है। या तुम्हें कोई सूचना मिली है ?"

"मुझे कोई सूचना नही मिली है," इन्सारोव ने उत्तर दिया, "मगर मैंने इस पर विचार कर लिया है और अब मैं और ज्यादा नहीं ठहर सकता।"

"मगर ऐसा कैसे हो सकता है—"

"एन्द्री पेत्रोविच," इन्सारोव ने कहा, "कृपया मेरे ऊपर रहम करो

और मजबूर मत करो। मुझे तुम्हारा साथ छोड़ते हुए खुद भी दुख हो रहा है, मगर इसका और कोई भी इलाज नहीं है।"

बरसिएनेव ने उसकी तरफ गहरी निगाह से देखा।

"मैं जानता हूँ कि तुम्हें अपने निश्चय से नहीं डिगाया जा सकता," अन्त में वह बोला, "तो यह तय रहा ?"

"बिल्कुल !" इन्सारोव ने उत्तर दिया। फिर वह उठा और कमरे से बाहर निकल गया।

बरसिएनेव कमरे में घूमता रहा, अपना टोप उठाया और स्ताहोव-परिवार की तरफ चल दिया।

"आप मुझसे कुछ कहना चाहते हैं," जैसे ही उन्हें एकान्त मिला एलेना ने उससे कहा।

"हाँ, आपने कैसे अन्दाज लगाया ?"

"कोई बात नहीं। बताइये क्या बात है !"

बरसिएनेव ने उसे इन्सारोव के निर्णय के विषय में बताया। एलेना पीली पड़ गई।

"इसका मतलब क्या है ?" बड़ी कठिनाई से वह बोली।

"आप जानती है," बरसिएनेव ने कहा, "कि दमित्री निकानोरोविच अपने किसी भी काम की सफाई देना पसन्द नहीं करता। मगर मेरा ख्याल है—चलिए, पहले बैठ जायें, एलेना निकोलाएव्ना ; आपकी तबियत ठीक नहीं मालूम पड़ती—मगर मेरा ख्याल है कि मैं इस अचानक चले जाने का असली कारण जानता हूँ।"

"वह क्या है, क्या है ?" एलेना ने अनजाने में अपने ठंडे हाथ से बरसिएनेव की बाँह पकड़ते हुए कहा।

"देखिए, बात यह है—" बरसिएनेव ने उदास होकर मुस्कराते हुए कहना प्रारम्भ किया। "मैं आपको इसे कैसे समझाऊँ ? मुझे बात पिछले

बसन्त के मौसम से प्रारम्भ करना चाहिए। तब ही से मैं इन्सारोव को अच्छी तरह से जानने लगा था। मेरी और उसकी मुलाकात मेरे एक रिश्तेदार के घर पर हुई थी। वहाँ एक लड़की थी, बहुत सुन्दर लड़की। मुझे ऐसा लगा कि इन्सारोव उसमें अधिक रुचि लेने लगा था और मैंने यह बात उससे कह दी थी। वह ठहाका मार कर हँस पड़ा और बोला "तुम गलती पर हो।" उसने कहा कि मेरे हृदय पर कभी किसी का प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु अगर मेरे साथ ऐसी बात हुई तो मैं शीघ्र ही वहाँ से किनारा कस जाऊँगा। उसके ठीक यही शब्द थे—कि मैं नहीं चाहता कि मैं अपने कार्य और कर्त्तव्य का बलिदान कर अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को सन्तुष्ट करूँ। "मैं एक बल्गेरियन हूँ," उसने कहा था, "मुझे एक रूसी के प्रेम की जरूरत नहीं है।"

"तो फिर······अब आप क्या सोचते हैं?" एलेना ने अपने आप ही इस तरह अपना सिर एक तरफ को हटाते हुए, मानो कि उसके सिर पर चोट पड़ने वाली हो, फुसफुसाते हुए कहा। मगर अभी तक उसने बरसिएनेव की बाँह को नहीं छोड़ा था।

"मेरा ख्याल है," बरसिएनेव ने कहा, और उसने भी अपना स्वर धीमा कर लिया। "मेरा ख्याल है कि उस समय जिस बात की मैंने भ्रान्त धारणा बनाई थी, इस समय वही हुआ है।"

"इसका मतलब है······आपका ख्याल है—ओह, मुझे परेशान मत करिए," एलेना एकाएक फट पड़ी।

"मेरा ख्याल है," बरसिएनेव ने जल्दी से उत्तर दिया, "कि इन्सारोव एक रूसी लड़की से प्रेम करने लगा है और अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार भागा जा रहा है।"

एलेना ने उसकी बाँह और भी कस कर पकड़ ली और सिर नीचे झुका लिया, मानो कि वह अपरिचित दृष्टियों से लज्जा की उस लालिमा को छिपाने का प्रयत्न कर रही हो जो एक अग्निशिखा की भाँति उछल कर उसके मुख और गर्दन पर छा गई थी।

"एन्द्री पेत्रोविच, आप देवदूत के समान कोमल-हृदय है," उसने कहा, "परन्तु यह बताइये कि वे विदा लेने तो आयेंगे। आयेंगे न?"

"हाँ, मुझे विश्वास है वह आयेगा क्योंकि वह यहाँ से जाना पसन्द नहीं करेगा जब तक कि······"

"तो उनसे कह दीजिए, जरूर कह दीजिए······"

मगर वह दुखी लडकी अपने पर और अधिक संयम न रख सकी। उसकी आँखो से आँसू की धारा बहने लगी और वह कमरे से भाग गई।

"तो वह उसे इतना प्रेम करती है," धीरे-धीरे घर की तरफ लौटते हुए बरसिएनेव ने सोचा। "मैंने इतनी आशा नहीं की थी; मैंने यह आशा नही की थी कि मामला यहाँ तक पहले ही बढ चुका है। उसने मुझे रहमदिल कहा"—वह विचार करता रहा—"मगर कौन बता सकता है कि किस भावना, और किस उद्देश्य से प्रेरित होकर मै उससे यह सब कह बैठा? मगर यह कृपा की भावना नही थी। यह सब मेरी उसी कलुषित इच्छा का प्रकाशन था जो यह जानना चाहती थी कि जिस बात का मुझे भय था वह सत्य है या नही, खजर सचमुच घाव में घुस चुका है या नहीं। मुझे सन्तुष्ट हो जाना चाहिए—वे आपस में प्रेम करने लगे हैं, और मैंने उनकी सहायता की थी······'विज्ञान और रूसी जनता के बीच भावी मध्यस्थ' शुबिन मेरे लिए कहा करता था। ऐसा लगता है कि मेरा जन्म ही मध्यस्थ बनने के लिए हुआ है। मगर मान लो कि मेरी धारणा गलत हो? नहीं, मै गल्ती नही कर सकता······"

उसका हृदय विक्षोभ से परिपूर्ण था। उस सन्ध्या को वह रोयूमर पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में असमर्थ रहा।

दूसरे दिन, लगभग दो बजे, इन्सारोव स्ताहोव-परिवार से मिलने आया। मानों कि ऐसा सोद्देश्य किया गया हो, उस समय अन्ना वासिलिएव्ना के ड्राइङ्ग-रूम में एक मेहमान बैठी थी। वह एक पड़ोसी पादरी की पत्नी थी जो बहुत ही अच्छी और आदरणीया महिला थी यद्यपि उसे

पुलिस की वजह से थोड़ी सी परेशानी उठानी पड़ी थी (एक दिन गर्मी से घबड़ा कर उसे एक ऐसे तालाब में नहाने की सूझी जो एक ऐसी सड़क के किनारे पर था जिस पर होकर एक महत्वपूर्ण जनरल का परिवार गाड़ी में बैठ कर आया-जाया करता था)। एलेना, जिसका चेहरा इन्सारोव के कदमों की आवाज सुनते ही मौत की तरह पीला पड़ गया था, पहले तो एक अपरिचित की उपस्थिति से सचमुच थोड़ी बहुत प्रसन्न हो उठी; परन्तु बाद में उसका हृदय यह सोच कर डूबने सा लगा कि वह उससे अकेले में बिना बातें किए ही चला जा सकता है। इन्सारोव भी परेशान सा लग रहा था। वह एलेना से आँखें बचाने का प्रयत्न कर रहा था। "क्या ऐसा हो सकता है कि वह इसी समय विदा माँग ले," एलेना ने सोचा। दरअसल इन्सारोव अन्ना वासिलिएव्ना से बातें करने ही वाला था कि एलेना जल्दी से उठी और उसे खिड़की के पास एक तरफ बुला लिया। अन्ना वासिलिएव्ना की मेहमान इस व्यवहार को देखकर आश्चर्य सा करने लगी और उसने उनकी तरफ मुड़कर देखने का प्रयत्न किया मगर उसके कपड़े इतने चुस्त थे कि हर वार जब वह मुड़ने का प्रयत्न करती तो वे चरचरा उठते थे, इसलिए उसने स्थिर होकर बैठना ही उचित समझा।

"सुनिए," एलेना ने जल्दी से कहा, "मैं जानती हूँ कि आप क्यों आए हैं: एन्द्री पेत्रोविच ने मुझे बता दिया है कि आप क्या करना चाहते हैं। लेकिन हम लोगों से आज ही विदा मत लीजिए मैं प्रार्थना करती हूँ: कल आइए, जितनी भी जल्दी आप आ सकें, ग्यारह बजे के लगभग: मुझे आपसे एक मिनट बात करनी है।"

इन्सारोव ने सिर झुका लिया और खामोश रह गया।

"मैं आपको अब नहीं रोकूंगी······आप आने का वायदा करते हैं?"

दुबारा भी इन्सारोव ने चुपचाप सिर झुका दिया।

"एलेना, यहाँ आओ," अन्ना वासिलिएव्ना ने कहा, "जरा इस सुन्दर हैन्ड-बेग को तो देखो जो हमारी मेहमान लाई हैं।"

"मैंने इसे स्वयं ही काटा है," पादरी की पत्नी ने कहा।

एलेना खिड़की के पास से चली आई।

इन्सारोव स्ताहोव–परिवार के साथ पन्द्रह मिनट से ज्यादा नहीं ठहरा। एलेना उसे अन्ध-श्रद्धा के साथ देखती रही। इन्सारोव बराबर इधर उधर कुलबुलाता सा रहा और पहले की ही तरह उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि किधर देखे—फिर वह बड़े अजीब से ढंग से उठकर चला गया। ऐसा लगा कि जैसे एकाएक गायब हो गया हो।

एलेना का वह दिन धीरे-धीरे बीता; लम्बी, लम्बी रात और भी धीरे-धीरे रेंगती हुई सी आई। वह दोनों हाथों से घुटनों को बाँध और उन पर अपना सिर टेक कर विस्तर पर बैठ जाती; खिड़की के पास जाती और अपनी गर्म भौहें उसके ठंडे काँच पर दबाती और सोचती, बराबर सोचती, वही विचार उठते रहते, यहाँ तक कि वह पूरी तरह से क्लान्त हो उठती। ऐसा लगता था मानों कि उसका हृदय सीने में पत्थर बन कर जम गया हो—या बिल्कुल ही गायब हो गया हो क्योंकि वह उसका अनुभव नहीं कर रही थी—परन्तु उसका दिमाग बुरी तरह भन्ना रहा था मानों उसके एक एक बाल में आग लग गई हो और उसके होठ सूख रहे थे। "हाँ, वह आयेगा······उसने माँ से विदा नहीं माँगी थी······वह मुझे धोखा नहीं देगा······क्या एन्द्री पेत्रोविच ने. जो कहा था, वह सच हो सकता है? ऐसा सम्भव नहीं। मगर सचमुच उसने आने का तो वायदा नहीं किया था। क्या यह सम्भव है कि वह मुझसे हमेशा के लिए दूर हो गया है?······" यही विचार थे जो उसका पीछा नहीं छोड़ रहे थे······सचमुच पीछा नहीं छोड़ रहे थे; क्योंकि ऐसा नही था कि वे आते हों और चले जाते हों और फिर आ जाते हों बल्कि वे उस पर एक कुहरे की तरह बराबर छा रहे थे। "वह मुझसे प्रेम

करता है !"—यह विचार उसको रोम-रोम व्याप्त हो उठा, उसके सम्पूर्ण शरीर और प्राणों में छा गया। उसने टकटकी बाँधकर अन्धकार में देखा परन्तु वहाँ उसके अधरों पर खेलने वाली उस रहस्यमय मुस्कान को देख पाने वाला कोई भी नहीं था—परन्तु एकाएक उसने अपने सिर में झटका दिया, दोनों हाथ गर्दन के पीछे बांध लिए और एक बार फिर वे दूसरे विचार उस पर कुहरे की तरह छा उठे। सुबह होने से पहले उसने कपड़े बदले और अपने बिस्तर पर लेट गई मगर सो नहीं सकी। सूरज की पहली सुनहली किरणें कमरे में घुस आई······" ओह, अगर वह मुझसे प्रेम करता है," वह एकाएक चिल्ला उठी और अपने ऊपर पड़ती हुई सूरज की रोशनी में उन्मत्त होकर उसने दोनों हाथ फैला दिए।······

वह उठी, कपड़े पहने और नीचे चली गई। घर में अभी तक कोई भी नहीं जागा था। वह बाग में गई, परन्तु वहाँ ऐसी निर्मलता, हरियाली और शान्ति छा रही थी, पक्षी इतने विश्वास के साथ चहचहा रहे थे, फूल इतनी प्रसन्नता के साथ ऊपर की ओर देख रहे थे कि उसमें रहस्य और भय की सी एक भावना भर उठी। "ओह," उसने सोचा, "अगर यह सत्य है, तो घास की एक पत्ती भी मुझसे अधिक प्रसन्न नहीं है ! परन्तु क्या यह सत्य है ?" वह अपने कमरे में लौट आई और किसी तरह समय काटने के लिए पोशाक बदलने लगी। परन्तु उसके कपड़े उसके हाथ में से फिसल गए और जमीन पर गिर पड़े और वह अभी आधे-कपड़े पहने अपने शीशे के सामने बैठी थी कि नाश्ता करने का बुलावा आ गया। वह नीचे गई। उसकी माँ ने गौर किया कि वह बहुत पीली पड़ी हुई है मगर सिर्फ इतना ही कहा : "तुम आज कितनी अच्छी लग रही हो।" माँ ने उसे ऊपर से नीचे तक आलोचनात्मक दृष्टि से देखा और आगे कहा : "यह पोशाक तुम पर खूब फबती है। अगर तुम किसी को विशेष रूप से प्रभावित करना चाहती हो तो हमेशा इसी को पहना करना।" एलेना ने कोई उत्तर नहीं दिया और जाकर एक कौने में

बैठ गई। घड़ी ने नौ के घन्टे बजाये: ग्यारह बजाये में अभी दो घन्टे थे। एलेना ने एक किताब उठा ली, फिर सीने-पिरोने का सामान उठाया, फिर दुबारा किताब पढ़ने लगी। फिर उसने तय किया कि वह पगडन्डी पर सौ बार घूमेगी और ऐसा करने के लिए चल पड़ी। वह काफी देर तक अन्ना वासिलिएव्ना को ताशों का 'पेशेन्स' नामक खेल खेलती हुई देखती रही और फिर घड़ी की तरफ देखा। अभी तक दस भी नहीं बजे थे। शुबिन ड्राइंग-रूम में आया। एलेना ने उससे बातें करने की कोशिश की, परन्तु केवल माफी ही माँग सकी और यह न जान सकी कि ऐसा क्यों किया······यह बात नहीं थी कि जो कुछ उसने कहा था उसमें उसे प्रयत्न करना पड़ा था परन्तु अपने प्रत्येक शब्द पर वह आश्चर्यचकित हो उठी। शुबिन उसकी तरफ झुका—उसने आशा की कि वह उसका मजाक उड़ायेगा इसलिए ऊपर देखा: मगर उसने देखा कि उसके सामने एक उदास, मित्रतापूर्ण चेहरा देख रहा था। वह उस चेहरे को देखकर मुस्कराई। शुबिन भी मुस्कराया, और बिना कुछ कहे चुपचाप चला गया। वह उसे रोकना चाह रही थी मगर उस समय उसकी समझ में यही नहीं आया कि कैसे रोके। आखिरकार ग्यारह के घन्टे बजे। उसने कान लगाए प्रतीक्षा करनी प्रारम्भ कर दी। वह उसके बाद कुछ भी काम नहीं कर सकी; यहाँ तक कि उसने सोचना भी बन्द कर दिया। उसका हृदय पुनः चैतन्य हो उठा और बराबर उसकी धड़कन बढ़ती चली गई और समय और भी तेजी से अजीब ढंग से गुजरता चला गया। पन्द्रह मिनट, आधा घण्टा, आधा घण्टे से कुछ मिनट और ऊपर बीत गईं, जैसा कि उसने सोचा था: फिर उसने चौंक कर इस आशा से घड़ी के बजते हुए घण्टे सुने कि बारह बजे होंगे परन्तु एक बजा था। "वह नहीं आएगा, वह बिना विदा लिए ही चला जा रहा है······" यह विचार उसके दिमाग में दौड़ता हुआ सा लगा और उसी के साथ रक्त का प्रवाह तीव्र हो उठा। ऐसा लग रहा था कि उसकी सांसें उसका गला घोंटे दे रही हैं और उसका मन

हुआ कि वह रो पड़े।......वह भाग कर अपने कमरे में गई और दोनों हाथों में मुँह छिपाकर बिस्तर पर गिर पड़ी।

आधा घन्टे तक वह निस्तब्ध सी पड़ी रही। आँसू उसकी उंगलियों में से होकर तकिए पर गिरते रहे। एकाएक वह उठकर बैठ गई। उसके हृदय में एक विचित्र सी भावना भर उठी। उसके चेहरे का भाव बदल गया, आँसू अपने आप ही सूख गए, आँखें चमकने लगी। उसने भौंहों में बल डाले, होठों को भीचा। आधा घण्टा और गुजर गया। आखिरी बार उसने सुना; क्या यह वही आवाज थी जिसे वह जानती थी?.........वह उठ खड़ी हुई, टोप और दस्ताने पहने और बिना आस्तीनों वाला एक लबादा कन्धे पर डाल लिया; और फिर घर में से चुपचाप खिसक कर वह तेज कदमों से बरसिएनेव के बंगले को जाने वाली सड़क पर चल पड़ी।

१८

एलेना सिर नीचे झुकाए और निगाह सामने की तरफ गढ़ाए चलने लगी। उसे किसी भी प्रकार का भय नहीं था। उसने इस बात की भलाई-बुराई पर विचार नहीं किया कि वह क्या करने जा रही थी: वह इन्सारोव को एक बार फिर देखना चाहती थी। उसने चलते हुए इस बात की तरफ भी ध्यान नहीं दिया कि सूरज काफी देर पहले ही एक काले और घने बादल के पीछे छिप चुका था, कि हवा पेड़ो में बुरी तरह चीत्कार कर रही थी और उसकी पोशाक को फरफरा रही थी, कि धूल एकाएक हवा में उठी और एक ठोस खम्भे की तरह सड़क पर सपाटे से आगे बढ़ी।.........जब मेंह की बड़ी-बड़ी बूँदें पड़नी प्रारम्भ हुईं तब भी उसे मालूम नही पड़ा मगर फिर बूँदे और

भी तेजी से और घनी होकर पड़ने लगीं, बिजली चमकने और कड़कने लगी। एलेना रुक गई और चारों तरफ देखा······सौभग्य से, जहाँ तूफान ने उसे घेरा था, उसके पास ही एक पुरानी, टूटी फूटी छतरी थी, जो एक अन्धे कुएँ के ऊपर बनी हुई थी। वह उसकी तरफ दौड़ी और उसकी नीची छत के नीचे जाकर खड़ी हो गई। पानी मूसलाधार पड़ रहा था। आसमान बादलों से पूरी तरह ढका हुआ था। निराशा से स्तब्ध होकर उसने मेंह की गिरती हुई बूँदों की उस घनी चादर की तरफ देखा। इन्सारोव को देखने की उसकी अन्तिम आशा विलीन हो गई। एक बुढ़िया भिखारिन छतरी में घुसी, पानी को झाड़ा और सलाम की। फिर कराहते और बड़बड़ाते हुए वह कुएँ की जगत का सहारा लेकर बैठ गई। एलेना ने हाथ अपनी जेब में डाला। बुढ़िया ने देखा कि वह क्या कर रही थी और उसका चेहरा—जो कभी सुन्दर रहा होगा यद्यपि इस समय पीला और झुर्रियोंदार था—चमक उठा। "धन्यवाद, कृपालु महिला," उसने कहना प्रारम्भ किया। एलेना का बटुआ जेब में नहीं था मगर बुढ़िया ने उसके सामने पहले से ही हाथ पसार दिया था।

"मेरे पास पैसा नहीं है," एलेना ने कहा, "मगर यह ले लो, यह तुम्हारे किसी न किसी काम आ जायेगा।"

उसने बुढ़िया को अपना रूमाल दे दिया।

"सुन्दरी मैं तुम्हारे इस रूमाल का क्या करूँ?" बुढ़िया बोली। "अच्छा, जब मेरी नातिनी की शादी होगी तब उसे दे दूँगी—भगवान तुम्हें और दे!"

जोर से बिजली कड़की।

"ईसा मसीह हम पर रहम कर," वह बुदबुदाई और उसने तीन बार अपने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाया। "मगर मेरा ख्याल है कि मैंने तुम्हें पहले भी देखा है," उसने कुछ देर ठहर कर कहा, "तुम वही तो नहीं हो जिसने मुझे गिरजे में भीख दी थी?"

एलेना ने गौर से उसकी तरफ देखा और पहचान लिया।

"हाँ, मैंने दी थी," उसने उत्तर दिया, "और फिर तुमने पूछा था कि मैं इतनी उदास क्यों हूँ।"

"हां, पूछा था, लाड़ली, यही पूछा था। मुझे यकीन था कि मैं तुम्हें जानती हूँ। और तुम अब भी उतनी ही उदास दिखाई पड़ती हो, यहाँ तक कि इस समय भी। तुम्हारा रूमाल भी गीला है: मैं जानती हूं, ये जरूर तुम्हारे आँसू होंगे। ओह, जवानी में डूबे हुए व्यक्तियो, तुम्हें हमेशा यही दुख उठाना पड़ता है, इतना बड़ा दुख!"

"और वह दुख कैसा है, माँ?"

"कैसा दुख? ओह सुन्दरी, तुम मुझे बना नहीं सकतीं, मुझ जैसी बुढ़िया को चकमा नहीं दे सकतीं। मैं जानती हूँ कि तुम क्यों दुखी हो रही हो और अकेली तुम्हीं तो हो नहीं। मैं भी कभी जवान थी, लाड़ली। मैंने भी यही सब मुसीबतें उठाई थीं। हाँ! और मैं तुम्हारी कृपा के लिए तुम्हें कुछ बताऊँगी। अगर तुम्हें एक अच्छा आदमी, दृढ़ स्वभाव वाला आदमी मिल जाय तो अकेले उसी से चिपक जाओ, मौत से भी ज्यादा मजबूती के साथ उसे जकड़ लो। हाँ, अगर ऐसा ही होना है, तो यही सही; अगर नहीं, तो जरूर भगवान की ऐसी मर्जी होगी। हाँ ......तो इतने ताज्जुब के साथ क्यों देख रही हो? तुम जानती हो, मैं भविष्य बताने वाली हूँ। क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारे दुख को तुम्हारे रूमाल में समेट कर ले जाऊँ? मैं इसे ले जाऊँगी और फिर सब समाप्त हो जायेगा। देखो, पानी अब इतना तेज नहीं पड़ रहा है। तुम थोड़ी देर इन्तजार करना मगर मैं तो चली। यह पहला मौका तो है नहीं जब मैं भीगी हूँ। देखो लाड़ली, भूल मत जाना: दुख आते हैं और चले जाते हैं और अपने पीछे कोई भी चिन्ह नहीं छोड़ जाते। भगवान तुम्हारी मदद करे!"

बुढ़िया जगत पर से उठ खड़ी हुई, छतरी से बाहर निकली और

९

लड़खड़ाती हुई अपने रास्ते पर चल पड़ी। एलेना ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा। "इसका क्या मतलब है?" वह अपने आप बुदबुदा उठी।

धीरे-धीरे पानी बन्द होने लगा और क्षण भर के लिए सूर्य बाहर निकल आया। एलेना इस सुरक्षित-स्थान को छोड़ने की सोच ही रही थी कि······अचानक, छतरी से थोड़ी ही दूर पर उसकी निगाह इन्सारोव पर पड़ी। वह अपने लबादे में लिपटा हुआ था और उसी पगडण्डी पर चला जा रहा था जिससे वह स्वयं आई थी : ऐसा लगता था कि मानो वह घर पहुँचने की जल्दी में हो।

एलेना ने सहारा लेने के लिए सीढ़ियों की पुरानी रेलिंग पर हाथ रख लिए और उसे पुकारने का प्रयत्न किया मगर उसकी आवाज ने उसका साथ नहीं दिया······इन्सारोव इस समय तक सिर नीचा किए आगे निकल चुका था।

"द्मित्री निकानोरोविच!" अन्त में वह किसी तरह पुकार उठी। इन्सारोव एकाएक रुक गया और चारों तरफ देखा। पहले पहल वह उसे पहचान नहीं सका मगर फिर फौरन ही उसके पास आ गया।

"तुम! तुम यहाँ!" वह चीख उठा।

वह चुपचाप छतरी में वापस लौट गई। वह उसके पीछे चला।

"तुम यहाँ?" इन्सारोव ने दुहराया।

एलेना अब भी कुछ नहीं बोली, सिर्फ उसकी तरफ टकटकी बाँध कर और कुछ-कुछ कोमल दृष्टि से देखती रही। इन्सारोव ने आँखें नीची कर लीं।

"आप हमारे घर से आए है?" एलेना ने पूछा।

"नहीं—वहाँ से नहीं।"

"नहीं?" एलेना ने दुहराया और मुस्कराने का प्रयत्न किया। "तो इस तरह आप अपना वचन निभाते हैं? मैं पूरे समय तक आपका इन्तजार करती रही।"

" याद करो, एलेना निकोलाएव्ना, मैंने कल कोई वचन नहीं दिया था ।"

एलेना ने मुस्कराने का प्रयत्न किया और चेहरे पर हाथ फेरा। उसका हाथ और चेहरा दोनों ही बहुत ज्यादा पीले पड़ रहे थे ।

" तो आप हमसे बिना विदा लिए ही चले जाना चाहते थे ?"

" हाँ," इन्सारोव ने गम्भीर होकर कहा । उसकी आवाज भारी थी ।

" क्या ? हमारी आपस की बातों के बाद, हमारी मित्रता के होते हुए, हर चीज के बावजूद भी······और अगर दैवयोग से मुझे आप यहाँ न मिल जाते"—उसका स्वर तेज हो गया और वह क्षण भर को चुप हो गई—" आप इसी तरह चले गए होते और अन्तिम बार भी मुझसे हाथ न मिलाते—और इस सब का आपके लिए कोई मूल्य न होता ?"

इन्सारोव ने मुँह मोड़ लिया ।

"एलेना निकोलाएव्ना, कृपया इस तरह की बातें मत करो । मैं बहुत दुखी हूं । कृपया मेरा विश्वास करो—अपना निर्णय करने में मुझे बड़ा संघर्ष करना पड़ा है । काश कि तुम जान सकतीं कि क्यों······"

" मैं यह नहीं जानना चाहती कि आप क्यों जा रहे हैं," एलेना ने भयभीत होकर टोकते हुए कहा । "यह स्पष्ट है कि ऐसा ही होना है । स्पष्ट है कि हमें बिछुड़ना ही पड़ेगा । आप व्यर्थ ही अपने मित्रों को पीड़ा नहीं पहुँचाना चाहते । परन्तु क्या मित्रगण सचमुच इसी तरह बिछुड़ते हैं ? यह सच है कि हम लोग मित्र हैं, हैं न ? "

" नहीं," इन्सारोव ने कहा ।

" आपने क्या कहा ? " एलेना ने पूछा । उसके कपोलों पर हल्की सी लाली दौड़ गई ।

" मेरे जाने का यही कारण है कि हम लोग मित्र ही नहीं है । मुझे वह कहने के लिए मजबूर मत करो जो मैं नहीं कहना चाहता, जो मैं नहीं······"

" आप तो मेरे साथ खुलकर बातें किया करते थे," एलेना ने उसे तनिक डाँटते हुए सा कहा। "आप को याद है ?"

"उस समय मैं स्पष्ट बात करने की स्थिति में था—उस समय छिपाने के कुछ भी नहीं था, मगर अब······"

" मगर अब ?" एलेना ने पूछा।

" मगर अब······मगर अब मुझे जाना ही चाहिए। विदा।"

अगर उस समय इन्सारोव ने एलेना के चेहरे की तरफ देखा होता तो उसने गौर किया होता कि जैसे-जैसे उसका अपना चेहरा काला और गम्भीर पड़ता जा रहा था, एलेना का चेहरा उतना ही उतना अधिक चमकता चला जा रहा था, मगर वह तो टकटकी बाँधे जमीन की तरफ देख रहा था ।

" अच्छा, विदा, द्मित्री निकानोरोविच," एलेना ने कहा, " परन्तु क्योंकि हम लोगों की आपस में मुलाकात हो चुकी है इसलिए कम से कम हाथ तो मिला लीजिए।"

इन्सारोव ने अपना हाथ बढ़ा दिया।

" नहीं, मैं इतना भी नहीं कर सकता," उसने कहा और एक बार फिर घूम गया।

" आप नहीं मिला सकते ?"

" नहीं ;······विदा ।"

वह दरवाजे की तरफ बढ़ा।

" जरा ठहरिए," एलेना ने कहा । " आप मुझसे भयभीत से लगते हैं······मगर मुझ में आप से अधिक साहस है," उसने आगे कहा और उसका सारा शरीर हल्का सा काँप उठा । "मैं आपको यह बता सकती हूं कि आपने मुझे यहाँ क्यों पाया ? बताऊँ ? आप जानते हैं कि मैं कहाँ जा रही थी ?"

इन्सारोव ने उसकी तरफ आश्चर्य चकित होकर देखा ।

"मैं आपसे मिलने जा रही थी।"

"मुझसे ?"

एलेना ने हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया।

"आप मुझे यह कहने के लिए मजबूर करना चाहते हैं कि मैं आपसे प्रेम करती हूं," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "लीजिए—मैंने कह दिया।"

"एलेना !" इन्सारोव चीख उठा।

एलेना ने अपने चेहरे पर से अपने हाथ हटा लिए, उसकी तरफ देखा और उसके सीने से चिपक गई।

उसने बिना बोले उसे कस कर चिपटा लिया। उसे यह बताने की जरूरत नहीं पड़ी कि वह उससे प्रेम करता था। उस एक ही चीख ने, उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में तुरन्त हो उठने वाले उस परिवर्तन ने, उसके उस वक्ष के ऊपर नीचे होने ने जिस पर वह इतने विश्वास के चिपकी हुई थी, बालों पर उसकी उङ्गलियों के उस स्पर्श ने—उसे यह बता दिया कि वह उससे प्रेम करता था। इन्सारोव खामोश था और एलेना ने उससे एक भी शब्द नहीं पूछा। "वह यहाँ है, मुझसे प्रेम करता है······और क्या चाहिए ?" पूर्ण आनन्द की वह शान्ति, पूर्ण आश्रय की वह शान्ति जिसे लक्ष्य की प्राप्त हो गई हो, वह स्वर्गीय शान्ति जिसमें स्वयं मृत्यु भी अपना तात्पर्य और सौन्दर्य खोज लेती है, उस पर एक स्वर्गिक लहर की भाँति छा गई। उसने कुछ भी नहीं मांगा क्योंकि उसे सब कुछ मिल गया था। "मेरे भाई, मेरे मित्र, मेरे प्रियतम," वह धीरे से फुसफुसाई और स्वयं भी इस बात को नहीं जान सकी कि यह किसका हृदय था, उसका अपना या इन्सारोव का, जो धड़क रहा था और उसके वक्ष में इतनी मधुरता के साथ समाता चला जा रहा था।

वह इस यौवन से परिपूर्ण जीवन को अपनी शक्तिशाली भुजाओं में बांधे स्तब्ध खड़ा था, जिसने अपने को उसे दे डाला था और वह

इस बात का अनुभव कर रहा था कि एक नवीन और पूर्ण रूप से मधुर भार उसके वक्ष पर पड़ रहा था—उसके किसी के सम्मुख नत न होने वाले हृदय में कोमलता और अवर्णनीय कृतज्ञता की एक भावना फूट पड़ी थी और उसकी आँखों में आँसू भर आए जिनका उससे पहले कभी भी परिचय नहीं रहा था।

परन्तु एलेना रोई नहीं; वह केवल बारबार यही दुहराती रही: "मेरे भाई, मेरे मित्र!"

"तुम मेरे साथ कहीं भी चल सकोगी?" पन्द्रह मिनट बीत जाने के बाद, उसे अब भी पकड़े और अपनी बांहों में सम्हाले इन्सारोव ने पूछा।

"सर्वत्र—संसार के छोर तक। जहाँ कहीं तुम होगे मैं भी वहीं हूँगी।"

"तुम अपने से छल तो नहीं कर रहीं—तुम जानती हो कि तुम्हारे माता-पिता हम लोगों के विवाह से कभी भी सहमत नहीं होंगे?"

"मैं अपने को धोखा नहीं देती: मैं इस बात को जानती हूँ।"

"तुम जानती हो कि मैं गरीब हूं, बिल्कुल कंगाल?"

"जानती हूं"

"तुम जानती हो कि मैं रूसी नहीं हूं, कि मेरा भाग्य रूस से बाहर है, और तुम्हें अपने देश और अपने आदमियों से सारे सम्बन्ध तोड़ देने पड़ेंगे?"

"मैं जानती हूँ, जानती हूँ।"

"और तुम यह भी जानती हो कि मैंने अपना जीवन एक कठोर और निस्वार्थ कार्य के लिए उत्सर्ग कर रखा है और यह कि मैं—कि हम लोगों को सिर्फ खतरा ही नहीं उठाना पड़ेगा बल्कि सम्भव है कि अभावों और कष्टों का भी सामना करना पड़े?"

"हाँ, मैं यह सब जानती हूं,.....मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।"

"और तुम्हें वह सब छोड़ देना पड़ेगा जिसकी कि तुम आदी हो और हो सकता है कि वहाँ तुम्हें अपरिचितों के बीच अकेले काम करना पड़े?"

एलेना ने अपना हाथ उसके मुख पर रख दिया।

"मैं तुमसे प्रेम करती हूं, मेरे प्रियतम।"

इन्सारोव ने उसका सुन्दर, गुलाबी हाथ आवेश के साथ चूम लिया। एलेना ने हाथ नहीं खींचा बल्कि एक बच्चे की सी प्रसन्नता भरी उत्सुकता के साथ देखती रही कि वह उसके हाथों को किस तरह बारबार चूम रहा था। अचानक वह शरमा उठी और उसके सीने में उसने मुँह छिपा लिया। उसने बड़ी कोमलता के साथ उसका सिर ऊपर उठाया और टकटकी बाँध कर उसकी आँखों में देखा।

"मेरी जीवन-सहचरी," इन्सारोव बोला, "मनुष्य और ईश्वर साक्षी है कि तुम मेरी अर्द्धाङ्गिनी हो।"

१९

एक घण्टे बाद, एक हाथ में टोप और दूसरे में लबादा थामे एलेना चुपचाप बंगले के ड्राईंग-रूम में घुसी। उसके बाल कुछ बिखर गए थे, गालों पर हल्की सी लाली थी, होठों पर अब भी मुस्कान थिरक रही थी और अधखुली आँखें मुस्करा रहीं थीं। वह थकावट के मारे मुश्किल से चल पा रही थी मगर अपनी यह थकावट ही उसे मधुर लग रही थी; सचमुच इस समय उसे हर चीज मधुर लग रही थी, हर चीज और हर व्यक्ति कोमल और

स्नेह से भरा प्रतीत हो रहा था। उवार इवानोविच खिड़की के पास बैठा था। एलेना उसके पास गई, उसके कन्धे पर अपना हाथ रखा, जम्हाई और अंगड़ाई ली; फिर किसी कारण वश अपनी हँसी को रोकने में असमर्थ हो गई।

"तुम हंस क्यों रही हो?" उसने आश्चर्य चकित होकर पूछा।

उसे नहीं मालूम था कि क्या कहे। उसने ऐसा अनुभव किया कि वह उवार इवानोविच को चूमना चाह रही थी।

"चारों खाने चित्त," आखिरकार वह कह उठी।

उवार इवानोविच ने भौंह तक नहीं उठाई मगर आश्चर्य से उसकी तरफ देखता रहा। उसने अपना टोप और लबादा उस पर पटक दिया।

"प्रिय उवार इवानोविच," वह बोली, "मैं इतनी उनींदी हो रही हूं, इतनी थक गई हूँ," और उसी की बगल में एक आराम कुर्सी पर गिर कर वह फिर हँसने लगीं।

"हुँ," उवार इवानोविच अपनी उंगलियों को मरोड़ता हुआ उदासी के साथ बड़बड़ाया, "यह······मुझे कहना चाहिए······हाँ······"

एलेना ने अपने चारों तरफ देखा। "मुझे यह सब जल्दी ही छोड़ देना पड़ेगा," उसने सोचा। "और यह सब कितना विचित्र है: मैं किसी भी तरह का भय, सन्देह, ग्लानि अनुभव नहीं कर रही ······मगर नहीं, मुझे माँ के लिए दुख है!" फिर उसकी आंखों के सामने वही छतरी आ खड़ी हुई, उसने इन्सारोव के स्वर की आवाज सुनी, अपने चारों तरफ उसकी भुजाओं को लिपटा हुआ अनुभव किया। उसका हृदय प्रसन्न परन्तु अस्पष्ट से भावों से भर रहा था। वह भी प्रसन्नता से क्लान्त सा प्रतीत हो रहा था। उसने उस बुढ़िया-भिखारिन के विषय में सोचा; "ऐसा लगता है कि मानो वह सचमुच मेरे दुख को अपने

साथ ले गई हो। ओह! मैं कितनी प्रसन्न हूँ। यद्यपि इस प्रसन्नता के योग्य नहीं हूं और यह सब कैसे एकाएक हो गया!" अगर वह थोड़ा सा और संयम खो बैठती तो उसकी आँखों से मीठे आँसुओं की झड़ी लग जाती। वह केवल हँसकर ही अपने पर संयम रख सकी। अपनी कुर्सी में आराम से पड़े हुए उसे ऐसा लगा कि जैसी भी स्थिति में वह पड़ गई थी वह यथा सम्भव अत्यन्त सुखद थी; एक ऐसी स्थिति मानो उसे पालने में झुला-झुलाकर सुलाया जा रहा हो। उसकी प्रत्येक गति में शान्ति और कोमलता थी। अब वह असंगतता और उत्तेजना कहाँ चली गई थी?

जोया कमरे में आई: एलेना को विश्वास हो उठा कि उसने ऐसा सुन्दर मुख कभी भी नहीं देखा। अन्ना वासिलिएव्ना भीतर आई। एलेना ने हृदय में एक टीस अनुभव की मगर फिर उसने अपनी अच्छी माँ को अत्यन्त स्नेह के साथ माथे पर चूमा, बिल्कुल उस स्थान के नीचे जहाँ से बाल उगने प्रारम्भ होते हैं और जिनपर थोड़ी सी सफेदी आ चली थी। फिर वह अपने कमरे में चली गई। वहाँ की प्रत्येक वस्तु ने किस तरह मुस्कराते हुए उसका स्वागत किया! लज्जा मिश्रित विजय की कैसी भावना और साथ ही नम्रता के साथ वह बिस्तर पर बैठ गई, उसी बिस्तर पर जिस पर, तीन घण्टे पहले उसने वेदना के इतने भयंकर क्षण व्यतीत किए थे। "और फिर भी," उसने सोचा, "उस समय भी मैं जानती थी कि वह मुझसे प्रेम करता था, हाँ, और उससे भी पहले से.........लेकिन नहीं. नहीं, यह विचार पाप से भरा हुआ है! ......तुम मेरी अर्द्धांगिनी हो," वह बुदबुदाई और हाथों से मुँह ढक कर घुटनों के बल बैठ गई।

शाम होने पर वह अधिक गम्भीर हो उठी। इस विचार ने कि वह शीघ्र ही इन्सारोव को फिर नहीं देख सकेगी, उसे दुखी बना दिया। इन्सारोव के लिए यह सम्भव नहीं था कि वह बिना सन्देह उत्पन्न किए बरसिएनेव के साथ ठहर सके, इसलिए उन्होंने यह योजना बनाई

थी : इन्सारोव मास्को लौट जायेगा और पतझड़ आने से पहले उन लोगों से आकर दो या तीन बार मुलाकात करेगा। अपनी तरफ से एलेना ने यह वचन दिया था कि वह उसे पत्र लिखेगी और यदि सम्भव हो सका तो कुन्तसोवो के आसपास ही कहीं मिलने का स्थान नियुक्त करेगी। जब चाय लगा दी गई तो वह नीचे उतर कर ड्रॉइंग-रूम में आई जहाँ उसे सारा परिवार उपस्थित मिला। शुबिन भी वहाँ था। जैसे ही वह दिखाई पड़ी शुबिन ने उसकी तरफ तेज निगाहों से देखा। वह चाहती थी कि उसके साथ उसी पुरानी आत्मीयता के साथ बातें करे, मगर उसकी तीखी अर्न्तदृष्टि से डरती थी और इस बात से भी कि उसके ऊपर स्वयं इसकी कैसी प्रतिक्रिया होगी। उसने महसूस किया कि यह अकारण ही नहीं कि जो उसने दो सप्ताह से भी अधिक समय से उसे परेशान नहीं किया है। थोड़ी ही देर बाद बरसिएनेव आ पहुँचा। वह इन्सारोव की तरफ से अन्ना वासिलिएव्ना के लिए शुभ कामना का सन्देश लाया था। इन्सारोव ने कहलवाया था कि वह उनसे बिना विदा मांगे ही मास्को लौट रहा है। उसके लिए वे उसे क्षमा करें। दिन भर में यह पहला अवसर था जब एलेना ने इन्सारोव का नाम लिया जाता हुआ सुना था और वह स्वयं ही गरमा उठी। उसने महसूस किया कि उसे ऐसे अच्छे मित्र के अचानक चले जाने पर अफसोस जाहिर करना चाहिए। मगर इस प्रकार का छलावा करना उसकी शक्ति से बाहर का काम था। इसलिए वह स्थिर और चुपचाप बैठी रही जबकि उसकी माँ आहें भरती रही और दुख मनाती रही। एलेना ने बरसिएनेव के साथ रहने की कोशिश की ; उसे उससे भय नहीं लगता था हालांकि कि वह उसके रहस्य को थोड़ा सा जानता था इसलिए शुबिन से बचने के लिए उसने उसी की शरण ली। शुबिन अभी तक उसकी तरफ व्यंग्यात्मक नहीं अपितु खोजपूर्ण दृष्टि से देख रहा था। शाम बीतने पर बरसिएनेव भी व्यग्र हो उठा : उसने आशा की थी कि वह उसे, जितनी कि वह थी, उससे भी अधिक उदास पायेगा। सौभाग्य से उसमें और शुबिन में कला के ऊपर विवाद छिड़ गया और वह एक तरफ बैठी उनकी

आवाजों को ऐसे सुनती रही जैसे कि कोई सपना देख रही हो। शनैः शनैः केवल वे ही नहीं, बल्कि वह कमरा और उसकी प्रत्येक वस्तु स्वप्न में विलीन होती हुई सी लगने लगी: मेज पर रखा हुआ समोवार, उवार इवानोविच की छोटी वास्कट, जोया की उंगलियों के लाली लगे नाखून, दीवाल पर लगा हुआ ग्रान्ड ड्यूक कोन्स्तान्तिन पावलोविच का चित्र, सब उससे दूर हटते चले गए, धुंधले होते चले गए और फिर उनका अस्तित्व ही समाप्त हो गया। उसे उन सब के लिए केवल अफसोस हुआ। "इनके जीवन का क्या उद्देश्य है?" उसने सोचा।

"नींद आ रही है, लेनोच्का?" उसकी माँ ने पूछा।

उसने अपनी माँ का प्रश्न नहीं सुना।

"तुम कहते हो अर्द्ध-प्रमाणित भ्रम"—शुबिन द्वारा एकाएक कहे गए इन शब्दों ने अचानक उसे चौंका दिया। "परन्तु यह निश्चित है," वह कहता रहा, "इसी प्रकार की अभिव्यक्ति में रस और सुरुचि निहित रहती है। प्रमाणित भ्रम निराशा की सृष्टि करता है, यह अधार्मिक है—अप्रमाणित भ्रम व्यक्ति को उदासीन बना देता है, यह मूर्खता है, परन्तु वह अर्द्ध-प्रमाणित—यही तो वह है जो तुम्हें व्यग्र बना देता है और तुम अधीर हो उठते हो। उदाहरण के लिए, यदि मैं यह कहूँ कि एलेना हम में से एक से प्रेम करती है, तो यह किस प्रकार का भ्रम होगा?"

"ओह मोशिये पौल," एलेना ने कहा, "मैं चाहती हूँ कि आप पर यह प्रकट कर दूँ कि आपने मुझे कितना क्रुद्ध कर दिया है—परन्तु दरअसल मैं ऐसा कर नहीं सकती। मैं बहुत थकी हुई हूँ।"

"तो तुम जाकर सो क्यों नहीं रहतीं?" अन्ना वासिलिएव्ना ने कहा; वह शाम से ही हमेशा झपकियां लेती रहती थी, इसलिए दूसरों को बिस्तर पर भेजने में उसे आनन्द आता था। "आओ, मेरा चुम्बन लो और भाग जाओ; एन्द्री पेत्रोविच तुम्हें क्षमा कर देंगे।"

एलेना ने अपनी माँ का चुम्बन लिया, सबसे झुककर नमस्ते की और कमरे से चली गई। शुबिन उसके साथ दरवाजे तक आया।

"एलेना निकोलाएव्ना," दरवाजे पर उसने एलेना से फुसफुसाते हुए कहा, "तुम मोशिए पौल को पैरों से कुचल सकती हो, तुम उसे बेरहम होकर कुचल सकती हो, फिर भी मोशिए पौल तुम्हारा गुणगान करता है और तुम्हारे नन्हें से चरणों के और उन जूतों के जिन्हें वह पहने हुए हैं और तुम्हारे जूतों के तलवों के गीत गाता है।

एलेना ने अपने कन्धे उचका दिए। अनिच्छा से अपना हाथ उसे पकड़ा दिया—वह हाथ नहीं जिसका इन्सारोव ने चुम्बन लिया था—और अपने कमरे में लौट कर फौरन कपड़े बदले, बिस्तर पर लेटी और सो गई। यह एक गहरी और प्रशान्त निद्रा थी, ऐसी कि जैसी बच्चे भी नहीं सोते। वह इस तरह सो गई जैसे कि एक बच्चा बीमारी से उठने के बाद सोता है और उसकी माँ उसकी खाट की बगल में बैठकर उसकी तरफ देखती और उसकी शान्त श्वासों की ध्वनि को सुनती रहती है;

२०

"थोड़ी देर के लिए मेरे कमरे में चलो," बरसिएनेव ने जैसे ही अन्ना वासिलिएव्ना से विदा ली शुबिन ने उससे कहा, "मैं तुम्हें कोई चीज दिखाना चाहता हूँ।"

बरसिएनेव उसके साथ मकान के एक कक्ष में चला गया। वह वहाँ कमरे के हर कोने में तरह तरह की मूर्त्तियाँ, ऊपरी धड़ की मूर्त्तियाँ और अध बनी चीजें जो गीले कपड़ों में लिपटी रखी थीं, देख कर आश्चर्य चकित हो उठा।

"मैं देख रहा हूं कि तुमने बहुत सारा काम कर डाला है," उसने राय प्रकट की।

"कुछ-न-कुछ करना ही पड़ता है," शुबिन ने उत्तर दिया। "अगर तुम्हें एक काम में असफलता मिलती है तो कोई दूसरा काम उठाना पड़ता है। कुछ भी हो, मैं एक कोर्सिकानिवासी के समान हूँ। मैं शुद्ध कला की अपेक्षा अपने प्रतिशोध में अधिक रुचि रखता हूँ। कलाकार, तुम काँप उठोगे!"

"मैं तुम्हारी बात समझा नहीं," बरसिएनेव ने कहा।

"जहा ठहरो, समझ जाओगे। मेरे सुयोग्य मित्र और संरक्षक, तनिक इसे देखने का कष्ट करो—मेरा प्रतिशोध नम्बर एक।

शुबिन ने उनमें से एक मूर्ति पर से कपड़ा हटाया और बरसिएनेव ने आश्चर्य-जनक रूप से सुन्दर और सजीव सी इन्सारोव की मूर्ति देखी। शुबिन ने उसकी सूक्ष्मतम रेखाओं एवं भाव भंगी को नितान्त वास्तविक रूप में चित्रित कर दिया था। चेहरे पर एक बड़प्पन का, ईमानदारी का, उदारता और वीरता का भाव था। बरसिएनेव मन्त्रमुग्ध सा हो उठा।

"परन्तु यह तो अत्यन्त सुन्दर है!" वह कह उठा। "मैं तुम्हें बधाई देता हूं। यह तो प्रदर्शनी के योग्य है! तुम इस सुन्दर कृति को 'प्रतिशोध' क्यों कहते हो?"

"क्योंकि हुजूर, मैं इस सुन्दर कलाकृति को, जैसा कि आपने कहने की कृपा की है, एलेना निकोलाएव्ना को उसके नामकरण-दिवस पर भेंट करने का विचार रखता हूँ। आप इस रूपक को समझे?······हम लोग अन्धे नहीं हैं, हम, जो कुछ हमारे चारों तरफ होता है उसे देखते हैं, परन्तु साथ ही हम भले आदमी हैं सरकार, और हम अपना प्रतिशोध एक भले आदमी की तरह ही लेते हैं।"

"और इधर देखिए," शुबिन ने एक दूसरी छोटी सी मूर्त्ति पर

से कपड़ा हटाते हुए आगे कहा ; " यह देखते हुए कि कलाकार (आधुनिकतम सौन्दर्य शास्त्र के सिद्धान्तानुसार) हर प्रकार की पशुता के चित्रित करने के, दूसरों के लिए स्पृहणीय अधिकार का उपभोग करता है और उस पशुता को अपनी किसी अद्वितीय कलाकृति में परिवर्तित कर देता है, हमने इस अद्वितीय कलाकृति नम्बर दो में अपना प्रतिशोध एक सज्जन व्यक्ति के रूप में न लेकर केवल एक पशु के समान लिया है।"

उसने झटके के साथ कपड़ा हटा दिया और बरसिएनेव के सामने डान्टन शैली की एक मूर्त्ति प्रस्तुत की जिसमें पुनः इन्सारोव को ही चित्रित किया गया था। यह कल्पना भी अत्यन्त कष्टसाध्य थी कि कोई वस्तु इससे भी अधिक चतुरता के साथ विद्वेष का प्रदर्शन कर सकती है। उस नवयुवक बल्गेरिया वासी को एक मेढ़े के रूप में चित्रित किया गया था जो अपने पिछले पैरों पर खड़ा, सींगों को नीचे झुकाए झपटने के लिए प्रस्तुत हो। इस 'सुन्दर बालों वाली भेड़ों के स्वामी' के चेहरे से इतना मूर्खतापूर्ण अहंकार और उग्रता, इतनी भद्दी अकड़ और संकीर्णता के भाव व्यक्त हो रहे थे, और साथ ही वह समानता इतनी आश्चर्य जनक और पूर्ण थी कि बरसिएनेव अट्टहास के साथ हँसने से अपने को न रोक सका।

" क्यों ? इससे तुम्हारा मनोरंजन होता है ?" शुबिन ने पूछा " तुम हीरो को पहचानते हो ? क्या तुम्हारी सलाह है कि इसका भी प्रदर्शन किया जाय ? हुजूर मैं इसे अपने नामकरण-दिवस पर स्वयं को ही भेंट करने का प्रस्ताव रखता हूं। महामहिम, मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं आपको एक छोटा सा चमत्कार और दिखाऊँ !

और शुबिन ने अपने पैर के तलवों से अपनी पीठ पर प्रहार करते हुए हवा में दो तीन कलामुण्डियां खाईं।

बरसिएनेव ने कपड़ा उठाया और मूर्ति पर डाल दिया।

" ओह, विशाल हृदय वाले……" शुबिन ने कहना प्रारम्भ किया :

" अब, यह बताइये कि कौन सा प्रसिद्ध व्यक्ति अपने हृदय की विशालता के लिए प्रसिद्ध था ? कोई बात नहीं। और अब," वह गम्भीरता और विषाद के साथ मिट्टी के तनिक ज्यादा बड़े एक तीसरे लोंदे को खोलता हुआ कहने लगा, " आप एक ऐसी वस्तु देखने वाले हैं जो आपके सम्मुख आपके मित्र की चतुरता भरी विनम्रता और बुद्धि की सूक्ष्मता का प्रदर्शन करेगी। वह आपको विश्वास दिला देगी कि वह, शुद्ध कलाकार, एक बार फिर अपने चेहरे पर थप्पड़ मारने की इच्छा और उसकी उपयोगिता का अनुभव करता है। देखिए !"

उसने कपड़ा खींच लिया और बरसिएनेव ने देखा कि दो सिर पास–पास इस तरह रखे हुए हैं मानो एक साथ ही बढ़े हों। पहले वह यह अन्दाज नहीं लगा सका कि वे कौन थे मगर और ज्यादा नजदीक से देखने पर उसने देखा कि एक अन्नुश्का का और दूसरा स्वयं शुबिन का था। दरअसल वे गम्भीर एवं यथार्थ मूर्त्तियां होने के स्थान पर व्यंग्यचित्र से अधिक मिलतीं जुलतीं थीं।

अन्नुश्का का चित्रण संकरा माथा, चर्बी में भीतर धंसी हुई आँखें और ढिठाई के साथ ऊपर उठी हुई नाक वाली एक सुन्दर, गन्दी औरत के रूप में किया गया था। उसके रूखे होंठ बदतमीजी के साथ खीसें निकाल रहे थे और पूरा चेहरा कामुकता और लापरवाही से भरी धृष्टता का भाव व्यक्त कर रहा था, यद्यपि उससे स्वभाव का रूखापन प्रकट नहीं होता था। शुबिन ने अपने को एक क्षीणकाय, घिसे पहिए के समान पिचके गालों वाले व्यक्ति के रूप में चित्रित किया था। बालों के पतले गुच्छे बिखरे हुए नीचे की तरफ झूल रहे थे, निष्प्रभ नेत्रों में एक रिक्तता का सा भाव था और नाक, मुर्दे की नाक की तरह, ऊपर की तरफ सीधी उठी हुई थी।

बरसिएनेव ने विरक्ति से मुँह मोड़ लिया।

" कैसा सुन्दर जोड़ा है, क्यों ?" शुबिन ने कहा—" मैं चाहता हूँ कि तुम इसके लिए एक उपयुक्त शीर्षक बना दो। पहले दोनों के शीर्षकों

के विषय में तो मैंने सोच लिया है।• ऊपरी धड़ वाली मूर्त्ति के नीचे लिखूँगा : "हीरो, अपने देश की रक्षार्थ सन्नद्ध ;" और पूरी मूर्त्ति के नीचे : "चटनी बनाने वालो सावधान !" मगर इसके लिए—अच्छा, तुम्हारा क्या ख्याल है—"कलाकार पावेल याकोव्लेविच शुबिन का भाग्य !"······यह ठीक रहेगा ?"

"चुप रहो !" बरसिएनेव झल्लाया, "ऐसी······बातों में समय क्यों बर्बाद करते हो······" वह उचित शब्द न ढूँढ़ सका।

"तुम्हारा मतलब है—गन्दी ? नहीं, मेरे दोस्त, मुझे अफसोस है, लेकिन प्रदर्शन के लिए अगर कोई चीज जायेगी, तो वह यही जोड़ा होगा।"

"'गन्दी' ही उचित शब्द है," बरसिएनेव ने कहा। "मगर, दरअसल यह सारी बेवकूफी है किसलिए ? तुम में तो उस प्रगति का नाम निशान भी नहीं है यद्यपि अब तक हमारे कलाकार, दुर्भाग्य से उस दिशा में काफी प्रगति कर चुके हैं। तुमने तो केवल अपनी बदनामी का ही सामान इकट्ठा कर रखा है।"

"तुम ऐसा सोचते हो ?" शुबिन ने उदास होकर कहा। "अगर मैं अब तक इससे बचा रहा हूँ और अगर भविष्य में मैं इसका शिकार बन गया तो इसका सारा श्रेय एक व्यक्ति-विशेष को ही होगा। तुम्हें मालूम है," उसने दुखद मुद्रा के साथ भौंहों में बल डालते हुए आगे जोड़ा, "मैं शराब पीने का प्रयत्न भी कर चुका हूँ ?"

"यह सच नहीं हो सकता !"

"मैं बता रहा हूं, यह सत्य है," शुबिन ने जोर से उत्तर दिया, फिर दाँत पीसे और उसका चेहरा चमक उठा ; "मगर मुझे यह अच्छी नहीं लगती, भाई, यह मेरे गले में चिपक जाती है और बाद में मेरा सिर एक बड़े ढोल की तरह भन्नाने लगता है। महान लुश्चिहिन स्वयं—हारलेम्पी लुश्चिहिन—जो मास्को का सबसे बड़ा शराबी है और कुछ का कहना है कि रूस भर में सबसे बड़ा शराबी है—कहता है कि मैं

कभी भी अच्छा शराबी नहीं बन सकता। उसके कथनानुसार बोतल मेरा कुछ भी कल्याण नहीं कर सकेगी।"

बरसिएनेव ने ऐसी मुद्रा बनाई कि जैसे वह उस शरारत से भरी युगल मूर्त्ति को तोड़ डालेगा मगर शुबिन ने उसे रोक दिया।

"नहीं, इसे रहने दो," उसने कहा, "यह एक भयानक चेतावनी, एक बिझूका का काम करेगी।"

बरसिएनेव हँसा।

"अच्छी बात है तो, मैं तुम्हारे बिझूका को छोड़ दूँगा," उसने कहा। "शुद्ध और शाश्वत कला के लिए!"

"कला के लिए!" शुबिन ने स्वर में स्वर में मिलाया, "कला जो सुन्दर में कान्ति उत्पन्न कर देती है और कुरूप का विष खींच लेती है!"

दोनों मित्रों ने आत्मीयतापूर्वक हाथ मिलाए और अलग हो गए।

२१

जागने पर एलेना ने सबसे पहले आनन्दभरी व्याकुलता का अनुभव किया। "क्या यह सच हो सकता है, क्या यह सच हो सकता है?" उसने स्वयं से पूछा और उसका हृदय प्रसन्नता से शिथिल सा हो उठा। स्मृतियाँ उसके मस्तिष्क में भर उठीं, उस पर छा गईं और फिर दुबारा वैसी ही सुखद, मंत्रमुग्ध सी कर देने वाली शान्ति में वह निमग्न हो उठी। मगर सुबह बीत जाने पर वह हल्की सी परेशानी का अनुभव करने लगी और आगे आने वाले दिनों में उदासीनता और उत्साह-हीनता का अनुभव करती रही। यह सच है कि वह अब यह जानती थी कि वह सचमुच चाहती क्या थी परन्तु यह बात उसकी समस्या

१०

को सरल नहीं बना सकी। उस कभी-न-भुलाये जा सकने वाले मिलन ने उसके दैनन्दिन व्यवहार को झकझोर कर सदैव के लिए बदल डाला था, उसका अस्तित्व अब उससे बहुत दूर हट गया सा लगता था—परन्तु फिर भी चारों तरफ प्रत्येक वस्तु अपने उसी पूर्व रूप में थी, हर काम साधारण गति से हो रहा था जैसे कि कुछ भी न बदला हो और उसमें एलेना के भाग लेने और सहयोग देने की पहले के ही समान अपेक्षा की जाती हो। उसने इन्सारोव के लिए एक पत्र लिखने का प्रयत्न किया परन्तु उसमें भी असफलता मिली; कागज पर शब्द या तो निर्जीव से या झूठे से लगते थे। उसने अपनी डायरी लिखना समाप्त कर दिया था और अन्तिम वाक्य के नीचे एक गहरी लाइन खींच दी थी। वह सब भूतकाल की बातें थीं, और अब उसके सम्पूर्ण विचार और भावनायें भविष्य के चिन्तन में लगी हुई थीं। यह उसके लिए बड़े कष्टों का समय था: माँ के साथ बैठना जो किसी भी बात का सन्देह नहीं करती थी, उसकी बातें सुनना और उससे बातें करना कुछ-कुछ अपराध सा लगता था और उसने महसूस किया कि उसके हृदय में किसी छल ने आसन जमा लिया है। यद्यपि उसे किसी भी बात के लिए लज्जित होने की जरूरत नहीं थी फिर भी वह स्वयं अपने प्रति विद्रोही भावनाओं को अनुभव करती थी। कभी उसे मन में इतनी तीव्र इच्छा उठती थी कि वह बिना कुछ भी छिपाये सब कुछ बता दे, फिर चाहे कुछ भी होता रहे। उसने सोचा, "द्मित्री मुझे छतरी से ही और उसी समय जहाँ कहीं भी वह जाना चाहता था वहीं अपने साथ क्यों नहीं ले गया? क्या उसने यह नहीं कहा था कि ईश्वर साक्षी है कि मैं उसकी पत्नी हूँ? मैं यहाँ क्यों हूँ?" एकाएक वह हरेक को छोड़ने की सोचने लगी—उवार इवानोविच को भी जो अपनी उंगलियाँ मरोड़ा करता था और पहले से ही अधिक परेशान था। अपने चारों तरफ फैली हुई वस्तुएँ और व्यक्ति अब उसे रहमदिल और मुहब्बत वाले नहीं लगते थे; यहाँ तक कि स्वप्न जैसी पहिली विशेषता भी जाती रही थी। ये सब उसे भयानक दुःस्वप्न के समान बराबर अपने भार से दबाये रहते थे। वे

उसका अपमान करते से, उसे डांटते से, उसे समझने की उपेक्षा करते से लगते थे……"तुम अब भी हमारी हो," वे यह कहते से प्रतीत होते थे। यहाँ तक कि उसके बेचारे नन्हें पाले-पोसे हुए बच्चे, दुखी जानवर और पक्षी उसकी तरफ—कम से कम उसे तो ऐसा ही लगता था—सन्देह और क्रोधभरी दृष्टि से देखते थे। वह आत्म-प्रतारणा सहने और अपनी भावनाओं पर लज्जित होने लगी। "आखिरकार यह मेरा घर है, है न ?" उसने सोचा। "यह मेरा परिवार और मेरा देश है।" परन्तु एक दूसरी आवाज ने बराबर जोर देते हुए उत्तर दिया : "नहीं, अब यह तुम्हारा परिवार या तुम्हारा देश नहीं रहा।" वह भयभीत हो उठी और साथ ही अपने हृदय की इस दुर्बलता पर नाराज हुई…… उसकी मुसीबतें अभी तो शुरू ही हो रहीं थीं और वह अभी से हिम्मत हार रही थी—क्या उसने इन्सारोव को यही वचन दिया था ?

वह शीघ्र ही अपने ऊपर काबू नहीं पा सकी। मगर जब पहला हफ्ता गुजरा और दूसरा भी समाप्त हो गया तो उसकी उत्तेजना थोड़ी-सी शान्त हुई और उसने अपने को उस नई परिस्थिति का अभ्यस्त बना लिया। उसने इन्सारोव के लिए दो छोटे पत्र लिखे और खुद ही डाकखाने में जाकर डाल आई। वह लज्जा और गर्व के कारण नौकरानी पर विश्वास करने में अपने को समर्थ न बना सकी। वह इस समय तक यह आशा करने लगी थी कि इन्सारोव उससे मिलने आयेगा……लेकिन उसकी जगह पर एक सुहावने प्रभात में निकोलाय आर्तियोमेविच आ पहुँचा।

२२

स्ताहोव--परिवार में से किसी ने सेना के उस अवकाश-प्राप्त लेफ्टीनेन्ट को इतना चिड़चिड़ा और साथ ही इतने आत्म-विश्वास और

अपने महत्व की मुद्रा में भरा हुआ, पहले कभी भी नहीं देखा था जितना कि वह उस दिन था। वह अपना कोट और टोप पहने, पैरों को चौड़ा कर चलता और फर्श पर एड़ियां बजाता हुआ धीरे-धीरे ड्राइंग-रूम में आया। शीशे के पास जाकर अपने होंठ काटते और शान्त कठोरता के साथ सिर हिलाते हुए वह अपनी शकल को गौर से देखता रहा। अन्ना वासिलिएव्ना उससे बाह्य रूप से उत्तेजित सी होकर और मन ही मन एक छिपे हुए आनन्द का अनुभव करती हुई मिली। (जब कभी वह उससे मिलती थी तो अपने आप सदैव ऐसा ही अनुभव करने लगती थी।) उसने अपना टोप तक उठाकर उसका स्वागत नहीं किया बल्कि साबर के दस्ताने वाला हाथ चूमने के लिए चुपचाप उसकी तरफ बढ़ा दिया। अन्ना वासिलिएव्ना ने उससे उसके इलाज के विषय में प्रश्न पूछने प्रारम्भ कर दिए मगर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उवार इवानोविच भीतर आया—उसने उसकी तरफ देखा और बोला : "बा।" वह उवार इवानोविच के साथ प्रायः उपेक्षा पूर्ण और संरक्षक का सा व्यवहार करता था यद्यपि उसने उसमें 'स्ताहोव वंश के सच्चे रक्त' को पहचान लिया था। अधिकतर अच्छे रूसी परिवारों को इस बात का विश्वास रहता है कि उनके वंश की अपनी चारित्रिक विशेषतायें होती हैं जो केवल उन्हीं में होती है। प्रायः यह कहते सुना जाता है कि—'इस-इस तरह की नाक' या 'इस–इस तरह की गर्दन।' जोया कमरे में आई और निकोलाय आर्तियोमेविच से नमस्कार किया। वह घुरघुराया, एक आराम कुर्सी पर बैठ गया, कॉफी मागी और केवल तभी जाकर अपना टोप उतारा। कॉफी लाई गई और उसने एक प्याला पिया। फिर क्रमशः प्रत्येक की तरफ देखता हुआ घुरघुराने लगा : "मेहरबानी करके कमरे से चले जाओ"—और अपनी पत्नी की तरफ मुड़ते हुए आगे जोड़ा : "और श्रीमती जी आप विश्राम करिए, मैं प्रार्थना करता हूं"

अन्ना वासिलिएव्ना के अतिरिक्त और सब कमरे में से चले गए। अन्ना वासिलिएव्ना उत्तेजना से कांप रही थी। निकोलाय आर्तियोमेविच

के व्यवहार की गम्भीरता ने उस पर गहरा प्रभाव डाला था और वह कोई अद्भुत बात सुनने की आशा कर रही थी।

"क्या मामला है ?" जैसे ही दरवाजा बन्द हुआ वह कह उठी।

उसने अन्ना वासिलिएव्ना की तरफ उपेक्षा के साथ देखा।

"कोई खास बात नहीं," वह बोला, "मगर तुमने एकाएक यह बलिवेदी पर जाने वाले शिकार का सा भाव धारण करने की आदत कब से बना ली ?" उसने प्रत्येक शब्द पर बिना किसी स्पष्ट कारण के अपने ओठों को कोनों पर नीचे की तरफ सिकोड़ा। "मैं सिर्फ तुम्हें यह चेतावनी दे देना चाहता था कि आज भोजन पर हमारे यहाँ एक मेहमान आने वाला है।"

"आखिर कौन ?"

"मिस्टर कुर्नातोव्स्की—येगोर एन्द्रिएविच कुर्नातोव्स्की : तुम उसे नहीं जानतीं। वह सिनेट में चीफ-सेक्रेटरी है।"

"वह आज भोजन पर आ रहा है ?"

"हाँ।"

"और तुमने सिर्फ यही बताने के लिए सबको कमरे से बाहर निकल जाने का हुक्म दे डाला था ?"

निकोलाय आर्तियोमेविच ने फिर अपनी पत्नी की तरफ देखा और इस बार व्यंग्य के साथ देखा।

"इससे तुम्हें ताज्जुब होता है ? तुम्हें ताज्जुब करने के लिए तो इन्तजार करना चाहिए।"

वह रुक गया और अन्ना वासिलिएव्ना कुछ देर तक कुछ भी नहीं बोली।

"मै चाहूँगी कि······" अन्ना वासिलिएव्ना ने कहना शुरू किया।

"मै जानता हूं कि तुम मुझे हमेशा एक गन्दे चालचलन वाला आदमी समझती हो," निकोलाय आर्तियोमेविच एकाएक कह उठा।

"मैं !" आश्चर्य चकित होते हुए अन्ना वासिलिएव्ना के मुँह से निकल पड़ा।

"और हो सकता है कि तुम्हारा विचार भी ठीक हो। मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि मौके-बे मौके मैंने तुम्हें असन्तुष्ट कर देने वाले काम किए हैं—" ('मेरे भूरे घोड़े' यह विचार अन्ना वासिलिएव्ना के दिमाग में कौंध सा उठा)—"हालांकि तुम खुद ही इस बात को मंजूर करोगी कि तुम्हारे ऐसे स्वास्थ्य के रहते, जैसा कि तुम जानती हो......"

"मगर मैं तो तुम्हें तनिक भी दोष नहीं देती निकोलाय आर्तियोमेविच।"

"हो सकता है। कुछ भी हो मैं अपनी सफाई नहीं देना चाहता। वक्त मेरा फैसला करेगा। मगर मैं तुम्हें यह बता देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि मैं अपने कर्त्तव्य को जानता हूँ और यह भी कि अपने परिवार के अधिकारों की रक्षा कैसे की जाती है जिसका...... भार मेरे ऊपर सौंप दिया गया है।"

"इसका क्या मतलब हो सकता है ?" अन्ना वासिलिएव्ना ने सोचा। (उसे यह नहीं मालूम था कि पिछली शाम को, इंग्लिश क्लब के लाउन्ज के एक कोने में इस बात पर बहस छिड़ गई थी कि रूसी प्रभावशाली भाषण नहीं दे सकते। "हम में से ऐसा कौन है जो भाषण देना जानता हो ?" किसी ने कहा था: "किसी का नाम बताओ।"—"मिसाल के लिए स्ताहोव को ही ले लो," दूसरे ने निकोलाय आर्तियोमेविच की तरफ इशारा करते हुए कहा जो पास ही खड़ा था; और निकोलाय आर्तियोमेविच खुशी के मारे मुर्गे की सी बांग देने लगा था।)

"मिसाल के लिए," वह कहता रहा, "अपनी बेटी एलेना ही है। क्या तुम यह नहीं सोचती कि अब वह समय आ गया है जब

उसे जिन्दगी में आगे बढ़ने के लिए मजबूत कदम उठाना चाहिए— मेरा मतलब है······शादी कर लेनी चाहिए ? यह सब दार्शनिकता और परोपकार की भावना एक विशेष सीमा तक, एक विशेष अवस्था तक ही अच्छी लगती है। अब समय आ गया है कि वह अपने इस थोथे घमन्ड को बन्द करदे और इन कलाकारों, विद्वानों और दार्शनिकों की संगत को छोड़ कर दूसरे और लोगों की तरह रहने लगे।"

"मैं इससे क्या समझूं ?" अन्ना वासिलिएव्ना ने पूछा।

"सिर्फ यही—अगर तुम ध्यान से सुनो तो," निकोलाय आर्तियोमेविच ने अब भी अपने होठों के कोनों को बराबर सिकोड़ते हुए उत्तर दिया। "मैं साफ–साफ और खरी बात कहूँगा : मैंने इस नौजवान मिस्टर कुर्नातोव्स्की से जान पहचान कर ली है ; मैंने उसे इस आशा से दोस्त बना लिया है कि शायद वह मेरा दामाद बन जाय। मैं यह सोचने का साहस करता हूँ कि उसे देखने के बाद तुम मुझ पर यह दोष नहीं लगाओगी कि मैंने अपने फैसले में अनुचित पक्षपात किया है या जल्दबाजी से काम लिया है।" (बोलते समय निकोलाय आर्तियोमेविच अपनी भाषण-शक्ति पर स्वयं ही मुग्ध हो रहा था।) "वह एक वकील है, ऊँची शिक्षा प्राप्त है, बहुत ही तमीजदार है : तेतीस साल की उम्र है, चीफ सेक्रेटरी और कॉलेजियट काउन्सलर है, 'ऑर्डर आव स्तानिस्लाव' तमगा प्राप्त किए हुए है। मैं आशा करता हूं कि तुम इस बात को स्वीकार करोगी कि मैं उन हास्य रस पूर्ण नाटकों के जन्म दाताओं में से नहीं हूँ जो एक आदमी के पद को देखकर ही प्रभावित हो उठते हैं। मगर तुमने खुद ही मुझे यह बताया था कि एलेना निकोलाएव्ना समझदार और मेहनती आदमियों को पसन्द करती है और येगोर एन्द्रिएविच सबसे पहले एक व्यापारी है। फिर भी, हमारी बेटी उदार चरित्र वाले व्यक्तियों से अधिक प्रभावित होती है : इस लिए मैं तुम्हें बता देना

चाहता हूँ कि येगोर एन्द्रिएविच ने—जैसे ही सम्भव हो सका—मतलब यह कि अपनी ही आमदनी से जब आराम के साथ काम चलने लगा—फौरन उस पैसे को लेने से इन्कार कर दिया जो उसके पिता उसको देते थे। वह पैसा उसने अपने भाइयों के लिए छोड़ दिया।"

"और उसका पिता कौन है?" अन्ना वासिलिएव्ना ने पूछा।

"उसका पिता? अपने क्षेत्र में वह भी काफी प्रसिद्ध है। एक बहुत ही ऊँचे सिद्धान्तों वाला आदमी है, सच्चा तत्ववेत्ता है; मेरा ख्याल है कि वह एक अवकाश-प्राप्त मेजर है और काउन्ट व—की सम्पूर्ण जायदाद की देखभाल करता है।......"

"ओह!" अन्ना वासिलिएव्ना कह उठी।

"ओह! "ओह!" क्यों?" निकोलाय आर्तियोमेविच घुर्राया। "क्या तुम भी कुढने लगी?"

"मगर मैंने तो कुछ भी नही कहा," अन्ना वासिलिएव्ना कहना प्रारम्भ कर रही थी।

"मगर तुमने कहा था "ओह!"......खैर, जो कुछ भी हो, मैंने यह जरूरी समझा था कि अपनी विचारधारा से तुम्हें परिचित करा दूँ......आशा करता हूँ कि मिस्टर कुर्नातोव्स्की का यहाँ मुक्त हृदय से स्वागत किया जायेगा। इसमें तुम्हारा कोई भी दर्शन नही चलेगा।"

"बेशक। मुझे सिर्फ यही करना पड़ेगा कि रसोइया वान्का को बुला कर उसे थोड़ा सा ज्यादा भोजन और बनाने के लिए कह दूँ।"

"तुम्हें यह आशा नही करनी चाहिए कि इस बात के लिए मै परेशान होऊँगा," निकोलाय आर्तियोमेविच ने कहा और उठकर अपना टोप पहना और बाग में घूमने चल दिया। चलते हुए वह सीटी बजाता जा रहा था। (किसी ने यह बता दिया था कि मुँह से सीटी केवल उसी समय बजाई जा सकती है जब देहात में अपने घर पर या

घुडसवारी के स्कूल में हो।) शुबिन ने उसे अपने कमरे की खिड़की में से देखा और चुपचाप जीभ दिखा दी।

चार बजने में दस मिनट रहने पर स्ताहोव बंगले की बरसाती में एक खुली हुई गाड़ी आकर खड़ी हुई और एक सुन्दर सा दिखाई पड़ने वाला व्यक्ति उसमें से नीचे उतरा और अपने नाम की सूचना भीतर भिजवा दी। यह व्यक्ति अब भी नौजवान था और सादा तथा सुन्दर कपड़े पहने हुए था। येगोर एन्द्रिएविच कुर्नातोव्स्की आ गया था।

एलेना ने दूसरे दिन अन्य बातों के साथ इन्सारोव को यह भी लिखा था :

"प्राणाधिक द्मित्री, तुम्हें मुझे बधाई देनी चाहिए; मेरा एक उम्मीदवार है। कल वह भोजन करने आया था : मेरा ख्याल है कि पिताजी की उससे इंग्लिश क्लब में जान-पहचान हुई थी और उन्होंने उसे यहाँ निमंत्रित कर दिया था। यह ठीक है कि कल वह उम्मीदवार के रूप में नहीं आया था : मगर प्यारी नन्ही मां ने, जिनसे पिताजी ने अपने मन की बात कह दी थी, मुझसे चुपचाप यह बता दिया था कि वह किस प्रकार का मेहमान था। उसका नाम येगोर एन्द्रियेविच कुर्नातोव्स्की है और वह सिनेट में चीफ-सेक्रेटरी है। पहले मुझे यह बता देने दो कि वह कैसा लगता है। वह ज्यादा लम्बा नहीं है—तुमसे लम्बाई में छोटा है—और सुडौल है; उसका नाक-नक्शा सुन्दर है; बाल छोटे-छोटे कतरे हुए हैं और गलमुच्छे लम्बे हैं : उसकी पैनी भूरी आँखें कुछ-कुछ छोटी हैं (तुम्हारी तरह), होंठ चौड़े तो हैं परन्तु भरे हुए नहीं। उसकी आंखों और होठों पर एक अफसरों जैसी मुस्कान खेलती रहती है जो हमेशा ऐसी लगती है मानो ड्यूटी पर हो। उसका व्यवहार बहुत ही सादा और आडम्बर रहित है; वह संक्षेप में बात करता है और उसकी हर चीज से इसी संक्षिप्तता का सा भाव प्रगट होता है। वह इस तरह चलता, हँसता और खाता है मानो ये सब भी उसके व्यापार से सम्बन्ध रखते हों। तुम यही सोचोगे कि "एलेना ने उसका

कितना सुन्दर अध्ययन किया है!" इस बात को मैं दावे के साथ कह सकती हूं। हां, मैंने किया है—इसलिए कि तुम्हारे सम्मुख उसका चित्र खींच सकूं: और कुछ भी हो, क्या मुझे उस व्यक्ति का अध्ययन नहीं करना चाहिए जो मेरा प्रणय-प्रार्थी है? वह दृढ़ इच्छा शक्ति वाला व्यक्ति लगता है—और साथ ही वह नीरस और खोखला सा लगता है—और ईमानदार भी: लोगों का कहना है कि दरअसल वह एक बहुत ही ईमानदार आदमी है। प्रियतम, तुम भी दृढ़ इच्छा शक्ति वाले हो—परन्तु उससे भिन्न रूप में। भोजन के समय वह मेरी बगल में और शुबिन सामने बैठा था। पहले बातें व्यापार के विषय में हुईं; उनका कहना है कि वह इन बातों को खूब अच्छी तरह समझता है और उसने एक बड़ी फैक्टरी का प्रबन्ध करने के लिए अपनी सरकारी नौकरी छोड़ दी होती। यह दुख की बात है कि उसने ऐसा नहीं किया! फिर शुबिन थियेटर के विषय में बातें करने लगा। मैं यह मानती हूं कि मिस्टर कुर्नातोव्स्की ने बिना किसी प्रकार की झूठी विनम्रता दिखाये स्पष्ट रूप से कह दिया कि वह कला के विषय में कुछ भी नहीं जानता। इस बात ने मुझे तुम्हारी याद दिला दी—मगर फिर मैंने मन में सोचा: नहीं, यह दूसरी बात है कि द्मित्री और मैं कला को नहीं समझते। कुर्नातोव्स्की यही कहता प्रतीत होता था: मैं कला को नहीं समझता, और इससे भी अधिक यह कि कला आवश्यक नहीं है, हालांकि एक सुचारु रूप में इसे अस्तित्व बनाये रखने की आज्ञा दे दी जाती है। संयोगवश वह पीतसवर्ग के जीवन और विनम्र समाज से अप्रभावित सा लगा: एक बार तो उसने स्वयं को एक मजदूर कह कर पुकारा। "हम लोग मजदूर वर्ग के हैं," उसने कहा। मैंने सोचा कि अगर मेरे द्मित्री ने ऐसा कहा होता तो मुझे यह बात जरा भी पसन्द नहीं आती, मगर जहाँ तक इस आदमी का सवाल है, उसे शेखी बघारने दो! मेरे साथ उसका व्यवहार अत्यन्त सज्जनता का था मगर मुझे ऐसा लगा कि वह मेरे साथ पूरे समय तक अत्यन्त विनम्रता और शालीनता के साथ बातें करता रहा। जब वह किसी की प्रशंसा करना चाहता है

तो कहता है—"अमुक सिद्धान्तों वाला है"—यह उसका प्रिय वाक्य है। मेरा ख्याल है कि वह आत्म-विश्वासी तथा परिश्रमी है और आत्म-त्याग करने की शक्ति रखता है (तुमने देखा मैं कितनी निष्पक्ष हूँ)—मतलब यह कि वह अपने स्वार्थों का बलिदान कर सकता है मगर साथ ही वह बहुत बड़ा अत्याचारी है। जो कोई भी उसके पल्ले पड़ेगी मुझे उसके ऊपर रहम आता है! भोजन के समय उन लोगों में रिश्वत पर बातें होने लगीं······

"मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ," उसने कहा, "कि बहुत से मामलों में, एक व्यक्ति जो रिश्वत लेता है, दोषी नहीं हो सकता क्योंकि उसके पास इसके सिवाय और कोई भी चारा नहीं रह जाता; फिर भी अगर वह पकड़ा जाता है तो उसे फौरन निकाल बाहर करना चाहिए।"

"जो अपराधी नहीं है उसे निकाल देना चाहिए?" मैं चीख पड़ी।

"हाँ, सिद्धान्तों के अनुसार।"

"किस सिद्धान्त के अनुसार?" शुबिन ने पूछा।

कुर्नातोव्स्की एकाएक स्तम्भित सा हो उठा और बोला:

"इसे समझाने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।"

"पिताजी ने, जो उसके विषय में बड़ी ऊँची राय रखते मालूम पड़ते थे, उसी के स्वर में स्वर मिलाते हुए कहा कि बेशक कोई जरूरत नहीं और इस बात ने वार्तालाप को बन्द कर दिया। मुझे बड़ा बुरा लगा। शाम को बरसिएनेव आया और उसके साथ भयंकर वाद-विवाद में उलझ गया: मैंने अपने अच्छे एन्ड्री पेत्रोविच को इतना उत्तेजित कभी भी नहीं देखा था। मिस्टर कुर्नातोव्स्की ने किसी भी रूप में विज्ञान और विश्व-विद्यालयों की उपयोगिता से इन्कार नहीं किया आदि······ मगर मैं बरसिएनेव के क्रोध के कारण को भी समझ गई। कुर्नातोव्स्की

ने ऐसा भाव दिखाया था मानो यह सब दिमागी कलाबाजी की बातें हों। शुबिन भोजन के बाद मेरे पास आया और कहने लगा : "अब जरा इस आदमी की किसी ऐसे से तुलना करो जिसे हम लोग जानते हों (वह तुम्हारा नाम लेने का साहस नहीं कर सका)—वे दोनों व्यावहारिक व्यक्ति हैं; मगर तुमने देखा कि उन दोनों में कितना अन्तर है; एक तरफ तो एक सच्चा, स्वयं जीवन से प्रेरित जीवित आदर्श है—जब कि यहाँ अपने कर्त्तव्य तक का ज्ञान नहीं है, सिर्फ एक अफसरों जैसी ईमानदारी और बनावटी, व्यावहारिक योग्यता है" ......शुबिन चालाक है और मुझे याद आया कि उसने यह इसलिए कहा कि मैं तुमसे कह दूँ। मगर जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं तुम दोनों में कोई समानता नहीं पाती। तुम्हारे पास 'विश्वास' है और उसके पास नहीं है, क्योंकि तुम सिर्फ अपने में ही विश्वास रखने को 'विश्वास' नहीं कह सकते।

वह काफी देर से गया मगर माँ ने मुझे बता दिया कि उसने मुझे पसन्द कर लिया था और पिताजी खुशी से फूले नहीं समाते थे··· मुझे आश्चर्य है कि कहीं उसने उनसे यह न कह दिया हो कि मैं सिद्धान्त वाली हूँ? मैंने माँ से लगभग यह कह ही दिया होता कि मुझे बहुत अफसोस है क्योंकि मेरे तो पति पहले से ही मौजूद है। पिताजी तुम्हें पसन्द क्यों नहीं करते? माँ को तो हम लोग किसी न किसी न किसी तरह पटा लेंगे।

"ओह मेरे प्रियतम! इसका कारण• कि मैंने तुम्हें इस व्यक्ति के विषय में इतने विस्तार के साथ बताया है, यह है कि मैं ऐसा करके सिर्फ अपनी पीड़ा को दबा देना चाहती हूँ। ऐसा लगता है कि तुम्हारे बिना मेरा जीवन ही नहीं रहा है, मैं पूरे समय तुम्हें देखती और तुम्हारी बातें सुनती रहती हूँ······मैं तुम्हरी प्रतीक्षा कर रही हूँ—मगर यहाँ घर पर नहीं जैसी कि तुम्हारी राय थी—कल्पना करो कि हम लोगों के लिए ऐसा करना कितना कठिन और अजीब सा हो उठेगा—

मगर तुम्हें मालूम है कि मैंने तुम्हें अपने खत में कौन सी जगह बताई थी—उस जंगल में······ओह, मेरे प्रियतम, मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ।"

२३

कुर्नातोव्स्की की पहली मुलाकात के लगभग तीन हफ्ते बाद अन्ना वासिलिएव्ना अपने मास्को वाले मकान में लौट आई। इससे एलेना बड़ी प्रसन्न हुई। यह प्रेचिस्तेन्का के पास एक बड़ा दोमंजिला काठ का बना मकान था जिसमें खम्भे लगे हुए थे और हर खिड़की के ऊपर सफेद प्लास्टर की वीणायें और फूलों के हार बने हुए थे। सामने एक छोटा सा बाग और नौकरों के क्वार्टरों से घिरा घास उगा हुआ एक लम्बा चौड़ा अहाता था। अहाते में एक कुंआ था जिसकी बगल में एक कुत्तों का घर बना था। अन्ना वासिलिएव्ना पहले देहात छोड़ कर इतनी जल्दी कभी भी नहीं लौटती थी, परन्तु इस वर्ष ठंड के पहले झोंके आते ही उसके मसूढ़े उसे परेशान करने लगे। निकोलाय आर्तियोमेविच ने अपनी तरफ से एक तरह से अपना इलाज समाप्त कर दिया था और चाह रहा था कि उसकी पत्नी शीघ्र लौट आये—इसलिए और भी कि एवगुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना अपनी चचेरी बहन से मिलने रेवाल चली गई थी। दूसरी यह बात कि एक विदेशी-परिवार मास्को में आ पहुँचा था और 'प्लास्टिक मुद्राओं' का प्रदर्शन कर रहा था, और 'मास्को जनरल' में छपे हुए उसके विवरण ने अन्ना वासिलिएव्ना की जिज्ञासा को और भी अधिक उभाड़ दिया था। संक्षेप में, देहात में ज्यादा दिनों तक रुकना असुविधाजनक प्रतीत हो रहा था और निकोलाय आर्तियोमेविच के शब्दों में 'उसके कार्यक्रम की पूर्त्ति' में सचमुच बाधक सिद्ध हो रहा था। बंगले में गुजारे गए आखिरी दो हफ्ते एलेना को बहुत लम्बे लगे थे। कुर्नातोव्स्की उनसे मिलने दो बार—सिर्फ रविवार को ही—आया था,

बाकी के दिनों वह अत्यधिक व्यस्त रहता था। वह दरअसल मिलने तो एलेना से मिलने आया था मगर ज्यादातर जोया के साथ ही बातें करता रहा। जोया ने उसे बहुत ज्यादा पसन्द किया था। "यह मर्द आदमी है!" वह उसके साँवले चेहरे की तरफ देखती और उसकी आत्मविश्वास पूर्ण विनम्र बातों को सुनती हुई सोचती। उसने महसूस किया कि उसका सा सुन्दर स्वर और किसी का भी नहीं है और कोई भी इतनी विशेषता के साथ बात नहीं कह सकता : "मैं सम्मानित हुआ," "प्रसन्न हुआ, इसमें सन्देह नहीं।" इन्सारोव स्ताहोव-परिवार से मिलने नहीं आया मगर एलेना मास्को नदी के पास पहले से तय किए हुए स्थान पर, एक छोटे से जंगल में उससे एकबार चुपचाप मिल ली थी। उस समय भी वे आपस में सिर्फ कुछ ही बातें कर पाये थे। शुबिन अन्ना वासिलिएव्ना के साथ ही मास्को लौट आया था। बरसिएनेव कुछ दिन बाद आया।

उनके लौटने के कुछ ही दिन बाद एक दिन इन्सारोव अपने कमरे में बैठा हुआ उन पत्रों को तीसरी बार पढ़ रहा था जो बल्गेरिया से उसके पास पत्र वाहक द्वारा लाये गए थे। उन्हें डाक से भेजना सुरक्षित नहीं था। उनसे वह बहुत परेशान हो उठा था। बाल्कन में घटनायें बड़ी तेजी से घट रहीं थीं। रूसी फौजों द्वारा राजधानियों पर कब्जा कर लिए जाने से सारी जनता में उत्तेजना फैल रही थी। तूफान उठ रहा था। चारों तरफ आग फैल रही थी और कोई भी यह नहीं बता सकता था कि यह कहाँ फैलेगी और कब शान्त होगी। सारे दबे हुए असन्तोष और चिर-प्रतीक्षित आशायें सिर उठा रहीं थीं—चारों तरफ हलचल मच रही थी। इन्सारोव का हृदय भी उछल रहा था : उसकी आशायें भी पूरी होने को थीं। "मगर क्या यह समय से पहले ही नहीं हो रहा, क्या यह सब व्यर्थ तो नहीं चला जायेगा?" मुट्ठियाँ भींचते हुए उसने सोचा। "हम अभी तैयार नहीं हैं—फिर भी जो होता है होने दो। मुझे जाना ही पड़ेगा।"

दरवाजे पर एक हल्का सा शब्द हुआ, दरवाजा तेजी से खुला और एलेना भीतर आई।

इन्सारोव कांपा, उसकी तरफ झपटा, घुटनों के बल बैठ गया और उसकी कमर में दोनों हाथ डालकर अपना सिर उसके शरीर से चिपका लिया।

"तुम्हें मेरे आने की आशा नहीं थी?" एलेना ने हाँफते हुए कहा। (वह सीढ़ियों पर भागती हुई आई थी।) "प्रियतम! प्रियतम!" उसने अपने दोनों हाथ उसके सिर पर रख दिए और चारों तरफ देखा। "तो तुम यहाँ रहते हो। मैंने बड़ी आसानी से पता लगा लिया: तुम्हारे मकान–मालिक की लड़की मुझे लिवा लाई। हम लोगों को आए तीन दिन हुए हैं······मैं तुम्हें लिखने की सोच रही थी मगर फिर सोचा कि इससे तो खुद ही जाना अच्छा रहेगा। मैं तुम्हारे साथ सिर्फ पन्द्रह मिनट ही रुक सकती हूँ। उठो दरवाजा बन्द कर दो।"

वह उठा; दरवाजा बन्द किया, फिर लौटा और उसके हाथ अपने हाथों में पकड़ लिए। उसके मुँह से शब्द नहीं निकल सके, मानो प्रसन्नता ने उसका गला घोंट दिया हो। एलेना ने मुस्कराते हुए उसकी आँखों में झांका······वे खुशी से छलछलाई सी पड़ रहीं थीं······ एकाएक वह व्याकुल हो उठी।

"ठहरो," एलेना ने धीरे से अपने हाथ खींचते हुए कहा, "मुझे अपना टोप उतार लेने दो।"

उसने अपने टोप के फीते खोले और उसे एक तरफ फेंक दिया, लवादा कन्धों से नीचे खिसका दिया और फिर बाल ठीक कर पुराने सोफे पर बैठ गई। इन्सारोव उसे टकटकी बांध कर देखता रहा मानों उस पर जादू कर दिया गया हो।

"तुम भी बैठ जाओ," एलेना ने बिना उसकी तरफ देखे अपनी बगल में बैठने का इशारा करते हुए कहा।

इन्सारोव बैठ गया, परन्तु सोफा पर नही बल्कि जमीन पर, उसके पैरों के पास।

"अच्छा, अब मेरे दस्ताने उतार दो," एलेना ने अस्थिर सी होते हुए कहा। उसे डर सा लगने लगा था।

इन्सारोव ने एक दस्ताने का बटन खोला और उसे उतार लिया। फिर उसने उसके नीचे ढँके हुए पीले, कोमल और सुडौल हाथ पर जोर से अपने होंठ जमा दिए।

एलेना काँपी और दूसरे हाथ से उसे रोकने की कोशिश की: वह दूसरे हाथ को भी चूमने लगा। एलेना ने उसे हटा लिया। इन्सारोव ने झटके से अपना सिर पीछे की तरफ किया, एलेना ने उसके चेहरे की तरफ देखा, और नीचे झुक गई······उनके अधर आपस में मिल गए······

एक क्षण बीता; एलेना ने अपने को छुड़ा लिया और फुसफुसाती हुई उठ कर खड़ी हो गई: "नहीं, नही"; फिर जल्दी से लिखने की मेज पर चली गई।

"यहाँ मैं घर की स्वामिनी हूँ," उसने कहा, "तुम्हें मुझसे कोई भी रहस्य नहीं छिपाना चाहिए।" उदासीनता का सा भाव दिखाने का प्रयत्न करती हुई वह इन्सारोव की तरफ पीठ मोड़ कर खड़ी हो गई। "कितने कागजात हैं," उसने कहा; "ये पत्र कैसे हैं?"

इन्सारोव की भौंहों में बल पड़ गए।

"वे पत्र?" फर्श पर से उठते हुए वह बोला। "तुम उन्हें पढ़ सकती हो।"

एलेना ने उन्हें हाथों में लेकर उलट-पलटा।

"ये तो बहुत सारे है तथा लिखावट भी इतनी महीन है—और मुझे अभी एक मिनट में जाना है······मैं उनमें सिर नहीं खपाऊँगी! सोचती हूं कि ये किसी प्रतिद्वन्द्वी के नहीं हैं?······और वे रूसी

भाषा में भी नहीं लिखे गए हैं," उसने कागजों में उंगलियाँ चलाते हुए आगे कहा।

इन्सारोव उसके पास गया और आहिस्ते से उसकी कमर में हाथ डाल दिया। एलेना एकाएक उसकी तरफ घूमी, प्रसन्नता से भर कर मुस्कराई और उसके कन्धे पर टिक गई।

"ये पत्र बल्गेरिया से आये हैं एलेना; मेरे मित्रों ने मुझे लिखे हैं; उन्होंने मुझे बुलाया है।"

"इस समय बल्गेरिया जाने के लिए?"

"हाँ, अभी। क्योंकि अभी समय है और अभी निकल जाना भी सम्भव है।"

एलेना ने एकाएक उसकी गर्दन में बाहें डाल दीं।

"तुम मुझे अपने साथ ले चलोगे, ले चलोगे न?" उसने कहा। एन्सरोव ने उसे सीने से चिपटा लिया।

"ओह मेरी प्यारी लड़की, मेरी हीरोइन, तुमने यह कितनी बहादुरी के साथ कहा है।! मगर तुम्हें अपने साथ—अपने साथ जिसके न घर है न परिवार, ले जाना क्या पागलपन और मक्कारी नहीं होगी! और जरा सोचो तो सही, कहाँ के लिए······"

एलेना ने अपना हाथ उसके मुँह पर रख दिया।

"हुश्······वर्ना मैं नाराज हो जाऊँगी और फिर तुमसे मिलने कभी नहीं आऊँगी। क्या सब कुछ तय नहीं हो चुका, क्या आपस में हर बात तय नहीं हो चुकी? क्या मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूं? क्या पत्नियाँ अपने पतियों से अलग रहती हैं?"

"पत्नियाँ युद्धक्षेत्र में नहीं जाया करतीं," उसने एक सूखी मुस्कान के साथ कहा।

".नहीं, उस समय नहीं जब वे पीछे ठहर सकती हैं। मगर मैं यहाँ कैसे ठहर सकती हूँ?"

११

"एलेना, तुम देवी हो !......अगर जरा सोचो तो सही, हो सकता है कि मुझे पन्द्रह दिन के भीतर ही मास्को छोड़ देना पड़े। अब इस बात का कोई महत्व ही नहीं रह गया कि मैं यहाँ रह कर अपने पढ़ाई चालू रखूँ या अपना काम पूरा करूँ।"

"अगर तुम्हें शीघ्र ही चला जाना है तो फिर इनसे क्या मतलब ?" एलेना ने टोका। "अगर तुम चाहते हो तो मैं अभी यहाँ ठहर सकती हूँ, हाँ, इसी समय। अगर तुम्हारी मर्जी हो तो मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी और घर नहीं जाऊँगी। क्या हमें तुरन्त चल देना है ?"

इन्सारोव ने उसे और भी अधिक जोर से चिपटा लिया।

"भगवान मुझे दंड दे अगर मैं गल्ती कर रहा हूँ!" वह कह उठा। "आज से हम दोनों सदैव के लिए एक दूसरे के हो गए।"

"क्या मैं रुक जाऊँ ?" एलेना ने पूछा।

"नहीं, मेरी प्राण, मेरी निधि। आज तुम्हें घर लौट जाना चाहिए परन्तु तैयार रहना। यह ऐसा मामला नहीं है कि हम लोग फौरन तय कर लेंगे। हमें बड़े सोच-विचार कर काम करना है। हमें पैसों और पासपोर्ट की जरूरत पड़ेगी।"

"मेरे पास पैसा है," एलेना ने टोका; "अस्सी रूबल हैं।"

"यह काफी नहीं है," इन्सारोव बोला, "फिर भी इससे मदद मिलेगी।"

"मैं थोड़ा सा और इकट्ठा कर सकती हूँ, उधार ले सकती हूँ, माँ से मांग सकती हूँ......मेरे पास कर्णफूल और दो दस्ते हैं......और और थोड़ा सा गोटा है।"

"यह पैसों की समस्या नहीं है एलेना। यह पासपोर्ट का मामला है, तुम्हारे पासपोर्ट का—उसका इन्तजाम हम लोग कैसे करेंगे ?"

"हाँ, उसका इन्तजाम कैसे होगा? क्या पासपोर्ट बहुत ही जरूरी है?"

"बहुत ही।"

एलेना मुस्कराई।

"मैंने अभी एक बात सोची है, दूमित्री। यह तब की बात है जब मैं छोटी सी बच्ची थी। मुझे याद है...... हमारी एक नौकरानी थी जो भाग गई थी। वह पकड़ी गई और उसे क्षमा कर दिया गया और बाद में काफी दिनों तक वह हमारे यहाँ रही......फिर हमेशा उसे 'भगोड़ी तात्याना' कह कर ही पुकारा जाता था। उस समय मैंने सोचा भी न था कि किसी दिन उसकी तरह मैं भी 'भगोड़ी' बन सकती हूं।"

"एलेना, तुम्हें अपने ऊपर लज्जा नहीं आती?"

"मगर क्यों? यह ठीक है कि पासपोर्ट के साथ जाना ज्यादा अच्छा है:—लेकिन अगर पासपोर्ट न मिल सका—"

"यह सब हम लोग बाद में तय करेंगे, बाद में," इन्सारोव ने कहा, "तुम्हें इन्तजार करना चाहिए, जरा मुझे परिस्थिति का निरीक्षण करने और सोचने विचारने का समय दो। बाद में हम लोग सब बातों पर विस्तार के साथ विचार करेंगे। जहाँ तक पैसों का सवाल है, मेरे पास भी थोड़े से हैं।"

एलेना ने इन्सारोव के माथे पर लटक आए बालों को हाथ से ऊपर की तरफ कर दिया।

"ओह, दूमित्री! एक साथ यात्रा करने में कितना मजा आयेगा।"

"हाँ," इन्सारोव ने कहा; "लेकिन जब हम पहुँच जाँय......"

"तो इससे क्या?" एलेना ने टोका, "क्या एक साथ मरने में भी मजा नहीं आएगा? मगर हम मरें क्यों? हम नौजवान हैं, हमें जीना है। तुम्हारी क्या उम्र है? छब्बीस?"

" छब्बीस ।"

मैं बीस की हूँ......हमारे आगे लम्बा जीवन पड़ा है। और जरा यह तो सोचो कि तुम मुझ से दूर भाग जाना चाहते हो। तुम किसी रूसी के प्रेम को नहीं चाहते थे न बल्गेरियन ? हम देखेंगे कि अब तुम मुझसे कैसे अपना पीछा छुड़ाते हो। परन्तु यदि मैं उस समय तुमसे मिलने न आई होती तो क्या होता ?"

" तुम जानती हो कि किस बात ने मुझे जाने के लिए मजबूर किया था, एलेना ।"

" मै जानती हूँ : तुम प्रेम करने लगे थे और डरते थे। मगर क्या सचमुच तुमने इस बात का सन्देह भी नही किया था कि कोई दूसरा भी तुमसे प्रेम कर सकता था ?"

" सच कहता हूँ एलेना, मुझे सन्देह भी न था ।"

एलेना ने उसे एकाएक, जल्दी से चूम लिया।

" इसीलिए तो मैं तुमसे इतना प्रेम करती हूँ। अच्छा अब विदा !"

" क्या और नहीं ठहर सकती ?" इन्सारोव ने पूछा।

" नही प्रियतम। तुम समझते हो कि मेरे लिए अपने आप अकेली चले आना आसान था ? पन्द्रह मिनट बीते तो बहुत देर हो गई।" उसने अपना लबादा और टोप पहन लिया। " तुम कल शाम को आकर हम लोगों से जरूर मिलना—नहीं, परसों आना। समय बड़ी मुश्किल से कटेगा, मगर कोई चारा नहीं। कम से कम हम एक दूसरे को देख तो लेंगे। अच्छा, अब विदा। मुझे बाहर निकाल दो।" इन्सारोव ने आखिरी बार उसका आलिंगन किया। " ओह देखो, तुमने मेरी घड़ी की चेन तोड़ डाली, मेरे भोंदू। कोई बात नहीं, यह अच्छा ही हुआ : मैं कुजनेत्स्की ब्रिज होती हुई घर जाऊँगी और वहाँ इसे मरम्मत के लिए डाल दूँगी। अगर कोई पूछेगा कि मैं कहाँ थी तो कह दूँगी कि कुजनेत्स्की ब्रिज गई थी।" एलेना ने दरवाजे का हैंडिल पकड़

लिया। "एक बात बताना तो मैं भूल ही गई : शायद एक या दो दिन में मिस्टर कुर्नातोव्स्की मुझसे शादी करने का प्रस्ताव रखेगा··· और मैं उसे यह दे दूँगी—" उसने अपनी नाक पर अंगूठा रखा और उंगलियां हिलाईं। "विदा : मुझे अब तरकीब मालूम हो गई है—तुम जरा भी समय बर्बाद मत करना।"

एलेना ने दरवाजा जरा सा खोला, कान लगा कर सुना, इन्सारोव की तरफ मुड़ी और सिर हिलाया, फिर कमरे में से खिसक गई।

इन्सारोव क्षण भर तक बन्द दरवाजे के सामने खड़ा रहा और आहट लेता रहा। उसने नीचे अहाते में दरवाजा बन्द होने की आवाज सुनी, फिर जाकर सोफे पर बैठ गया और हाथों से आँखें ढक लीं। उसके साथ इससे पहले कभी भी ऐसी घटना नहीं घटी थी। "ऐसा प्रेम प्राप्त करने के लिए मैंने कौनसा पुण्य किया था?" उसने सोचा। "क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ?"

मगर उस सुगन्ध की हल्की सी गन्ध ने, जो एलेना उसके इस तुच्छ, अँधेरे कमरे में भर गई थी, इन्सारोव को उसकी उपस्थिति का ध्यान दिला दिया। इसके अलावा हवा में अब भी वह पतली मधुर ध्वनि और उन हल्के कदमों की गूँज, और उस कुंवारी वनयुवती के शरीर की सुन्दर गन्ध और ताजगी भर रही सी प्रतीत होती थी।

२४

इन्सारोव ने बल्गेरिया से और भी अधिक पक्की खबरें प्राप्त करने की प्रतीक्षा करने का निर्णय किया परन्तु साथ ही अपने प्रस्थान करने की तैयारियाँ भी प्रारम्भ कर दीं। यह बहुत कठिन परिस्थिति थी। उसके अपने मामले में तो कोई कठिनाई नहीं थी—

उसे केवल पासपोर्ट के लिए प्रार्थना-पत्र भर देना था लेकिन एलेना के लिए पासपोर्ट प्राप्त करना असम्भव था। चुपचाप शादी कर लेना और फिर एलेना के माता पिता को जाकर इसकी सूचना देना…? "तब वे हमें चले जाने देंगे," उसने सोचा। "परन्तु यदि उन्होंने इन्कार कर दिया? तो फिर किसी–न–किसी तरह हम ही चल देंगे……मगर मान लो उन्होंने रिपोट कर दी…मान लो उन्होंने… नहीं, कोशिश करके किसी-न-किसी तरह पासपोर्ट प्राप्त करना ही ज्यादा अच्छा रहेगा।"

उसने (बिना कोई नाम बताये ही) अपने एक जान-पहचान वाले व्यक्ति से सलाह लेने का निश्चय किया। यह जान–पहचान वाला एक अवकाश प्राप्त या सम्भवतः नौकरी से निकाला हुआ सरकारी वकील था जो बुड्ढ़ा और हर प्रकार के गुप्त कार्यों में अनुभवी था। ये हजरत थोड़ी सी दूर पर रहते थे और इन्सारोव को उनसे मिलने के लिए एक रद्दी सी खुली गाड़ी में पूरे एक घंटे तक सफर करना पड़ा और इस मेहनत का सिर्फ यही नतीजा निकला कि उक्त सज्जन घर पर नहीं मिले। और वहाँ से घर की तरफ लौटते समय वह मूसलाधार बारिश में, जो एकाएक आ गई थी, पूरी तरह शराबोर हो गया। दूसरे दिन सुबह भयंकर सिर दर्द के रहते हुए भी वह एक बार फिर चल पड़ा। उस अवकाश-प्राप्त वकील ने उसकी तरफ अपनी छोटी, चालाक, तम्बाखू के रंगवाली आँखों से तिरछा देखते हुए और पूरे समय सुंघनी की एक डिबिया में से, जिस पर उभरे हुए वक्षों भरी एक जलपरी की सुन्दर तस्वीर बनी हुई थी, सुंघनी सूंघते हुए उसकी बात गौर से सुनीं। पूरी बात सुनने के बाद उसने कहा कि वह अपने केस की सारी बातों को और भी अधिक विस्तार और स्पष्टता के साथ बताये; और यह देखकर कि इन्सारोव जिसे कि उसके पास मजबूर होकर बेमन से मिलने के लिए जाना पड़ा था, विस्तार के साथ बताने के लिए

तैयार नहीं हैं, उस वकील ने सलाह दी कि वह रुपये-पैसे से मजबूत रहे। फिर उसने एक बार फिर आने के लिए कहा—"जब कि तुम अधिक विश्वास और कम सन्देह की भावना लेकर आ सको," खुली डिबिया में से एक चुकटी लेते हुए उसने कहा। "जहाँ तक पासपोर्ट का सवाल है," वह इस तरह कहता रहा मानो अपने आप से कह रहा हो, "यह ऐसा मामला नहीं है कि जिसका प्रबन्ध मनुष्य न कर सके। मान लो अगर तुम यात्रा कर रहे हो तो यह कौन जान सकता है कि मार्या व्रेदिहिना हो या कारोलिना वोगेल्मियर हो?" इन्सारोव जान रहा था कि उसके मन में घृणा उत्पन्न हो रही है मगर उसने उस बुड्ढ़े को धन्यवाद दिया और कुछ ही दिनों बाद फिर आने का वायदा किया।

उस शाम को इन्सारोव स्ताहोव-परिवार से मिलने गया। अन्ना वासिलिएव्ना ने उसे इस बात के लिए डाँटते हुए कि वह उन्हें बिल्कुल ही भूल गया, उसका स्वागत किया। उसे लगा कि वह पीला दिखाई पड़ रहा था इसलिए उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछा। निकोलाय आर्तियोमेविच ने एक भी शब्द नहीं कहा और उसकी तरफ केवल एक प्रकार की उपेक्षा और चिन्ताकुल जिज्ञासा के साथ देखता रहा। शुबिन का व्यवहार भी उपेक्षा पूर्ण रहा। परन्तु एलेना के व्यवहार ने उसे आश्चर्य में डाल दिया। वह उसकी प्रतीक्षा कर रही थी और उसने वही पोशाक पहन रखी थी जो छतरी पर होने वाली अपनी उस पहली मुलाकात के समय पहनी थी। लेकिन उसने इतनी शान्ति के साथ उसका स्वागत किया, वह इतनी भव्य, प्रसन्न और निर्लिप्त सी दिखाई पड़ रही थी कि कोई भी उसकी तरफ देख कर यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि इस लड़की का भविष्य निश्चित हो चुका है और यह कि उसके मुख पर छाई हुए प्रफुल्लता और उसकी सम्पूर्ण गतिविधियों का सौन्दर्य और आकर्षण केवल प्रतिदान में प्राप्त प्रेम की गुप्त अनुभूति में निहित है। जोया के स्थान पर उसने चाय बनाई और पूरे समय तक मजाक करती

ग्रौर चहकती रही। वह जानती थी कि शुबिन उस पर निगाह रख रहा होगा ग्रौर इन्सारोव ग्रपनी भावनाग्रों को छिपाने ग्रौर उपेक्षा सी दिखाने में ग्रसमर्थ रहेगा इसलिए वह पहले से ही चौकन्नी हो उठी थी। उसका ग्रनुमान गलत नहीं था। शुबिन की ग्राँखें उस पर से क्षरण भर को भी नहीं हटीं ग्रौर इन्सारोव पूरे समय तक उदास बना रहा ग्रौर उसने बहुत कम बातें कीं। एलेना इतनी प्रसन्न हो रही थी कि उसका मन हुग्रा कि इन्सारोव को छेड़े।

"ग्रच्छा," एलेना एकाएक पूछ बैठी, "योजना कैसी चल रही है?"

इन्सारोव परेशान सा दिखाई पड़ा।

"कौन सी योजना?" उसने पूछा।

"ग्राप भूल गए क्या?" एलेना ने उसके चेहरे की तरफ देखते ग्रौर हँसते हुए उत्तर दिया—केवल इन्सारोव ही उस हास्य की विशिष्टता को जानता था। "रूसियों के लिए ग्रापकी बल्गेरियन भाषा की रीडर?"

"क्या गप्प हाँकी है" निकोलाय ग्रार्तियोमेविच घृरणा पूर्वक बड़बड़ाया।

जोया पियानो पर जा बैठी। एलेना ने ग्रस्पष्ट से ढंग से कन्धे उचकाए ग्रौर दरवाजे की तरफ देखा मानो इन्सारोव से कह रही हो कि घर चले जाग्रो। फिर उसने मेज को धीरे से दो बार बजाया ग्रौर इन्सारोव की तरफ देखा। इन्सारोव समझ गया कि उसे एलेना से दो दिन बाद मिलना है ग्रौर जैसे ही एलेना यह जान गई कि वह समझ गया, मुस्करा उठी। वह उठ खड़ा हुग्रा ग्रौर विदा मांगने लगा—उसकी तबियत ठीक नही थी। फिर कुर्नातोव्स्की ग्राया। निकोलाय ग्रार्तियोमेविच उछल पड़ा, ग्रपना दाहिना हाथ ऊपर हवा में ऊँचा उठाया ग्रौर फिर ग्राहिस्ते से उस चीफ-सेक्रेटरी के हाथ पर गिरा दिया। इन्सारोव ग्रपने प्रतिद्वन्द्वी को एक नजर देखने के लिए कुछ मिनट तक रुका। एलेना ने मक्कारी के साथ उसकी तरफ सिर हिलाया

और यह देख कर कि एलेना के पिता ने उस नवागन्तुक से उसका परिचय कराने की कोई इच्छा प्रकट नहीं की, इन्सारोव एलेना से आखिरी बार निगाहें मिला कर चला गया। शुबिन सोचता रहा, सोचता रहा और फिर किसी कानूनी समस्या पर, जिसके विषय में वह कुछ भी नहीं जानता था, कुर्नातोव्स्की के साथ भयंकर रूप से भिड़ गया।

इन्सारोव रात भर सो नहीं सका और दूसरे दिन सुबह उसने अपनी तबियत खराब महसूस की। वह उठा खड़ा हुआ और अपने कागजात को संजोने और कुछ खत लिखने बैठ गया हालांकि उसका दिमाग भारी हो रहा था और सिर भन्ना रहा था। भोजन के समय तक उसे बुखार चढ़ आया और वह कुछ भी नहीं खा सका। शाम तक बुखार काफी तेज हो गया और उसके जोड़ों और सिर में भयंकर दर्द होने लगा। वह सोफे पर लेट गया—उसी सोफे पर जिस पर एलेना अभी कुछ समय पहले तक बैठी रही थी। "उस बदमाश बुड्ढे से मिलने जाने का मुझे यह ठीक ही नतीजा मिला है," उसने सोचा और सोने की कोशिश की। परन्तु इस समय तक बुखार ने उसे अपने पंजों में बुरी तरह से जकड़ लिया था; उसका सिर बुरी तरह से फटा जा रहा था, नसों में आग सी दौड़ रही थी, विचार पक्षी की तरह आकाश में चक्कर काट रहे थे। वह बेहोश हो गया......वह पीठ के बल सीधा लेटा रहा और एकाएक उसे ऐसा लगा कि कोई उसके ऊपर खड़ा है और चुपचाप हँस और फुसफुसा रहा है। उसने मुश्किल से अपनी आँखें खोलीं और मोमबत्ती की रोशनी उसकी आँखों में चाकू की तरह घुस गई—उसने अपने सामने उस बुड्ढे वकील को देखा जो वही ड्रेसिंग-गाउन पहने और कमर में वही रेशमी स्कार्फ बाँधे हुए था जिन्हें पहने उसने उसे पिछली शाम को देखा था। "कारोलिना वोगेलमियर," वह बिना दाँतों वाला मुँह बड़बड़ा रहा था। इन्सारोव ने उसकी तरफ देखा और वह बुड्ढा चौड़ा होने लगा और इतना फैलता और ऊँचा होता गया कि आदमी न रह कर एक पेड़ बन गया......और अब इन्सारोव को सीधी डालों

पर चढ़ना पड़ रहा था। उसने व्यर्थ ही उन्हें पकड़ने की कोशिश की और एक नुकीले पत्थर पर गिर पड़ा, उसके सीने में चोट लगी......उसने कारोलिना वोनेलिमयर को वहाँ एक फेरीवाले की तरह पालथी मार कर बैठे और आवाजें लगाते हुए देखा : "रोटियाँ और मटर, रोटियाँ और मटर!"......उसने खून बहते और तलवारों को असह्य चमक के साथ चलते हुए देखा.......उसने एलेना को देखा और फिर सब कुछ एक खूनी बवन्डर में गायब हो गया।

२५

"कोई आदमी आया है और आपसे मिलना चाहता है," दूसरे दिन शाम को बरसिएनेव के नौकर ने उसे सूचना दी। "भगवान जाने वह कौन है—कोई लुहार या ऐसा ही कोई लगता है।" इस नौकर की विशेषता थी कि वह अपने मालिक के साथ कठोरता से पेश आता था और हर बात में सन्देह करता था।

"उसे भीतर बुलाओ," बरसिएनेव ने कहा।

वह 'लुहार' भीतर आया। बरसिएनेन ने उस दर्जी को पहचान लिया जो इन्सारोव के घर की देखभाल करता था।

"क्या चाहते हो?" बरसिएनेव ने पूछा।

"मैं हुजूर से मिलने आया हूँ," उस दर्जी ने धीरे-धीरे अपने एक पैर से दूसरे पैर पर जोर देते और रह-रह कर अपने दाहिने हाथ को हवा में हिलाते तथा तीन उंगलियों से अपने कमीज के कफ को पकड़ते हुए कहना प्रारम्भ किया; "हमारा किरायेदार बुरी तरह से बीमार है, अपनी कसम बहुत बीमार है।"

"इन्सारोव?"

"हाँ, वही, हमारा किरायेदार, कल सुबह तक वह ठीक था—मगर शाम को उसने सिर्फ पानी मांगा और मेरी घरवाली उसे थोड़ा सा पानी दे आई। फिर रात को वह बड़बड़ाने लगा। हमें उसकी आवाज सुनाई पड़ गई क्योंकि आप जानते हैं कि बीच में एक पतली सी दीवाल है। और आज सुबह वह बोल भी नहीं सक रहा था और अब एक शहतीर की तरह पड़ा हुआ है। उसे बहुत तेज बुखार है! मैंने मन में सोचा, अपनी कसम यही सोचा कि हो सकता है कि वह मर जाय और मुझे पुलिस में खबर करनी पड़े। क्योंकि, आप जानते हैं, वह अकेला ही है; मगर मेरी घरवाली ने मुझसे कहा: "उस आदमी के पास चले जाओ, वही जिसके साथ उसने देहात में कमरा लिया था; शायद वह तुम्हें कुछ बता दे, या खुद भी आ सकता है।" इसलिए मैं हुजूर के पास आया हूँ; आप जानते हैं, हम लोग, मेरा मतलब है······"

बरसिएनेव ने झपट कर अपनी टोपी उठाई, दर्जी के हाथ में एक रूबल ठूँसा और फौरन ही उसके साथ तेजी से इन्सारोव के घर की तरफ चल पड़ा।

उसने उसे अब भी कपड़े पहने सोफे पर बेहोश पड़ा देखा। उसका चेहरा भयानक रूप से बदल गया था। बरसिएनेव ने उन लोगों से फौरन उसके कपड़े उतारने और उसे खाट पर लिटा देने के लिए कहा और फिर डाक्टर को लाने के लिए भागा······डाक्टर ने नुस्खा लिखा कि उसके जोंकें लगाई जांय, पलस्तर चढ़ाया जाय, दस्त कराये जांय और खून निकाला जाय।

"क्या हालत बहुत खतरनाक है?" बरसिएनेव ने पूछा।

"हाँ, बहुत," डाक्टर ने उत्तर दिया, "फेफड़े भयानक रूप से सूज गए हैं; निमोनिया तेजी से बढ़ता चला जा रहा है और हो सकता है दिमाग पर असर हो जाय मगर रोगी नौजवान है। फिर भी इस बीमारी में उसकी ताकत ही उसके खिलाफ पड़ रही है।

आपने हमें बहुत देर से बुलाया मगर फिर भी हम अपने विज्ञान की पूरी ताकत लगा देंगे।"

डाक्टर स्वयं अभी नौजवान था और विज्ञान में उसकी आस्था थी।

वरसिएनेव रात को वहीं टहरा। मकान-मालिक और उसकी बीबी बहुत ही रहमदिल और सचमुच काबिल आदमी साबित हुए क्योंकि उन्हें एक व्यक्ति ऐसा मिल गया जो उन्हें यह बताता जाता था कि क्या करना है। अन्त में डाक्टर का सहायक आया और उसने मरीज का इलाज करना शुरू कर दिया।

सुबह के करीव इन्सारोव को कुछ मिनट के लिए होश आगया और उसने बरसिएनेव को पहचान कर पूछा : "तो क्या मेरी तबियत ठीक नहीं हैं ?" उसने एक अत्यन्त रोगी व्यक्ति की सी शिथिल और निर्जीव व्याकुलता के साथ चारों तरफ देखा और फिर बेहोश हो गया। वरसिएनेव घर गया, कपड़े बदले, कुछ किताबें इकट्ठी की और इन्सारोव के पास लौट आया। उसने, कम से कम उस समय इन्सारोव के ही साथ ठहरने का निश्चय कर लिया था। उसने पलंग के चारों तरफ एक पर्दा तान दिया और अपने लिए सोफे के बगल में जगह बना ली। दिन धीरे-धीरे और नीरसता के साथ गुजर गया; बरसिएनेव सिर्फ खाना खाने के लिए ही गया। शाम आ गई; उसने एक छायादार मोमबत्ती जला ली और पढ़ना शुरू कर दिया। । चारों तरफ खामोशी छाई हुई थी। कभी-कभी बीच वाली दीवाल के पीछे मकान-मालिक के कमरे से, फुसफुसाने, गहरी साँस लेने या जम्हाई लेने की आवाज आ जाती थी। एक बार किसी ने छींका और चुपचाप उसे डांट दिया गया। इन्सारोव के विस्तर से गहरी और उखड़ी हुई सांसों की आवाज आ रही थी जो कभी-कभी हल्की सी कराहट और रोगी द्वारा बेचैनी से तकिए पर सिर पटकने से टूट जाती थी। बरसिएनेव के मस्तिष्क में विचित्र से विचार उठने लगे। यहाँ वह उस व्यक्ति के

कमरे में था जिसे, वह जानता था, कि एलेना प्यार करती थी और उस व्यक्ति की जिन्दगी एक धागे में लटक रही थी······उसने उस रात की बात याद की जब शुबिन ने उसे रास्ते में जा पकडा था और बताया था कि 'वही' वह व्यक्ति है जिसे एलेना प्यार करती है। परन्तु अब······" अब मुझे क्या करना चाहिए ?" उसने मन में सोचा। क्या वह एलेना को इन्सारोव की बीमारी की सूचना देदे या इन्तजार करे ? यह उससे भी अधिक दुखद कहानी होगी जो उसे एलेना को पहले सुनानी पडी थी। आश्चर्य है कि भाग्य ने कैसे उसे हमेशा उन लोगो का मध्यस्थ बनने के लिए मजबूर किया था। उसने प्रतीक्षा करने का निर्णय किया। उसकी निगाह कागजो से भरी मेज पर पडी। "क्या वह अपनी योजना को पूरा कर सकेगा ?" बरसिएनेव ने सोचा, 'या सब कुछ समाप्त हो जायेगा ?" उसके हृदय में उस यौवन से भरे, मुरझाते हुए जीवन के प्रति दया की भावना उठने लगी और उसने प्रतिज्ञा की कि वह उसकी रक्षा करेगा······

वह रात बडी भयानक थी। इन्सारोव सन्निपात मे बक रहा था। कई बार बरसिएनेव सोफे पर से उठा, पजो के बल बिस्तर के पास गया और दुख के साथ रोगी के अनर्गल प्रलाप को सुनता रहा। केवल एक बार ही वह एकाएक साफ-साफ बोला : "मुझे यह नही चाहिए, तुम्हे ऐसा नही करना चाहिए प्रिये······" बरसिएनेव चौंका और इन्सारोव की तरफ देखा : उसका मौत का सा पीला और पीड़ा से विकृत चेहरा शान्त था, उसकी बाहे बगल में शिथिल पड़ी हुई थी······" मुझे यह नही चाहिए," उसने अत्यन्त क्षीण स्वर में दुहराया।

डाक्टर सुबह आया, अपना सिर हिलाया और कोई नई दवा लिखी।

"वह अभी खतरे से बहुत दूर है," उसने टोप लगाते हुए कहा।

"और खतरे के बाद ?" बरसिएनेव ने पूछा।

"खतरे के बाद ? केवल दो सम्भावनाये है : वही कहावत होगी कि

बनूँगा तो बादशाह वर्ना कुछ भी नहीं। •डाक्टर चला गया और बरसिएनेव कुछ देर के लिए बाहर सड़क पर निकल आया। उसने महसूस किया कि उसे ताजा हवा की जरूरत थी। फिर वह लौट आया और एक किताब उठा ली। उसने रोमर बहुत पहले ही समाप्त कर लिया था और आजकल ग्रोटे को पढ़ रहा था।

दरवाजा धीरे से चरमराया और मकान मालिक की लड़की ने हमेशा की तरह एक मोटे शॉल से ढका हुआ सिर सन्धि में से सावधानी के साथ भीतर की तरफ डाला।

"वह नौजवान महिला फिर आई है," उसने फुसफुसाते हुए कहा, "वही जिसने मुझे पहले छः पेन्स दिए थे।"

सिर एकाएक गायब हो गया और उसकी जगह एलेना दिखाई पड़ी।

बरसिएनेव उछल पडा मानो किसी कीड़े ने डंक मार दिया हो; मगर एलेना जैसी की तैसी खड़ी रह गई और उसके मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला······ऐसा लगा कि जैसे पल भर में ही वह सारी परिस्थिति समझ गई हो। उसका चेहरा बिल्कुल पीला पड़ गया; वह पर्दे के पास गई और उसके पीछे झांका। उसने अपने हाथ हिलाए और मूर्ति की तरह खड़ी की खड़ी रह गई। दूसरे ही क्षण वह इन्सारोव के ऊपर गिर पड़ी होती परन्तु बरसिएनेव ने उसे रोक लिया।

"क्या कर रही हो?" उसने व्याकुल होते हुए कहा, "तुम उसे मार डालोगी।"

वह लड़खड़ा कर पीछे हटी; बरसिएनेव उसे सोफे की तरफ ले गया और उस पर बैठा दिया। उसने बरसिएनेव के चेहरे की तरफ देखा, उसके भावों को तेजी से पढ़ने की कोशिश की, फिर दरवाजे की तरफ देखा।

"क्या वह मर रहा है?" एलेना ने इतनी स्थिरता और शान्ति के साथ पूछा कि बरसिएनेव भयभीत हो उठा।

" एलेना निकोलाएव्ना, भगवान के लिए, तुम क्या कह रही हो? वह बीमार है, जरा ज्यादा बीमार है, मगर हम लोग उसे बचा लेंगे, मैं इस बात का तुमसे वायदा करता हूँ।"

" क्या वह बेहोश है?" उसने पहले की सी ही मुद्रा में पूछा।

" हाँ, इस समय वह बेहोश है—इस बीमारी के शुरू होने पर हमेशा ऐसा ही होता है, मगर इसमें घबड़ाने की कोई बात नहीं—मैं इसका विश्वास दिलाता हूँ। जरा सा पानी पी लो।"

एलेना ने ऊपर देखा और बरसिएनेव समझ गया कि उसने उसकी बात नहीं सुनी थी।

" अगर वह मर जाता है," एलेना ने उसी ठंडे से स्वर में कहा, " तो मैं भी मर जाऊँगी।

इसी समय इन्सारोव क्षीण स्वर में कराहा; एलेना कापी, हाथों से अपना सिर पकड़ लिया और फिर अपने टोप के फीते खोलने लगी।

" तुम क्या कर रही हो?" बरसिएनेव ने उससे पूछा।

एलेना ने उत्तर नहीं दिया।

" तुम क्या कर रही हो?" बरसिएनेव ने फिर पूछा।

" मैं यहाँ ठहरूँगी।"

" क्या मतलब······काफी देर तक?"

" मै नहीं जानती······हो सकता है पूरे दिन, पूरी रात, हमेशा के लिए······मैं नहीं जानती।"

" एलेना निकोलाएव्ना, भगवान के लिए होश में आओ। दरअसल मुझे तुम्हें यहाँ देखने की जरा भी उम्मीद नहीं थी—मगर कुछ भी हो, मैंने यही सोचा था कि तुम सिर्फ थोड़ी सी ही देर के लिए आई हो। सोचो, उन्हें घर से तुम्हारी गैरहाजिरी का पता लग सकता है···"

" तो उससे क्या?"

" वे तुम्हारी तलाश करेंगे और तुम्हें यहाँ······"

" तो उससे क्या ?"

" एलेना निकोलाएव्ना······तुम देखती हो कि इस समय वह तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता।"

एलेना ने नीचे की तरफ देखा मानो सोच रही हो, होठों पर रूमाल रखा और बुरी तरह से सिसक उठी। वह अपनी सिसकियों को रोकने के लिए सोफे पर मुँह के बल गिर पड़ी मगर उसका सारा शरीर एक जाल में फँसी हुई चिड़िया के शरीर की तरह काँपने और उछलने लगा।

" एलेना निकोलाएव्ना,······भगवान के लिए !" बरसिएनेव ने उसके पास खड़े हुए दुहराया।

" क्या बात है ?" अचानक इन्सारोव की आवाज सुनाई पड़ी।

एलेना सीधी होकर बैठ गई और बरसिएनेव चुपचाप खड़ा रह गया। फिर वह बिस्तर के पास गया; इन्सारोव का सिर पहले की ही तरह तकिए पर निर्जीव सा पड़ा था और आँखें बन्द थीं।

" क्या वह बेहोशी में बक रहा है ?" एलेना ने फुसफुसा कर पूछा।

" ऐसा ही लगता है," बरसिएनेव ने उत्तर दिया, " मगर कोई घबड़ाने की बात नहीं है—कभी-कभी ऐसा भी होता है, विशेष रूप से यदि···"

" वह कब बीमार पड़ा था ?" एलेना ने टोका।

" दो दिन पहले ···· मैं कल से यहाँ हूँ। तुम्हें मेरे ऊपर भरोसा करना चाहिए, एलेना निकोलाएव्ना। मैं उसे छोड़ कर नहीं जाऊँगा; हर सम्भव प्रयत्न किया जायेगा, अगर जरूरत हुई तो हम दूसरे डाक्टरों की भी सलाह लेंगे।"

" वह मेरे बिना ही मर जायेगा।" अपने हाथ मलती हुई एलेना चीख उठी।

" मैं वायदा करता हूं कि उसकी हालत की तुम्हें सूचना देता रहूँगा, हर रोज खबर दूँगा, और अगर हालत सचमुच खतरनाक हो उठी तो मैं···"

" कसम खाओ कि मुझे फौरन बुलवा लोगे ·····अब कोई बात ही नहीं रह गई। सुन रहे हो ? वायदा करते हो ?"

" भगवान की साक्षी देकर वायदा करता हूँ।"

" कसम खाओ।"

" कसम खाता हूँ।"

एकाएक एलेना ने उसका हाथ पकड़ लिया और इससे पहले कि वह अपना हाथ खींच सके एलेना ने उसे अपने होठों से लगा लिया।

" एलेना निकोलाएव्ना, क्या कर रही हो ?" उसने हकलाते हुए कहा।

" नहीं······नहीं······तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए," इन्सारोव ने एक गहरी सांस लेते हुए अस्पष्ट स्वर में कहा।

एलेना पर्दे के पास तक दाँतों में रूमाल दबाए हुए गई और काफी देर तक टकटकी बाँधे रोगी की तरफ देखती रही। वह चुपचाप रोती रही और आँसू उसके गालों पर बहते रहे।

" एलेना निकोलाएव्ना," बरसिएनेव ने कहा, "हो सकता है कि उसे होश आ जाये और तुम्हें पहचान ले; भगवान ही जाने कि इसका परिणाम अच्छा निकलेगा या बुरा। साथ ही, मैं किसी भी क्षण डाक्टर के आ जाने की आशा कर रहा हूँ।"

एलेना ने सोफे पर से अपना टोप उठाया, पहना और स्थिर खड़ी हो गई। उसकी आँखें कमरे में दुख के साथ चारों तरफ घूम रहीं थीं मानो वह याद कर रही थी कि······

" मैं नहीं जा सकती," अन्त में वह फुसफुसाई।

बरसिएनेव ने उसका हाथ दबाया।

" तुम्हें साहस और शान्ति से काम लेना चाहिए," उसने कहा, " तुम उसे मेरी देख रेख में छोड़ रही हो; मैं आज रात को तुमसे मिलने जरूर आऊँगा।"

१२

एलेना ने उसकी तरफ देखा और कहा : "ओह मेरे अच्छे मित्र !" फिर वह सिसकती हुई चली गई।

बरसिएनेव दरवाजे से टिक गया। दुख और कटुता से वह व्याकुल हो रहा था, यद्यपि उसे एक विचित्र प्रकार का सन्तोष सा मिल रहा था। "मेरे अच्छे मित्र !" उसने सोचा और कन्धे उचकाये।

"यहाँ कौन है ?" उसने इन्सारोव को कहते हुए सुना। वह बिस्तर के पास गया।

"मैं हूँ द्मित्री निकानोरोविच। क्या बात है ? अब कैसी तबियत है ?"

"तुम अकेले हो ?"

"हाँ।"

"वह कहाँ है ?"

"वह ? कौन ?" बरसिएनेव ने भयभीत सा होते हुए पूछा।

इन्सारोव क्षण भर खामोश रहा।

"सुगन्धित पुष्प," वह बड़बड़ाया और उसकी आँखें फिर बन्द हो गई।

२६

पूरे आठ दिन तक इन्सारोव जिन्दगी और मौत के बीच झूलता रहा। डाक्टर बराबर आता रहा। क्योंकि वह एक नौजवान था इसलिए कठिन रोगों में उसकी रुचि थी। शुबिन ने इन्सारोव की गम्भीर दशा के विषय में सुना और उससे मिलने आया। उसके साथी बल्गेरियन भी आये। उनमें बरसिएनेव ने उन दो विचित्र व्यक्तियों को पहचान लिया, बंगले में जिनके अचानक आगमन ने उसे इतना आश्चर्य चकित

कर दिया था। सबने गहरी चिन्ता प्रकट की और कई ने बरसिएनेव की जगह बिस्तर के पास स्वयं रहने का प्रस्ताव रखा: मगर उसने एलेना को दिए गए अपने वायदे को याद कर, इस बात को स्वीकर नहीं किया। वह उससे मिलने हर रोज जाता रहा और चुपचाप जवानी या चिट के जरिए उसे बराबर विस्तार के साथ सूचना पहुँचाता रहा कि स्थिति में कैसा सुधार हो रहा है। एलेना कितनी उत्कंठा के साथ उसकी प्रतीक्षा करती थी, कितने ध्यान से उसकी बात सुनती और प्रश्न कराती थी! वह बराबर स्वयं इन्सारोव के पास जाने के लिए छटपटाती रहती थी मगर बरसिएनेव उससे न जाने की प्रार्थना करता था। इन्सारोव कभी ही अकेला रह पाता था। पहले दिन जब एलेना ने उसकी बीमारी के विषय में सुना था तो स्वयं भी बीमार सी हो गई थी। जैसे ही वह घर लौटी थी उसने अपने को कमरे में बन्द कर लिया था; मगर उन्होंने उसे खाने के लिए बुलवा भेजा था और जब वह कमरे में घुसी थी तो इतनी बीमार लग रही थी कि अन्ना वासिलिएव्ना चौंक उठी थी और उसने उसे तुरन्त पलंग पर लेटने के लिए भेजना चाहा था। किसी तरह एलेना ने अपने ऊपर काबू पा लिया था। "अगर वह मर जाता है," वह बराबर कहती रही, "मैं भी मर जाऊँगी।" इस विचार ने उसे शान्ति दी थी और उसे इतनी शक्ति मिली कि वह निर्लिप्त रहने का सा भाव दिखा सकी। मगर ऐसा हुआ कि किसी ने भी उसे बेकार परेशान नहीं किया। अन्ना वासिलिएव्ना अपने मसूड़ों से परेशान थी; शुबिन पर काम करने का भूत सवार था; जोया को उदासी का सा दौरा हो आया था और उसने 'वर्थर' पढ़ने का निश्चय कर लिया था। निकोलाय आर्तियोमेविच 'स्कालर' बरसिएनेव के प्रायः आने से बहुत नाराज था, इसलिए और भी कि कुर्नातोव्स्की विषयक उसकी 'योजना' बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। वह यथार्थवादी चीफ-सेक्रेटरी ढिलमिल सा दिखाई पड़ता था और समय गुजार रहा था। एलेना ने बरसिएनेव को धन्यवाद तक नहीं दिया: कुछ ऐसे परोपकार के काम होते हैं जिनके लिए धन्यवाद देना अत्यन्त

कष्टपूर्ण और अशोभनीय होता है। केवल एकबार, उसके चौथी बार आने पर, जब इन्सारोव की रात बहुत बुरी तरह बीती थी और डाक्टर ने दूसरे डाक्टरों से सलाह लेने का संकेत किया था एलेना ने उसे उसके वायदे की याद दिलाई थी। "तो, अच्छी बात है," बरसिएनेव ने कहा, "चलो, चलें।" एलेना उठ खड़ी हुई और अपना लबादा पहनने ही वाली थी कि बरसिएनेव बोला—"नहीं, कल तक ठहरो।" शाम तक इन्सारोव की हालत थोड़ी सी सम्हल गई।

लगातार आठ दिन तक वह इसी पीड़ा से छटपटाती रही। एलेना ने शान्त रहने का दिखावा किया परन्तु न तो वह खाना खा सकी और न रात को सो ही सकी। उसके जोड़ों में एक हल्का सा दर्द और सिर में एक तरह की उत्तेजना पूर्ण, सूखी सी सनसनी भरी रहती थी। "हमारी छोटी मालकिन मोमबत्ती की तरह घुलती चली जा रही है," उसकी नौकरानी कहती।

आखिरकार नौवें दिन 'चरम सीमा' की स्थिति आ पहुँची। एलेना ड्राइंग रूम में अन्ना वासिलिएव्ना की बगल में बैठी उसे 'मास्को जनरल' पढ़ कर सुना रही थी और उसे यही नहीं मालूम था कि उसने क्या किया था। तभी बरसिएनेव आया। एलेना ने उसकी तरफ पुनः उसी चंचल, शर्मीली, तीखी जिज्ञासा भरी दृष्टि से देखा जिससे वह उसके आने पर प्रतिदिन उसका स्वागत किया करती थी। और तुरन्त ही वह यह भांप गई कि वह अच्छा समाचार लाया था। बरसिएनेव ने मुस्कराते हुए उसकी तरफ सिर हिलाया और वह उसका स्वागत करने के लिए अपनी जगह से उठ खड़ी हुई।

"वह फिर होश में आ गया है और खतरे से बाहर है; हफ्ते भर में बिल्कुल ठीक हो जायेगा," बर्सिएनेव ने फुसफुसाते हुए उससे कहा।

एलेना ने अपना हाथ इस तरह बढ़ाया मानो किसी चोट को बचा रही हो और खामोश रह गई। सिर्फ उसके होंठ काँपे और

चेहरा लाल हो उठा। बरसिएनेव अन्ना वासिलिएव्ना से बातें करने लगा और एलेना अपने कमरे में चली गई जहाँ घुटनों के बल बैठ कर उसने प्रार्थना की और भगवान को धन्यवाद दिया।......उसकी आँखों में निश्चिन्तता के कोमल आँसू उमड़ आए। एकाएक उसने अपने को बुरी तरह थका हुआ महसूस किया और तकिए पर अपना सिर रख लिया और बुदबुदाई: "बेचारा एन्द्री पेत्रोविच"......और फौरन ही सो गई। उसकी पलकें और गाल अभी तक गीले थे। बहुत दिन बाद वह सोई या रोई थी।

२७

बरसिएनेव द्वारा दी गई सूचना आंशिक रूप में ही सत्य प्रमाणित हुई। संकट टल गया था परन्तु इन्सारोव की शक्ति बहुत ही धीरे-धीरे लौट रही थी और डाक्टर ने उसके शरीर पर भयंकर प्रभाव पड़ने की बात कही थी। फिर भी, रोगी उठ खड़ा हुआ और कमरे में घूमने लगा। बरसिएनेव अपने मकान पर लौट गया था लेकिन हर रोज अपने मित्र से मिलने आया करता था। इन्सारोव अभी तक बहुत कमजोर था। बरसिएनेव हर रोज, पहले की ही तरह, एलेना को रोगी के स्वास्थ्य के विषय में सूचना दिया करता था। इन्सारोव ने एलेना के लिए पत्र लिखने का साहस नहीं किया। वह बरसिएनेव के साथ बातें करते हुए घुमा फिरा कर उसके विषय में संकेत किया करता था। परन्तु बरसिएनेव ने बनावटी उपेक्षा के साथ उसे स्ताहोव-परिवार के यहाँ अपने प्रायः जाने के विषय में बताया और साथ ही यह सूचना देने का भी प्रयत्न किया कि एलेना बहुत परेशान हो उठी थी यद्यपि अब पुनः शान्त हो गई थी। एलेना ने भी पत्र नहीं लिखा। उसके दिमाग में एक दूसरी योजना कार्य कर रही थी।

एक दिन बरसिएनेव ने, अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा के साथ एलेना को बताया कि डाक्टर ने इन्सारोव को एक कटलेट खाने की आज्ञा दे दी है और शायद वह जल्दी ही बाहर चला जाय। जैसे ही उसने अपनी बात खत्म की एलेना चिन्ता मग्न होकर नीचे की तरफ देखने लगी।

"तुम अन्दाज लगा सकते हो कि मैं तुमसे क्या कहना चाहती हूं?" उसने पूछा।

बरसिएनेव परेशान हो उठा; वह उसकी बात समझ गया था।

"मेरा ख्याल है कि तुम मुझसे यह कहना चाहती हो कि तुम उसे देखना चाहती हो," उसने दूसरी तरफ निगाह किए हुए उत्तर दिया।

एलेना शर्मा गई और बहुत धीरे से बोली: "हाँ।"

"अच्छा, क्यों नहीं? मैं सोचता हूँ कि तुम यह काम तो बड़ी आसानी से कर लोगी," उसने कहा और ऐसा करते समय उसने अपने हृदय में एक टीस सी उठती महसूस की।

"तुम्हारा मतलब है, इसलिए क्योंकि मैं वहाँ पहले जा चुकी हूँ?" एलेना बोली। "मगर तुम जानते हो मुझे डर लगता है......तुम्हारा कहना है कि आज कल वह अकेला बहुत कम ही रहता है।"

"यह कोई समस्या नहीं है," अब भी दूसरी तरफ देखते हुए बरसिएनेव ने उत्तर दिया। "मैं उसे खुद चेतावनी नहीं दे सकता मगर तुम एक चिट लिखकर दे सकती हो। कोई भी तुम्हें उसके लिए लिखने से नहीं रोक सकता जैसे कि एक अच्छे मित्र के लिए जिसके लिए तुम्हारे मन में अपनापन होता है। लिखा जाता है इसमें कोई बुराई नहीं है। समय तय......मेरा मतलब है, लिखकर उसे सूचना दे दो कि तुम कब आ रही हो।"

"यह बहुत मुश्किल है," एलेना धीमी आवाज में बोली।

"मुझे लिखकर दे दो। मैं उसे दे आऊँगा।

"यह जरूरी नहीं है, मगर मैं तुमसे कुछ कहना चाह रही थी—मुझसे नाराज मत होना एन्द्री पेत्रोविच—मेहरबानी करके कल उसके पास मत जाना।

बरसिएनेव ने अपने होंठ काटे।

"ओह! समझा, पूरी तरह समझ गया," उसने कहा और एक या दो शब्द और कह कर जल्दी से चला गया।

"और भी अच्छा है, और भी अच्छा है," उसने तेजी से घर लौटते हुए सोचा। "मुझे कोई ऐसी नई बात नहीं दीखी जिससे मुझे प्रोत्साहन मिलता परन्तु शायद यही ठीक है। किसी के पीछे चुपचाप पड़े रहने में क्या मजा है? मुझे किसी बात का अफसोस नहीं, मैंने केवल वही किया जो मेरी आत्मा ने करने के लिए कहा—मगर अब खेल खत्म है। उन्हें ही होने दो! मेरे पिताजी ने ठीक ही कहा था: "हम लोग ऐयाश नहीं हैं, मेरे बच्चे, हम लोग बड़े आदमी नहीं हैं, जो ईश्वर के बिगड़े हुए बच्चे कहलाते हैं, हम लोग शहीद भी तो नहीं हैं—नहीं, हम केवल मजदूर हैं, मजदूर, मजदूर। अपनी काम करने की पोशाक पहनो मजदूर, और अपनी अंधेरी दूकान में बेंच पर जाकर बैठ जाओ। धूप की रोशनी दूसरे लोगों के लिए छोड़ दो। हमारे इस नगण्य अस्तित्व में भी गर्व और प्रसन्नता भरी हुई हैं।"

दूसरे दिन सुबह डाकिया इन्सारोव के लिए एलेना द्वारा लिखी गई एक छोटी सी चिट लाया: "मेरी प्रतीक्षा करना," उसने लिखा था, "और उनसे कह देना कि किसी को भी न आने दें। एन्द्री पेत्रोविच नहीं आयेगा।" •

२८

इन्सारोव को जैसे ही एलेना की चिट मिली वह अपने कमरे को ठीक करने में जुट गया। उसने मकान-मालकिन से दवाई की बोतलें

हटा देने के लिए कहा, अपना ड्रेसिंग-गाउन उतारा और जाकेट पहन ली। उसका हृदय उछल रहा था और प्रसन्नता और कमजोरी से उसे चक्कर सा आ गया। उसकी टाँगें लड़खड़ा उठीं; वह सोफे पर बैठ गया और अपनी घड़ी की तरफ देखा। "बारह बजने में पन्द्रह मिनट है," उसने मन में कहा, "वह यहाँ बारह से पहले नहीं आ सकेगी। मुझे पन्द्रह मिनट तक कुछ और सोचना चाहिए वर्ना मैं इसे सहन नहीं कर सकूँगा। वह शायद बारह से पहले नहीं आ सकेगी ......"

अचानक दरवाजा जोर से खुल गया और एलेना भीतर घुसी। एक हल्का रेशमी फ्राक पहने, पीली और कान्ति से भरी, अत्यन्त प्रसन्न नवेली का सा रूप लिए एलेना प्रसन्नता की एक हल्की सी चीख मारकर इन्सारोव के सीने से चिपट गई।

"तुम जिन्दा हो," वह बारम्बार कहने लगी, "तुम मेरे हो!" उसने इन्सारोव का सिर अपनी बांहों में भर लिया और दुलार करने लगी। उसके हाथों का स्पर्श पाकर, अपने पास उसकी निकटता का अनुभव कर, इन्सारोव शिथिल हो उठा और उसकी सास सी रुकने लगी।।

एलेना बैठ गई और उसकी शरण पाकर हंसती हुई, कोमल और दुलार से भरी दृष्टि से उसकी तरफ टकटकी बाँध कर देखने लगी। ऐसी दृष्टि केवल उसी नारी की आँखों में चमकती है जो किसी के प्रेम पाश में आबद्ध होती है।

एकाएक उसके चेहरे पर बादल से घिर आए।

"तुम कितने दुबले हो गए हो, मेरे द्मित्री," उसके गालों पर हाथ फेरते हुए एलेना ने कहा, "तुम्हारी दाढ़ी कितनी बढ़ गई है!"

"और तुम भी कमजोर हो गई हो, मेरी प्यारी एलेना," एलेना की उंगलियों को चूमते हुए द्मित्री ने उत्तर दिया।

एलेना ने प्रसन्नता के साथ अपनी घुंघराली लटों को झटका दिया।

"यह कोई बात नहीं—तुम जरा देखना तो सही हम लोग किस तरह जल्दी ठीक हो जायंगे। यह तूफान उसी तरह गुजर गया जैसे कि उस दिन गुजर गया था, जब हम लोग समाधि पर मिले थे—आया और निकल गया। अब हम लोगों की जिन्दगी आगे बढ़ेगी।"

इन्सारोव उत्तर में केवल मुस्करा दिया।

"ओह, यह कैसा समय बीता था, द्मित्री, कितना भयानक! व्यक्ति उन लोगों के चले जाने पर, जिन्हें कि वे प्यार करते हैं, कैसे जीते होंगे? सचमुच, मुझे वह सब पहले ही मालूम हो जाता था जो एन्द्री पेत्रोविच मुझे बताया करता था; मेरी जिन्दगी तुम्हारे साथ लटक रही थी। इस पुनर्जीवन का स्वागत है द्मित्री!"

उसकी समझ में नहीं आया कि एलेना से क्या कहे। उसे लगा कि वह उसके कदमों पर लोट जाना चाहता है।

"मैंने कुछ और ही अनुभव किया था," उसके बालों को सम्हालती हुई एलेना कहती रही। "उस समय जब मेरे पास करने को कुछ भी नहीं रहा था तब मैंने कई बातों पर गौर किया था—तुम जानते हो कि जब कोई व्यक्ति बहुत ज्यादा दुखी होता है तो अपने चारों तरफ होने वाली घटनाओं को बड़े अजीब ढंग से और बड़े गौर से देखता है। सचमुच, कभी-कभी मैं एक मक्खी की तरफ देखे ही चली जाती थी यद्यपि मेरा हृदय भय से कांपता रहता था। मगर वह सब समाप्त हो गया, है न ऐसी बात? हमारा भविष्य उज्ज्वल है, है न द्मित्री?"

"मेरे लिए तुम ही भविष्य हो," इन्सारोव ने उत्तर दिया, "मेरे लिए यह उज्ज्वल है।"

"और मेरे लिए भी! मगर तुम्हें याद है जब मैं पिछली बार यहाँ आई थी—नहीं, आखिरी बार नहीं," एलेना ने बरबस काँपते

हुए कहा, "बल्कि उस समय जब हम आपस में बातें कर रहे थे और मैं मौत के विषय में बातें करने लगी थी—मुझे नहीं मालूम कि मैंने ऐसा क्यों किया था। उस समय मैंने सन्देह भी नहीं किया था कि मौत हमारे इतने पास मंड़रा रही थी। मगर अब तो तुम पहले से अच्छे हो, हो न?"

"मैं काफी अच्छा हूं, लगभग ठीक हो गया समझो।"

"तुम अच्छे हो गए—तुम मरे नहीं। ओह, मैं कितनी खुश हूँ!"

वे दोनों कुछ देर तक खामोश रहे।

"एलेना," इन्सारोव बोला।

"क्या है प्रियतम?"

"यह बताओ, क्या तुम्हें कभी ऐसा भी लगा था कि यह बीमारी हमें दण्ड के रूप में दी गई थी?"

एलेना ने उसकी तरफ गम्भीर होकर देखा।

"यह ख्याल तो मेरे मन में उठा था, मगर फिर मैंने सोचा, मुझे किस लिए दंड मिलना चाहिए? मैं अपने कर्त्तव्य से किस प्रकार च्युत हुई हूँ, मैंने क्या अपराध किया है? हो सकता है कि मेरी आत्मा औरों से भिन्न हो मगर फिर भी उसमें शान्ति थी; या यह हो सकता है कि तुम्हारे लिए मैं जिम्मेदार हूं: क्या मुझे तुम्हारे रास्ते में रोढ़े बिछाने चाहिए, क्या मुझे तुम्हें रोकना चाहिए?······"

"तुम मुझे नहीं रोकोगी एलेना, हम दोनों साथ-साथ चलेंगे।"

"हाँ, दमित्री, हम साथ-साथ जायेंगे, मैं वहीं जाऊँगी जहाँ तुम जाओगे······यह मेरा कर्त्तव्य है। मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ······मैं किसी अन्य कर्त्तव्य को नहीं जानती।"

"ओह, एलेना!" इन्सारोव बोला, "न जाने क्यों तुम्हारा कहा हुआ प्रत्येक शब्द मुझे कभी न टूटने वाली शृंखलाओं में बांध रहा है।"

"शृंखलाओं की बातें क्यों करते हो?" उसने नाराज होकर कहा, "हम दोनों स्वतन्त्र प्राणी हैं। हाँ," वह विचार मग्न होकर

फर्श की तरफ देखती हुई और अब भी अपने हाथ से उसके बालों को सहलाती हुई कहती रही, "इन दिनों मैंने इतना सहा है, इतना कि इसकी मैंने पहले कभी कल्पना भी नहीं की थी! यदि किसी ने मुझसे पहले यह कहा होता कि मैं—एक सुशिक्षित नवयुवती—हर तरह के झूठे बहाने बनाकर अकेली बाहर घूमती फिरूँगी, और यह कहा होता कि मैं एक नौजवान को देखने उसके घर जाऊँगी—तो मुझे कितनी घृणा उत्पन्न हुई होती! और फिर भी वही सब हुआ और मुझे तनिक भी घृणा का अनुभव नहीं होता। हाँ, यह सच है," उसने इन्सारोव की तरफ मुँह करते हुए आगे कहा।

इन्सारोव ने उसकी तरफ इतनी श्रद्धा से देखा कि एलेना ने धीरे से अपना हाथ उसके बालों से हटा लिया और अपनी आँखें ढक लीं।

"दमित्री," उसने फिर कहना प्रारम्भ किया, "तुम नहीं जानते, जानते हो क्या, कि मैंने तुम्हें उस भयानक पलंग पर देखा था...... मैंने तुम्हें मौत के पंजों में जकड़ा हुआ देखा था, संज्ञाहीन......"

"तुमने मुझे देखा था?"

"हाँ।"

इन्सारोव क्षण भर खामोश रहा।

"क्या बरसिएनेव भी यहाँ था?"

एलेना ने अपना सिर हिललाया। इन्सारोव उसकी तरफ झुका।

"ओह एलेना!" वह फुसफुसाया, "मुझे तुम्हारी तरफ देखने का साहस नहीं होता।"

"क्यों? एन्द्री पेत्रोविच बहुत दयावान है! मुझे उसके सामने किसी प्रकार की लज्जा अनुभव नहीं हुई। और लज्जा की बात ही क्या है? मैं सारी दुनियां को यह बता देने के लिए तैयार हूं कि मैं तुम्हारी हूँ......परन्तु एन्द्री पेत्रोविच का मैं इस तरह विश्वास करती हूं मानो वह मेरा भाई हो।"

" उसने मेरी जिन्दगी बचाई है !' इन्सारोव जोर से कह उठा। " वह सबसे अधिक रहम दिल और अत्यन्त उदार है।"

" हाँ······और क्या तुम जानते थे कि मै इस सब के लिए उसी की आभारी हूँ। क्या तुम जानते थे कि वही पहला व्यक्ति था जिसने मुझे सबसे पहले यह बताया था कि तुम मुझसे प्रेम करते थे ? और काश कि मै तुम्हे हर बात बता सकती······हाँ, वह सबसे अधिक उदार व्यक्ति है।"

इन्सारोव ने उसकी तरफ गौर से देखा।

" वह तुमसे प्रेम करता है, करता है न ?"

एलेना नीचे देखने लगी।

" वह मुझसे प्रेम करता था," उसने धीरे से कहा।

इन्सारोव ने उसका हाथ दबा दिया।

" ओह, रूस के निवासियो," इन्सारोव कहने लगा, " तुम्हारा हृदय कितना सुन्दर है ! एक वह बरसिएनेव है, उसने मेरी कितनी तीमारदारी की और रात-रात भर बैठा रहा। और तुमने भी, मेरी देवी,—कभी एक कडी बात नही कही, कभी सँकोच नही दिखाया······और यह सब मेरे लिए······"

" हाँ, हाँ, सब तुम्हारे लिए—क्योकि हम तुम्हे प्यार करते हैं। ओह, दमित्री, यह सब कितना विचित्र है। मेरा ख्याल है मैंने इस विषय में तुमसे पहले भी बाते की हैं, परन्तु कोई बात नही, मैं दुबारा तुमसे कहना पसन्द करूँगी और तुम भी दुबारा सुनना पसन्द करोगे—जब मैंने तुम्हे पहली बार देखा था—"

" तुम्हारी आँखों में ये आँसू क्यों हैं ?" इन्सारोव ने टोका।

" मेरी आँखों में आँसू ?" उसने रूमाल से उन्हें साफ कर लिया। " ओह बुद्धू, तुम अभी तक नही जानते कि ज्यादा खुशी होने पर भी रोया जाता है ! मगर जो मै कहना चाहती थी वह यह है : जब मैंने तुम्हे

पहली बार देखा था तो मैंने तुम में कोई विशेपता नहीं पाई थी, सचमुच कोई विशेषता नहीं पाई थी। पहले पहल में शुबिन को बहुत अधिक चाहती थी हालांकि उससे प्रेम कभी भी नहीं किया था—और जहाँ तक एन्द्री पेत्रोविच का प्रश्न है, हाँ, एक ऐसा क्षण आया था जब मैंने अपने आप से पूछा था; क्या यही वह आदमी है? परन्तु तुम्हारे मामले में कुछ भी नहीं था; फिर भी बाद में—बाद में—तुमने किस तरह अपने दोनों हाथों से मेरे हृदय को जकड़ लिया।''

" नहीं नहीं—" इन्सारोव ने कहा। उसने खड़े होने का प्रयत्न किया लेकिन तुरन्त ही सोफे पर गिर पड़ा।

" क्या बात है?" एलेना ने चिन्तित होकर पूछा।

" कुछ नहीं······अभी मैं पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हो पाया हूँ—इस प्रकार की प्रसन्नता को सहन करना अभी मेरी शक्ति से बाहर है।"

" तो तुम्हें शान्त होकर बैठना चाहिए। खामोश रहो और उत्तेजना से दूर रहो," एलेना ने उसकी तरफ उंगली हिलाते हुए कहा। " और तुमने अपना ड्रेसिंग-गाऊन क्यों उतार डाला? अभी से दिखाने की जल्दी मत करो। यहाँ बैठ जाओ, मैं तुम्हें कहानियाँ सुनाऊँगी। तुम सुनते रहना, बोलना जरा भी नहीं। बीमारी की हालत में ज्यादा बोलने से नुकसान होता है।"

वह उससे शुबिन और कुर्नातोव्स्की के और उसने इधर पिछले दो हफ्तों में क्या-क्या किया था, आदि के विषय में बताने लगी। उसने उसे यह भी बताया कि अखबारों के मतानुसार युद्ध अनिवार्य था और इसलिए उसके पूरी तरह से स्वस्थ होते ही, उन्हें क्षण भर का भी विलम्ब किए बिना यहाँ से निकल चलने का कोई न कोई साधन ढूंढ़ निकालना है।······एलेना इस तरह उसकी बगल में बैठी, उसके कन्धे पर अपना हाथ रखे बातें करती रही।······

वह उसकी बातें सुनता रहा—कभी उसका मुँह लाल हो उठता

और कभी पीला पड़ जाता। कई बार उसने एलेना को रोकने की कोशिश की—फिर एकाएक उठकर बैठ गया।

"एलेना," उसने एक अजीब सी भद्दी आवाज में कहा, "मुझे अकेला छोड़ दो, तुम्हें चला जाना चाहिए।"

"क्या मतलब ?" एलेना आश्चर्य चकित होकर कह उठी। "तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या ?" उसने फौरन ही फिर पूछा।

"नहीं—मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मगर मेहरबानी करके मुझे अकेला छोड़ दो।"

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझी। क्या तुम मुझे भगा देना चाहते हो ?······तुम क्या कर रहे हो ?" वह उसके पैर चूम रहा था। "यह मत करो, द्मित्री······द्मित्री······"

वह उठकर बैठ गया।

'तो तुम यहाँ से चली जाओ ! तुम्हें मालूम है एलेना कि जब मैं बीमार पड़ा था तो पहले पहल बेहोश नहीं हुआ था और उस समय मैं जानता था कि मैं अँधेरे के कगार पर खड़ा था। यहाँ तक कि जब मुझे बुखार चढ़ा था और मैं सन्निपात में बक रहा था, मैंने इस बात को महसूस किया था; मुझे हलका सा आभास हो रहा था कि मौत नजदीक थी और मैंने जिन्दगी से, तुम से और सब से बिदा माँग ली थी और मेरी सारी उम्मीदें टूट चुकीं थीं······और अब अचानक यह पुनर्जीवन की प्राप्ति, अन्धकार के उपरान्त यह प्रकाश, और तुम ······तुम मेरे पहलू में, यहाँ मेरे साथ—तुम्हारी आवाज, तुम्हारी साँसें—इस सब का सहन करना मेरे लिए असह्य हो उठा है ! मैं अनुभव करता हूँ कि तुम्हें कितना अधिक प्यार करता हूँ, मैं तुम्हें यह कहते सुनता हूँ कि तुम मेरी हो और अपने लिए कोई उत्तर नहीं दे पाता ······तुम चली जाओ !

"द्मित्री" एलेना बुदबुदाई और उसके कन्धे में अपना मुँह छिपा लिया। केवल इसी समय वह उसे समझ पाई थी।

"एलेना," वह कहता रहा, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं, तुम इस बात को जानती हो। मैं खुशी से अपनी जिन्दगी तुम्हारे लिए न्यौछावर कर दूँगा······मगर तुम इस समय मेरे पास क्यों आईं जब मैं कमजोर हूँ और अपने ऊपर काबू नहीं पा सकता—जब मेरी नसों में आग दौड़ रही है—तुम कहती हो तुम मेरी हो, मुझे प्यार करती हो······"

"दमित्री," एलेना ने दुहराया; उसका मुंह लाल पड़ गया और वह इन्सारोव से और जोर से चिपट गई।

"एलेना, मुझ पर रहम करो, चली जाओ, मुझे लगता है कि मैं मर जाऊँगा······मैं इन भावनाओं को सहन नहीं कर सकता—मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व तुम्हारे लिए ललक रहा है······यह सोचना कि मौत ने हमें लगभग अलग ही कर दिया था······और अब तुम यहाँ हो, मेरी बाँहों में बंधी······एलेना।"

वह काँप उठी।

"तो मुझे ले लो," वह इस तरह फुसफुसाई कि इन्सारोव मुश्किल से सुन सका······

२६

•

निकोलाय आर्तियोमेविच भौंहों में गाँठ दिए अपने पढ़ने के कमरे में इधर से उधर घूम रहा था। शुबिन खिड़की के पास टाँग पर टाँग रखे खामोशी के साथ बैठा सिगार पी रहा था।

"मैं चाहता हूँ कि तुम कमरे के एक किनारे से दूसरे किनारे तक चलना बन्द कर दो," उसने सिगार का गुल झाड़ते हुए कहा। "मैं

बराबर आशा कर रहा हूँ कि तुम कुछ कहोगे। तुम्हारे साथ-साथ अपने सिर को आगे पीछे करते करते मेरी गर्दन में दर्द होने लगा है। दूसरी बात यह कि तुम्हारी चाल में कुछ इतनी गम्भीरता और भावों को जाग्रत करने वाले नाटकों की सी भावना भरी हुई है।"

"तुम तो हमेशा सिर्फ मजाक ही किया करते हो," निकोलाय आर्तियोमेविच ने उत्तर दिया। "तुम यह समझने की कोशिश ही नहीं करते कि मैं क्या महसूस कर रहा हूँ, तुम अनुभव नही कर सकोगे कि मै इस औरत का कितना आदी हो चुका हूँ, कि मै सचमुच उसे पसन्द करता हूं इसलिए यह स्वाभाविक है कि जब वह नहीं रहती तो मुझे तकलीफ होती है......अक्टूबर आ गया है, जाड़े का मौसम आ ही सा गया है। वह रेवाल में आखिर कर क्या रही है?"

"हो सकता है कि मोजे बुन रही हो—मगर अपने लिए, तुम्हारे लिए नही।"

"तुम हँस सकते हो, हंस लो—मगर मै तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मैंने उस जैसी दूसरी कोई भी औरत नहीं देखी। इतनी ईमानदार, इतनी निर्लिप्त......"

"क्या उसने उस तमस्सुक पर पैसों का दावा किया था?" शुबिन ने पूछा।

"इतनी निर्लिप्त" निकोलाच आर्तियोमेविच ने अपनी आवाज ऊँची करते हुए दुहराया, "यह सचमुच आश्चर्य की बात है। लोग मुझसे कहते हैं कि दूसरी लाखों औरते है, मगर मै कहता हूँ कि मुझे दिखाओ, उन लाखों औरतों को मुझे दिखाओ, मैं कहता हूँ: उन औरतों को जिन्हें उसने दिखाया था," और वह खत नहीं लिखती—यही तो मुझे मारे डाल रहा है।

"तुम तो पायथागोरस की तरह बोलते हो," शुबिन ने व्यंग्य कसा। "तुम जानते हो कि मै तुम्हें क्या करने की सलाह देने जा रहा हूँ?"

" क्या ?"

" जब एवग्रुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना वापस लौटे"……तुम समझे कि मेरा क्या मतलब है ?"

"क्यों, क्या मतलब है ?"

" जब तुम उससे मिलो……तुम मेरी विचार धारा को समझ रहे हो ?"

" हाँ, हाँ ।"

" तो उसमें अच्छी तरह हाथ उड़ाने की कोशिश करना। फिर देखना कि इसका कैसा असर होता है।"

निकोलाय आर्तियोमेविच ने घृणा के मारे मुँह मोड़ लिया।

" सचमुच मैंने तो यह सोचा था कि तुम मुझे कोई अच्छी सलाह दे रहे हो—मगर एक कलाकार से, बिना उसूलों वाले एक आदमी से कोई आशा ही क्या कर सकता है……"

" बिना उसूलों वाले……फिर भी मैंने सुना है कि तुम्हारे प्रिय मिस्टर कुर्नातोव्स्की ने अपने सारे उसूलों के रहते हुए भी कल तुमसे सौ रूबल जीत लिए। तुम्हें मानना पड़ेगा कि यह अनाड़ीपन था।"

" इससे क्या हुआ ? हम पैसों से खेल रहे थे। बेशक मुझे आशा करनी चाहिए थी……मगर इस घर में उसकी इतनी कम इज्जत की जाती है……"

" कि वह अपने मन में सोचता है : " यह जहन्नुम में जाय ! उसका मेरा ससुर बनना तो अभी भगवान के हाथ में है मगर उस आदमी के लिए जो रिश्वत नहीं लेता सौ रूबाल काफी कीमत रखते हैं !"

" ससुर ?……ससुर को जहन्नुम में जाने दो !

सचमुच दूसरी कोई भी लड़की ऐसे आदमी को अपने प्रणय-प्रार्थी के

१३

रूप में पाकर फूली न समाती। तुम खुद ही देख सकते हो : उत्साही, चतुर—दुनियाँ में अपनी जगह बना लेने वाला—दो सूबों में काम चला ले जाने वाला—"

"—नामक सूबे में उसने गवर्नर को नाक पकड़ कर चलाया था," शुबिन बोला।

"बहुत मुमकिन है : मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि उसकी जरूरत थी। एक दुनियादार आदमी, व्यापारी……"

"ताश का एक होशियार खिलाड़ी," शुबिन फिर बीच में बोला।

"ठीक है, वह ताश भी अच्छा खेलता है। मगर जहाँ तक एलेना निकोलाएव्ना का सवाल है—कोई भी उसे समझ पाता है? मैं ऐसे आदमी से मिलना चाहूँगा जो इस बात का पता लगाने की जिम्मेदारी ले ले कि वह क्या चाहती है? कभी वह खुश रहती है फिर दुख से सूखने लगती है—एकाएक इतनी दुबली हो जाती है कि उसकी तरफ देखा भी नहीं जाता और फिर एकाएक तन्दुरुस्त हो उठती है : और यह सब होता है बिना किसी स्पष्ट कारण के।"

एक बदसूरत नौकर एक ट्रे पर काफी का एक प्याला, मलाई का बर्तन और कुछ तले हुए रोटी के टुकड़े रख कर लाया।

"बाप उस नौजवान को पसन्द करता है," निकोलाय आर्तियोमेविच रोटी के एक टुकड़े को रगड़ते हुए कहता रहा, "मगर बेटी को इससे क्या मतलब? पुराने पितृसत्ताक युग में यह बात काफी मानी जाती थी मगर अब तो हम लोगों ने वह सब बदल दिया है : हमने वह सब बदल डाला है। आजकल एक नौजवान लड़की मन चाहे आदमी से बातें करती और मनचाही किताबें पढ़ती है। वह पेरिस वालों की तरह बिना किसी नौकर या नौकरानी को साथ लिए सारे मास्को में घूमती फिरती है—और इस सब को स्वीकार कर लिया जाता है। उस दिन मैंने पूछा : 'एलेना निकोलाएव्ना कहाँ है?'—उन्होने बताया कि

'बाहर गई है'—'कहाँ के लिए ? कोई नहीं जानता। क्या यह अच्छी बात है ?"

"मेहरबानी करके काफी पी लो और नौकर को जाने दो," शुबिन बोला, "तुम खुद ही कहते हो कि तुम्हें—नौकरों के सामने बकना नहीं चाहिए।"

उसने आवाज धीमी करते हुए आगे कहा।

नौकर ने शुबिन की तरफ अप्रसन्न होकर देखा जबकि निकोलाय आर्तियोमेविच ने प्याला उठाया, उसमें खुद ही थोड़ी सी मलाई डाली और मुट्ठी भर रोटी के टुकड़े उठा लिए।

"मैं कहना चाह रहा था," नौकर के जाते ही वह कहने लगा, "कि इस घर में मेरी कोई भी पूछ नहीं है—सारी बात यही है। यह इसलिए कि आजकल हर कोई ऊपरी टीमटाम को देखकर ही अपनी राय कायम कर लेता है: एक निपट बुद्धू आदमी अगर अहंकार के साथ पेश आता है तो उसकी इज्जत की जाती है; जबकि कोई दूसरा, जिसमें बहुत सम्भव है कि ऐसे गुण हों जो संसार के लिए अत्यन्त उपयोगी हो सकते हैं, अपनी विनम्रता के कारण······"

"क्या तुम अपने को एक राजनीतिज्ञ समझते हो, निकी ?" शुबिन ने ऊँची और सुरीली आवाज में पूछा।

"बेवकूफी बन्द करो," निकोलाय आर्तियोमेविच ने गुस्से के साथ कहा, "तुम अपनी औकात भूल जाते हो। यह एक दूसरा सबूत है कि इस घर में मेरी कोई भी इज्जत नहीं होती, मेरी जरा भी पूछ नहीं होती।"

"अन्ना वासिलिएव्ना तुम्हारे पीछे इस तरह हाथ धोकर पड़ी है······बेचारा गरीब," शुबिन ने अंगड़ाई लेते हुए कहा, "ओह निकोलाय आर्तियोमेविच, सचमुच हम लोगों को अपने ऊपर शरम आनी चाहिए। अच्छा हो कि तुम अन्ना वासिलिएव्ना को भेंट करने के लिए किसी सौगात की तलाश करने में लग जाओ—एक या दो दिन में उसका

जन्म-दिवस मनाया जाने वाला है और तुम जानते हो कि जब तुम उसकी तरफ जरा भी रुचि दिखाते हो तो वह उसका कितना सम्मान करती है।"

"हाँ, ठीक है," निकोलाय आर्तियोमेविच ने जल्दी से जबाब दिया, "इसकी याद दिलाने के लिए मैं तुम्हारा बहुत शुक्रगुजार हूँ। बेशक, बेशक, मुझे जरूर करना चाहिए······दरअसल, मेरे पास यहीं एक छोटी सी चीज है: एक बकलस है। उस दिन इसे रोसेनस्ट्रॉच के के यहाँ से खरीदा था। मगर मुझे यह नहीं मालूम था कि यह इस लायक होगा भी या नहीं।"

"तुमने इसे रेवाल वाली उस महिला के लिए खरीदा था, खरीदा था न?"

"दरअसल—खैर, हाँ—मैं सोच रहा था—"

"ऐसी हालत में तो यह उसके लिए जरूर ठीक रहेगा।"

शुबिन कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ।

"आज कहाँ चलना चाहिए पावेल याकोव्लेविच, ?" निकोलाय आर्तियोमेविच ने उसकी आँखों में देखते हुए सच्चे दिल से पूछा।

"तुम क्लब नहीं जा रहे ?

"मेरा मतलब है, क्लब के बाद—उसके बाद।"

" शुबिन ने फिर अंगड़ाई ली।

"नहीं, निकोलाय आर्तियोमेविच, मुझे कल काम करना है। फिर कभी चलेंगे।" वह बाहर चला गया।

निकोलाय आर्तियोमेविच ने भौंहों में बल डाले और कमरे के तीन चक्कर लगाये। फिर उसने आलमारी में से मखमल जड़े बक्स में रखे उस बकलस को निकाला और उसे अपने रेशमी रूमाल से साफ करता हुआ बड़े गौर से देखता रहा। वह शीशे के सामने

बैठ गया और चेहरे पर गम्भीरता धारण किए सावधानी के साथ इधर से उधर सिर को झुकाता हुआ, गालों को जीभ डाल कर फुलाता और पूरे समय तक मांग को टकटकी बांधे देखता अपने बाल संवारता रहा।

कोई उसके पीछे खांसा। उसने मुड़कर देखा कि नौकर खड़ा था जो उसके लिए काफी लाया था।

"निकोलाय आर्तियोमेविच," नौकर ने एक खास शानभरे अन्दाज के साथ कहा, "आप हमारे मालिक हैं, हुजूर!"

"मैं जानता हूं। इससे क्या मतलब?"

"निकोलाय आर्तियोमेविच, गुस्ताखी के लिए माफ करें हुजूर, मैं अपने बचपन से ही आपकी नौकरी में हूँ और यह सिर्फ इसलिए कि मैं आपकी खिदमत करना चाहता हूं मगर मैं महसूस करता हूं कि मुझे आपको खबर कर देनी चाहिए—"

"तो बात क्या है?"

नौकर हिचकिचाता हुआ खड़ा रहा।

"आपने कहा था हुजूर कि आप नहीं जानते कि एलेना निकोलाएव्ना कहां जाती हैं। मैंने इस बात का पता लगा लिया है हुजूर।"

"क्या बकता है, बेवकूफ?"

"जैसी आपकी मर्जी हुजूर—मगर तीन दिन पहले मैंने उन्हें एक खास मकान में जाते हुए देखा था।"

"क्या? कहाँ? किस मकान में?"

"—नामक सड़क पर, पोवारस्काया के पास, यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है। मैंने मजदूर से पूछा था कि वहाँ कौन लोग रहते हैं।"

निकोलाय आर्तियोमेविच ने पैर पटका।

"खामोश, बदमाश! मेरी लड़की, रहमदिल होने की वजह से गरीबों के यहाँ जाती है और तुम······निकल जाओ, बेवकूफ।"

भयभीत नौकर दरवाजे की तरफ लपका।

"ठहरो !" निकोलाय आर्तियोमेविच चीखा। "मजदूर ने क्या कहा था ?"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं, हुजूर। उसने कहा था कि एक—एक विद्यार्थी रहता है।"

"खामोश, नालायक ! सुनो, अगर तुमने इस विषय में किसी से एक शब्द भी कहा, यहाँ तक कि सोते में भी······"

"मगर हुजूर······"

"खामोश ! अगर तुमने एक भी शब्द कहा—अगर किसी ने मुझे बता दिया—अगर मैंने यह सुन पाया—तो अगर तुम समुद्र की तलहटी में भी जा छिपोगे तो भी मैं तुम्हें जा पकड़ूंगा। सुना ? भाग जाओ !"

नौकर गायब हो गया।

"ओह, मेरे ईश्वर ! इस सबका क्या मतलब है ?" निकोलाय आर्तियोमेविच ने सोचा जब वह अकेला रह गया। "यह मूर्ख मुझसे क्या कह रहा था ? कुछ भी हो, मुझे यह पता लगाना ही पड़ेगा कि वह कौनसा मकान है और उसमें कौन रहता है—मुझे खुद ही जाना पड़ेगा। तो इसका यह नतीजा निकला······एक नौकर, खिदमतगार, कैसा अपमान हुआ है !" और जोर जोर से 'खिदमतगार' 'खिदमतगार' दुहराते हुए उसने उस बकलस को आलमारी में बन्द कर दिया और अन्ना वासिलिएव्ना से मिलने चला गया। उसने उसे चेहरे पर पट्टियां बांधे बिस्तर पर पड़ा हुआ पाया। मगर उसकी इस तकलीफ को देख कर वह और भी चिड़चिड़ा उठा और उसने थोड़ी ही देर में उसे रुला डाला।

३०

इस बीच बाल्कन प्रदेश में जो भयंकर घटायें घिर रहीं थीं वे अन्त में बरस पड़ीं। तुर्की ने रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर

दी। राजधानियों को खाली करने की जो तिथि नियत की गई थी वह बीत गई और सिनोपी हत्यकांड के दिन नजदीक आ गए। इन्सारोव को जो अन्तिम पत्र प्राप्त हुए थे उनमें उसे फौरन ही चले आने का आदेश दिया गया था। उसका स्वास्थ्य अभी तक ठीक नहीं हो पाया था। उसे खाँसी उठती थी, कमजोरी थी और कभी-कभी हल्का सा बुखार आ जाता था। फिर भी वह मुश्किल से ही कभी घर पर रह पाता था। वह अत्यधिक उत्तेजित था और उसने अपनी बीमारी की तरफ ध्यान देना छोड़ दिया था। वह मास्को में चारों तरफ लोगों से गुप्त रूप से मिलता हुआ बराबर घूमता रहता था। वह रात भर लिखता रहता और दिन भर गायब रहता। उसने अपने मकान-मालिक से कह दिया था कि वह जल्दी ही चला जाने वाला है और उसे अपना मामूली सा सामान भेंट में दे डाला था। अपनी तरफ से एलेना भी चलने की तैयारियाँ कर रही थी। एक बरसाती शाम को जब वह अपने कमरे में बैठी अपने रूमालों में गोट लगाती हुई अत्यन्त विषाद के साथ हवा की गरज को सुन रही थी कि उसकी नौकरानी आई और कहा कि उसका पिता उसकी माँ के कमरे में है और उसे बुला रहा है……"आपकी माँ रो रहीं हैं," जब एलेना बाहर चली तब नौकरानी ने फुसफुसाते हुए उससे कहा, "और आपके पिताजी गुस्से में हैं।"

एलेना ने कन्धे उचकाये और सोने वाले कमरे में चली गई। उसने अपनी अच्छी माँ को एक मुड़ी हुई कुर्सी पर लेटे और यूडी-कोलोन से तर अपने रूमाल को सूंघते देखा। उसका पिता अँगीठी के पास खड़ा था। अपनी जाकेट के बटन लगाए और कलफदार ऊँचे कालर पर 'क्रावेट' बाँधे उसकी मुद्रा कुछ-कुछ पार्लियामेन्ट के एक वक्ता की सी लग रही थी। उसने एक नाटकीय लहजे के साथ हाथ हिलाते हुए एक कुर्सी की तरफ इशारा किया; और जब उसकी लड़की उसकी इस भावभंगी को समझने में असमर्थ रही और उसकी तरफ

प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगी तो उसने बिना उसकी तरफ मुँह किए बड़ी शान के साथ कहा : "मेहरवानी करके बैठ जाइये।"

एलेना बैठ गई। उसकी माँ ने रोते हुए अपनी नाक साफ की। निकोलाय आर्तियोमेविच ने अपना दाहिना हाथ अपनी जाकेट के नीचे रख लिया।

"मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया है एलेना निकोलाएव्ना," लम्बी खामोशी के बाद उसने कहना प्रारम्भ किया, "जिससे कि हम एक दूसरे के सामने अपनी स्थिति साफ कर लें—या मुझे कहना चाहिए कि तुमसे सफाई माँगे। मै तुमसे नाराज हूँ—नहीं—यह तो बहुत ही विनम्र वाक्यावली है; मै तुम्हारे व्यवहार से दुखी और क्रुद्ध हूं—मैं और तुम्हारी माँ, दोनों······तुम्हारी माँ, जिन्हें तुम यहाँ बैठी देख रही हो।"

निकोलाय आर्तियोमेविच एक भारी और खरखराती सी आवाज में बोला। एलेना ने खामोश रहते हुए पहले उसकी तरफ देखा, फिर अपनी माँ की तरफ और पीली पड़ गई।

"एक समय था," निकोलाय आर्तियोमेविच ने फिर कहना शुरू किया, "जब लड़कियाँ अपने माता-पिता का तिरस्कार नहीं किया करतीं थीं, जब विद्रोही बच्चे माता-पिता के सामने काँपा करते थे; वह समय बीत गया; दुर्भाग्यवश कम से कम बहुत से लोग ऐसा ही सोचते हैं; परन्तु मेरा विश्वास करो, अब भी ऐसे कानून मौजूद हैं जो आज्ञा नहीं देते, जो आज्ञा नहीं देते······संक्षेप में यह कि अब भी कानून हैं। कृपया इस बात का ध्यान रखो: अब भी कानून मौजूद हैं।"

"मगर पिताजी!" एलेना कहना शुरू कर रही थी।

"कृपया मेरी बात मत काटो। हमें भूतकाल पर विचार करने दो। अन्ना वासिलिएव्ना और मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया है। अन्ना वासिलिएव्ना और मैंने तुम्हारी शिक्षा के लिए पैसा या तकलीफ किसी बात की भी चिन्ता नहीं की है। यह दूसरी बात है कि तुमने हमारे

पैसे और तकलीफों से क्या लाभ उठाया ; परन्तु मुझे यह आशा करने का अधिकार है—अन्ना वासिलिएव्ना और मुझे इस बात की आशा करने का अधिकार है कि तुम्हें कम से कम नैतिकता के उन सिद्धान्तों का कड़ाई से पालन करना चाहिए जो हमारे सिद्धान्त रहे हैं·········नैतिकता के वे मानदंड जो हमने तुम्हें सिखाये हैं—जो हमने तुम्हें अपनी एकमात्र पुत्री मान कर तुम्हें बताये हैं। हमें यह आशा करने का अधिकार है कि इन आधुनिक 'विचारों' में से, मतलब यह कि पवित्र उत्तरदायित्वों के ऊपर इन आधुनिक विचारों में से किसी का भी प्रभाव न पड़े। फिर भी हम क्या पाते हैं ? मैं इस समय उस उश्रृंखलता की तरफ संकेत नहीं करना चाहता जो तुम्हारी इस अवस्था और स्थिति में स्वाभाविक होती है—परन्तु ऐसी आशा कौन कर सकता था कि तुम अपने को यहाँ तक भूल जाओगी······"

"पिताजी," एलेना ने कहा, "मैं जानती हूँ कि आप क्या कहने जा रहे हैं······

"नहीं, तुम्हें नहीं मालूम कि मैं क्या कहने जा रहा हूँ," निकोलाय आर्तियोमेविच ने एकाएक अपनी उस पार्लियामेन्टरी मुद्रा, अपनी उस आडम्बरपूर्ण वक्तृता और गूंजते हुए स्वर को छोड़ कर जोर से चीखते हुए कहा—"तुम नहीं जानती, बदतमीज लड़की······"

"भगवान के लिए, निकोलाय," अन्ना वासिलिएव्ना बुदबुदाई "तुम मुझे मार डालोगे।"

"मुझसे यह मत कहो—यह मत कहो कि मैं तुम्हें मार डालूंगा अन्ना वासिलिएव्ना ! तुम कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि इस समय मैं तुम्हें क्या बताने जा रहा हूँ—मैं तुम्हें आगाह किए देता हूं कि बुरी से बुरी बात सुनने के लिए तैयार हो जाओ !"

अन्ना वासिलिएव्ना लगभग बेहोश सी हो गई।

"नहीं," निकोलाय आर्तियोमेविच एलेना की तरफ मुँह कर कहता रहा, "तुम नहीं जानतीं कि मैं क्या कहने जा रहा हूँ !"

"मैंने आपके साथ बुरा व्यवहार किया है," उसने कहना शुरू किया।

" आहा ! आखिरकार !"

" मैंने आपके साथ बुरा व्यवहार किया है," एलेना कहती रही, " क्योंकि मैंने आपके सामने पहले ही स्वीकार नहीं कर लिया—"

" और क्या तुम महसूस करती हो," निकोलाय आर्तियोमेविच ने टोका, " कि मैं एक शब्द कह कर ही तुम्हें बर्बाद कर सकता हूँ ?

एलेना ने उसकी तरफ देखा।

" हाँ, मैडम, केवल एक शब्द—घूरने से कोई फायदा नहीं !" उसने अपने हाथ बांध लिए। " क्या मैं तुमसे पूछ सकता हूँ कि तुम—नामक सड़क पर, पोवारस्काया के पास एक विशेष मकान को जानती हो ? क्या तुम उस मकान में गई हो ?" उसने अपना पैर पटका, " नाकारा लड़की जबाब दो, छिपाने की कोशिश मत करो। नौकरों ने तुम्हें देखा था, मैडम, नौकरों ने तुम्हें देखा था।

" अपनी आँखों से देखा था जब तुम भीतर गई थीं—अपने—"

एलेना लाल पड़ गई और उसकी आँखें चमक उठी।

" मुझे कोई भी बात छिपाने की कोई जरूरत नहीं है," उसने कहा, " हाँ, मैं उस घर में गई थी।"

" खूब ! सुन रही हो, अन्ना वासिलिएव्ना ? और मैं दावे के साथ कहता हूँ कि तुम्हें मालूम है कि वहाँ कौन रहता है ?"

" हाँ, मैं जानती हूँ : मेरा पति।"

निकोलाय आर्तियोमेविच की आँखें फट सी गईं।

" तुम्हारा······"

" मेरा पति," एलेना ने दुहराया, "मेरी शादी द्मित्री निकानोरोविच इन्सारोव के साथ हो चुकी है।"

" तुम······शादी शुदा," अन्ना वासिलिएव्ना कठिनता से किसी प्रकार इतना कह पाई।

" हां, माँ, माफ करना। पन्द्रह दिन पहले हम लोगों का चुपचाप विवाह हो चुका है।"

अन्ना वासिलिएव्ना कुर्सी में निढाल होकर पड़ गई। निकोलाय आर्तियोमेविच दो कदम पीछे हट गया।

"शादीशुदा! उस आवारा के साथ, उस बदमाश के साथ। निकोलाय स्ताहोव की बेटी, हमारे प्राचीन सम्भ्रान्त परिवार की एक सदस्या, एक मामूली आदमी से, एक अवारा से शादी कर लेती है: और वह भी विना अपने माता-पिता का आशीर्वाद पाये ही! और तुम सोचती हो कि मैं इस मामले को ऐसे ही छोड़ दूंगा? कि मैं शिकायत नहीं करूंगा? तुम सोचती हो कि मैं तुम्हें······कि तुम्हें······कि··· मैं तुम्हें पादरिनों के मठ में भेज दूँगा—और जहाँ तक उसका सवाल है, उसे अपराधियों के साथ सख्त सजा भुगतने के लिए भिजवा दूँगा। अन्ना वासिलिएव्ना कृपया फौरन इससे कह दो कि तुमने इसे उत्तराधिकार से वंचित किया।"

"निकोलाय आर्तियोमेविच, भगवान के लिए," अन्ना वासिलिएव्ना कराही।

"यह कब हुआ, कैसे हुआ? किसने तुम्हारी शादी की, कहाँ की? कैसे? हे भगवान हमारे दोस्त क्या कहेंगे, अब सारी दुनियाँ क्या कहेगी? बेशरम दगाबाज, तुम सोचती हो कि ऐसा काम करने के बाद तुम अपने माँ बाप के घर में रह सकती हो? तुम्हें डर नही लगा······ भगवान के कोप का भी डर नहीं लगा?"

"पिताजी," एलेना ने कहा—वह बुरी तरह काँप रही थी मगर उसका स्वर दृढ़ था—"आप मेरे साथ जो चाहें सो कर सकते हैं मगर मेरे ऊपर निर्लज्जता और धोखेबाजी का अपराध लगाने में आप अन्याय कर रहे हैं। मैं आपको इतनी जल्दी दुखी नहीं करना चाहती थी, एक या दो दिन में मुझे आपसे सारी बातें कह ही देनी पड़तीं क्यों कि अगले हफ्ते में अपने पति के साथ इस जगह को छोड़ रही हूँ।"

"तुम जा रही हो?······कहाँ जा रही हो?"

"उनके अपने देश, बल्गेरिया को।"

"तुर्कों के पास!" अन्ना वासिलिएव्ना चीखी और बेहोश हो गई।

एलेना अपनी माँ की तरफ भागी।

"निकल जाओ!" अपनी लड़की की बाँह पकड़ते हुए निकोलाय आर्तियोमेविच चीखा। "निकल जाओ, नालायक लड़की!"

मगर उसी समय दरवाजा खुला और शुबिन का सिर दिखाई दिया। उसका चेहरा पीला था और आँखों से चिन्गारियाँ निकल रहीं थीं।

"निकोलाय आर्तियोमेविच!" वह अपनी पूरी ताकत से चिल्लाया। "एवगुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना यहाँ है और तुमसे मिलना चाहती है।"

निकोलाय आर्तियोमेविच उसकी तरफ भयंकर रूप से घूमा और घूंसा दिखाया। क्षण भर चुपचाप खड़ा रहा और फिर तेजी से कमरे में से निकल गया।

एलेना अपनी माँ के चरणों पर गिर पड़ी और उसके घुटने पकड़ लिए।

× × × ×

उवार इवानोविच अपने बिस्तर पर लेटा था। उसकी बिना कॉलर वाली कमीज एक बड़े से बटन द्वारा उसकी मोटी गर्दन में चिपकी हुई थी और उसकी औरतों जैसी छाती पर हल्की पर्तों में फैली हुई, साइप्रस लड़की के बने एक विशाल क्रॉस और पवित्र वस्तुओं से भरे एक छोटे से थैले को, जिसे वह ताबीज की तरह पहने रहता था, प्रदर्शित कर रही थी। एक हल्की चादर से उसके लम्बे चौड़े अंग ढके हुए थे। बिस्तर की बगल वाली मेज पर एक मोमबत्ती मद्धिम रूप से रोशनी फेंक रही थी और उसकी बगल में क्वास (शराब) का एक बर्तन रखा हुआ था। उसके बिस्तर पर, पैरों के पास शुबिन उदास मुद्रा में बैठा था।

"हाँ," शुबिन विचारों में डूबा हुआ सा कह रहा था, "उसकी शादी

हो गई है और वह जाने की तैयारी कर रही है। तुम्हारे भतीजे ने चीख-खीख कर घर सिर पर उठा लिया था, उसने बात को गुप्त रखने के लिए अपने को सोने वाले कमरे में बन्द कर लिया था मगर नौकरों ने ही नहीं बल्कि कोचवान तक ने उसकी कही हुई सारी बातें सुन ली थीं। और इस समय भी वह गुस्से से उबल रहा है—मुझसे तो उसकी हाथापाई हो गई होती। वह उसे पैतृक प्रतिशोध की धमकी देता रहता है मगर यह सब बेकार है, उसका कोई भी नतीजा नहीं निकलेगा। एलेना की माँ हताश हो उठी है मगर वह अपनी लड़की की शादी की वजह से इतनी परेशान नहीं है जितनी कि उसके बाहर जाने की बात सुनकर है।"

उवार इवानोविच ने अपनी उंगलियाँ चलाई।

"वह उसकी माँ है," उसने कहा, "मेरा मतलब यह है कि..."

"तुम्हारा भतीजा धमकी दे रहा है कि वह आर्कविशप, गवर्नर-जनरल और मिनिस्टर से शिकायत करेगा—मगर इस सब का अन्त एलेना के बाहर चले जाने के रूप में ही होगा। कुछ भी हो, अपनी ही लड़की को बर्बाद कर देना कोई अच्छी बात नहीं है। वह इस समय हवाई घोड़े पर सवार है मगर उसे नीचे उतरना ही पड़ेगा।"

"उन्हें यह अधिकार नहीं मिलेगा कि......" उवार इवानोविच ने प्याले में से एक घूंट सुड़कते हुए कहा।

"मैं जानता हूँ, जानता हूँ......मगर सारे मास्को में अफवाहों और आलोचनाओं का एक तूफान सा उठ खड़ा होगा। एलेना को इस बात का डर नहीं था......कुछ भी हो, वह इन सब से ऊपर है। वह जा रही है और जरा सोचो तो सही कहाँ—उसका तो ख्याल तक रोंगटे खड़े कर देता है। इतनी दूर—दुनियाँ के छोर पर! और जब वह वहाँ पहुँचती है तब न मालूम उसे क्या-क्या न भुगतना पड़े। मैं कल्पना द्वारा देख रहा हूँ कि वह तीस डिग्री बरफ में रात के समय किसी सराय से बर्फीले तूफान में रवाना हो रहा है। एलेना अपने परिवार

ग्रौर अपने देश को छोड़कर जा रही है मगर मैं उसे समझ सकता हूँ। वह यहाँ अपने पीछे किसे छोड़ कर जा रही है, वह यहाँ किन्हें देखती रही है ? कुर्नातोव्स्की, बरसिएनेव और हम जैसे आदमियों को—और उनमें हमी लोग सबसे अच्छे है। चले जाने के बाद उसे किस बात का अफसोस होगा ? मगर इस मामले में एक ही बात खराब है : लोगों का कहना है कि उसका पति—हे भगवान, यह शब्द मेरे गले में किस बुरी तरह अटक जाता है—उनका कहना है कि इन्सारोव की खाँसी में खून आता है; यह बुरी बात है। मैंने उस दिन उसे देखा था : तुम वही और उसी समय उसके चेहरे को देखकर ब्रूटस का चेहरा बना सकते थे......उवार इवानोविच, तुम्हें मालूम है कि ब्रूटस कौन था ?"

"मुझे क्यों जानना चाहिए ? कोई आदमी होगा।"

"बिल्कुल ठीक : "यह एक आदमी है।" हाँ, इसका चेहरा सुन्दर है, मगर बीमार है, बहुत बीमार......"

"एक ही बात है......लड़ने की वजह से।"

"ठीक : एक ही बात है, लड़ने की वजह से। आज तुम कितनी स्पष्टता के साथ अपनी बात कह रहे हो। मगर उसके साथ रहने की बात भी वैसी ही है—और तुम जानते हो वह उसके साथ जीवन का थोड़ा-सा अनुभव करना चाहती है।

"हाँ, यही यौवन है," उवार इवानोविच ने कहा।

"हाँ, यही यौवन, यश और साहस है। यह जीवन और मृत्यु, संघर्ष, पराजय, पराजय और विजय, प्रेम, स्वतंत्रता और मातृभूमि है ! कितना सुन्दर, कितना सुन्दर ! भगवान सबको ऐसा ही दे। यह ऐसी नहीं है कि दलदल में गले तक फँसे बैठे है और ऊपर से वीरता-पूर्ण उपेक्षा का भाव दिखा रहे हैं जबकि असलियत यह है कि तुम्हें कोई भी चिन्ता नहीं है। उनके लिए तो यह ऐसा मामला है कि सारी दुनियाँ के स्वर में स्वर मिला कर चलना या नष्ट हो जाना !"

शुबिन का सिर सामने सीने पर लटक गया।

"हां," एक लम्बी खामोशी के बाद वह कहने लगा, "इन्सारोव उसके योग्य है। और फिर भी यह कितनी वाहियात बात है। एलेना के योग्य कोई भी नही है। इन्सारोव.......इस सब छलभरी विनम्रता की क्या जरूरत है। हमें यह तो स्वीकार करना चाहिए कि वह साहसी है और अपने लिए संघर्ष करना जानता है—अब तक वह हम जैसे गरीब गुनहगारों से ज्यादा तो प्राप्त नहीं कर पाया है इसलिए क्या हम सचमुच ऐसे असफल प्राणी हैं? मुझे ही ले लो, क्या मैं इतना असफल हूँ, उवार इवानोविच? क्या भगवान मुझसे पूरी तरह रूठा हुआ है? क्या उसने मुझे कोई भी योग्यता या गुण नहीं दिया है? कौन जानता है कि आगे चल कर पावेल शुबिन एक बड़ा आदमी हो सकता है। मेज पर पड़े हुए अपने उस आधे-पेनी के सिक्के को देखो: हो सकता है कि आज से सौ साल बाद यह ताँबे का छोटा सा टुकड़ा कृतज्ञ भावी सन्तति द्वारा पावेल शुबिन की स्मृति में लगाई गई एक मूर्त्ति में काम आ सकता है।"

उवार इवानोविच अपनी कुहनियों के बल झुक गया और उस उत्तेजित कलाकार को घूरने लगा।

"इसके लिए अभी बहुत लम्बा समय है," अपनी उंगलियों को हिलाते हुए अन्त में वह कह उठा। "हम दूसरों की बातें कर रहे थे मगर तुम.......मेरा मतलब है.......तुम अपने बारे में बातें शुरू कर देते हो।"

"ओ रूस के महान दार्शनिक!" शुबिन ने कहा। "तुम्हारा कहा हुआ प्रत्येक शब्द शुद्ध स्वर्ण के समान होता है: उन्हें मेरे सम्मान में मूर्त्ति खड़ी न कर तुम्हारे सम्मान में करनी चाहिए और इस काम को मैं खुद सम्हाल लूगा! इसी तरह जैसे कि तुम लेटे हुए हो—बिल्कुल इसी मुद्रा में—जिससे कि तुम यह न बता सको कि इसमें

शक्ति अधिक है अथवा आलसीपन ज्यादा है—मैं इसे इसी तरह बनाऊँगा। तुम मेरे अहंकार और आत्म-प्रशंसा पर कितनी सही चोट करते हो! तुम ठीक कहते हो, ठीक कहते हो; अपने बारे में बातें करने और डींगें हांकने से कोई लाभ नहीं। चाहे जहाँ देखो, हम लोगों में एक भी असली आदमी नहीं दिखाई पड़ता। सबके सब या तो चूहों और कीड़े मकोड़ों तथा नन्हें हैमलेटों की तरह हैं जो अज्ञान और अन्धकार पूर्ण निर्जनता में स्वयं अपना ही भक्षण कर जीवित रहते हैं या आत्म श्लाघी लोग हैं जो इधर-उधर अपना रौब डालते, समय और शक्ति का अपव्यय करते तथा अपना ढोल अपने आप पीटते फिरते हैं। या इसके अलावा एक दूसरी किस्म के लोग हैं जो ऊबा देने वाले विस्तार के साथ अपना अध्ययन करते रहते हैं, अपने द्वारा अनुभव की गई प्रत्येक भावना के साथ अपनी नब्ज टटोलते हैं और फिर अपने आप को रिपोर्ट पेश करते हैं: "मैं इस प्रकार अनुभव करता हूँ और मैं यह सोचता हूँ।" कितना फायदेमन्द और अक्लमन्दी से भरा पेशा है। नहीं, अगर हमारे बीच थोड़े से ढंग के आदमी होते तो वह लड़की, वह भावुक आत्मा हमें छोड़ कर न जाती, वह इस तरह हमारे हाथों में से न फिसल जाती जैसे कि मछली फिसल कर पानी में जा पड़ती है। ऐसा क्यों है, उवार इवानोविच? हमारे दिन कब फिरने वाले है? हम लोग सच्चे आदमियों को कब उत्पन्न करेंगे?"

"थोड़ा सब्र से काम लो," उवार इवानोविच ने जवाब दिया, "वे लोग आयेंगे।"

"वे लोग आयेंगे? धरती माता बोलती है, काली धरती की आत्मा कहती है: "वे लोग आयेंगे?" तुम देखते जाओ—जो तुम कह कर रहे हो मैं उसे नोट कर लूंगा। मोमबत्ती क्यों बुझा रहे हो?"

"मैं सोना चाहता हूँ। गुड नाइट।"

३१

शुबिन ने सत्य कहा था : एलेना के विवाह के अप्रत्याशित समाचार ने अन्ना वासिलिएव्ना को लगभग मार ही सा डाला और उसने खाट पकड़ ली। निकोलाय आर्तियोमेविच ने इस बात पर जोर दिया कि वह एलेना को अपने पास न आने दे। ऐसा लग रहा था मानो वह अपने को घर का, पूरे अर्थों में, मालिक और परिवार का मुखिया बनने का अवसर प्राप्त होने के कारण प्रसन्न हो रहा हो। वह बराबर नौकरों को डांटता फटकारता और हर समय उनसे कहता रहता : "मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि मैं कौन हूँ—तुम्हें शीघ्र ही मालूम हो जायेगा—जरा ठहरो तो सही।" जब तक वह घर पर रहता अन्ना वासिलिएव्ना एलेना से नहीं मिलती और केवल जोया के सत्संग से ही सन्तोष कर लेती। वह जर्मन नवयुवती बड़े ध्यान से उसकी देखभाल करती और मन ही मन सोचती : "'उसके' मुकाबले इन्सारोव को पसन्द करना भी कैसा अजीब सा रहा।" मगर जैसे ही निकोलाय आर्तियोमेविच बाहर चला जाता—और ऐसा प्राय: होता ही रहता था क्यों कि एवगुस्तिना क्रिश्चिएनोव्ना सचमुच लौट आई थी—तो एलेना सोने वाले कमरे में जाती और उसकी माँ आँखों में आँसू भरे चुपचाप और देर तक उसकी तरफ देखती रहती। इस खामोशी भरी डांट ने एलेना पर सबसे ज्यादा प्रभाव डाला। ऐसे समय उसके मन में पश्चाताप की भावना तो नहीं उठती थी परन्तु अपरिमित करुणा की एक ऐसी अनुभूति सी होने लगती थी जो पश्चाताप जैसी ही दुखद होती थी।

"प्यारी माँ," एलेना उसके हाथ चूमती हुई कहती, "मैं क्या करती? मेरा दोष नहीं है—मैं उसके प्रेम में पड़ गई, मैं और कुछ न कर सकी। तुम्हें भाग्य को दोष देना चाहिए; यह भाग्य की ही बात थी कि उसने मुझे एक ऐसे व्यक्ति से बांध दिया जिसे पिताजी पसन्द नहीं करते, एक ऐसा व्यक्ति जो मुझे तुमसे दूर ले जायेगा।"

"ओह, मुझे इस बात की याद मत दिलाओ," अन्ना वासिलिएव्ना

१४

ने उसे टोकते हुए कहा, "जब मैं सोचती हूँ कि तुम कहाँ जाना चाहती हो तो मेरा हृदय टुकड़े टुकड़े होने लगता है।"

"प्यारी माँ, एलेना ने उत्तर दिया," "तुम्हें यह सोचकर ही उन्तोष कर लेना चाहिए कि इससे और भी ज्यादा बुरा हो सकता था: मैं मर गई होती······।"

"मगर इस हालत में भी मुझे तुमसे फिर कभी भी मिलने की आशा नहीं है। या तो तुम वहाँ परदेश में किसी तम्बू में मर जाओगी—" वह बल्गेरिया को साइबेरिया के टुन्ड्रा प्रदेश के ही समान समझती थी—"या मैं इस विछोह को सहन नहीं कर सकूंगी······"

"ऐसा मत कहो प्यारी माँ, भगवान ने चाहा तो हम फिर मिलेंगे। और बल्गेरिया में भी ऐसे ही शहर हैं जैसे कि यहाँ हैं।"

"शहर? आजकल वहाँ लड़ाई हो रही है: आजकल तुम वहाँ किसी भी जगह जाओ, मेरा ख्याल है कि वे लोग तोपें दाग रहे होंगे······क्या तुम्हारा जल्दी ही जाने का इरादा है?"

"हाँ, अगर सिर्फ पिताजी······ तुम जानती हो कि वे शिकायत करना चाहते हैं और धमकी दे रहे हैं कि हम लोगों को तलाक दिलवा देंगे।"

अन्ना वासिलिएव्ना ने ऊपर की तरफ आँखें उठाई।

"नहीं, लेनोच्का, वह शिकायत नहीं करेंगे। मैं खुद भी इस शादी के लिए कभी भी सहमत नहीं होती, मैं फौरन ही मर जाती; मगर जो हो गया सो हो गया, मैं अपनी बेटी का अपमान नहीं होने।" दूगी

इस तरह कई दिन गुजर गए: फिर अन्त में अन्ना वासिलिएव्ना ने हिम्मत की और एक शाम को अपने पति के साथ अपने कमरे में बन्द हो गई। घर में हरेक खामोश हो उठा और कान लगा कर सुनने लगा। पहले तो कुछ भी सुनाई नहीं पड़ा फिर निकोलाय

आर्तियोमेविच की आवाज की भनभनाहट आई; बहस छिड़ गई, चीखें आने लगीं और कराहने की सी आवाजें भी आईं। शुबिन, जो जोया और नौकरानियों के साथ था, एक बार फिर रक्षा करने के लिए भीतर जाने की तैयारियां कर रहा था कि कमरे के भीतर होने वाला शोर धीरे धीरे बन्द होने लगा, शान्त वार्तालाप में बदला, फिर गायब हो गया। सिर्फ कभी-कभी एक हिचकी सुनाई पड़ जाती थी और फिर वह भी बन्द हो गई। उन्होंने चाबियों के खनकने की और आलमारी खुलने की आवाज सुनी......दरवाजा खुला और निकोलाय आर्तियोमेविच बाहर निकला। हरेक की तरफ कठोरता के साथ देखता हुआ वह क्लब चला गया। अन्ना वासिलिएव्ना ने अपनी बेटी को बुलवाया। बुरी तरह रोते हुए उसने एलेना को बांहों में भर लिया और कहा:

"सब तय हो गया है, वे अब कोई ऊधम नहीं उठायेंगे...... और अब तुम्हें जाने से कोई भी रोकने वाली बात नहीं रही...... और हम लोगों को छोड़ कर जाने से तुम्हें नहीं रोका जायेगा।"

"क्या तुम द्मित्री को यहाँ आने और अपने को धन्यवाद देने की आज्ञा दे दोगी?" जैसे ही अन्ना वासिलिएव्ना थोड़ी सी शान्त हुई एलेना ने अपनी माँ से पूछा।

"ठहरो, बेटी, इस समय मैं उस व्यक्ति से मिलने का साहस नहीं कर सकती जिसने हमें अलग कर दिया है......तुम्हारे जाने से पहले हम लोग इसका प्रबन्ध कर लेंगे।"

"हमारे जाने से पहले," एलेना ने उदास होकर दुहराया।

निकोलाय आर्तियोमेविच मुसीबत खड़ी न करने के लिए राजी हो गया था मगर अन्ना वासिलिएव्ना ने अपनी बेटी को यह नहीं बताया कि इस समझौते के लिए उसने क्या कीमत मांगी थी। उसने उसे यह नहीं बताया कि उसने उसके पिता का सारा कर्ज चुका देने का वायदा कर लिया था और यह कि उसने उसे उसी समय एक हजार रूबल दे दिए थे। इसके अलावा उसने अन्ना वासिलिएव्ना

से जोर देते हुए यह कहा था कि वह इन्सारोव से, जिसे कि वह बराबर एक आवारा बताता रहा था, नहीं मिलेगा। फिर भी, जब वह क्लब पहुँचा तो ताश के अपने एक साथी से, जो इन्जीनियर कोर का एक अवकाश प्राप्त जनरल था, बड़ी प्रसन्नता के साथ अपनी बेटी के विवाह के विषय में बातें करता रहा। "तुमने मेरी बेटी के विवाह के विषय में सुना है?" उसने बनावटी उपेक्षा का सा भाव धारण कर कहा; "उसकी शिक्षा ने उसके दिमाग पर यहाँ तक प्रभाव डाला कि उसने किसी विद्यार्थी से शादी कर ली।" जनरल ने अपने चश्मे में से उसकी तरफ देखा, 'हुह' कहा और पूछा कि वह कौन सा पत्ता चल रहा था।

३२

प्रस्थान का दिवस पास आ गया। नवम्बर लगभग समाप्त हो चला था; देर करने से फिर जाना बड़ा मुश्किल हो उठेगा। इन्सारोव ने बहुत पहले ही अपनी तैयारियां पूरी कर लीं थीं और जल्दी से जल्दी मास्को से भाग जाना चाहता था। डाक्टर ने भी उससे जल्दी चले जाने के लिए कह दिया था: "तुम्हें गर्म आवहवा की जरूरत है!" उसने कहा था, "तुम यहाँ ठीक नहीं हो पाओगे।" एलेना भी अधीर हो उठी थी। इन्सारोव के पीलेपन और वजन कम हो जाने से वह चौंक उठी थी। कभी-कभी वह उसके बदले हुए चेहरे को देखकर अपने आप कांप उठती थी। घर में उसकी स्थिति असहनीय होती जा रही थी। उसकी माँ इस तरह विलाप करती थी मानो वह मर गई हो जबकि उसके पिता के व्यवहार से शान्त घृणा टपकती रहती थी। वह भी गुप्त रूप से उस आने वाले वियोग

से दुखी था मगर उसने अपना यह कर्त्तव्य, क्रुद्ध माता-पिता का कर्त्तव्य समझा कि अपनी भावनाओं और कमजोरियों को छिपा जाये। अन्त में अन्ना वासिलिएव्ना ने कहा कि वह इन्सारोव से मिलना पसन्द करेगी। वे लोग उसे चुपचाप, पिछले दरवाजे से ले आये। जब वह कमरे में घुसा तो वह बहुत देर तक उससे बात ही न कर सकी, यहाँ तक कि उसकी तरफ देखने तक की हिम्मत न हुई। इन्सारोव उसकी आरामकुर्सी की बगल में बैठ गया और शान्त विनम्रता के साथ अन्ना वासिलिएव्ना द्वारा पहले बोले जाने की प्रतीक्षा करने लगा। एलेना अपनी माँ का हाथ पकड़े उनके साथ बैठ गई। अन्त में अन्ना वासिलिएव्ना ने ऊपर निगाहें उठाईं और बोली: "भगवान तुम्हारा न्याय करेगा द्मित्री निकानोरोविच," और फिर चुप हो गई; डांटने-फटकारने की बात होंठों में ही रह गई।

"लेकिन तुम बीमार हो!" वह चिल्लाई, "एलेना, तुम्हारा पति बीमार है!"

"मैं बीमार रहा था, अन्ना वासिलिएव्ना," इन्सारोव ने उत्तर दिया, "और अब भी पूरी तरह ठीक नहीं हो पाया हूं। मगर मुझे आशा है कि मेरे देश की आब हवा में अन्त में मेरी तन्दुरुस्ती ठीक हो जायेगी।"

"हाँ......बल्गेरिया!" अन्ना वासिलिएव्ना बुदबुदाई मगर उसने सोचा: "हे भगवान, एक बल्गेरियन, ... मरता हुआ आदमी, बैठी हुई आवाज वाला, प्याले जैसी धंसी हुई आँखें, चमड़े की तरह पीला, जाकेट में भरा हुआ हड्डियों का थैला सा, जाकेट ऐसी लगती है मानो किसी दूसरे की हो......और एलेना इसकी पत्नी है, वह उससे प्रेम करती है—ओह, यह सब तो किसी बुरे सपने के समान है!" मगर उसने फौरन ही अपने को सम्हाल लिया। "द्मित्री निकोनोरोविच," वह बोली, "क्या यह जरूरी है;......क्या यह जरूरी है कि तुम जाओ?"

"हाँ, जरूरी है, अन्ना वासिलिएव्ना।"

अन्ना वासिलिएव्ना ने उसकी तरफ देखा।

"ओह, द्मित्री निकानोरोविच, तुम्हें कभी भी वह वेदना न भोगनी पड़े, जो इस समय मैं भोग रही हूँ!······तुम मुझसे वायदा करते हो कि इसकी देखभाल करोगे और प्रेम करोगे! जब तक मैं जिन्दा हूं तुम्हें किसी भी चीज के लिए तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी······"

आँसुओं में उसके शब्द डूब गए। उसने अपनी बांहें फैलाईं और एलेना और इन्सारोव दोनों को आलिंगन में बांध लिया।

× × ×

अन्त में वह दुखदायी दिवस आ पहुँचा। यह तय किया गया था कि एलेना अपने माता-पिता से घर पर ही विदा ले लेगी परन्तु यात्रा का प्रारम्भ इन्सारोव के घर से ही होगा। उन्हें बारह बजे रवाना होना था। निश्चित समय से पन्द्रह मिनट पहले बरसिएनेव आ पहुँचा। उसने इन्सारोव के साथियों को भी वहाँ देखने की आशा कर रखी थी क्योंकि उसका ख्याल था कि वे उसे विदा करने आयेंगे; मगर वे सब उससे पहले ही आगे चल दिए थे। यहाँ तक कि वे दो रहस्यमय व्यक्ति भी, जिनसे पाठक पहले ही परिचित हैं—और जिन्होंने, संयोगवश, विवाह के समय गवाहों का काम दिया था, जा चुके थे। दर्जी ने, 'उस रहम दिल सज्जन' को झुककर सलाम किया। वह बुरी तरह शराब पीता रहा था, शायद दुख के कारण परन्तु हो सकता है कि इस प्रसन्नता के कारण भी जो उसे इन्सारोव का सामान मिल जाने से हो रही थी। उसकी घरवाली उसे फौरन वहाँ से हटा ले गई। कमरा पूरी तरह ठीक कर दिया गया था। रस्सी से बंधा हुआ ट्रंक फर्श पर रखा था। बरसिएनेव गम्भीर था, उसके मस्तिष्क में स्मृतियों की सेना चक्कर काट रही थी।

बारह कभी के बज चुके थे। कोचवान स्लेज गाड़ी को दरवाजे पर ले आया था मगर फिर भी कोई नहीं आया। अन्त में सीढ़ियों पर तेज कदमों की आवाज सुनाई पड़ी और एलेना इन्सारोव और शुबिन के साथ कमरे में घुसी। एलेना की आँखें लाल थीं। यह वियोग बड़ा दुखद रहा था। वह अपनी माँ को बेहोशी की हालत में छोड़कर आई थी......यह पहला मौका था जब एलेना ने हफ्ते भर से भी ज्यादा दिन बाद बरसिएनेव को देखा था। इधर वह स्ताहोव-परिवार में बहुत कम गया था और एलेना को उसके यहाँ मिलने की आशा नहीं थी।

"तुम !" आलिंगन करने के लिए उसकी तरफ दौड़ती हुई एलेना चीखी। "धन्यवाद !" फिर इन्सारोव ने भी उसका आलिंगन किया।

इसके बाद एक कचोटने वाली खामोशी छा गई। ये तीनों आदमी एक दूसरे से क्या कहते ? उनके हृदय में कैसी भावनायें उठ रहीं थीं ? शुबिन ने अनुभव किया कि इस बात की जरूरत है कि कुछ बोला जाय, इस बोझीली खामोशी को तोड़ने के लिए कुछ कहा जाय।

"देखो, हमारी त्रिमूर्त्ति यहाँ फिर मिल गई है," उसने कहा, "आखिरी बार इकट्ठी हुई है। हमें अपने भाग्य को स्वीकार कर लेना चाहिए और बीती हुए बातों को सद्भावना पूर्वक याद करना चाहिए—और भगवान की सहायता से अपना नया जीवन प्रारम्भ करना चाहिए।" "आगे बढ़ो, हमारी लम्बी यात्रा में भगवान हमारा सहायक हो !" उसने गाना प्रारम्भ किया..........और रुक गया। एकाएक उसे भद्दा सा लगा और शरमा गया। मरे हुए के सामने इस तरह गाना बड़ा भद्दा सा लगा—और उस क्षण, उस कमरे में, गुजरा हुआ जमाना मर रहा था, वह गुजरा हुआ जमाना जिसके विषय में वह बातें कर रहा था, उन सब का गुजरा हुआ जमाना जो वहाँ इकट्ठे हुए थे। हो सकता है कि वह एक नई जिन्दगी को जन्म देने के लिए मर रहा था—मगर फिर भी, वह मर रहा था।

"अच्छा, एलेना," इन्सारोव ने अपनी पत्नी की तरफ मुड़ते हुए कहा, "मेरा ख्याल है, सब कुछ इतना ही है। सब को पैसे दे दिए गए हैं, सब सामान बँध चुका है। सिर्फ उस ट्रन्क को नीचे ले जाना रह गया है। मकान-मालिक !"

मकान-मालिक अपनी घरवाली और बेटी के साथ भीतर आया। थोड़ा सा झूमते हुए उसने इन्सारोव की आज्ञाओं को सुना, फिर ट्रन्क अपने कन्धे पर उठाया और खट खट करता हुआ सीढ़ियों पर तेजी से उतर गया।

"और अब, रूसी प्रथा के अनुसार हम सब को बैठ जाना चाहिए," इन्सारोव ने कहा।

वे बैठ गए। बरसिएनेव एलेना के साथ पुराने सोफे पर बैठा। मकान-मालिक की घरवाली और बेटी चौखट पर उकड़ूँ बैठ गईं। सब खामोश थे, सब अजीब तरह से मुस्करा रहे थे और कोई भी यह नहीं बता सकता था कि वे क्यों मुस्कराये थे······वे सब के सब इस अवसर के लिए विदाई के कुछ शब्द कहना चाहते थे मगर सब ने अनुभव किया कि ऐसे अवसर पर केवल साधारण बातें करना ही सम्भव था, कि कोई भी विशेष या चतुराई भरी बात, यहाँ तक कि भावुकता से भरा कोई भी शब्द कहना इस समय बनावटी और बेमौके का मालूम देगा। सबसे पहले इन्सारोव उठ खड़ा हुआ।

"विदा, नन्हें कमरे," उसने जोर से कहा और अपने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाया।

चारों तरफ चुम्बन छा रहे थे, विदा के चुम्बन जिनमें ध्वनि तो थी परन्तु जोश नहीं था। यात्रा के लिए आधी कही गई शुभ कामनायें, पत्र लिखने की प्रतिज्ञायें, विदा के लिए अटक अटक कर कहे जाने वाले शब्द कमरे में छा रहे थे······

एलेना स्लेज गाड़ी में बैठ चुकी थी, उसके गालों पर आँसू बह

रहे थे। इन्सारोव उत्सुकता पूर्वक कम्बल मे उसके पैर ढँक रहा था। शुबिन, बरसिएनेव, मकान-मालिक, उसकी घरवाली और बेटी, कुली और एक फटा हुआ झंगा पहने एक अपरिचत मजदूर आदि सब सीढ़ियों के पास खड़े थे—जब कि एकाएक मजबूत घोड़ों से खींची जाती हुई एक सुन्दर स्लेज गाड़ी तेजी से अहाते में घुमी और रुक गई। उसमें से अपने ओवर कोट के कॉलर पर से बरफ झाड़ता हुआ निकोलाय आर्तियोमेविच उतरा।

"भगवान को धन्यवाद है कि मैं समय पर आ पहुँचा," वह चीखा और दूसरी स्लेजगाड़ी की तरफ दौड़ा। "एलेना, यह तुम्हारे लिए हमारा अन्तिम आशीर्वाद है," उसने छतरी के नीचे सिर झुकाते और अपनी जाकेट की जेब में से मखमली थैले में सिली हुई एक छोटी सी पवित्र मूर्त्ति निकालते हुए कहा। जब उसने उसे एलेना की गर्दन में पहनाया तो वह रोने और उसके हाथों को चूमने लगी।······इस बीच निकोलाय आर्तियोमेविच के कोचवान ने बक्स के नीचे से शैम्पेन की एक बोतल और तीन ग्लास निकाल लिए थे।

"तो अब," स्ताहोव ने कहा और उसके कोट के ऊदबिलाव के चमड़े से बने कॉलर पर आँसू गिरते रहे, "अब हमें तुम्हें—हमें तुमको—" उसने शैम्पेन गिलासों में भरी; उसका हाथ कांपा, झाग किनारे को पार कर नीचे बरफ पर गिर पड़े। उसने एक गिलास खुद लिया, एक एलेना को दिया और दूसरा इन्सारोव को, जो इस समय एलेना की बगल में बैठ चुका था। "भगवान तुम्हें······" उसने कहना प्रारम्भ किया, मगर पूरा वाक्य न कह सका और शराब पी······एलेना और इन्सारोव ने उसके साथ पी। फिर निकोलाय आर्तियोमेविच बरसिएनेव और शुबिन की तरफ मुड़ा। "अब तुम लोगों को भी पीना चाहिए, सज्जनो," उसने कहा; मगर उसी समय कोचवान ने घोड़ों को हाँक दिया। निकोलाय आर्तियोमेविच

स्लेजँ के साथ साथ दौड़ा। "देखो, खत जरूर लिखना," उसने व्याकुल होकर कहा। एलेना ने अपना सिर बाहर निकाला। "विदा, एन्द्री पेत्रोविच, पावेल याकोव्लेविच, सब को विदा, रूस को विदा!" वह पीछे झुक गई। कोचवान ने अपना हन्टर फटकारा और सीटी बजाई और स्लेज जमी हुई बरफ पर उछलती हुई फाटक से दाहिनी तरफ मुड़ी और गायब हो गई।

३३

अप्रेल का एक सुहावना दिन था। उस चौड़ी खाड़ी पर जो वेनिस को लीडो से अलग करती है—समुद्र द्वारा इकट्ठी की हुई बालू की एक संकरी पट्टी—सी एक हलकी नाव जिसका अगला हिस्सा नोकीली था, नाव वाले की लम्बी पतवार की प्रत्येक हरकत पर धीरे-धीरे, ताल के साथ हिलती-डुलती चली जा रही थी। नीचे चंदोवे के नीचे, मुलायम चमड़े के गद्दों पर एलेना और इन्सरोव बैठे हुए थे।

मास्को से आने के बाद से एलेना की रूपरेखा थोड़ी सी बदल गई थी मगर उसके चेहरे के भावों में सतर्कता भरी हुई थी। चेहरा पहले से अधिक कठोर और गम्भीर हो गया था। उसकी आँखों में अधिक साहस का भाव भर रहा था। उसका पूरा शरीर खिला सा पड़ रहा था। उसके बाल उसके पीले माथे और गुलाबी गालों पर अधिक घने और लम्बे से लगने लगे थे। केवल उसके मुँह के पास, मुश्किल से दिखाई पड़ने वाली रेखायें, उसकी गुप्त और सदैव बनी रहने वाली चिन्ता को प्रकट करतीं थीं और वह भी केवल उस समय जब वह मुस्कराना बन्द कर देती थी। दूसरी तरफ इन्सारोव के चेहरे पर वही पहले का सा

भाव था मगर उसकी रूपरेखा भयंकर रूप से बदल चुकी थी। वह अधिक दुबला, पीला और अधिक उम्र का दिखाई पड़ता था। उसका शरीर कुछ झुक सा गया था। वह हमेशा हल्की और सूखी खांसी खांसता रहता था और उसकी धंसी हुई आँखें एक विचित्र चमक से चमकती रहतीं थीं। रूस से आते समय उसे लगभग एक महीने तक वियना में पड़ा रहना पड़ा था। वे लोग वेनिस में मार्च के अन्त तक आ पहुँचे थे। वहाँ से वह जारा होकर सर्बिया और बल्गेरिया पहुँचने की आशा कर रहा था क्योंकि और सब रास्ते उसके लिए बन्द हो चुके थे। इस समय तक डेन्यूब पर लड़ाई छिड़ गई थी। फ्रांस और इन्गलेन्ड ने रूस के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी थी। सारे स्लाविक देशों में उथल-पुथल मच गई थी और वे विद्रोह की तैयारियाँ कर रहे थे।

वह हल्की नाव लीडो के भीतरी किनारे पर आकर लगी। एलेना और इन्सारोव एक संकरी रेतीली पगडन्डी पर उतर पड़े। इस पगडन्डी पर मुरझाई सी दिखाई पड़ने वाली झाड़ियाँ उग रहीं थीं (ये झाड़ियां हर साल उगती थीं और उसी साल सूख जाती थीं)। वे लोग चलते-चलते लीडो के समुद्र की तरफ वाले बाहरी हिस्से में पहुँच गए।

वे तट के किनारे-किनारे घूमते रहे। एड्रियाटिक सागर अपने गंदले, गहरे नीले पानी की लहरों द्वारा उनके पैरों के पास लोटता रहा। झाग से भरी और फुफकारती लहरें तट से टकरातीं और लौट जातीं तथा किनारे पर छोटी-छोटी सीपियों और समुद्री वनस्पतियों का ढेर सा छोड़ जातीं।

"कैसा सूखा प्रदेश है!" एलेना बोली। "मुझे भय है कि यहाँ की जलवायु तुम्हारे लिए बहुत ठंडी साबित होगी। मगर मैं अन्दाज़ लगा सकती हूं कि तुम यहाँ क्यों आना चाहते थे।"

"बहुत ठंड है!" इन्सारोव ने एक तीव्र कटु मुस्कान के साथ

उत्तर दिया। "अगर मैं इस ठंड से डर गया तो एक अच्छा सिपाही बन लिया। और यह कि मैं यहाँ क्यों आया, इसका कारण बताता हूँ मैं समुद्र को देखता हूं और मुझे अनुभव होता है कि मैं अपने देश के ज्यादा नजदीक हूँ। यह वहाँ है," उसने पूर्व की ओर हाथ करते हुए आगे कहा, "वहाँ जहाँ से हवा आ रही है।"

"क्या यह हवा उस जहाज को ले आयेगी जिसका कि तुम इन्तजार कर रहे हो?" एलेना ने कहा, "देखो, वहाँ एक सफेद पाल दिखाई पड़ रहा है, क्या यह वही हो सकता है?"

इन्सारोव ने एलेना के फैले हुए हाथ की दिशा में दूर देखा।

"रेन्डिच ने हफ्ते भर के भीतर सारा इन्तजाम कर देने का वायदा किया था," इन्सारोव ने कहा; "मेरा ख्याल है हम उस पर भरोसा कर सकते हैं······एलेना," एकाएक उल्लसित होते हुए उसने आगे कहा, "तुमने सुना है कि उन बेचारे डालमेशियन मछुओं ने शीशे के उन टुकड़ों का क्या किया था जिन्हें वे अपने जालों में भार के स्थान पर बांधा करते हैं? उन्होंने वे गोलियाँ बनाने के लिए दे डाले थे! उनके पास पैसे नहीं थे—सिर्फ मछली पकड़ कर अपना पेट पालते थे, फिर भी उन्होंने खुशी के साथ अपनी अन्तिम निधि दे डाली और आजकल वे भूखों मर रहे हैं। तुम्हें ऐसे ही आदमी मिलेंगे।"

"होशियार!" उनके पीछे एक क्रोधभरी आवाज गूंज उठी। उन्होंने घोड़े की टापों की आवाज सुनी और एक छोटी भूरी पोशाक और हरी चोटीदार टोपी पहने एक आस्ट्रिया का अफसर उनकी बगल में होकर घोड़ा दौड़ाता निकल गया। वे चोट खाने से बाल-बाल बच सके।

इन्सारोव ने उसकी तरफ गम्भीरता से देखा।

"उसका दोष नहीं है," एलेना बोली, "तुम जानते हो कि उनके

पास अपने घोड़ों को अभ्यास कराने के लिए और कहीं भी जगह नहीं है।"

"नहीं, उसका दोष नहीं है," इन्सारोव ने कहा, "मगर उसके उस चिल्लाने, उन मूंछों तथा उस चोटीदार टोपी और उसकी हर चीज को देखकर मेरा खून खौल उठता है। चलो, वापस चलें।"

"हाँ, वापस चलेंगे द्मित्री। साथ ही यहाँ सचमुच काफी ठंड है। तुमने मास्को में अपनी बीमारी के बाद अपनी परवाह नहीं की थी और वियना में आकर उसकी कीमत चुकानी पड़ी। अब तुम्हें अधिक सावधान रहना चाहिए।"

इन्सारोव खामोश था। केवल उसके होठों पर वही कटु मुस्कान खेल उठी।

"मैं जानती हूँ कि हमें क्या करना है," एलेना कहती रही, "हमें ग्रान्ड कैनाल (बड़ी नहर) से होकर वापस लौटना चाहिए। तुम्हें मालूम ही है कि वेनिस में आने के बाद से हम लोग वेनिस को अच्छी तरह से नहीं देख पाये हैं। आज शाम को हम लोग थियटेर चल रहें हैं। मेरे पास 'बॉक्स' की दो टिकटें हैं। लोगों का कहना है कि वे लोग एक नया नाटक खेल रहे हैं। द्मित्री आज का दिन तो हमें एक दूसरे के लिए ही दे देना चाहिए। हम आज राजनीति, युद्ध और हर बात को भूल जायं और सिर्फ यही याद रहे कि हम साथ-साथ जिन्दा हैं, सांस ले रहे हैं और सोच रहे हैं कि हम हमेशा के लिए एक दूसरे के हैं। क्या हमें ऐसा करना चाहिए ?"

"तुम चाहती हो एलेना," इन्सारोव ने उत्तर दिया, "इसलिए मैं भी चाहने से इन्कार नहीं कर सकता।"

"मैं जानती हूँ," एलेना ने मुस्कराते हुए कहा। "अब चलो, चलें।" वे नाव पर वापस आ गए और नाव वाले से कहा कि वह उन्हें धीरे-धीरे ग्रान्ड कैनाल के सहारे-सहारे ले चले।

\+ \+ \+ \+

जिसने वेनिस को अप्रैल के महीने में नहीं देखा वह उस अत्यन्त आकर्षक नगर के अवर्णनीय सौन्दर्य और उसकी पूर्णता को नहीं जान सकता। बसन्त की धूप के सौन्दर्य और कोमलता का वेनिस पर वही प्रभाव पड़ता है जो जेनेवा पर गर्मियों की चमकीली धूप का तथा नगरों में सबसे पुराने नगर रोम पर शिशिर ऋतु की सुनहली और बैंगनी रंग वाली धूप का। और जिस तरह वसन्त हमें प्रफुल्लित कर हमारी इच्छाओं को तीव्र कर देता है वही काम वेनिस का सौन्दर्य करता है। वह भोले हृदयों को एक प्रकार के ऐसे भयानक आनन्द से भर कर छेड़ता और तरसाता है, एक ऐसे आनन्द से भरकर जो साधारण और फिर भी रहस्यपूर्ण दोनों ही प्रकार का होता है। नगर में चारों तरफ हल्का और प्रसन्नता से भरा वातावरण छाया रहता है, फिर भी चारों तरफ निर्मल विलास से भरी एक उदासी सी टपकती रहती है। हर चीज खामोश मगर फिर भी ललचाती हुई सी लगती है। उसकी हर चीज से जनानापन सा टपकाता है यहाँ तक कि उसका नाम भी ऐसा ही है। यह बात नहीं कि वेनिस को 'सुन्दर वेनिस' व्यर्थ ही कहा जाता हो। उठते हुए झुण्ड के झुण्ड महल और गिरजे इतने हल्के और आश्चर्य से भरे से लगते हैं मानो किसी नवयुवक देवता की सुन्दर स्वप्नों से भरी कोई सृष्टि हो। उसकी उस भूरापन लिए हरियाली चमक में, उसकी नहरों के पानी की लहरों की शान्त और मखमली सी चमक में, किश्तियों की शान्त गति में, नगरों में प्रायः भरी रहने वाली चीख पुकारों के न रहने में, शोरोगुल, हलचल और भयानक आवाजों से स्वतन्त्र रहने में एक छलावा और जादू सा भरा रहता है। "वेनिस मर रहा है, वेनिस उजड़ रहा है," उसके निवासी तुमसे यही बात कहेंगे। परन्तु यह हो सकता है कि पहले उसमें ऐसा आकर्षण न रहा हो, एक ऐसे नगर का आकर्षण जो अपनी पूर्णता पर पहुँच कर मुरझा रहा हो। कोई भी, जिसने उसे नहीं देखा, उसे नहीं जानता : न केनालेत्तो और न गुआर्दी (आजकल के चित्रकारों की तो बात ही क्या करना) उसकी हवा

की, उसकी पेड़ों की पंक्तियों की, जो इतनी पास-पास और फिर भी इतनी अस्थिर हैं, उसकी सुन्दर रेखाओं के इतने अद्भुत सन्तुलित मिश्रण और घुलते हुए रंगों की उस रुपहली कोमलता को अंकित करने में असमर्थ रहे हैं। दर्शक के लिए, जिन्दगी के कडुवेपन से टूटा फूटा वेनिस कुछ भी नहीं दे सकता। उसके लिए वह उसी प्रकार कटुता से भरा हुआ लगता है जैसे कि जीवन के प्रभात के अधूरे स्वप्नों की स्मृति कड़वी लगती है। परन्तु उसे, जिसमें अब भी शक्ति और आत्म-विश्वास है, वह मधुर लगेगा। उसे अपनी प्रसन्नता को वेनिस में लाकर उसके आकर्षक आकाश के नीचे विकीर्ण कर देने दो और उसकी प्रसन्नता जितनी ही अधिक उज्ज्वल होगी वेनिस उसको अपनी शाश्वत निर्मलता से और उतना ही अधिक सुन्दर बना देगा।

वह नाव जिसमें इन्सारोव और एलेना बैठे हुए थे 'रिवा देगली शियावोनी,' 'दोगे का राजमहल' और पियाज्जेट्टा की बगल में होकर चुपचाप आगे निकल 'ग्रान्ड कैनेल' में आ गई। इसके दोनों किनारों पर संगमरमर के महल बने हुए थे। वे ऐसे लगते थे मानो चुपचाप बगल में से तैरते चले जा रहे हों और मुश्किल से आँखों को इतना अवसर देते हों कि वह उन्हें ध्यान से देख सकें और उनके सम्पूर्ण सौन्दर्य को हृदयंगम करा सकें। एलेना अत्यधिक प्रसन्न थी। उसके निर्मल आकाश में केवल एक ही काला बादल था और वह भी काफी दूर चला गया था क्योंकि इन्सारोव की तबियत उस दिन काफी अच्छी थी। वे लोग रियाल्तो पुल की ऊँची महराव तक गए और फिर लौट पड़े। एलेना गिरजा-घरों को देखने में डर रही थी क्योंकि इन्सारोव को ठंड लग जाने का भय था परन्तु उसे 'अकादमी दि बेली आर्ती,' का ख्याल आया और नाव वाले से वहाँ चलने के लिए कहा। यह एक छोटा सा अजायबघर था और वे उसकी सारी गैलरियों में जल्दी ही घूम लिये। वे न तो कला-पारखी थे और न कलानुरागी इसलिए प्रत्येक चित्र के सम्मुख रुकने और उसे

देखने की उन्हें इच्छा नहीं हुई । वे एकाएक उमंग से भर उठे थे इसलिए उन्हें प्रत्येक वस्तु मनोरंजक प्रतीत होने लगी थी यह एक ऐसी प्रसन्नता थी जो प्रायः बच्चों में भर उठती है । तिनतोरेत्तो नामक कलाकार द्वारा बनाए गए सन्त मार्क के एक चित्र को देखकर एलेना के हंसते-हंसते आँसू निकल पड़े । इस चित्र में सन्त मार्क एक सताये गए गुलाम की रक्षा के लिये आसमान से कूदता हुआ इस प्रकार का लग रहा था मानो कोई मेंढ़क पानी में छलांग लगा रहा हो । और अपनी इस हंसी द्वारा एलेना ने तीन अंग्रेज दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया । इन्सारोव एक हरा लबादा पहने चौड़ी पीठ और गठीली पिंडलियों वाले एक शक्तिशाली पुरुष के चित्र को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, जो टिटियान के 'कल्पना' नामक चित्र के अग्रभाग में 'मेडोना' की तरफ अपना हाथ फैलाये खड़ा दिखाया गया है । दूसरी तरफ 'मेडोना' स्वयं सुडौल और सुन्दर भव्य शान्ति के साथ 'दैवी पिता' के हृदय की तरफ बढ़ रही है। इस चित्र को देखकर दोनों आश्चर्यचकित हो उठे। और उन्होने प्राचीन कलाकार सिमा दे कोनेग्लियानो द्वारा बनाए गए एक कठोर पवित्र भाव को व्यक्त करने वाले चित्र को भी पसन्द किया। अकादमी से बाहर निकलते समय उन्होंने एक बार फिर उन तीन अंग्रेजों की तरफ, जिनके दाँत लम्बे और गलमुच्छे झबरीले थे, मुड़ कर देखा और हँसने लगे। वे लोग उस समय हँसे जब उन्होंने छोटी जाकेट और पाजामा पहने हुए अपने नाव वाले को देखा। वे लोग उस समय और भी खिलखिला कर हँसे जब उन्होंने अपने सिर के ऊपर भूरे बालों की चोटी बाँधे एक फेरीवाली स्त्री को देखा। और अन्त में उन्होंने एक दूसरे की आँखों में देखा और फिर हँस पड़े। कितने प्रेम के साथ उन्होने एक दूसरे का हाथ दबाया । वे होटल लौटे, जल्दी से कमरे की तरफ भागे और भोजन लाने की आज्ञा दी । भोजन के समय भी उनकी वह प्रसन्न मुद्रा वैसी ही रही । उन्होंने एक दूसरे के और मास्को वाले अपने मित्रों के स्वास्थ्य की

कामना करते हुए जाम पिए, वेंटर को सुन्दर जायकेदार मछली लाने के लिये बधाई दी और फिर जिन्दा मछली लाने का हुक्म दिया। वेटर ने पैर पटके, कन्धे उचकाये और कमरे से बाहर जाकर सिर हिलाया और एक गहरी साँस लेते हुये बड़बड़ाया : "बेचारे!" भोजन के उपरान्त वे दोनों थियेटर को चल दिये।

वर्दी का 'त्रावियाता' नामक एक नाटक खेला जा रहा था। जो था तो बड़ा मालूमी सा खेल मगर ऐसा जो यूरोप के सम्पूर्ण नगरों में सफलता के साथ प्रदर्शित हो चुका था और जिसे हम रूसी लोग तक भी जानते हैं। वेनिस का सीजन खत्म हो चुका था और कोई भी गाने वाला सामान्य उदासीनता से भरे स्तर से ऊपर न उठ सका। पात्र अपनी पूरी शक्ति के साथ अपने पार्ट को बोलते रहे। वाइओलेट्टा का अभिनय एक साधारण स्थिति की गायिका ने किया जिस प्रकार कि जनता ने उसका स्वागत किया उससे यह सावित हुआ कि उसे जनता अधिक पसन्द नहीं करती थी यद्यपि उसमें योग्यता की कमी नहीं थी। वह गायिका काली आँखों वाली साधारण रूप से सुन्दर नवयुवती थी। उसकी आवाज पूरी तरह से सधी हुई नहीं थी और उसके स्वर की पवित्रता नष्ट हो चुकी थी। वह विचित्र प्रकार के विभिन्न रंगों के भद्दे से मिश्रण से बनी एक बदसूरत सी लगने वाली पोशाक पहने थी—सिर पर लाल रंग की बालों पर लगाने वाली जाली थी, कमर के ऊपर एक फीके आसमानी रंग की साटिन की बनी अत्यन्त कसी हुई चोली, और हाथों में कुहनियों तक पहुँचने वाले चमड़े के दस्ताने पहने थी। और सचमुच एक ऐसी लड़की जो बेरगामो के रहने वाले एक किसान की बेटी थी यह कैसे जान सकती थी कि पेरिस की वेश्यायें किस तरह की पोशाकें पहनती हैं? उसे तो यह तक भी नहीं आता था कि स्टेज पर कैसे जाया जाता है। परन्तु उसके अभिनय में निष्कपटता और कलाहीन सरलता का अत्यधिक समावेश था और उसने ऐसी विचित्र भावुकता भरी भावभंगी

१५

और लय के साथ गाया जो इतालवी स्वरों में पाई जाती है। एलेना और इन्सारोव रंगमंच के पास अंधेरे बक्स में अकेले बैठे थे। मन की वह प्रफुल्लता जो उस आर्ट गैलरी में उनके मन में भर उठी थी अब भी उन पर छाई हुई थी। जब मटर के से हरे रंग का टेल-कोट और बिखरे बालों वाली सफेद विग (टोपी) लगाए एक व्यक्ति रंगमंच पर आया—वह उस अभागे नौजवान का पिता था जो एक बदमाश औरत के पंजों में फँस जाता है—तो उसने अपना मुँह तिरछा कर के खोला और स्पष्ट रूप से परेशान सी होकर उदास और काँपते हुए भारी स्वर में राग अलापा जिसे सुनकर एलेना और इन्सारोव दोनों खिलखिला कर हँस उठे। फिर भी उस वाइओलेट्टा ने उन पर एक सच्चा प्रभाव डाला था।

"उन्होंने उस बेचारी लड़की की जरा भी प्रशंसा नहीं की," एलेना ने कहा, "फिर भी मैं एक दम्भी, मामूली सी प्रसिद्धि प्राप्त गाने वाली से, जो सिर्फ आडम्बर दिखाती, अपने को समझती और दूसरों को प्रभावित करने का प्रयत्न करती रहती है, इसे लाख दर्जे ज्यादा पसन्द करती हूँ। ऐसा लगता है मानो वह जो अभिनय करती है उसका वास्तविक अनुभव भी कर रही हे। तुमने देखा कि वह दर्शकों की तरफ ध्यान भी नहीं देती।"

इन्सारोव बॉक्स के ऊपर झुका और गौर से वाइओलेट्टा की तरफ देखा।

"हाँ," उसने कहा, "उसमें वास्तविकता है; हवा में मौत की दुर्गन्ध भर रही है।"

इस पर एलेना खामोश रही।

तीसरे अंक का पर्दा उठा। एलेना उस पलंग, खिंचे हुए पर्दे, दवाई की बोतलों, और छायादार लैम्प को देखकर काँप उठी—इस सबको देखकर उसे बीती हुई बातों की स्मृति हो आई। "और अब वर्तमान

और भविष्य में क्या होगा ?" यह गम्भीर प्रश्न उसके मस्तिष्क में कौंध गया······जैसे ही रंगमंच पर उस अभिनेत्री की बनावटी खाँसी के जबाव में एलेना की बगल में इन्सारोव की खोखली आवाज वाली असली खाँसी गूंज उठी। एलेना ने चुपचाप उसकी तरफ देखा और उसके चेहरे पर तुरन्त एक शान्त, गम्भीर भाव छा गया। इन्सारोव उसके विचारों को समझ गया, मुस्कराया और गुनगुनाते से स्वर में उस गाने का साथ देने लगा।

मगर वह शीघ्र ही पुनः शान्त हो गया। वह नवयुवती गायिका बराबर शक्ति और स्वतन्त्रता के साथ आगे बढ़ रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसने प्रत्येक बेकार की चीज से, प्रत्येक अप्रासंगिक वस्तु से अपने आपको मुक्त कर लिया है और—अपने को प्राप्त कर लिया हो जो कि किसी कलाकार के लिए कभी ही कभी मिलने वाला सबसे बड़ा आनन्द होता है। एकाएक ऐसा लगा जैसे कि उसने उस सीमा को, उस अवर्णनीय सीमा, को जिसके आगे सौन्दर्य भरा रहता है, पार कर लिया हो। दर्शक आश्चर्य चकित हो उठे, चौंक उठे। वह सीधी-सादी सी दिखाई पड़ने वाली भारी आवाज वाली लड़की उन्हें प्रभावित करने लगी, परिस्थिति पर हावी हो उठी। सचमुच उसके स्वर की अपवित्रता समाप्त हो गई थी; वह अधिक गहरा और शक्तिशाली हो उठा था। जब एल्फ्रेडो रंगमंच पर आया तो वाइओलेट्टा की प्रसन्नता भरी चीख ने अपनी प्रशंसा में उस प्रकार का तूफान सा उठता पाया जिसे कि पागलपन भी कहा जाता है और जिसकी तुलना में हमारी उत्तर में की जाने वाली सम्पूर्ण प्रशंसायें व्यर्थ हो जाती है। एक क्षण बीता और दर्शकगण पुनः शान्ति में डूब गए। दो व्यक्तियों द्वारा मिलकर गाये जाने वाला गाना प्रारम्भ हुआ जो उस संगीत-नाटक की सबसे सुन्दर वस्तु थी। इसमें कवि ने मूर्खतावश नष्ट किए गए यौवन और निराशापूर्ण दयनीय प्रेम से सम्बन्धित सम्पूर्ण पश्चातापों को व्यक्त किया था। उस भावना के वश होकर तथा उसमें बहते हुए, जिसमें सबने प्रसन्नता के आँसू

बहाये, और कलाकार की उस प्रसन्नता को और वास्तविक दुख की भावना को अपनी आँखों में भरे हुए वह भावनाओं के उस उफान में बह गई। उसका चेहरा बदल गया और मानो मृत्यु को एकाएक अपने इतने समीप देखकर उसके मुँह से उत्तेजित स्वर में यह प्रार्थना निकल पड़ी—"मुझे जीवित रहने दो—इस अवस्था में मरना भयानक है।" इसे सुन कर सारा थियेटर तालियों की गड़गड़ाहट और प्रशंसा सूचक शब्दों से गूंज उठा।

एलेना बिल्कुल ठंडी पड़ गई। उसने इन्सारोव का हाथ टटोला, उसे कस कर पकड़ा और उसके दबाव को अनुभव किया—मगर किसी ने भी एक दूसरे की तरफ नहीं देखा। इस बार उस दुलार में एक दूसरा ही अर्थ, एक दूसरा ही उद्देश्य भरा हुआ था जो उससे भिन्न था जिसने शाम को उसे नाव में एलेना का हाथ पकड़ने के लिए प्रेरित किया था।

उन्हें 'ग्रान्ड कैनाल' में होकर वापस होटल ले जाया गया। रात सुहावनी और चाँदनी भरी थी। ये वे ही महल थे जो उनकी तरफ तैरते से चले आ रहे थे परन्तु इस समय दूसरी ही तरह के लग रहे थे। वे महल जो चांदनी में चमक रहे थे, सोने की तरह पीले दिखाई पड़ते थे और इस चमक में उनके सौन्दर्य की बारीकियाँ, खिड़कियों और झरोखों की रेखायें लुप्त होती सी लगती थीं। मगर वे उन इमारतों की तुलना में अधिक स्पष्ट थीं जो अधिक विरल और छाया से एक सी ढकी हुई थीं। छोटी लाल बत्तियाँ लगाए नावें अधिक तीव्र गति से और ज्यादा शोर मचाती हुई सी चलतीं प्रतीत होती थीं। उनके स्टील के बने अग्रभाग रहस्यात्मक ढंग से चमक उठते थे; पतवारें लहरों पर उठ और गिर रहीं थीं। लहरें इस प्रकार भंग हो उठतीं थीं मानो अनेक रुपहली मछलियाँ उछल पड़ती हों। चारों तरफ नाव वालों की हल्की, अस्पष्ट सी चीखों की आवाजें आ रहीं थीं (आजकल वे लोग बिल्कुल नहीं गाते)। इसके अलावा वहाँ और

किसी भी प्रकार का शब्द नहीं सुनाई पड़ता था। वह होटल जिसमें वे ठहरे हुए थे 'रिवा देगली शियावोनी' पर था। परन्तु होटल पहुँचने से पहले ही वे नाव पर से उतर पड़े और उन्होंने 'पियाजा डि सान मारको' के चारों ओर, मेहरावों के नीचे कई चक्कर लगाये, जहाँ छोटे-छोटे होटलों के आगे लोगों के झुंड जमे रहते थे। एक अपरिचित नगर में, अपरिचित व्यक्तियों के बीच अपने प्रिय के साथ एकाकी घूमने में एक विचित्र सा आनन्द प्राप्त होता है। उस समय हर वस्तु आकर्षक और विशिष्ट लगने लगती है और मन में सब के प्रति शान्ति, सद्भावना और वही प्रसन्नता उठने लगती है जिसे वह स्वयं अनुभव करता है। परन्तु अब एलेना अपनी प्रसन्नता में मग्न रहने की मनः स्थिति में नहीं थी। अभी-अभी हुए अनुभवों ने उसके उत्साह को झकझोर डाला था; जबकि इन्सारोव ने, जैसे ही वे डोगे के राजमहल के पास होकर निकले चुपचाप नीची मेहरावों के नीचे से झाँकती हुए आस्ट्रियन तोपों की नालों की तरफ इशारा किया और टोप अपनी आँखों पर खींच लिया। दूसरी बात यह थी कि वह थकावट महसूस कर रहा था। इसलिए, सन्त मार्क के गिरजाघर और उसके गुम्बदों पर जिनके नीलिमा भरे भूरे शीशों को चाँदनी प्रकाश के चमकते हुए टुकड़ों से प्रकाशित कर रही थी, उन्होंने एक अन्तिम दृष्टि डाली और धीरे-धीरे घर लौट आये।

यह कमरा उस चौड़ी खाड़ी की तरफ था जो रिवा देगली शियावोनी से लेकर गुइदेक्का तक फैली हुई थी। उनके होटल के लगभग सामने ही सान जोर्जियो का नुकीला गुम्बद खड़ा हुआ था; दाहिरी तरफ आसमान में ऊपर उठा हुआ दोगाना का सुनहला गुम्बज और गिरजा घरों में सबसे अधिक सुन्दर 'रेदेन्तोरे आव पेलादियो' का गिरजाघर एक सजी-सजाई नई दुलहिन के समान खड़ा था; बाँयी तरफ जहाजों के मस्तूल, पाल और चिमनियाँ रात में काले दिखाई पड़ रहे थे। एक आधा फैला हुआ पाल लम्बे डैने की तरह लटका हुआ था जिसकी पताकायें मुश्किल से ही हिल पाती थीं। इन्सारोव खिड़की

के पास जा बैठा मगर एलेना ने उसे इस दृश्य का आनन्द अधिक समय तक नहीं लेने दिया। इन्सारोव को एकाएक बुखार हो आया था और उस पर भयानक निर्बलता छा गई थी। एलेना ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया और जब वह खामोश होकर सो गया तो वह चुपचाप खिड़की पर लौट आई। ओह, रात्रि कितनी प्रशान्त, कितनी कोमल प्रतीत हुई। स्वच्छ वायु एक पक्षी की सी मृदुलता के साथ बह रही थी। सचमुच सारी पीड़ा, सम्पूर्ण विषाद निर्मल आकाश की पवित्र, भोली आभा के नीचे शान्त और निद्रामग्न हो जाना चाहिए। "हे भगवान!" एलेना ने सोचा, "हमें क्यों मरना चाहिए, हमें क्यों वियोग, रोग और आँसुओं को सहन करना चाहिए? और यदि हमें ऐसा करना ही है तो यह सब सौन्दर्य, आशा की यह मधुर भावना, शाश्वत और सुदृढ़ शरण स्थल प्राप्त कर लेने का सा यह विश्वास, दैवी संरक्षण की यह भावना क्यों उठती है? तो फिर इस मुस्कराते हुए परोपकारी आकाश, इतनी प्रसन्न और इतनी निश्चिन्त इस पृथ्वी का क्या अर्थ है? क्या यह सब वही हो सकता है, जिसे हम हृदय के भीतर अनुभव करते हैं—जबकि बाहर, अपने वास्तविक रूप में निस्तब्धता की केवल एक शाश्वत पुकार गूंजती रहती है! क्या यह हो सकता है कि हम से परे चारों ओर अथाह खाड़ियाँ और दरारें छा रही हैं जिनमें सब कुछ हमारे लिए विचित्र है? तो फिर यह प्रार्थना करने की पिपासा हमें आनन्द क्यों देती है? ("इतनी कम अवस्था में" ये शब्द उसके हृदय में गूंज उठे।) क्या हम दया के लिए, सहायता के लिए प्रार्थना नहीं कर सकते? हे भगवान, क्या हम चमत्कारों की आशा नहीं कर सकते?" उसने अपनी मुट्ठियों से अपना सर दबा लिया। "यह सब अब समाप्त हो जाना चाहिए?" वह बड़बड़ाई, "यह सब यहीं तक ही समाप्त हो जाना चाहिए क्या? मैं प्रसन्न रह चुकी हूँ, केवल कुछ क्षणों, घण्टों या दिनों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे सप्ताहों तक प्रसन्न रही हूँ। और किस अधिकार के साथ?" वह अपनी प्रसन्नता से भयभीत हो उठी। "क्या हो अगर हमें प्रसन्न रहने का अधिकार

न हो ?" उसने सोचा, "क्या हो यदि इस प्रसन्नता का मूल्य चुकाना पड़े ? यह सब भगवान की मर्जी है......और हम केवल मानव मात्र है, निर्धन, पापी मानव ......इतनी कम अवस्था में। ओह, भयानक काले दंड दूर हो जा। यह अकेली मै ही नहीं हूँ जिसे जीवन की आकांक्षा है।"

"परन्तु क्या हो अगर यह एक दंड हो," वह सोचती रही, "क्या हो अगर अब हम अपने सम्पूर्ण दुष्कृत्यों का मूल्य चुका रहे हों ? मेरी अन्तरात्मा शान्त थी, और अब भी शान्त है परन्तु क्या यह मेरी निर्दोषिता का प्रमाण है ? ओह, भगवान क्या हम इतने बड़े पापी हैं ? क्या तुम सचमुच हमें इसलिए दंड देना चाहते हो कि हमने एक दूसरे से प्रेम किया—तुम, जिसने इस रात्रि का, इस आकाश का निर्माण किया है ? यदि यही बात है, यदि वह अपराध है और मैं अपराधिनी हूं," उसने एकाएक उत्तेजित होकर कहा, "तो हे भगवान कम से कम इतना तो कर देना कि वह, कि हम दोनों वहाँ उनकी मातृभूमि के मैदानों में एक सम्मान से भरी और शानदार मौत का आलिंगन कर सकें, न कि यहाँ इस एकाकी कमरे में मृत्यु को प्राप्त हों।"

"और तुम्हारी निरीह, भुला दी गई माँ, उसके दुख का तुम्हें कितना ख्याल है ?" इस प्रश्न ने उसे चौंका दिया और वह इसका कोई भी उत्तर न खोज सकी। एलेना नहीं जानती थी कि हर व्यक्ति की प्रसन्नता दूसरे व्यक्ति के दुख पर आधारित रहती है, कि जिन सुख सुविधाओं का वह उपभोग करता है, वे प्रतिदान में दूसरे व्यक्तियों के दुख और असुविधाओं की उसी प्रकार मांग करतों है जैसे कि एक मूर्त्ति अपने नीचे बने हुए चबूतरे से करती है।

"रेन्डिच !" इन्सारोव नींद में बड़बड़या।

एलेना पंजों के बल उसके पास तक गई, उसके ऊपर झुकी और उसके चेहरे पर से पसीना पोंछ दिया। इन्सारोव ने क्षण भर के लिए सिर तकिए पर इधर से उधर किया फिर चुपचाप सो गया।

एलेना खिड़की पर और अपने विचारों के संसार में लौट आई। वह अपने को यह समझाने का प्रयत्न करने लगी कि भय की कोई बात नहीं है। वह अपनी निर्बलता पर सचमुच लज्जित हो उठी। "क्या सचमुच कोई खतरा है?" वह बुदबुदाई "क्या वह पहले से अच्छा नहीं है? आखिरकार अगर आज हम थियेटर न गए होते तो यह विचार मेरे मस्तिष्क में कभी भी नहीं उठते।" उसी समय उसने एक सफेद समुद्री चिड़िया को पानी के ऊपर ऊँचाई पर उड़ते हुए देखा। शायद किसी मछुए ने उसे चौंका दिया था और अब वह चुपचाप इधर-उधर भटक रही थी मानो बैठने के लिए कोई स्थान खोज रही हो। "अगर यह इस तरफ को उड़ती है," एलेना ने सोचा, "तो यह शुभ शकुन होगा।" मगर उस चिड़िया ने चक्कर काटे, अपने पंख बन्द किए और एक घायल पक्षी की तरह एक दुखभरी चीख मारती हुई एक काले जहाज के पीछे गायब हो गई। एलेना कांपी और फिर इस बात पर लज्जित हो उठी कि वह कांपी थी। इसके बाद बिना कपड़े बदले वह बिस्तर पर इन्सारोव की बगल में लेट गई जो जल्दी-जल्दी गहरी सांसें ले रहा था।

३४

इन्सारोव देर से उठा। उसके सिर में भारी–भारी सा दर्द हो रहा था और, जैसा कि उसने स्वयं बताया था, उसके सारे शरीर में 'भयानक' निर्बलता छा रही थी। फिर भी वह उठ बैठा।

"रेन्डिच नहीं आया?" यह उसका पहला प्रश्न था।

"अभी नहीं," एलेना ने उत्तर दिया और उसे 'ओसरेवेतोर त्रीस्तीनों' नामक अखबार की अन्तिम प्रति पकड़ा दी जिसमें युद्ध, स्लाविक देशों और राजधानियों के विषय के काफी समाचार थे। इन्सारोव ने पढ़ना

प्रारम्भ कर दिया था और एलेना उसके लिए काफी तैयार कर रही थी कि अचानक दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

"रेन्डिच," उन दोनों ने सोचा : मगर यह एक रूसी स्वर था जिसने कहा : "मैं भीतर आ सकता हूँ?" उन्होंने आश्चर्य के साथ एक दूसरे की तरफ देखा मगर उनके उत्तर देने के पहले ही कुछ कुछ भड़कदार पोशाक पहने, छोटे और तीखे नक्श तथा चंचल आँखों वाला एक नौजवान कमरे में घुसा। वह आत्म-सन्तोष से खिला हुआ सा लग रहा था मानो उसने अभी बहुत सारा धन जीता हो या कोई बहुत अच्छी खबर सुनी हो।

इन्सारोव अपनी कुर्सी पर सीधा हो गया।

"आप लोग मुझे नहीं पहचानते," प्रसन्नता के साथ उनकी तरफ बढ़ते और शालीनता के साथ एलेना को सलाम करते हुए उस अपरिचित ने कहा। "मैं लुपोयारोव हूं, आपको याद है कि हम लोगों की मुलाकात मास्को में 'ई' के यहाँ हुई थी।"

"ओह, ठीक, 'ई' के यहाँ," इन्सारोव ने दुहराया।

"बेशक, बेशक! कृपया अपनी पत्नी से मेरा परिचय करा दीजिए—मैडम, मैं दूमित्री वासिलिएविच, मेरा मतलब है, निकानोर वासिलिएविच का सदैव अत्यधिक सम्मान करता रहा हूँ और अन्ततः मुझे आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। तनिक सोचिए तो सही," वह इन्सारोव की तरफ मुड़ता हुआ कहता रहा, "मुझे कल ही ज्ञात हुआ कि आप यहाँ हैं। मैं भी इस होटल में ठहरा हुआ हूँ। यह, यह वैनिस भी कितना सुन्दर स्थान है—कविता, केवल कविता! यहाँ केवल एक ही बात खराब है, ये आस्ट्रियन लोग—सब जगह मिल जाते हैं!—ओह ये आस्ट्रियन लोग! आपने सुना है कि डेन्यूब पर एक निर्णयात्मक युद्ध हुआ था—तीन सौ तुर्की अफसर मारे गए? सिलिस्त्रा पर कब्जा कर लिया गया और सर्बिया ने अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। आप देशभक्त होने के नाते कितने

प्रसन्न होंगे—यहाँ तक कि मेरा स्लाव-रक्त सनसना उठा है। फिर भी मैं आपको सलाह दूंगा कि सावधान रहें—मुझे विश्वास है कि उनकी आँखें आप पर लगी हुई है। यहाँ की जासूसी भयंकर है—कल कुछ संदिग्ध से व्यक्ति मेरे पास आये और पूछने लगे कि क्या मैं रूसी हूं; मैंने कहा मै डेन हूं। मगर आपकी तबियत ठीक नहीं मालूम पड़ती निकानोर वासिलिएविच। आपको अपना ध्यान रखना चाहिए। मैडम, आपको अपने पति की जरा ज्यादा देखभाल करनी चाहिए—कल मैं सारा दिन गिरजाघरों और राजमहलों के चक्कर काटता रहा; सच, मैं बहुत ही उत्तेजित हो उठा था। आपने डोगे का राजमहल देखा है, नहीं देखा? वह स्थान कलाकृतियों से भरा पड़ा है। विशेष रूप से वह कला-विभाग जहाँ, दीवाल पर मारिनो फालेरी* के चित्र के लिए अभी तक खाली स्थान बना हुआ है और जिसके नीचे यह लिखा है: "यह स्थान फालेरी के लिए है जिसे अपने अपराधों के लिए फांसी दे दी गई थी।" मैं उस प्रसिद्ध कारागार को भी देखने गया था—हे भगवान! उसे देखकर मेरा रक्त किस प्रकार खौल उठा था! आपको याद होगा कि मैं सामाजिक समस्याओं में गहरी रुचि रखता हूँ और सामन्तशाही के खिलाफ विद्रोही रहा हूं: मैं सामन्तशाही के समर्थकों को उन कारागारों को दिखाना पसन्द करूँगा। बायरन ने ठीक ही लिखा था: "मैं वेनिस में आहों के पुल पर खड़ा था"—निस्सन्देह वह भी एक सामन्त था। आप जानते है मैं सदैव प्रगति का समर्थक रहा हूँ; नवीन सन्तति सदैव प्रगति की समर्थक रहती है, है न यह बात? अच्छा, इन एंग्लोफ्रेंच के विषय में आपका क्या ख्याल है? हमें यह देखना है कि यँह बोन्नापा (नेपोलियन तृतीय का बिगड़ा हुआ नाम) और पामर्स्टन कितनी सफलता प्राप्त करते

---

* मारीनो फालेरी एक वेनेशियन चित्रकार था जिसका १३५५ में बध किया गया था। अन्य कलाकारों के चित्रों के बीच उसके चित्र के लिए रिक्त स्थान छोड़ दिया गया था और उपलिखित वाक्य लिख दिया गया था।

हैं। आपको पता है कि पामर्स्टन को प्रधान-मंत्री बना दिया गया है ? नहीं, आप कुछ भी कहें, रूसी घूंसे के साथ खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। वह बोस्त्रापा भी भयंकर गुन्डा है। क्या आप पसन्द करेंगे अगर मैं आपको विक्टर ह्यूगो की 'ला पेटीमेन्टस्' नामक पुस्तक दूँ ?—बहुत ही सुन्दर है! भविष्य ईश्वर का दंडनायक है। अपनी संक्षिप्तता में कितना धृष्ट और फिर भी कितना शक्तिमान, कितना शक्तिशाली ! प्रिन्स व्याजेम्स्की की भी एक चीज अच्छी है :

"यूरोप दुहराता है : बाश–कादिका–लार ;
मगर निगाह रखता सिनोपी पर ।"

ओह कविता से मुझे कितना प्रेम है । मेरे पास सब चीजें है। मुझे नहीं मालूम कि आप कैसा अनुभव करते है मगर मुझे इस युद्ध से प्रसन्नता है : फिर भी अगर वे लोग मुझे रूस वापस भेजने लगेंगे तो मै यहाँ से फ्लोरेन्स और रोम जाने की तैयारी में हूँ। फ्रांस में रहना असम्भव है इसलिए में स्पेन जाने की सोच रहा हूँ—लोगों का कहना है कि वहाँ की औरतें बड़ी सुन्दर हैं मगर वहाँ गरीबी है और खेती में लगने वाले कीड़े बहुत हैं। मैं कैलीफोर्निया के विषय में भी सोचूँगा—एक रूसी के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है—मगर मैने एक सम्पादक से भूमध्य सागरीय व्यापार का विस्तृत अध्ययन करने की प्रतिज्ञा कर रखी है । आप कह सकते हैं कि विषय नीरस है, एक विशेषज्ञ के योग्य है, मगर हमें यही तो चाहिये, हमें विशेष ज्ञान की आवश्यकता है—हम लोग दर्शन पर काफी माथा–पच्ची कर चुके, अब हमें कुछ व्यावहारिक ज्ञान चाहिए, व्यावहारिक ज्ञान...... मगर आपकी तबियत बहुत खराब दिखाई पड़ रही है, निकानोर वासिलिएविच, हो सकता है कि मेरी बातों से आप ऊब रहे हों; फिर भी मैं थोड़ी देर और रुकूँगा......।"

लुपोयारोव काफी देर तक इसी तरह बकता रहा और जब अन्त में जाने लगा तो फिर आने का वायदा करता गया ।

इस बिना बुलाये मेहमान की बातों से क्लान्त होकर इन्सारोव सोफे पर लेट गया।

"यह तुम्हारी नवीन सन्तति है," उसने एलेना की तरफ देखते हुए कटुता के साथ कहा। "उनमें से कुछ शेखी मार सकते हैं मगर हृदय से सब इसी आदमी की तरह कोरे बकवादी ही है।"

एलेना ने अपने पति की बात का उत्तर नहीं दिया। उस समय वह रूस की नवीन सन्तति की अपेक्षा इन्सारोव की कमजोर हालत के विषय में कहीं अधिक परेशान थी। वह उसके पास बैठ गई और सीने-पिरोने का सामान उठा लिया। इन्सारोव ने आँखें बन्द कर लीं और चुपचाप लेटा रहा। वह पीला और दुबला दिखाई पड़ रहा था। एलेना ने उसके दुबले-पतले चेहरे और फैली हुई बांहों की तरफ देखा और एकाएक उसे भय ने जकड़ लिया।

"द्मित्री," उसने पुकारा।

इन्सारोव चौंक उठा।

"क्या है? क्या रेन्डिच आ गया?"

"अभी नहीं......मगर द्मित्री, तुम्हें बुखार है, तुम्हारी तवियत सचमुच ठीक नहीं है, क्या तुम यह नहीं सोचते कि डाक्टर को बुलाना चाहिये?"

"उस बातून ने तुम्हें डरा दिया है। नहीं, यह जरूरी नहीं है। मैं थोड़ा सा आराम करूँगा और सब ठीक हो जायेगा। खाने के बाद हम लोग फिर कहीं घूमने चलेंगे।"

दो घन्टे बीत गए। पूरे समय तक इन्सारोव सोफे पर लेटा रहा, मगर सो नहीं सका हालांकि उसने आँखें बन्द ही रखीं। एलेना उसके पास से नहीं हटी। उसने अपना सामान गोदी में गिर जाने दिया और चुपचाप बैठी रही।

"तुम सो क्यों नहीं जाते?" अन्त में उसने पूछा।

"जरा ठहरो—"इन्सारोव ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे अपने सिर के नीचे रख लिया। "इस तरह, अब ठीक है। रेन्डिच के आते ही मुझे फौरन जगा देना। अगर वह यह कहे कि नाव तैयार है तो हमें फौरन चल देना पड़ेगा। हमें अपना सारा सामान बांध लेना है।"

"सामान बांधने में अधिक समय नहीं लगेगा," एलेना ने कहा।

"वह व्यक्ति सर्विया और लड़ाई के बारे में क्या बक रहा था?" इन्सारोव ने थोड़ी देर की खामोशी के बाद पूछा। "मेरा ख्याल है, सब गढ़ी गढ़ाई बातें थीं, मगर हमें जाना है, हमें जाना है। बर्बाद करने के लिए जरा भी समय नहीं है—तुम्हें तैयार रहना चाहिए।"

वह सो गया। कमरे में पूरी खामोशी थी। एलेना ने आराम-कुर्सी के सहारे सिर टिका लिया और काफी देर तक खिड़की से बाहर की तरफ देखती रही। मौसम बदल गया था और हवा चल रही थी। बड़े-बड़े सफेद बादल आसमान में तैरते हुए चले जा रहे थे, दूर लम्बे मस्तूल हिल रहे थे, एक लाल क्रास वाली एक लम्बी पताका बराबर गिर और उठ रही थी। पुरानी फैशन की दीवाल घड़ी धीरे-धीरे एक शोकसूचक सा शब्द करती हुई टिक-टिक कर रही थी। एलेना ने आँखें बन्द कर लीं। पिछली रात वह बहुत कम सो पाई थी इसलिए अब वह भी झपकियाँ ले रही थी।

उसने एक विचित्र स्वप्न देखा। उसे ऐसा लगा कि वह कुछ अनजान व्यक्तियों के साथ एक नाव में जारित्सिनो झील को पार कर रही थी। वे लोग खामोश थे और चुपचाप बैठे थे। नाव को कोई भी नहीं खे रहा था; वह अपने आप चली जा रही थी। एलेना भयभीत नहीं थी मगर ऊब रही थी। वह यह जानना चाहती थी कि वे लोग कौन थे और वह उनके साथ क्यों थी। उसने चारों तरफ नजर डाली और जैसे ही उसने ऐसा किया झील चौड़ी हो गई, किनारे गायब हो गए। और अब वह झील न रहकर एक उफनता हुआ समुद्र

बन गयी जिसकी विशाल नीली शान्त लहरों पर नाव शान के साथ चली जा रही थी। कोई डरावनी सी चीज शोर मचाती हुई समुद्र की तलहटी से ऊपर की तरफ उठती हुई सी लगी। एलेन के अपरिचित साथी चीखते–चिल्लाते और हाथ हिलाते कूद पड़े.........
एलेना ने अब उनके चेहरों को पहचान लिया। उनमें उसका पिता भी था। फिर समुद्र पर एक सफेद तूफान उठा और सारी चीजें चक्कर खाने लगीं और गड़बड़ा उठीं।

एलेना ने अपने चारों तरफ देखा। चारों तरफ अब भी सफेदी छा रही थी मगर इस समय वह सफेदी बरफ की थी जिसका कोई भी अन्त नहीं दिखाई पड़ता था। वह अब नाव में नहीं थी वल्कि एक स्लेज गाड़ी में यात्रा कर रही थी जैसे कि उसने मास्को से यात्रा की थी और उसकी बगल में पुराने कोट में लिपटी एक छोटी सी मूर्ति बैठी थी। एलेना ने इस सह-यात्री की तरफ गौर से देखा। यह कात्या थी, वही भिखारिन लड़की जिसे वह सालों पहले जानती थी। एलेना भयभीत होने लगी: "क्या इस बच्ची की सचमुच मौत नही हुई थी ?" उसने सोचा।

"कात्या, हम कहाँ जा रहे हैं ?"

कात्या ने उत्तर नहीं दिया, सिर्फ कोट को अपने चारों तरफ और भी कस कर लपेट लिया। वह ठंडी थी......एलेना भी ठंडी थी। उसने सड़क की तरफ देखा और बहुत दूर, उड़ी हुई वरफ में होकर उसे ऊँची सफेद मीनारों और चाँदी की तरह चमकते गुम्बजों वाले एक शहर की झलक दिखाई पड़ी। "कात्या, कात्या, क्या यह मास्को है ? मगर नही," उसने सोचा, "यह मास्को नहीं है, यह सोलोव्येत्स्की नामक मठ है," और वह जानती थी कि वहाँ, अगणित संकरी कोठरियों में से, जो शहद की मक्खी के छत्ते की तरह घुटनभरी और असंख्य थी, एक में दमित्री कैद था। "मुझे उसे छुड़ाना चाहिए।" एकाएक उसके सामने एक भूरी

खाई सी खुल गई। स्लेज नीचे गिर रही थी, कात्या हंसने लगी। "एलेना! एलेना!" उसने गहराई में से पुकारती हुई एक आवाज सुनी।

"एलेना!" इस बार वह आवाज साफ और कान के पास सुनाई पड़ी। उसने जल्दी से देखा, घूमी और जो कुछ देखा उसे देखकर बेहोश सी हो गई। इन्सारोव, बरफ की तरह सफेद, उसके सपने की तरह सफेद, सोफे पर अधलेटा बैठा था और उसकी तरफ फटी, पीली, भयानक आँखों से देख रहा था। उसके बाल उसकी भौंहों पर बिखर रहे थे, होंठ अजीव ढंग से खुल रहे थे। उसके एकाएक परिवर्तित हो गये चेहरे से एक उत्कन्ठा भरी कोमलता से परिपूर्ण भय प्रकट हो रहा था।

"एलेना!" उसने कहा, "मैं मर रहा हूं।"

एक चीख मार कर वह घुटनों के बल वैठ गई और उसके सीने से चिपट गई।

"सब समाप्त हो गया," इन्सारोव बोला, "मैं मर रहा हूँ...... विदा मेरी प्रिये। विदा मातृभूमि।"

वह सोफे पर पीछे की तरफ लुढ़क गया।

एलेना कमरे से बाहर भागी और मदद के लिए चिल्लाई। एक नौकर डाक्टर को बुलाने दौड़ा। एलेना लौटी और इन्सारोव को बांहों में भर लिया।

उसी समय दरवाजे पर एक आदमी आया। उसके कन्धे चौड़े और चेहरा धूप से सांवला पड़ा हुआ था। वह एक मोटा कोट और ऑयलस्किन का नीची बाढ़ वाला टोप पहने था। जो कुछ उसने देखा उसे देखकर असमंजस में पड़, वह दरवाजे पर ही ठिठक गया।

"रेन्डिच!" एलेना चीखी। "तुम आ गए! देखो, भगवान के लिए इधर देखो, वह बेहोश हो गया है! उसे क्या हो गया? मेरे

भगवान, मेरे भगवान ! कल वह घूमने गया था, अभी एक मिनट पहले मुझसे बातें कर रहा था……"

रेन्डिच ने कुछ भी नहीं कहा, सिर्फ रास्ते से हट कर खड़ा रहा। बालों की टोपी और चश्मा लगाए एक छोटा सा आदमी उसकी बगल में होकर तेजी से कमरे में घुस गया। यह डाक्टर था जो संयोगवश उसी होटल में रहता था। वह इन्सारोव के पास तक गया।

"श्रीमती जी," उसने एक या दो क्षण बाद कहा, "इस विदेशी सज्जन की फेफड़ों की एक कठिन बीमारी से मौत हो चुकी है।"

३५

दूसरे दिन, उसी कमरे में रेन्डिच खिड़की के पास खड़ा था और एलेना एक शॉल में लिपटी हुई उसके सामने बैठी थी। इन्सारोव की लाश एक 'कफन'ऽ में रखी साथ वाले कमरे में रखी थी। एलेना के चेहरे पर एक निर्जीव भय का भाव छा रहा था। उसकी भौंहों के बीच दो गहरी रेखायें उभर आई थीं जिन्होंने उसके स्थिर नेत्रों को एक कठोर भाव से भर दिया था। खिड़की की चौखट पर अन्ना वासिलिएव्ना का एक खुला हुआ पत्र पड़ा था। उसकी मां ने, चाहे एक ही महीने के लिए सही, उससे मास्को आने की प्रार्थना की थी। उसने अपने अकेलेपन की शिकायत की थी, निकोलाय आर्तियोमेविच की शिकायत की थी। उसने इन्सारोव के लिए शुभ कामनायें भेजीं थी, उसके स्वास्थ्य के

ऽ ईसाई अपने मुर्दे को लड़की के एक लम्बे बक्स में बन्द कर कब्र में गाढ़ते है। इस बक्स को उनके यहाँ 'कफन' कहा जाता है।

विषय में पूछा था, और प्रार्थना की थी कि वह अपनी पत्नी को आज्ञा दे दे जिससे वह अपनी माँ से मिल जाये ।

रेन्डिच एक डालमेशियन नाविक था । इन्सारोव का उससे उस समय परिचय हुआ था जब इन्सारोव बल्गेरिया में यात्रायें कर रहा था और जिसे उसने वेनिस में ढूँढ़ निकाला था। वह एक साहसी, कठोर, उजड्ड और स्लाविक समस्या का पूर्ण भक्त था। वह तुर्कों से घृणा करता था और आस्ट्रियनों को नापसन्द करता था।

"तुम वेनिस में कितने दिन रुकोगे ?" एलेना ने उससे इतालवी भाषा में पूछा। उसका स्वर उसके चेहरे की ही तरह निर्जीव था।

"एक दिन, जिससे कि माल भर सकूँ और शक न पैदा होने दूँ; फिर सीधा जारा जाऊँगा। हमारे देशवासियों के लिए यह एक बुरी खबर साबित होगी। वे काफी दिनों से उसका इन्तजार कर रहे थे; उनकी उम्मीदें उसी पर लगीं हुईं थीं।"

"उनकी उम्मीदें उसी पर लगीं हुईं थीं," एलेना ने मशीन की तरह दुहराया।

"तुम उसे कब दफन करोगी ?" उसने पूछा।

कुछ रुक कर वह बोली :

"कल !"

"कल ? मैं ठहर जाऊँगा। मैं उसकी कब्र में एक मुट्ठी मिट्टी डालना पसन्द करूँगा। और मुझे तुम्हारी भी मदद करनी चाहिए। मगर उसे स्लाव--भूमि में दफनाना ज्यादा अच्छा रहता।"

एलेना ने रेन्डिच की तरफ देखा।

"कप्तान," एलेना ने कहा, "हम दोनों को अपने साथ ले चलो और समुद्र के दूसरे, उधर वाले किनारे पर उतार दो। क्या यह सम्भव है ?"

१६

रेन्डिच ने थोड़ी देर सोचा।

"सम्भव है, मगर मुश्किल काम होगा। बदमाश अफसर जरूर मुसीबतें खड़ी करेंगे।......मगर यह भी मान लो कि हम लोग इसमें कामयाब हो गए और उसे वहाँ दफना दिया, फिर तुम्हें वापस कैसे लाऊँगा ?"

"तुम्हें मुझे वापस नहीं लाना पड़ेगा।"

"क्या मतलब ? तुम कहाँ ठहरोगी ?"

"मैं कहीं-न-कहीं काम ढूँढ़ लूँगी ; सिर्फ हमें ले चलो, दोनों को ले चलो।"

रेन्डिच ने अपनी गर्दन का पिछला हिस्सा खुजाया।

"जैसी तुम्हारी मर्जी, मगर बड़ा मुश्किल काम होगा। मैं जाकर कोशिश करता हूँ। तुम दो घन्टे तक मेरा यहीं इन्तजार करना।"

वह बाहर चला गया। एलेना दूसरे कमरे में गई, दीवाल के सहारे टिक गई और काफी देर तक वहीं पत्थर की तरह निस्तब्ध खड़ी रही ; फिर घुटनों के बल बैठ गई। मगर वह प्रार्थना करने में असमर्थ रही। उसके मन में कोई भी शिकायत नहीं थी। उसने भगवान से यह पूछने के विषय में भी नहीं सोचा कि उसने उन पर रहम क्यों नहीं किया, उसने उसकी रक्षा क्यों नहीं की, उसने उनके पाप की सीमा से भी अधिक बढ़कर—अगर यह सचमुच उनका पाप था—दंड क्यों दिया। हम सब के सब पापी हैं, उसी तरह जिस तरह कि जीवित हैं, और कोई भी विचारक इतना महान नहीं है, कोई भी मानवता का इतना बड़ा कल्याणकारी नहीं है जो अपने किए हुए कार्यों के आधार पर यह सोच सके कि उसे जीवित रहने का अधिकार है......मगर एलेना प्रार्थना नहीं कर सकी ; वह पत्थर बन गई थी।

उस रात को एक चौड़ी, बल्लियों से खेई जाने वाली नाव उँस होटल से चली जहाँ इन्सारोव-दम्पत्ति ठहरे हुए थे। इसमें एलेना और रेन्डिच बैठे थे। वे अपने साथ काले कपड़े से ढका एक लम्बा बक्स ले जा रहे थे। नाव लगभग एक घण्टे तक चलती रही जब तक कि एक दो मस्तूलों वाले छोटे से जहाज तक न पहुँच गई। यह जहाज बन्दरगाह के ठीक मुहाने पर लंगर डाले खड़ा था। एलेना और रेन्डिच ऊपर गए और मल्लाह उस कफन वाले बक्स को उठा लाए। आधी रात को एक तूफान उठ खड़ा हुआ मगर पौ फटने तक वह जहाज लीटो से आगे निकल जा चुका था। दिन में तूफान भयंकर तेजी से चलने लगा और 'लायड्स'* के दफ्तर के अनुभवी जहाजियों ने अपने सिर हिलाए और बुरे समाचार सुनने की आशा करने लगे। वेनिस, ट्रीस्ट और डाल्मेशियन तट के बीच एड्रियाटिक सागर भयंकर रूप से खतरनाक हो उठता है।

एलेना द्वारा वेनिस छोड़ने के तीन सप्ताह उपरान्त अन्ना वासिलिएव्ना को मास्को में निम्नलिखित पत्र प्राप्त हुआ :

" मेरे प्यारे माता-पिता,

मैं तुमसे हमेशा के लिए विदा माँगने को यह पत्र लिख रही हूँ। कल द्मित्री मर गया और मेरे लिए सब कुछ समाप्त हो गया। आज मैं उसके शव को जारा लिए जा रही हूँ। मैं उसे दफनाऊँगी और फिर नहीं जानती कि मेरा क्या होगा। परन्तु अब मेरे लिए द्मित्री के अपने देश के अतिरिक्त और कोई भी देश नहीं रह गया और वहाँ जनता विद्रोह और युद्ध की तैयारियाँ कर रही है। मैं 'दया की देवियों' में भर्ती हो जाऊंगी और बीमारों और घायलों की परिचर्या करूँगी। मैं नहीं जानतीं कि मेरा क्या होगा परन्तु अब जब कि द्मित्री की मृत्यु हो चुकी है मैं उसकी स्मृति के प्रति और उस उद्देश्य के प्रति, जिसका उसने जीवन पर्यन्त अनुगमन किया था, सच्ची रहूँगी। मैंने बल्गेरियन और सर्बियन भाषायें सीख ली

हैं। शायद मैं इस सब को सहन नहीं कर पाऊँगी—यह और भी अच्छा रहेगा। मुझे अतल खाई के किनारे तक खींच कर ले जाया गया है और मुझे उसमें गिरना ही पड़ेगा। भाग्य ने हमें व्यर्थ ही आपस में आबद्ध नहीं किया था। कौन जाने, शायद मैंने ही उसे मार डाला हो; अब उसकी पारी है कि मुझे अपने पीछे बुलाये। मैंने प्रसन्नता की खोज की थी, शायद मुझे मृत्यु मिलेगी। हो सकता है कि यह ऐसा ही हो जैसा कि होना चाहिए, यह हो सकता है कि मैंने गल्ती की हो। परन्तु क्या यह सच नहीं है कि मृत्यु सब घाव भर देती है और सबके लिए शान्ति ले आती है। मैंने तुम्हें जो दुख पहुँचाया है उसके लिए मुझे क्षमा कर देना, ऐसा मैंने जानबूझ कर नहीं किया था। मगर जहाँ तक रूस लौटने का प्रश्न है—क्यों? रूस में करने के लिए क्या है?

मेरा अन्तिम चुम्बन और शुभकामनायें स्वीकार करना और मुझे अपराधी मत समझना।"

'ए'

× × × ×

तब से पाँच साल बीत चुके हैं और एलेना की कोई भी खबर नहीं मिली है। सारे खत और जाँच-पड़तालें बेकार साबित हो चुकी हैं। निकोलाय आर्तियोमेविच ने शान्ति हो जाने के उपरान्त वेनिस और जारा की यात्रायें व्यर्थ ही कीं। वेनिस में वह उतना ही पता लगा सका जितना कि पाठक पहले से ही जानते हैं और जारा में कोई भी व्यक्ति उसे रेन्डिच और उस जहाज के विषय में जिसे उसने किराये पर लिया था, पक्की खबर न दे सका। वहाँ हल्की सी अफवाह थी कि कुछ साल पहले एक भयंकर तूफान के बाद, समुद्र ने किनारे पर एक कफन वाला बक्स ला पटका था जिसमें एक आदमी की हड्डियाँ भरीं हुई थीं। दूसरे, अधिक विश्वस्त समाचारों के अनुसार, वह बक्स समुद्र द्वारा नहीं फेंका गया था बल्कि एक विदेशी महिला

द्वारा वेनिस से लाया गया था और किनारे पर दफना दिया गया था। कुछ लोगों ने कहा कि यह महिला बाद में हेरजोगोविना में उस फौज के साथ देखी गई थी जिसे वहाँ संगठित किया जा रहा था। उन्होंने उसकी पोशाक तक के विषय में बताया जो उनके कथनानुसार सिर से लेकर पैर तक काली थी। चाहे कुछ भी रहा हो मगर एलेना के सारे निशान हमेशा के लिए और कभी भी न पाये जाने वाली सीमा तक गायब हो चुके हैं, और कोई भी नहीं जानता कि आया वह कहीं छिप कर रह रही है या जिन्दगी का अपना छोटा सा नाटक समाप्त कर चुकी है—या उस व्याकुल आत्मा ने अन्त में शान्ति प्राप्त कर ली है और मृत्यु अपना दाँव ले चुकी है।

कभी-कभी कोई व्यक्ति एकाएक काँपता हुआ चैतन्य हो उठता है और अपने आप से पूछता है: "क्या मैं सचमुच तीस वर्ष का हो सकता हूँ······या चालीस······या पचास वर्ष का? यह कैसे सम्भव हो सकता है कि जिन्दगी इतनी जल्दी गुजर गई? यह कैसे सम्भव है कि मौत इतनी नजदीक आ गई है? मगर मौत एक मछुए के समान है जो मछली को अपने जाल में पकड़ कर, कुछ समय के लिए उसे पानी में ही पड़ा रहने देता है। मछली बराबर इधर-उधर तैरती रहती है मगर पूरे समय जाल उसे चारों तरफ से घेरे रहता है और समय आने पर मछुआ उसे पकड़ लेता है।

× × ×

हमारी कहानी के अन्य पात्रों का क्या हुआ? अन्ना वासिलिएव्ना अब भी जीवित है; यह चोट पड़ने के बाद से वह काफी वृद्ध लगने लगी है, शिकायतें कम करती है परन्तु दुख बहुत अधिक मनाती है। निकोलाय आर्तियोमेविच भी अधिक बृद्ध लगने लगा है, उसके बाल सफेद हो गए हैं। वह एवगुस्तिना क्रिश्चियेनोव्ना से अलग हो गया है। अब वह सब विदेशी चीजों की बुराई करता है। उसकी घर की

नौकरानी जो लगभग तीस साल की एक सुन्दर जर्मन स्त्री है सिल्क की पोशाक और उंगलियों में सोने की अंगूठियाँ और कानों में ईयर रिंग पहनती है। कुर्नातोव्स्की ने, एक मानवीय इच्छाओं से रहित व्यक्ति न होने कारण तथा सुन्दर नवयुवतियों का प्रशंसक होने के कारण (खुद साँवला और उत्साही होते हुए) जोया से विवाह कर लिया है। जोया उसकी बड़ी आज्ञाकारिणी है और उसने जर्मन भाषा में सोचना तक छोड़ दिया है। बरसिऐनेव हीडल वर्ग में है। वह सरकारी वजीफा लेकर विदेश चला गया था और पेरिस और बर्लिन की यात्रा की थी। वह अपना समय बर्बाद नहीं कर रहा है और एक अच्छा प्रोफेसर बनेगा। शिक्षित जनता का उसके दो प्रकाशित निबन्धों की तरफ ध्यान जा चुका है। पहला निबन्ध है 'न्यायालय द्वारा दिए गऐ दंडों के विषय में प्राचीन जर्मन कानून की एक विशेषता', तथा दूसरा, 'नागरिक समस्याओं के विषय में देहाती सिद्धान्तों का महत्व'। केवल यही बात आपत्तिजनक है कि दोनों निबन्ध क्लिष्ट शैली में लिखे गए हैं और उनमें विदेशी शब्दों की भरमार है।

शुबिन रोम में है। उसने अपनी पूरी शक्ति अपनी कला-साधना में लगा दी है और नवीन मूर्त्तिकारों में उसकी गणना सर्वाधिक महत्वपूर्ण और होनहार कलाकार के रूप में की जाने लगी है। आलोचनात्मक दृष्टि वाले दर्शकों का मत है कि उसने प्राचीन कला का यथेष्ठ अध्ययन किया है, कि उसमें 'स्टाइल' की कमी है। वे उसे फ्रेंच स्कूल से सम्बन्धित मानते हैं। उसके पास अंग्रेजी और अमेरिकन संरक्षकों का बहुत सा काम करने को है। अभी हाल में उसके नृत्य समारोह के दृश्य ने बड़ी हलचल मचा दी थी और प्रसिद्ध रूसी काउन्ट बोबोश्किन ने जो एक बहुत धनी व्यक्ति है, उसके लिए एक हजार स्कूर्दो * दे डाले होते, परन्तु अन्त में उसने एक दूसरे शुद्ध फ्रांसीसी रक्त वाले कलाकार को 'बसन्त की आत्मा के वक्ष पर प्रेम में मरती

---

* एक इतालवी सिक्का।

हुई एक किसान कन्या" की मूर्त्ति बनाने के लिए तीन हजार देना अधिक उचित समझा। शुबिन कभी-कभी उवार इवानोविच से पत्र व्यवहार करता रहता है। केवल उसी में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है। "तुम्हें याद है," उसने अभी कुछ दिन पहले लिखा था, कि तुमने उस रात मुझसे क्या कहा था जब हमने बेचारी एलेना की शादी के बारे में सुना था? मैं तुम्हारे बिस्तर पर बैठा तुमसे बातें कर रहा था। तुम्हें याद है कि मैंने तुमसे पूछा था कि हम लोगों में सच्चे आदमी कब उत्पन्न होंगे और तुमने उत्तर दिया था: "वे आयेंगे।" ओह! काली मिट्टी की आत्मा! आज, अपनी इस सुखद निर्जन स्थिति में मैं तुमसे एक बार फिर लिखकर पूछ रहा हूँ: "क्या स्थिति है उवार इवानोविच, क्या वे लोग आ रहे हैं?"

उवार इवानोविच ने इस पत्र को पढ़ते हुए अपनी उंगलियां हिलाईं और चुपचाप दूर देखने लगा।
